

टोबा टेकसिंह

सआदत हुसैन मण्टो

सम्पादक तथा अनुवादक
प्रकाश पण्डित



निधि प्रकाशन

1980
प्रकाश पण्डित



मूल्य
25 रुपये



प्रकाशक
निधि प्रकाशन
1590, मंदरसा रोड, कश्मीरी गेट,
दिल्ली-110006



मुद्रक
शान प्रिंटर्स
गाहदरा, दिल्ली 110032
TOBA TEK SINGH (STORIES COLLECTION)
by Saadat Hasan Manto

क्रम

परिचय	7
नया कानून	9
खुनिया	22
खोल दो	31
ठण्डा गोश्त	36
काली सलवार	44
घू	61
धुआ	69
भोजन	79
बाबू गोपीनाथ	104
टोवा टर्कमिह	122
मम्मी	131
नगी आवाजें	175
हतक	183
मसद भाई	207

मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना मेरी जन्म थी। मैं पंजाब के एक अज्ञात गांव 'समराला' में पैदा हुआ। यदि किसीको मेरी जन्म-तिथि से दिलचस्पी हो सकती है तो वह मेरी मां थी, जो अब जीवित नहीं है। दूसरी घटना 1931 में हुई जब मैंने पंजाब यूनिवर्सिटी से दसवीं की परीक्षा लगातार तीन साल फेल होने के बाद पास की। तीसरी घटना वह थी जब मैंने 1939 में शादी की, लेकिन यह घटना दुःखद नहीं थी और अब तक नहीं है। और भी बहुत सी घटनाएँ हुई, लेकिन उनसे मुझे नहीं दूसरों को फट पहुँचा। उदाहरणस्वरूप मेरा कलम उठाना एक बहुत बड़ी घटना थी, जिससे 'शिष्ट' लेखकों को भी दुःख हुआ और 'शिष्ट' पाठकों को भी।

मैंने कुछ साल बम्बई में गुजारे और फिल्मी कहानियाँ लिखीं। आज-कल लाहौर में हूँ और फिल्मी नहीं, केवल साधारण कहानियाँ लिख रहा हूँ। लगभग दो दर्जन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम गिनवाकर आपकी परेशान नहीं करना चाहता। अपना मौजूदा पता भी इसीलिए नहीं लिख रहा, क्योंकि स्वयं भी परेशान नहीं होना चाहता।

यह संक्षिप्त परिचय मटो ने मुझे उस समय लिख भेजा था जब 1954 में मैं उर्दू की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ का चयन कर रहा था। अब तो सचमुच मटो के निवास-स्थान का कोई पता नहीं है क्योंकि इस ज्वाले बहानीकार का 1955 में अकाल देहांत हो गया था।

मटो उर्दू का एकमात्र ऐसा बहानी-लेखक था जिसकी रचनाएँ जितनी पसंद की जाती हैं उतनी ही नापसंद भी। और इसमें किसी सदेह की गुंजायिश नहीं है कि उसे गालियाँ देने वाले लोग ही सबसे अधिक उसे पढ़ते हैं। ताबड़-तोड़ गालियाँ खाने, और 'काली सलवार', 'बू', 'धुआँ', 'ठंडा गोश्त' इत्यादि 'अदलील' रचनाओं के कारण बार-बार अदा-

लता के कटहरो में घसीट जलने पर भी वह बराबर उस वातावरण और उन पत्रों-कें सम्बन्ध में कहानियाँ लिखता रहा जिन्हें 'सम्य' लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं और अपने समाज में कोई स्थान देने की तयार नहीं। यह सही है कि जीवन के चारों ओर की दृष्टिकोण कुछ अस्पष्ट और एक सीमा तक निराशावादी है। स्वस्थ पात्रों की बजाय उमन अधि-कतर अस्वस्थ पात्रों की ही अपना विषय बनाया है और अपने युग का वह बहुत बड़ा Cynic था लेकिन मानव मनोविज्ञान का समझने और फिर उसके प्रकाश में बनावट और झूठ का पर्दाफाश करने की जो क्षमता मंटो को प्राप्त थी वह निःसन्देह किसी अन्य उद्-लेखक का प्राप्त नहीं है।

जहाँ तक कलात्मक प्रौढ़ता का सम्बन्ध है मेरे विचार में उद्-के आधुनिक युग का कोई कहानी लेखक मंटो तक नहीं पहुँचता। हम उसके सिद्धांता से मतभेद हो सकता है। हम यह कह सकते हैं कि कोई कला कृति उस समय तक महान नहीं हो सकती जब तक कि कलात्मक प्रौढ़ता के साथ-साथ उसमें रचनात्मक पहलू न हो। लेकिन उसकी लेखनी पर उगली रखकर कभी यह नहीं कह सकते कि कला की दृष्टि से हममें कोई भील है या यह कि लेखक अपने सिद्धांता और मान्यताओं के प्रति निष्कपट नहीं।

—प्रकाश पण्डित

नया कानून

मगू कोचवान अपने अड्डे में बहुत अवलमद आदमी ^{सुम्मा} जाता था, हालांकि उनकी शिक्षा दूय के बराबर थी और उनमें कभी स्कूल का मुह भी नहीं देखा था। लेकिन इसके बावजूद, उसे दुनिया भर की बातों का पता था। अड्डे के वे भारे कोचवान, जिनकी यह जानने की इच्छा होती थी कि दुनिया के अंदर क्या हो रहा है, उस्ताद मगू की विस्तृत जानकारी से लाभ उठाने के लिए उसके पास जात थे।

पिछले दिना, जब उस्ताद मगू ने अपनी एक सवारी स स्पेन में जग छिड़ जान की अफवाह सुनी थी तो उसने गामा चौधरी के चौड़े कंधे पर थपकी देकर जानिया के स अंदाज में भविष्यवाणी की थी, 'देख लेना चौधरी थोड़े ही दिना में स्पेन के अंदर जग छिड़ जायेगी।'।

और जब गामा चौधरी ने उससे यह पूछा था कि यह स्पेन कहा पर है तो उस्ताद मगू ने बड़ी गम्भीरता से जवाब दिया था, 'विलायत में, और कहा ?'

स्पेन में जग छिड़ी और जब हर आदमी को इसका पता चला गया तो स्टेशन के अड्डे में जितने कोचवान घेरा बनाए हुक्का पी रहे थे, मन ही मन में उस्ताद मगू की 'महानता' स्वीकार कर रहे थे और उस्ताद मगू उस समय माल रोड की चमकीली सड़क पर तागा चलात हुए अपनी सवारी में ताजा हिंदू मुस्लिम फसाद पर 'विचार विनिमय' कर रहा था।

उस दिन गाम के करीब, जब वह अड्डे में आया तो उनकी चेहरा गैर-मामूली तौर पर तमतमाया हुआ था। हुक्के का दौर चलत चलते, जब हिंदू-मुस्लिम दंगे की बात छिड़ी तो उस्ताद मगू ने सिर पर से खाकी पगड़ी उतारी और बगल में दाबकर बड़े 'विचारका' के-मे अंदाज में कहा

'यह किसी पीर की बद दुआ का नतीजा है कि आए दिन हिंदुओं

और मुसलमाना मे चाबू छुरिया चलते रहते है और मैंने अपन बड़ी से सुना है कि अक्बर बादशाह ने किसी दरवेश का गिल दुखाया था और उम दरवेश ने जलकर यह बंद दुआ दी थी—जा, तरे हि दुस्तान मे हमेशा फसाद ही होत रह्ये। और देख लो जब स अक्बर बादशाह का राज खतम हुआ है हि दुस्तान मे फसाद पर फसाद होत रहत हैं।' यह कहकर उसने ठण्डी सास भरी और फिर टुकड़े का दम लगाकर अपनी बात कहनी शुरू की, 'ये कायेसी हि दुस्तान को आजाद कराना चाहत ह। मैं कहता हूँ अगर ये लोग हजार साल भी सर पटकते रहता कुछ न होगा। बड़ी मे बड़ी बात यह होगी कि अंग्रेज चला जाएगा और कोई इटलीवाला आ जाएगा, या वह स्म वाला, जिसके बारे मे मैंने सुना है कि बहुत तगटा आदमी है। लेकिन हि दुस्तान सदा गुलाम रहेगा। हा, मैं यह कहना भूल ही गया कि पीर न यह बंद दुआ भी दी थी कि हि दुस्तान पर हमेशा बाहर के आदमी राज करत रह्ये।'

उस्ताद मगू को अंग्रेजा स बड़ी नफरत थी। इस नफरत का कारण वह यह बतलाया करता था कि वे उसके हि दुस्तान पर अपना मिक्का चलाते हैं और तरह तरह के जुल्म डालते है। मगर उसकी नफरत की सबसे बड़ी बजह यह थी कि जावनी क गोरे उसे बहुत सताया करत थे। वे उसके साथ ऐसा बर्ताव करत थे जैसे वह एक जलील कुत्ता हो। इसके अलावा उसे उनका रंग भी बिलकुल पसंद न था। जब कभी वह किसी गोरे के मुख सफेद चेहरे को देखता तो उसे मतभी सी आ जाती न जान क्या। वह कहा करता था कि उनके गाल भुरिया भरे चेहरे देखकर उम वह लाश याद आ जाती है, जिसके जिस्म पर स ऊपर की भित्ती गल गलकर भड रही हो।

जब किसी शराबी गोरे से उसका झगडा हो जाता तो सारा दिन उसकी तन्त्रियत नाखुश रहती और वह गाम को अड्डे मे आकर लम्प मार्का मिगरे- पीते या हुक्के क बग लगाते हुए उस गोरे को जो भरके सुनाया करता।

मोटी सी गाली देने के बाद वह ढीली पगड़ी समेत अपन सिर को भटका देकर बहा करता था, आग लन आए थे, अब घर के मालिक

ही बन गए हैं। नाक म दम कर रखा है उन ब दरो की ओलाद ने। ऐसे रौब गाठते हैं, जैसे हम उनके बाबा के नौकर हैं।

इसपर भी उसका गुस्मा ठण्डा नहीं होता था। जब तक उसका कोई साथी उसके पाम बैठ रहा था, वह अपने सीन की आग उगलता रहता।

‘शफल देता हो न तुम उसकी जस कोड ही रहा हो। मिलकुल मुदार—एक धप्प की मार। और गिट पिट, गिट पिट यो बक रहा था, जैसे मार ही डालेगा। तरी जान की कसम, पहले पहल जी म आई कि साले की खोपड़ी के पुजे उड़ा दे, लेकिन इस खयाल से टाल गया कि इस मरदूद की मारना भी अपनी हतक है।’ यह कहते-कहते वह छोटी देर के लिए खामोश हो जाता और नाक का खाकी कमीज की आम्नीन से साफ करने के बाद फिर बड़बड़ाने लग जाता।

‘कसम है भगवान की, इन साठ साहबा के नाज उठात उठात तग आ गया हू। जब कभी इनका मनहूस चेहरा देखता हू रंग में छून लौलने लग जाता हू। फाई नया कानून-वानून बन तो इन लोगो से छुटकारा मिले। तरी कसम, जान मे जान आ जाए।’

और जब एक दिन उस्ताद मगू ने बचहरी से अपने ताग पर दो सवा रिया लादी और उनकी बाना मे उस पता चला कि हिंदुस्तान में नया कानून लागू होन वाला है तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

दो मारवाडी, जा बचहरी में अपने दीवानी के मुकदमे के सिरमिने में आये थे, वापस घर जात हुए नय कानून यानी ‘इण्डिया ऐक्ट’ के जार में बातें कर रहे थे।

सुना है कि पहली अप्रैल से हिंदुस्तान में नया कानून चलेगा ? क्या हर चीज बदल जाएगी ?

‘हर चीज तो नहीं बदलेगी, मगर कहते हैं कि बहुत कुछ बदल जाएगा और हिंदुस्तानिया की आजादी मिल जाएगी।’

‘क्या ब्याज के बारे में भी नया कानून पास होगा ?’

‘यह पूछने की बात है। बत किसी वकील से पूछें।’

उन मारवाडिया की बातचीत उस्ताद मगू के दिल में नावाबिले-बयान खुशी पैदा कर रही थी। वह अपने छोटे की हुमेगा गालिया देता

जब नत्थू गजा पगडी बगन म दशाए अड्डे मे दाखिल हुआ तो उस्ताद मगू बडकर उमन मिला और उमका हाथ अपने हाथ म लेकर कची आवाज म कहने लगा, 'ला हाथ इधर। ऐसी खबर सुनाऊ कि तेरा जी खुश हो जाए। तेरी इस गजी सोपडी पर बाल उग आए।'।

और यह कहकर मगू न बड मजे ले लेकर नये कानून के बारे मे अपने दोस्त से बातें शुरू कर दी। बातों के दौरान उसने कई बार नत्थू गजे क हाथ पर जोर स अपना हाथ मारकर कहा 'तू देखता रह, क्या बनता है। यह रुस वाला बादशाह कुछ न कुछ जरूर करके रहगा।'।

उस्ताद मगू मौजूदा मोवियत रुम की समाजवादी सरगर्मियों के बारे मे बहुत कुछ सुन चुका था और उसे वहा के नय कानून और दूसरी नई चीजें बहुत पसंद थी। इसीलिए उसने 'रुस वाले बादशाह' को 'इण्डिया ऐक्ट' यानी नये विधान के साथ मिला दिया और पहली अप्रैल को पुराने निजाम मे जा नई फेर बदल हान वाली थी, वह टम 'रुम वाले बादशाह' के असर का नतीजा समझता था।

कुछ असें से पशावर और दूसरे शहरा मे सुखपोशा (गपफार खा के सुदाई विदमतगारा) का आंदोलन चल रहा था। उस्ताद मगू ने उस आंदोलन का अपने दिमाग म 'रुम वाले बादशाह' और फिर नय कानून के साथ खन्न-मल्ल कर दिया था। इसके अनासा, जब कभी वह किसीसे मे सुनता कि 'अमुक' शहर मे इतने कम बनाने वाले पकड़े गए हैं या फता जगह इतने आदमियों पर बगावत के इल्जाम म मुकदमा चलाया गया है तो वह इन सारी घटनाओं को नये कानून की पूर्वभूचना समझता था और मन ही मन बहुत खुश होता था।

एक दिन उसके ताग मे बैठे दो बरिस्टर नय विधान की बहुत बड़ी आलोचना कर रहे थे और वह तामोशी स उनकी बातें सुन रहा था। उनम मे एब दूसरे स कह रहा था

'नये कानून का दूसरा हिस्सा फेडरेशन ह जो मेरी समझ म अभी तक नहीं आया। एमा फेडरेशन दुनिया की तारीख म आज तक न सुना, न देखा गया है। मियासी नजरिये से भी यह फेडरेशन बिल्कुल गलत है, बल्कि या कहना चाहिए कि यह फेडरेशन है ही नहीं।'।

उन बैरिस्टरों के बीच जो बातचीत हुई क्योंकि उसमें ज्यादातर शब्द अंग्रेजी के थे, इसलिए उस्ताद मगू सिर्फ ऊपर के जुमले को ही किसी कदर समझ पाया और उसने खयाल किया, य लोग हिंदुस्तान में नये कानून के आन को बुरा समझते हैं और नहीं चाहते कि इनका वतन आजाद हो। चुनावों इस खयाल के अन्तर्गत मगू उन दो बैरिस्टरों को हिंकारत की नजरों से देखकर मन ही मन कहा 'टोडा बच्चे'।

जब कभी वह किसीकी दबी जवान में 'टांडी बच्चा' कहता तो दिल में यह महसूस करके बहुत दुःख होता था कि उसने इस नाम का सही जगह इस्तेमाल किया है और यह कि उसमें शरीफ आदमी और टोंडी बच्चे में फर्क करने की 'योग्यता' है।

दस घण्टा के तीसरे दिन वह गवर्नमेण्ट कालेज के तीन विद्यार्थियों को अपने तांगे में बठाकर मजग आ रहा था कि उसने उन तीनों लड़कों को आपस में ये बातें करते सुना

नया कानून न मेरी उम्मीदें बढ़ा दी है। अगर साहब एसेम्बली के सम्मेलन हो गए तो किसी सरकारी दफ्तर में नौकरी जरूर मिल जाएगी।

बसे भी बहुत सी जगह और निकवेंगी। शायद इसी गडबड में हमारे हाथ भी कुछ आ जाए।

हां हा, क्यों नहीं।

वे बैकार ग्रेजुएट जो मार मार फिर रहे हैं, उनमें कुछ तो कभी होगी।'।

इस बातचीत ने उस्ताद मगू के दिल में नया कानून का महत्त्व और भी बढ़ा दिया और वह उसको ऐसी चीज समझने लगा, जो बहुत चमकती हो। 'नया कानून'। वह दिन में कई बार सोचता 'यानी कोई नयी चीज'। और हर बार उसकी नजरों में सामने अपने छोटे का वह नया माज आ जाता। उसने दो बारस हुए चौधरी मुदावरा से बड़ी अच्छी तरह ठोक बजाकर खरीदा था। उस माज पर जब वह नया था, जगह जगह लोह की निक्कन चढ़ी हुई कीर्नें चमकती थी और जहां जहां

पीतल का काम था वह तो सोने की तरह दमकता था। इस लिहाज से भी 'नये कानून' की चमकता दमकता होना जरूरी था।

पहली अप्रैल तक उस्ताद मगू ने नये विधान के पक्ष और विपक्ष में बहुत कुछ सुना। पर उसके बारे में जो खाका वह अपने मन में बना चुका था, उस वह बदल न सका। वह समझता था कि पहली अप्रैल का नये कानून के आते ही सब मामला साफ ही जाएगा और उसका विश्वास था कि उसके आने पर जो चीजें नजर आएंगी उनमें उसकी आखों को जरूर ठण्डक पहुंचेगी।

आखिर माच के इक्तीस दिन खत्म हो गए और अप्रैल के शुरू होने में रान के चंद खामोश घण्टे बाकी रह गए। मौसम आम दिनों की प्रतिक्रिया था और हवा में ताजगी थी।

पहली अप्रैल को सुबह सवेरे उस्ताद मगू उठा और अस्तबल में जाकर उसने तागे में घोड़े को जोता और बाहर निकल गया। उसकी तबियत आज असोधारण रूप से प्रमत्त थी। वह आज नये कानून को देखने वाला था।

उसने सुबह के सद धुधलके में कई तग और खुले बाजारों का चक्कर लगाया मगर उसे हर चीज पुरानी नजर आई। आसमान की तरह पुरानी उसकी निगाह आज खास तौर पर नया रंग देखना चाहती थी, पर सिवाय उस बलगी के, जो रंग विरंगे परास बनी थी और उसके धांडे के सिर पर जमी हुई थी, बाकी सब चीजें पुरानी नजर आती थी। यह नयी बलगी उसने नये कानून की खुशी में इक्तीस माच को चौधरी खुदाबगश से साढ़े चौदह आने में सरादी थी।

घोड़े की टापो की आवाज, बाली सड़क और उसके आसपास थाड़ा-थोड़ा फासला छोड़कर लगाए हुए बिजली के खम्भे, दुकानों के घोड़े, उसके घोड़े के गले में पड़े हुए घुघर्रा की झनझनाहट, बाजार में चलते-फिरते आदमी—इनमें से कौन सी चीज नयी थी? जाहिर है कि कोई भी नहीं। लेकिन उस्ताद मगू निराश नहीं हुआ।

अभी बहुत सवेरा है। दुकानें भी तीसवकी सब बंद हैं। इस खयाल में उस तसवीन दी। इसके अलावा, वह यह भी सोचता था, 'हाई

कोट में तो नौ बजे के बाद ही शाम घुब होता है। अब इससे पहले नया कानून क्या नजर आएगा ?'

जब उसका तागा गवनमेण्ट कालेज के दरवाजे के करीब पहुँचा तो कालेज के घड़ियाल न बड़े घमण्ड से नी बजाए। जो विद्यार्थी कालेज के बड़े दरवाजे से बाहर निकल रहे थे, सुन-गोस थ, पर उस्ताद मगू को न जाने क्या उनके कपड़े मले मँल स नार आए। 'गायद इसका कारण यह था कि उसकी निगाह आज आरतो को चौंधिया देने वाले रिमी जलवे का इतजार कर रही थी।

ताग को दायें हाथ मोडार वह छोड़ी देर के बाद फिर घनारवनी में चला आया। बाजार की आधी दुकानें खुल चुकी थी और अब लोमा की आमद रफ्त भी बड़ गई थी। हलवाई की दुकाना पर पाहका की सूब भीड़ लगी थी। मनिहारी वाला की नुमायशी चीजें शीशे की झलमारिया में से लोगों को अपनी ओर खींच रही थी और बिजली के तारा पर बई कबूतर आपस में लड भगड रहे थे, पर उस्ताद मगू के लिए इन तमाम चीजा में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह नय कानून को देखना चाहता था, ठीक उसी तरह जिस तरह कि वह अपने घोड़े को देख रहा था।

जब उस्ताद मगू के घर बच्चा पदा होने वाला था तो उसने चार पाच महीने बड़ी वैचैनी में गुजारे थे। उसको विश्वास था कि बच्चा किसी न किसी दिन जल्द पैदा होगा। पर वह इतजार की घड़िया नहीं काट सकता था। वह चाहता था कि अपने बच्चे को सिर्फ एक नजर देख ले। इसके बाद वह पत्ता होता रहे। चुनावे इसी भर मगलूब इच्छा के सहित उसने कई बार अपनी बीमार बीबी के भट को दवा दवाकर और उसके ऊपर कान रख रखकर अपने बच्चे के बारे में कुछ जानना चाहा था। पर वह नाकाम रहा था। एक बार तो वह इतजार करते करते इतना तग आ गया था कि अपनी बीबी पर चरम भी पडा था।

'तू हर वक्त मुर्दे की तरह पड़ी रहती है। उठ और जरा चल फिर, तरे अगो में थोड़ी सी ताकत तो आए। या तरता बन रहने से कुछ नहोगा। तू समझती है कि इस तरह लटे तेटे बच्चा जन देगी ?'

उस्ताद मगू तबियत में बहुत जल्दयाज था। वह हर चीज का

असली रूप देखने के लिए न सिर्फ इच्छुक था, बल्कि उसे खोजता भी रहता था। उसकी बीबी गंगादेई उसकी इन किम्मे की बकगारिया की देखकर ग्राम तीर पर यह कहा करती थी, 'अभी बुझा खोदा ही नहीं गया और तुम प्यास से बेहाल हो रह हो।'।

बुझ भी हो, पर उस्ताद भगू नये कानून के इतजार में इतना बेचैन नहीं था जितना कि उसे अपनी तबियत के लिहाज में होना चाहिए था। वह आज नये कानून को देखने के लिए घर से निकला था, ठीक उसी तरह, जस वह गांधी या जवाहरलाल के जुलूम को देखने के लिए निकलता था।

नेताजी की महानता का अनुमान उस्ताद भगू हमेशा उनके जुलूस के हुगामा और उनके गले में डाली हुई फूलों की मालाओं से किया करता था। अगर कोई रीडर गेंद के फूलों से लदा हो तो उस्ताद भगू के नजदीक वह बड़ा आदमी था और जिस नेता के जुलूस में भीड़ की वजह से दो-तीन दगे होते होते रह जाते, वह उसकी नजर में और भी बड़ा था। अब नये कानून को वह अपने जेहन के इसी तराजू में तोलना चाहता था।

ग्रनारवली से निकलकर, वह माल रोड की चमकीली सड़क पर अपने हाथों को धीरे धीरे चला रहा था कि मोटरों की दुकान के पास उसे छावनी की एक मवारी मिल गई। किराया तय करने के बाद उसने अपने घोड़े को चाबुक दिखाया और मन में सोचा, 'चला यह भी अच्छा हुआ।' गांवदे छावनी से ही नये कानून का कुछ पता चल जाय।'।

छावनी पहुंचकर उस्ताद भगू ने मवारी को उसकी मजिल पर उतार दिया और जेब में सिगरेट निकालकर दायाँ हाथ की आखिरी दा उगलिया में दबाकर सुनगाया और पिछली सीट के गद्दे पर बैठ गया।

जब उस्ताद भगू को किंगी मवारी की तलाश नहीं होती थी या उस किंगी बीना हुई घटना पर गौर करना होता तो वह ग्राम तीर पर ग्रनली सीट छोड़कर पिछली सीट पर बैठ जाता और बड़े इरमीनान से अपने घोड़े को लगाम दायाँ हाथ के गिद नपेट लिया करता था। ऐसे अंगरा पर उठावा घोड़ा घोड़ा सा हिज्जिनाने के बाद बड़ी धीमी चाल

चलना शुरु कर देता था, मानी उसे कुछ दूर के लिए भाग दौड़ से छुट्टी मिल गई हो।

घोड़े की चाल और उस्ताद मगू के दिमाग में खयालों की आमद बहुत सुस्त थी जिस तरह घोड़ा धीरे धीरे बंदम उठा रहा था उमी तरह उस्ताद मगू के जेहन में नये बानून के बारे में नये अनुमान दाखिल ही रहे थे।

वह नये बानून के आने पर म्यूनिसिपल कमिटी से तागा के नम्बर मित्रों के तरीके पर गौर कर रहा था और इस गौर-तत्तव बात की नये बिधान की रोशनी में देखने की कोशिश कर रहा था। वह इसी सोच-विचार में डूबा था जब उसे ऐसा लगा जैसे किसी सवारी ने उसे बुलाया है। पीछे पलटकर देखने पर उसे सड़क के उम पार दूर बिजली के तम्बे के पाम एक गोरा सड़ा नजर आया, जो उसे हाथ के इशारे से बुला रहा था।

जैसा कि कहा जा चुका है उस्ताद मगू को गोरा स बेहद नफरत थी। जब उसने अपनी नई सवारी को गोरे के रूप में देखा तो उसके मन में नफरत के भाव जाग उठे। पहले तो उसने जी में आई कि बिलकुल ध्यान न दे और उसका छोड़कर चला जाय, पर बाद में उसकी खयाल आया कि इनके पसे छाड़ना भी बेवकूफी है। कलगी पर जो मुफ्त में साठे चौदह आने तक कर दिए हैं इनकी जेब ही से वसूल करने चाहिए। चली चलत है।

खाली सड़क पर बड़ी सफाई में तागा मोड़कर उसने घाड़े को चातुक दिखाया और पलक भपकते ही वह बिजनों के खम्बे के पाम पहुंच गया। घोड़े की लगाम खींचकर उसने तागा ठहराया और पिछली सीट पर बैठे बैठे गोरे से पूछा

‘साहब बहादुर कहा जाना मांगता है?’

इस सवाल में गजब का तजिया (व्यंग्य भरा) अंदाज था। साहब बहादुर बहुत समय उसका ऊपर का मूछो भरा हाठ नीचे की ओर गिंच गया और पाम ही गाल की इस तरफ जो मद्धिम सी लकीर नाक के नयन स ठोड़ी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कनकपी के

साथ गहरी हो गई, जसे किसीन नोकीले चाबू से शीशम की सागली लकड़ी में धार-भी डाल दी हो। उसका सारा चेहरा हम रहा था और अपन अदर उसने उस गोरे को सीने की आग में जलाकर राख कर डाला था।

जब गोर ने, जो बिजली के खम्भे की ओट में हना का रूप बचाकर सिगरेट सुलगा रहा था, मुड़कर तागे के पायदान की तरफ बंदम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मगू की गोर उसकी निगाहें चार हुइ और ऐसा लगा कि एकसाथ आनन सामने की बटूका से गोलिया निकली और आपस में टकराकर, आग का एक जगना बनकर, ऊपर का उड़ गई।

उस्ताद मगू जो अपने दायें हाथ से लगाम के बत सालकर तागे से नीचे उतरने वाला था, अपन सामन सडे गोरे को यू देख रहा था जैसे वह उसके बजूद के जरें जरें को अपनी निगाहा से चबा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी नीली पतलून पर स अनदानी चीजें भाड़ रहा था जैसे वह उस्ताद मगू के इस हमले से अपने बजूद के कुछ हिस्स बचा लेने की कोशिश कर रहा हो।

गोरे ने सिगरेट का धुआ निगलने हुए कहा, 'जाना भागटा या फिर गडबड करगा ?'

'वही है।' य शब्द उस्ताद मगू के दिमाग में पदा हुए और उसकी बीड़ी छाती के अदर नावने लगे। 'वही है' उसन य शब्द अपन मुह के अदर दाहराय और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा, जो उसके सामन एडा था, वही है जिसमे पिछले वरस उसको भडपहुई थी और उस खाहमवाह के भगडे में जिनकी वजह गोरे के दिमाग में चटी हुई शराब थी उस लाचार होकर बहुत-सी बातें सहनी पडी थी। उस्ताद मगू न गोर का दिमाग दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उडा दिए होते, पर वह किसी खास कारण से चुप हो गया था। उसकी पता था, इस तरह के भगडों में अदालत का नजला आम तौर पर कोचवाना पर ही गिरता है।

उस्ताद मगू ने पिछले वरस की लडाई और पहली अप्रैल के नय कानून पर गौर करते हुए गोर से पूछा, 'वहा जान भागटा है ?' उस्ताद मगू के लहजे में चाबुक जैसी तंजी थी।



चलना शुरू कर देता था, मानो उसे कुछ देर के लिए भाग दौड़ से छुट्टी मिल गई हो।

घोड़े की चाल और उस्ताद मगू के दिमाग में सयालो को आमद बहुत सुस्त थी जिस तरह घोड़ा धीरे-धीरे बंदम उठा रहा था उसी तरह उस्ताद मगू के जेहन में नय बानून के चार में नये अनुमान दाखिल हो रहे थे।

वह नय बानून के आने पर म्यूनिसिपल कमेटी से तागो के नम्बर मिलने के तरीके पर गौर कर रहा था और इस गौर-तलब बात को नय विधान की रीसनी में देखने की कोशिश कर रहा था। वह इसी सोच-विचार में डूबा था, जब उसे ऐसा लगा जस किसी सवारो न उसे बुलाया है। पीछे पलटकर देखन पर उसे सड़क के उस पार दूर बिजली के खम्भे के पाम एक गौरा खड़ा नजर आया, जो उसे हाथ के इशारे से बुला रहा था।

जैसा नि कहा जा चुका है उस्ताद मगू की गोरा से बहद नफरत थी। जस उसने अपने नई सवारो की गोरे के रूप में देखा तो उसके मन में नफरत के भाव जाग उठे। पहले तो उसके जो में आई कि विल-कुल ध्यान न दे और उसको छोटकर चला जाय, पर बाद में उसको सयाल आया कि इनके पम छोड़ना भी बेवजूसी है। कलगी पर जो मुफ्त में साढ़े चौदह आने खच कर दिए हैं इनको जेब हो से बसूल करने चाहिए। चलो चलत हैं।

सयालो सड़क पर बड़े सफाई से तागा मोड़कर उसने घोड़े को चानुक दिखाया और पनक झपकते हो वह बिजनी के खम्भे के पास पहुंच गया। घोड़े की लगाम खाचवर उसने तागा ठहराया और पिछनी सीट पर बैठे बैठे गोरे स पूछा

साहब बहादुर कहा जाना मायता है ?

इस सवाल में गजब का तजिया (ब्यग्य भरा) अदाज था। 'साहब बहादुर' कहते समय उसका ऊपर का मूछो भरा होठ नीचे की ओर बिच गया और पाम ही गाल की इस तरफ जो मडिम मी लकीर नान के नयून स ठोड़ी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कपकपी।

साथ गहरी हो गई, जैसे किसीने नोकिले चाकू से शीशम की मावली लकड़ी में धार-सी डाल दी हो। उसका सारा चेहरा हस रहा था और अपने अंदर उसने उम गोरे की सीने की आग में जलाकर राख कर डाला था।

जब गोर ने, जो बिजली के खम्भे की ओट में हवा का ग्ल बचाकर सिगरेट सुनगा रहा था, मुड़कर ताने के पायदान की तरफ बंदम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मगू की ओर उसकी निगाह चार हुई और ऐसा लगा कि एकसाथ आमन मामन की बंदूक से गोलीया निकली और आपस में टकराकर, आग का एक बगूना बनकर, ऊपर की उड़ गई।

उस्ताद मगू, जो अपने दायें हाथ से लगाम के बग खोलकर ताने से नीचे उतरने वाला था, अपने सामने खड़े गोर का यूँ देख रहा था जैसे वह उसके बजूद के जर्जरों को अपनी निगाह से चबा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी नीली पतलून पर से अनदमी चौड़े भाड़ रहा था जैसे वह उस्ताद मगू के इस हमले से अपने बजूद के कुछ हिस्से बचा लेने की कोशिश कर रहा हो।

गोरे ने सिगरट का धुआँ निगलत हुए कहा, जाना मागटा या फिर गडबड करेगा ?'

वही है। ये शब्द उस्ताद मगू के दिमाग में पैदा हुए और उसकी चौड़ी छाती के अंदर नाचने लग। 'वही है' उसने ये शब्द अपने मुँह के अंदर दाहराये और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा जो उसके सामने खड़ा था वही है जिसमें पिछले वरस उसकी भड़प हुई थी और उस साहमखाह के भगडे में जिसकी बजह गोर के दिमाग में खड़ी हुई गिराय थी, उस लाचार होकर बहुत-सी बातें सटनी पड़ी थी। उस्ताद मगू ने गोरे का दिमाग दुस्त कर दिया होता, वन्कि उसके पुर्जे उठा दिए होते, पर वह किसी खास कारण से चुप हो गया था। उसको पता था, इस तरह के भगडा में मदालत का नजला आम तौर पर बोचबाला पर ही गिरता है।

उस्ताद मगू ने पिछले वरस की लम्बाई और पहली अप्रैल के नये कानून पर गौर करत हुए गोरे में पूछा, 'कहा जान मागटा है ?' उस्ताद मगू के सहजे में चाबुक जैसी तंजी थी।

गोरे ने जवाब दिया — 'हीरा मण्डी ।'

'किराया पाच रुपये होगा ।' उस्ताद मगू की मूर्छें थरथराइ ।

यह सुनकर गोरा हैरान हो गया । वह चिल्लाया, 'पाच रुपये । क्या टुम ?'

'हा-हा, पाच रुपये ।' यह कहते हुए उस्ताद मगू के बाला भरे दाहिने हाथ न भिचकर एक भारी घूस का रूप ले लिया । 'क्यों, जात हो या चेकार बातें बनाओगे,' उस्ताद मगू का लहजा और भी ज्यादा सरन हो गया ।

गोरा पिछले वय की घटना का खयाल करके उस्ताद मगू के सीने की चौड़ाई नजरदान कर चुका था । वह सोच रहा था — इसकी खोपड़ी फिर खजला रही है । हाँसला बगाने जाने इस खयाल के तहत वह नाग की ओर अकड़कर बढ़ा और अपनी छड़ी से उसन उस्ताद मगू को ताने से नीचे उतरन का इशारा किया ।

बैठ की वह पालिंग की हुई पतली सी छड़ी उस्ताद मगू की मोटी रान के माथ दीन्तान बार छुई । उसने खड़े खड़े नाटे बंद के गौर का ऊपर से नीचे देखा जैसे वह अपनी निमाहा के भार ही स उसे पीस डानना चाहता हो । फिर उसका घूसा, कमान में तीर की तरह ऊपर को उठा और पनक भपकते ही गोरे की ठाडो के नीचे जम गया । धक्का देकर उसन गोरे को परे हटाया और नीचे उतरकर उस धडाबड पीटना शुरू कर दिया ।

गोरा हक्का बक्का रह गया और उसन इतर उधर सिमटकर उस्ताद मगू के वजनी घसा से बचन की कोशिश की और जब देखा कि उस्ताद मगू की हालत पागलो सी हो गई है और उसकी आखा से अगान बरस रहे हैं तो उसन जोर जोर म चिल्लाना शुरू किया । उस चीख पुकार न उस्ताद मगू की बाहा का काम और भी तेज कर दिया । वह गार की जो भरके पीट रहा था और साथ साथ यह कहता जाना था

'पहली अप्रैल को भी वही अकड़ फू पहली अप्रैल को भी वही अकड़ फू अत्र हमारा राज है प्रच्चा ।

लोग जमा हो गए और पुलिस के दो सिपाहिया ने बन्ने मुदकिल से

गोरे को उस्ताद मगू की पकड़ से छुड़ाया। उस्ताद मगू उन दो सिपाहियों के बीच खड़ा था। उसकी चौड़ी छाती फूनी हुई सास की बजह में ऊपर-नीचे हो रही थी। मुंह से भाग बह रहा था और अपनी मुस्कराती हुई आवाज से हैरतजदा भीड़ की तरफ देखकर वह हाफती हुई आवाज में कह रहा था

‘वो गिन गुजर गए, जब खलील सा फाटना उड़ाया करते थे। अब नया कानून ह मिया, नया कानून !’

और बेचारा गोरा अपने बिगड़े हुए चेहरे के साथ, बेवकूफी की तरह, कभी उस्ताद मगू की तरफ देखता था और कभी भीड़ की तरफ।

उस्ताद मगू को पुलिस के सिपाही थाने में ले गए। रास्ते में और थाने के अंदर कमरे में वह ‘नया कानून, नया कानून’ चिल्लाता रहा, पर किसीने एक न सुनी।

‘नया कानून, नया कानून क्या बक रहे हो ! कानून वही है—पुराना !’ और उससे हवालात में बंद कर दिया गया।

खुशिया

खुशिया सोच रहा था।

बनगारी ने काले तम्बाकू वाला पान लेकर वह उसकी दुकान के साथ उस पत्थर के चबूतरे पर बैठा था जो गिन के बक्क टायर और माटर के मुक्तनिष् पुर्जों में भरा होता है। रान को साढ़े आठ बजे के करीब माटर के पुर्जों और टायर बेचने वाला की यह दुकान बंद हो जाती है और यह चबूतरा खुशिया के लिए खाली हो जाता है।

वह काले तम्बाकू वाला पान धीरे धीरे चबा रहा था और सोच रहा था। पान की गाढ़ी तम्बाकू मिली पीक उसके दाता की रीखा से निकलकर उसके मुह में धर उधर किसल गयी थी और उसे एसा लगता था कि उसके खयाल, दातो नने पिमकर, उनकी पीक में घुल रहे हैं। शायद यही वजह है कि वह उस फेंकना नहीं चाहता था।

खुशिया पान की पीक मुह में गुनगुना रहा था और उस घटना के बारे में सोच रहा था, जो उसके साथ अभी अभी घटी थी, यानी आध घण्टे पहले।

वह उस चबूतरा पर रोज की तरह बैठन से पहले सेतवाड़ी की पाचवी गली में गया था। मगलौर में जो नई छावनी बाना आई थी, उसी गली के नुक्कड़ पर रहती थी। खुशिया से किमीन रहा था कि वह अपना मकान बदल रही है इसीलिए वह इसी बान का पता लगाने के लिए वहां गया था।

बाना की मोली का दरवाजा उसने खटखटाया। अंदर से आवाज आई, 'कौन है?'

इसपर खुशिया ने कहा 'मैं, खुशिया।'

आवाज दूसरे कमर से आई थी। थोड़ी देर के बाद दरवाजा खुला। खुशिया अंदर दाखिल हुआ। जब बाना ने दरवाजा अंदर से बंद किया

सब खुशिया ने मुडकर देखा। उसकी हैरत की कोई इतहा न रही, जब उसने काता की बिलकुल नगी देखा। बिलकुल नगी ही समझो, क्योंकि वह अपने भ्राता की सिफ एक तोलिय स छिपाए हुए थी। छिपाए हुए भी तो नहीं कहा जा सकता क्याकि छिपाने की जितनी चीजें होती हैं वे तो सब की सब, खुशिया की चकित आखा के सामन थी।

‘कहो खुशिया बस घ्राए ? मैं बस अब नहाने ही वाली थी। बँठो-बँठो बाहर वाले स अपने लिए चाय के लिए तो कह आए होत जानत तो ही वह मुझा रामा यहा स भाग गया है।’

खुशिया जिसकी आता न बभी औरत को यू अचानक नगा नही देखा था, वह घबरा गया। उसकी समझ म न आता था कि क्या कहे। उसकी निगाह, जो एकदम नग्नता स चार हो गई थी अपने आपको बही छिपाना चाहती थी।

उमन जरदी जल्दी सिफ इतना कहा, ‘जाओ जाओ तुम नहा लो। फिर एक्कम उनकी जवान खुल गई, ‘पर जब तुम नगी थी ता दरवाजा खोलने की क्या जरूरत थी ? अदर स कह दिया होता मैं फिर आ जाता लकिन जाओ तुम नहा लो।’

काता मुस्कराई, ‘जब तुमने कहा—खुशिया है तो मैंने सोचा क्या हज है अपना खुशिया ही तो है आन दो

202

कान्ता की यह मुस्कराहट अभी तब खुशिया के दिलो दिमाग म तैर रही थी। इस वक्त भी काता का नगा जिस्म मोम के पुतले की तरह उसकी आखो के सामन खड़ा था और पिघल पिघलकर उसके अदर जा रहा था।

उसका जिस्म सुंदर था। पहली बार खुशिया की मालूम हुआ था कि जिस्म बेचन वाली औरतें भी ऐना सुडोल वदन रखती हैं। उसको इस बात पर हैरत हुई थी, पर सबसे ज्यादा ताज्जुब उस इस बात पर हुआ था कि नग घडग वह उसके सामने खड़ी हो गई और उसको लाज तक न आई—

इसका जवाब काता ने यह दिया था—

‘जब तुमने कहा, खुशिया

है तो मैंने सोचा, क्या हज है अपना मुशिया ही तो है आन दो ।'

का ता और खुगिया एक ही पक्षे म शरीक थे । वह उसका दलाल था, इस लिहाज से वह उसीका था पर यह कोई वजह नहीं थी कि वह उसके सामन नगी हो जाती । बाई खास बात थी । काता न जो बात कही थी उसमे खुगिया कोई और ही मनलव कुरेद रहा था ।

यह मतलब एक ही वक्त इतना साफ और धुधला था कि खुशिया किसी खास नताजे पर नहीं पहुच सका था । उस समय भी, वह काता के नगे जिस्म का दस रहा था, जो ढाल के ऊपर मड़े हुए चमड़े की तरह तना हुआ था—उसकी लुढ़कती हुई निगाहा से बिलकुल बेपरवाह । कई बार अचरज की हालत में भी उसने उसके सावने मलने बदन पर टोह लेने वाली निगाह गाड़ी थी पर उसका एक रोमा भी न कपकपाया था । बस, वह ऐसे सावले पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ी रही, जो एहसास-रहित हो ।

भइ एक मद उसके सामने खड़ा था—मद, जिसकी निगाह कपड़ों में भी औरत के जिस्म तक पहुच जाती है और जो परमात्मा जाने, खयाल-ही खयाल में जाने कहा कहा पहुच जाता है । लेकिन वह जरा भी न घबराई और उसकी आँखें ऐसा समझ ली कि अभी लापट्टी से धुलकर आई है उसको थोड़ी सी लाज तो आनी चाहिए थी । जरा सी खुर्ची तो उसकी आँखों में पैदा होनी चाहिए थी । मान लिया, कस्वी श्री, पर कस्विया यूँ नगी तो नहीं खड़ी हो जाती ।

दस बरस उस दलाली करते ही गए थे और इन दस बरसों में वह पेशा कराने वाली लड़कियों के सारे भेदों से बाकिफ हो चुका था । मिसाल के तौर पर, उसे यह मालूम था कि पापघोनी के आखिरी सिरे पर जी छोकरी एक नौजवान लड़के को भाई बनाकर रहती है इसलिए 'अल्लूत क्या' का रिवाज—कहने करना मूरख प्यार प्यार प्यार—अपने टूटे हुए बाजे पर बजाया करती है कि उसे अशोक कुमार से बुरी तरह इश्क है । कई मनचने लौण्डे, अशोक कुमार से उसकी मुनाकात कराने का भासा देकर अपना उल्लू सीधा कर चुके थे । उसे यह भी मालूम था कि दादर में जो पजाबिन रहती है सिर्फ इसलिए कोट पतलून पहनती है

कि उसके यार न उससे कहा था कि तेरी टांगें तो बिलकुल उस अग्रेज ऐक्ट्रेस की तरह हैं, जिसने 'गराको' उफ 'खून-तमना' में काम किया था। यह फिल्म उसने कई बार देखी और जब उसके यार ने कहा कि मालिन डीट्रिच इसलिए पतलून पहनती है कि उसकी टांगें बहुत खूबसूरत हैं और उसने उन टांगा का दो लाख का बीमा करा रखा है तो उसने भी पतलून पहननी शुरू कर दी, जो उसके नितम्बों में बहुत फमकर आती थी और उसे यह भी मालूम था कि मजगाव वाली दक्षिणी छोकरी सिर्फ इस लिए कालेज के खूबसूरत लौण्डो को फासती है कि उसे एक खूबसूरत बच्चे की मा बनने का शौक है। उसको यह भी पता था कि वह कभी अपनी इच्छा पूरी न कर सकेगी इसलिए कि वाक है और उस काली मद्रासिन को वाकत जो हर ममय बाना में हीरे को छुटिया पहन रहती थी, उसे यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि उसका रंग कभी गोरा नहीं होगा और वह उन दवाआ पर बेकार रुपया खर्च कर रही है जो वह आए दिन खरीदती रहती है।

उसको उन सभी छोकरीयों के अदर-बाहर का हाल मालूम था जो उसके पक्ष में शामिल थी। मगर उसको यह खबर न थी कि एक दिन काता कुमारी, जिसका असली नाम इतना मुश्किल था कि वह उम्र भर याद नहीं कर सकता था उसके सामने नगी खड़ी हो जाएगी और उसको त्रिदगी व सबसे बड़ ताज्जुब से दो चार कराएगी।

सोचत सोचत उसके मुह में पान की पीक इस कदर जमा हो गई थी कि अब वह मुश्किल से छालिया क उन नह नह रेजो को चबा सकता था, जो उसका दाता की सीखा में से इधर उधर फिमलकर निकल जाते थे। उसके तंग भाये पर पसीने की नही-नही बूँदें उभर आई थी जम मल-मल में पनीर की धीरे से दवा दिया गया हो। जब-जब वह काता के नंग जिस्म की अपनी कल्पना में देखता था, उसकी मर्दानगी की धक्का सा पहुंचता था। उसे महसूस होता था जैसे उसका अपमान हुआ है। एकदम उसने अपने मन में कहा—भई, यह बेइज्जती नहीं है तो क्या है यानी एक छोकरी नंग घडग तुम्हारे सामने खड़ी हो जाती है और कहती है इसमें हज ही क्या है तुम खुशिया ही ती हो खुशिया न

हुआ, साला वह बिल्ला हो गया, जो उसके विस्तर पर हर समय ऊबता रहता है और क्या।

अब उसे विश्वास होना लगा कि सचमुच उसका अपमान हुआ है। वह मद था और अनजान ही उसको इस बात की आशा थी कि औरतें, चाहे शरीफ हा चाहे बाजारू, उसको मद ही समझेंगी और उसके और अपन बीच वह पर्दा कायम रखेंगी जो एक मुद्दत से चला आ रहा है। वह तो सिर्फ यह पता लगाने के लिए कान्ता के यहाँ गया था कि वह कब तक मकान बदल रही है और कहा जा रही है। कान्ता के पास उसका जाना बिलकुल विजनस से सम्बन्धित था। अगर खुशिया कान्ता के बारे में सीचता कि जब वह उसका दरवाजा खटखटाएगा तो वह अदर क्या कर रही होगी तो उसकी कल्पना में ज्यादा से ज्यादा इतनी ही बातें आसकती थी

—मिर पर पट्टी बांधे लेटी होगी।

—बिल्ले के बालों से पिस्सू निकाल रही होगी।

—उस बाल-सफा पाउडर से अपनी धमला के बाल उड़ा रही होगी, जो इतनी दास मारता था कि खुशिया की नाक वर्दास्त नहीं कर सकती थी।

—पलग पर अकेली बैठी तास फलाए पेश-स खेलने में मशगूल होगी।

बस इतनी चीजें थी, जो उसके दिमाग में आती। घर में वह किसीको रखती न थी इसलिए उस बात का खयाल ही नहीं आ सकता था। पर खुशिया न तो यह सोच ही न था। वह तो काम से कहा गया था कि अच्छा नव काता—यानी कपड़े पहनने वाली काता—मतलब यह कि वह कान्ता, जिसको वह हमेशा कपड़ा म दखा करता था उसके सामने बिलकुल लगी खड़ी हो गई—बिलकुल नगी ही समझो, क्योंकि एक छोटा सा तोलिया सब कुछ तो छिपा नहीं सकता। खुशिया को यह दृश्य देखकर ऐसा महसूस हुआ था जैसा छिलवा उसके हाथ में रह गया है और बेले का गूदा बिछनकर उसके सामने आ गिरा है। नहीं उसे कुछ और ही महसूस हुआ था जैसे

वह मुद नगा हो गया है। अगर बात यही तक खरम हो जाती तो कुछ भी न होता। खुशिया अपनी हैरत को किसी न किसी हीले से दूर कर देता। मगर यहाँ मुनीबत यह आन पड़ी थी कि उस लोण्डिया ने मुस्करा

कर कहा था जब तुमने कहा खुशिया है तो मैंने सोचा, अपना खुशिया ही तो है आन दो वस यही बात उसे खाए जा रही थी।

साली मुस्करा रही थी ' वह बार बार बड़बड़ाता। जिस तरह कातानगी थी उसी तरह उसकी मुस्कराहट खुशिया को नगी नजर आई थी। यह मुस्कराहट ही नहीं, उस काता का जिम्मा भी इस हद तक नगा दिखाई दिया था जैसे उसपर रदा फिरा हुआ हो।

उस बार बार वचन व व दिन याद आ रहा था जब पड़ोस की एक औरत उससे कहा करती थी, 'खुशिया बेटा जा दौड़कर जा, यह बाल्टी पानी से भर ला। जब वह बाल्टी भरकर लाया करता था तो वह धोती से बनाए हुए पदों के पीछे से कहा करती थी, 'अंदर आकर मेरे पास रख द। मैं मुह पर साबुन मला हुआ है। मुझे कुछ सुभाई नहीं देता। वह धोती का पदा हटाकर बाल्टी उसके पास रख दिया करता था। उस समय साबुन की भाग में निपटी हुई नगी औरत उस नजर आती थी पर उसके मन में किसी तरह की उथल पुथल पदा नहीं होती थी।

'भई मैं उस समय बच्चा था। बिल्कुल भोला भाला। बच्चे और मद में बहुत फर्क होता है। बच्चा स कौन पदा करता है। मगर अब तो मैं पूरा मद हू। मरी उम्र इस बच्चा लगभग अट्ठाईस बरस की है और अट्ठाईस बरस के जवान आदमी के सामने तो कोई बूढ़ी औरत भी नगी खड़ी नहीं होती।'

कान्ता ने उस क्या समझा या ? क्या उसमें वे सारी बातें नहीं थी, जो एक नौजवान मद में होती हैं ? इसमें कोई शक नहीं कि वह काता को एकाएक नग घड़ग देखकर बहुत घबरा गया था लेकिन चोर निगाहों से क्या उसने काता की उन चीजा का जायजा नहीं लिया था, जो रोजाना इस्तमाल के बावजूद असली हालत पर कायम थी। क्या चकित रह जान के बावजूद, उसके दिमाग में यह खयाल नहीं आया था कि दस रुपये में काता बिल्कुल महंगी नहीं और दशहरे के दिन बक का वह बाबू जो दो रुपये की रिमायत में मिलने पर वापस चला गया था, बिल्कुल गथा था ? और इन सबके ऊपर, क्या एक क्षण के लिए उसके सारे पुटों में एक अजीब किस्म का तनाव नहीं पैदा ही गया था ? और

उसने एक एमी अगडार्ड नहीं लेनी चाही थी, जिससे उसकी हड्डियां तब चटपट लगें ? फिर क्या बजह थी कि मंगलौर की उस सावली छोकरी ने उमको मद न समझा और सिर्फ सिर्फ खुशिया समझकर उसको अपना सब कुछ दान दिया ?

उमने गुस्से में आकर पान की गाढ़ी पीक थूक दी, जिसने फुटपाथ पर कई बल टूट बा दिया। पीक थूककर वह उठा और ट्राम में बैठकर अपने घर चला गया।

घर में उसने नहा धाकर नई धोती पहनी। जिस बिल्डिंग में वह रहता था उसकी एक दुकान में सैलून था। उमके अंदर जाकर उसने आइने के सामने अपने वाता में कधी की। फिर एकाएक कुछ सवाल आया तो वह कुर्सी पर बैठ गया और बड़ी गम्भीरता से उसने नाई से दाढ़ी मूड़ने के लिए कहा। आज चूँकि वह दूसरी बार दाढ़ी मुड़वा रहा था, इसलिए नाई ने कहा, 'अर भाई खुशिया, भूल गए क्या ? सुबह मैंने ही तो तुम्हारी दाढ़ी मूड़ी थी।'।

इसपर खुशिया ने बड़ी शान से दाढ़ी पर उल्टा हाथ फेरते हुए कहा, 'खूटी अच्छी तरह नहीं निकली।'।

अच्छी तरह खूटी निकलवाकर और चेहर पर पाउडर मलवाकर, वह सैलून से बाहर निकला। सामने टैक्सी का अड्डा था। बम्बई के खास अंदाज में उमने शी शी करके एक टैक्सी ड्राइवर को अपनी आर आकृष्ट किया और उगली के इशारे से उसे टैक्सी लाने के लिए कहा।

जब वह टैक्सी में बैठ गया तो ड्राइवर ने घूमकर उससे पूछा, 'कहाँ जाना है साव ?'

इन चार शब्दों ने और खास तौर पर 'साव' शब्द ने खुशिया को सचमुच खुश कर दिया। मुस्कराकर उसने बड़े दोस्ताना लहजे में जवाब दिया बताएंगे। पहले तम आपरा हाउस की तरफ चलो—लेमिंगटन रोड में हाते हुए समझे ?

ड्राइवर ने मोटर की लाल भण्डी का सिर नीचे दबा दिया। टन टन' हुई और टैक्सी ने लेमिंगटन रोड का रुख किया। लेमिंगटन रोड का जब

आखिरी सिरा आ गया तो खुशिया ने ड्राइवर को हिदायत दी, 'बायें हाथ मोड़ ली।'।

टैक्सी बायें हाथ मुड़ गई। अभी ड्राइवर ने गियर भी न बदला था कि खुशिया ने कहा, 'यह सामने वाले खम्भे के पास रोक लेना जरा।'।

ड्राइवर ने ठीक खम्भे के पास टैक्सी खड़ी कर दी। खुशिया दरवाजा खोलकर बाहर निकला और एक पान वाले की दुकान की तरफ बढ़ा। यहां से उसने पान लिया और उस आदमी से जो कि दुकान के पास खड़ा था, चन्द बातें की और उसे अपने साथ टैक्सी पर बैठकर ड्राइवर से बोला 'सीधे ले चलो।'।

देर तक टैक्सी चलती रही। खुशिया ने जिधर इशारा किया, ड्राइवर ने उधर हैण्डल फर दिया। रोक वाले कई बाजारों से होते हुए टैक्सी एक नीम रोशन गली में दाखिल हुई, जिसमें बहुत कम लोग आ जा रहे थे। कुछ रोग सड़क पर विस्तर जमाए लेते थे, उनमें से कुछ बड़े इस्तीनान से चम्पी करा रहे थे। जब टैक्सी उन चम्पी कराने वाला से आगे निकल गई और काठ के एक बगलेनुमा मकान के पास पहुंची तो खुशिया ने ड्राइवर को ठहरने के लिए कहा 'बस, अब यहां रुक जाओ।'।

टैक्सी ठहर गई तो खुशिया ने उस आदमी से, जिसको वह पान वाले की दुकान से अपने साथ लाया था, धीरे से कहा, 'जाम्ना, मैं यहां इंतजार करता हूँ।

वह आदमी, बेवकूफी की तरह खुशिया की तरफ देखना हुआ टैक्सी से बाहर निकला और सामने वाले लकड़ी के मकान में घुस गया।

खुशिया जमकर टैक्सी के गट्टे पर बैठ गया। एक टांग दूसरी टांग पर रखकर उसने जेब से बीड़ी निकालकर सुलगाई और दो कश लेकर बाहर सड़क पर फेंक दी। वह अब बड़ा बेचैन था इसलिए उसे लगा कि टैक्सी का इंजन बंद नहीं हुआ। उसके सीने में चूक फटफटाहट सी ही रही थी इसलिए वह समझा कि ड्राइवर ने बिल बढ़ाने के लिए पेट्रोल छोड़ रखा है। चुनाचे उसने तेजी से कहा, 'यो बेकार इंजन चालू रखकर तुम कितने पस और बड़ा लोगे ?'

ड्राइवर न घूमकर खुशिया की ओर देखा और कहा, 'सेठ, इजन तो बंद है।'

जब खुशिया को अपनी गलती का अहसास हुआ ता-उमकी बेचनी और भी बढ गई और उसने कुछ कहन की बजाय होठ चवान शुरू कर दिए। फिर एकाएकी मिर पर किशनीनुमा कानी टोपी पहनकर, जो अब तक उसकी बगल में दबी हुई थी, उसने ड्राइवर का कंधा हिलाया और कहा 'दसो, अभी छोकरी आएगी। जैस ही अंदर आए तुम माटर चता दना समझे ? घबरान की कोई बात नहीं है, मामला ऐसा बसा नहीं।'

इतने में सामने लकड़ी वाले मकान से दो आदमी बाहर निकले। आगे आगे खुशिया का दोस्त था और उसके पीछे पोछे काता, जिसने शोख रंग की साड़ी पहन रखी थी।

खुशिया भट से उस तरफ को सरक गया, जिधर अघेरा था। खुशिया के दोस्त ने टैंकरी का दरवाजा खोला और काता को अंदर दाखिल करके दरवाजा बंद कर दिया। उसी समय काता की हँस-भरी आवाज सुनायी दी जो चीख से मिलती जुलती थी, 'खुशिया, तुम ?'

हा मैं लेकिन तुम्हें रुपये मिल गए हैं न ?' खुशिया की मोटी आवाज बुलंद हुई, 'देखो ड्राइवर जूट ले चलो।'

ड्राइवर ने सतर्फ दबाया। इजन फडफडाने लगा। वह बात तो काता ने कही, सुनाई न द सकी। टैंकरी एक घबरे के साथ आगे बढ़ी और खुशिया के दोस्त को सड़क के बीच चक्कि विस्मिंत छोड़ उस नीम रोशन गली में गायब हो गई।

इसके बाद फिर किसीन खुशिया की माटरो की दुकान के उस परतब के चबूतरे पर नहीं देखा।

खोल दो

अमतसर म स्पेशन ट्रेन दीपहर दा बजे चली और आठ घण्टो के बाद मुगलपुरा पहुची। रास्ते म कई आदमी मारे गए बहुत से घायल हुए और कुछ इधर-उधर भटक गए।

सुबह दम बजे कम्प की ठण्डी जमीन पर जब सिराजुद्दीन ने आखें खोली और अपने चारो ओर मद औरता और बच्चा का ठाठ मारता समुंदर दखा तो उमके सोचने ममभूने की शक्तिया और भी क्षीण हो गई और वह काफी देर तक मटमले आसमान की टकटकी बाधे घूरता रहा। या तो कम्प मे चारा और शोर सा मचा हुआ था लेकिन बूढ़े सिराजुद्दीन के कान जैसे बंद थे, उसे कुछ सुनाई नहीं देता था। कोई उसे देखता तो यही समझना कि वह किसी गहरी सोच मे डूबा हुआ है, लेकिन वास्तव मे ऐसा नहीं था। असल म उमके सारे हौशोहवास क्षिपिल हो चुके थे बल्कि पूरा शरीर, सारा अस्तित्व शून्य मे लटक गया था।

मटमले आसमान की ओर बिना किसी उद्देश्य के देखते देखते सिराजुद्दीन की नजरें सूरज से जा टकराईं। तब रोशनी उसके जजर शरीर की नस नस मे उतर गई और वह जाग उठा। और उसके दिमाग मे एक के बाद एक कई तस्वीरें घूम गईं—लूट मार, भाग, भाग दौड़, स्टेशन, गोलिया, रात और सकीना सिराजुद्दीन एवदम खड़ा हो गया और उसने पागलों की तरह अपने चारो ओर फैले हुए समुंदर को खगालना शुरू कर दिया।

पूरे तीन घण्टे वह 'सकीना सकीना' पुकारता कैंप की धूल छानता रहा लेकिन कही भी उसकी जवान इकुलीती बेटी का पता नहीं चला। चारो ओर एक घाघली सी मची थी। कोई अपना बच्चा ढूँढ रहा था, कोई मा, कोई बीबी और कोई बेटी। सिराजुद्दीन थक हारकर एक तरफ बैठ गया और अपने दिमाग पर जोर देकर सोचने लगा कि सकीना उससे

कब और कहा बिछुड़ी थी । इसी सोच-विचार में उसका दिमाग बार-बार सकीना की माँ की लाश पर जम जाता, जिसकी सारी अतड्डियाँ बाहर निकली हुई थी और फिर इसके आगे वह कुछ न सोच पाता।

सकीना की माँ मर चुकी थी । उसने मिराजुद्दीन की आँखों के सामने दम तोड़ा था, लेकिन सकीना कहाँ थी, जिसके बारे में मकीना की माँ ने मरते समय कहा था, 'मुझे ठीकी और सकीना को लेकर जन्दी से यहाँ से भाग जाओ ।'

सकीना उसके साथ ही थी । दोनों नगे पाव भाग रहे थे । फिर सकीना का दुपट्टा गिर पड़ा था और उसे उठान के लिए सिराजुद्दीन ने रुकना चाहा था । इसपर सकीना ने चिल्लाकर कहा था, 'अब्बाजी, छोड़िए ।' लेकिन उसने दुपट्टा उठा लिया था, और यह साचत माचत उसने अपने कोट की उभरी हुई जेब की तरफ देखा और उसमें हाथ डालकर बपड़ा निकाला—सकीना का वही दुपट्टा था, लेकिन सकीना कहाँ थी ?

सिराजुद्दीन ने अपने थके हुए दिमाग पर बहुत जोर दिया लेकिन वह किसी भी नतीजे पर न पहुँच सका । क्या वह मकीना को अपने साथ स्टेशन तक ले आया था ? क्या वह उसके साथ ही गाड़ी में मबार थी ? रास्ते में जब गाड़ी रोकੀ गई थी और बलवाई भीतर घुस आए थे तो क्या वह बेहोश हो गया था, जो वह सकीना को उठा ले गए ?

मिराजुद्दीन के दिमाग में सवाल ही सवाल थे जवाब कोई नहीं था । उस हमदर्दी की ज़रूरत थी लेकिन चारों ओर जितने भी इमान फले हुए थे उन सबको हमदर्दी की ज़रूरत थी । सिराजुद्दीन ने रोना बाह्य मगर आँखों ने उसकी सहायता नहीं की—आसू न जाने कहाँ गायब हो गए थे ।

छ दिन के बाद होसी हवास कुछ ठिकाने आए तो सिराजुद्दीन उन लोगो से मिला जहाँ उसकी सहायता करने को तैयार थे । आठ नौजवान थे जिनके पाम लारी थी वट्टकें थी । सिराजुद्दीन ने उन्हें लाख लाख दुआएँ दी और सकीना का हुनियाँ बताया । मोरा रंग है और बहुत ही खूब सूस्त है । मुझपर नहीं अपनी माँ पर थी । उम्र यही सत्रह बरस के

करीब आखें बड़ी बड़ी, काले बाल, दाहिने गाल पर मोटा-सा तिल मेरी इकलौती लडकी है, दूढ़ लाओ खुदा तुम्हारा भला करेगा।'

रजाकार (स्वयंसेवक) नौजवानों न बड़ी हमदर्दी के साथ बूढ़े सिराजुद्दीन को विश्वास दिलाया कि अगर उसकी बेटी जिंदा हुई तो दो चार दिन में ही उसके पास पहुंच जाएगी।

आठो नौजवानी ने कोशिश की, जान हथेली पर रखकर वे अमृतसर गए। कई औरती, कई मर्दों और कई वच्चा को निकाल निकालकर उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया, लेकिन दस दिन हो गए सकीना उन्हें नहीं मिली।

एक दिन वे इसी सेवाकाय के सिलसिले में तारी पर अमृतसर जा रहे थे कि छहरेटे के पास सड़क के किनारे उन्हें एक लडकी दिखाई दी। लारी की आवाज सुनकर वह विदवी और उसने सरपट भागना शुरू कर दिया। रजाकारों ने भी तुरन्त लारी रोकें और उतरकर सबके सब उसके पीछे भागे। एक खेत में उन्होंने उस लडकी को जा पकड़ा। देखा तो बहुत खूबसूरत थी, दाहिने गाल पर एक मोटा सा तिल भी था। एक नौजवान ने उससे कहा, 'घबराओ नहीं, क्या तुम्हारा नाम सकीना है?'

लडकी का रंग पीला पड़ गया और उसने कोई जवाब न दिया। फिर जब दारी-बारी सारे नौजवानों ने उसे धम दिलासा दिया तो उसकी घबराहट कुछ दूर हो गई और उसने मान लिया कि उसका नाम सकीना है और वह सिराजुद्दीन की बटी है।

आठ रजाकार नौजवाना न हर तरह से सकीना की दिलजोई की। उसे खाना खिलाया, दूध पिलाया और लारी में बिठा लिया। एक ने अपना कोट उतारकर उसे दे दिया क्योंकि दुपट्टा न होने के कारण वह बड़ी उलझन महसूस कर रही थी और बार बार बाही में अपने सीने को ढांपने की असफल कोशिश कर रही थी।

कई दिन गुजर गए—सिराजुद्दीन की सकीना की कोई खबर न मिली। वह दिन-भर यहा वहा कम्पा और दपत्तरो के चक्कर काटता रहा

ठण्डा गोश्त

ईशरसिंह न होटल के कमरे में प्रवेश किया हो था कि कुलवन्त कौर तुरन्त पलंग पर से उठ खड़ी हुई। अपनी तेज-तेज नजरो से उसने घूरकर ईशरसिंह की ओर देखा और वड़कर दरवाजे को चटखनो चना दो। रात के बारह बज चुके थे। चारा ओर बड़ा रहस्यपूर्ण सनाटा छाया हुआ था।

कुलवन्त कौर पलंग पर आलथी पालथी मारकर बठ गई। ईशरसिंह जो शायद अपने छिन्न भिन्न विचारों के उलझे हुए धागे खोल रहा था, अभी तक हाथ में करपान लिए एक कोने में खड़ा था। कुछ क्षण तक इसी प्रकार चुप्पी छाई रही। कुलवन्त कौर को थोड़ी देर के बाद अपना आसन पसन्द न आया और वह दोनों टांगें पलंग से नीचे लटकाकर उठें हिलाने लगी। ईशरसिंह फिर भी कुछ न बोला।

कुलवन्त कौर भरे भरे हाथ पैरों की ओरत थी। चौड़े चकल कूल्हे थलथलात गोश्त से भरे हुए। कुछ बहुत ही ज्यादा ऊपर की उठ हुए सोन, तेज आखों ऊपर के होठ पर सुरमई गुबार और ठोड़ी की बनावट से पता चलता था कि बड़ी घडलेदार ओरत है।

ईशरसिंह यद्यपि कोन में मिर भुकाए चुपचाप खड़ा था सिर पर बसकर बधी हुई पगड़ी कुछ ढीली हो रही थी और उमका करपान वाला हाथ भी कुछ कुछ काप रहा था फिर भी उसके नैन नक्श और डीलडोल से पता चलता था कि वह कुलवन्त कौर जैसी ओरत के लिए योग्यतर पुरुष था।

कुछ क्षण जब इसी तरह चुप्पी में निकल गए तो कुलवन्त कौर छलक पड़ी। लेकिन तब तेज आखों को नचाकर वह केवल इतना कह सकी, ईशरसिंह।

ईशरसिंह ने गदन उठाकर कुलवन्त कौर की ओर दखा फिर उसकी नजरो की ताव न लाकर मुह दूसरी ओर मोड़ लिया।

कुलवत कौर चिल्लाई, 'ईशरसिंह', फिर तुरत ही स्वर को भींचत हुए पलंग पर से उठकर उसकी ओर बढ़ते हुए बोली, 'कहा गायब रहे तुम इतने दिन ?'

ईशरसिंह न अपने सूखे हाथों पर जवान फेरी, 'मुझे मालूम नहीं।

कुलवत कौर भिन्ना गई 'यह कोई भा-या जवाब है ?'

ईशरसिंह न करपान एक धार फेंक दी और पलंग पर लेट गया। ऐसा मालूम होना था कि वह कई दिनों का बीमार है। कुलवत कौर ने पलंग की ओर देखा जो अब ईशरसिंह म लवालब नरा हुआ था, उसके मन में महानुभूति पदा हो गई, उसके माथे पर हाथ रखकर उसने बड़े प्यार से पूछा, 'जानी, क्या हुआ है तुम्ह ?'

ईशरसिंह छन की ओर देख रहा था। उसी नजरों हटाकर कुलवत कौर के चिरपरिचित चेहर की ओर देखा, 'कुलवत', वह बस इतना ही कह पाया।

आवाज में पीड़ा थी। कुलवत कौर सारी की सांगी सिमटकर अपने ऊपर के होठ में आ गई। 'हा जानी' कहकर वह उस हल्के हल्के दाता से बातें लगी।

ईशरसिंह ने पगड़ी उतार दी। फिर कुलवत कौर की ओर सहास लेने वाली नजरों से देखा। उसके गोस्त-भरे कून्ह पर जोर से घप्पा मारा और सिर को झटका देकर अपने आपसे कहा, 'यह कुडी-या दिमाग ही खराब है।'

झटका देने से उसके केश खुल गए। कुलवत कौर उगलियों में उनमें कधी बरने लगी। ऐसा बरते हुए उसने बड़े प्यार से पूछा, 'ईशरसिंह, कहा रहे तुम इतने दिन ?'

'तुरे की मा के घर,' ईशरसिंह न कुलवत कौर को धूरकर देखा और फिर एकाएक उसके उमरे हुए सीने की मचने लगा, 'कमम बाह गुफ की बड़ी जानदार औरत हो।'

कुलवत कौर ने एक अंदा के साम ईशरसिंह के हाथ झटक दिए और पूछा, 'तुम्हें मेरी वसम है, बताओ, कहा रहे ? सहर गए थे ?'

ईशरसिंह ने एक ही लपेट में अपने बालों का जूड़ा बनात हुए उतर दिया, 'नहीं !'

कुलवत कीर चिढ़ गई, 'नहीं, तुम जरूर शहर गए थे, और तुम बहुत सा रुपया लूटा है, जो मुझमें छुपा रहे हो !'

'वह अपने बाप की तुलना न हो जो तुमसे भूठ बोले !'

कुलवत कीर थोड़ी दूर के लिए मौन हो गई, फिर एकदम भड़ककर बोली, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता, उस रात तुम्हें क्या हुआ था ? अच्छे भले मेरे साथ लेटे थे, मुझे तुमने वह सारा गहने पहना रखे थे जो तुम शहर से लूटकर लाए थे, मरी भविष्या ले रहे थे, पर न जान तुम्हें एकदम क्या हुआ, उठे और बपड़े पहनकर बाहर निकल गए !'

ईशरसिंह का चेहरा उतर गया। यह परिवर्तन देखते ही कुलवत कीर न ब्रह्मा, दखा कैसे रंग पीला पड़ गया है—ईशरसिंह, कसम वहि गुर की, जरूर दाल में कुछ कोता है !'

तेरी जान की कसम, कुछ भी नहीं !'

ईशरसिंह की आवाज बजान थी। कुलवत कीर का सदेह और भी दृढ़ हो गया। ऊपर का हाठ भीचकर उसने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा, 'ईशरसिंह! क्या बात है ? तुम वह नहीं रहे जो आज से पाठ दिन पहले थे।'

ईशरसिंह एकदम उठ बैठा जब किसीने उसपर हमला कर दिया हो। कुलवत कीर को अपनी चकितशाली बाहों में समेटकर उसने पूरे जोर से उसे न भोड़ना शुरू कर दिया, जानी, वही हूँ घुट घुट पा जाकिया, तेरी निकले हड्डा दी गर्मी

कुलवत कीर ने कोई हस्तक्षेप न किया लेकिन वह शिकायत करती रही, 'तुम्हें उस रात क्या हो गया था ?'

बुरे की मा का वह हो गया था।

बताओगे नहीं ?'

कोई बात हो तो बताऊँ।'

'मुझे अपने हाथ से जताओ जो भूठ बोले !'

ईशरसिंह ने अपनी बाहों में अपनी गदन के गिद्ध डाल दी और हाँ

उसके हाथों में गाड़ दिए। मूछा के बाल कुलवत कौर के नथुना में धसे तो उस छींक आ गई।

दोनों हसने लगे।

ईशरसिंह ने अपनी फतूही उतार दी और कुलवत कौर की मार वासना भरी नजरो से देखकर कहा, 'आग्री जानी, एक बाजी तांग की हो जाए।'

कुलवत कौर के ऊपरी होठ पर पसीने की न-ही-न-ही सूँढ़ें फूट आईं। एक अंदा के साथ उसने अपनी आँखों की पुतलिया घमाई और बोली 'चल दफान हो।'

ईशरसिंह ने उसके भरे हुए कूल्हे पर जोर से चोटकी भरी। कुलवत कौर तड़पकर एक ओर हट गई, 'न कर ईशरसिंह, मेरे दब होता है।'

ईशरसिंह ने आगे बढ़कर कुलवत कौर का ऊपरी होठ अपने दातों से दबा लिया और कचकचाते लगा। कुलवत कौर बिलकुल पिघल गई। ईशरसिंह ने अपना कुता उतारकर फेंक दिया और कहा, 'लो, फिर हो जाए तुप चाल।'

कुलवत कौर का ऊपरी होठ कपकपात लगा। ईशरसिंह ने दोनों हाथों से कुलवत कौर की कमीज का घेरा पकड़ा और जिस तरह बक्करे की खाल उतारते हैं, कमीज उतारकर एक ओर रख दी। फिर उसने घूर-घूर उसके नंगे बदन को देखा और जोर से उसने बाजू पर चोटकी भरते हुए कहा, 'कुलवत, कसम बाहू गुरु की, बड़ी बरारी औरत है तू।'

कुलवत कौर अपने बाजू पर उभरते हुए लाल घब्व को देखते हुए चाली, 'बड़ा जालिम है तू ईशरसिंह।'

ईशरसिंह अपनी घनी काली मूछा में मुस्कराया 'होने दे आज जुम' और यह कहकर उसने और अधिक जुलूम करने शुरू किए। कुलवत कौर का ऊपरी हाथ दातों से कचकचाया, कान की लवा की काटा, उभरे हुए सीने को मगौड़ा, भरे हुए कूल्हा पर आवाज पैदा करने वाले चाट मार, गालों के मुँह भर भरके घुम्घन लिए। चूस चूस के उसका सारा सीना चूको से लथेड़ दिया। कुलवत कौर तेज आँच पर चढ़ी हुई हाण्टी की तरह

उबलने लगी, लेकिन यह सब करने पर भी ईशरसिंह अपने आपमें गर्मी पैदा न कर सका। जितने गुर और जितने दाव उसे याद थे सबके सब उसने पिट जान वाले पहलवान की तरह आजमा डाले पर कोई भी बार-बार न हुआ। कुलवत कौर जिम्मे बदन के सारे तार तनकर आप ही आप बज रहे थे—आवश्यक छेड़ 'अड स तग आकर बोली, 'ईशरसिंह, काफी फेट चुका, अब पत्ता फेंक।'।

यह सुनते ही ईशरसिंह के हाथ में जैम ताश की सारी गड्डी नीचे फिँसल गई। हाफना हुआ वह कुलवत कौर के पहलू में लट गया और उसके माथे पर ठण्डे पसीने के लप होन लगे।

कुलवत कौर ने उस गमाने की बहुत कोशिश की लेकिन असफल रही। अब तक सब कुछ मुह से बहे बिना होता रहा था, लेकिन जब कुलवत कौर के तन हुए अंगों को घाग निराशा हुई तो वह झटकाकर पलंग से उतर गई। सामने खूटी पर चादर पड़ी थी, उस उतारकर उसने जल्दी जल्दी अपने शरीर के गिद लपेटा और नयुने फुलाकर बिफरे हुए स्वर में बोली, ईशरसिंह वह कौन हरामजादी है, जिसके पास तू इतने दिन रहकर आया है, जिसने तुझे निचाड़ डाला है ?'

ईशरसिंह उसी तरह पलंग पर लेटा हाफना रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुलवत कौर को बवश उबलने लगी, 'मैं पूछती हूँ, कौन है वह चुडल, कौन है वह लिफ्ती, कौन है वह चोर पत्ता ?'

ईशरसिंह ने निढाल स्वर में उत्तर दिया 'कोई भी नहीं कुलवत, कोई भी नहीं।'।

कुलवत कौर ने अपने भरे हुए कूल्हा पर हाथ रखकर बड़ी दबता से कहा, ईशरसिंह आज सब झूठ जानकर रहूँगी—खाओ बाह गुरजी की कसम—क्या इसकी तह में कोई औरत नहीं ?

ईशरसिंह ने कुछ कहना चाहा, लेकिन कुलवत कौर ने उससे बोलने से पहले एक बार फिर कड़े स्वर में कहा 'कसम खान से पहले सोच ले कि मैं भी सरदार निहालसिंह की बटी हूँ बोटी बोटी नोच डालूँगी अगर तूने झूठ बोला—ले अब खा बाह गुरजी की कसम क्या इसकी तह में

कोई धोरत नहीं ?'

ईशरसिंह न बड़े दुःख के साथ 'हाँ' में अपना गिर हिताया। कुलवत कौर बिलकुल टीवानी हो गई। लपककर धीन में से करपान उठाई। म्यान को बेने के छिन्ने की तरह उतारकर एब आर फेंका और ईशरसिंह पर बार कर दिया।

दूसर ही क्षण लड़का फवारा छूट पड़ा। कुलवत कौर की इसमें भी तसल्ली न हुई तो उसने जगली गिल्लियों की तरह ईशरसिंह के बाल नोचन शुरू कर दिए। साथ ही माथ वह अपनी अनात सीत की मोटी-माटी गालिया देती रही। ईशरसिंह ने थोड़ी देर के बाद धीन स्वर में प्रार्थना की, 'जाने दे कुलवत, अब जाने दे।'

आवाज पीछा से परिपूर्ण थी। कुलवत कौर पीछे हट गई।

लड़का ईशरसिंह के गले से उड़-उड़कर उमकी मूछों पर गिर रहा था। उमने अपने कापते हुए हाठ खोले और कुलवत कौर को आर धमकाद और उलाहने की मिली-जुली नजरों में देखत हुए बोला, 'मेरी जान, तुमने बहुत जल्दी की, लेकिन जी हुमा, ठीक ही हुमा।'

कुलवत कौर की ईर्ष्या फिर भड़की, 'मगर वह कौन है तुम्हारी मा ?'

लड़का ईशरसिंह की जवान तक पहुंच गया। जब उमने उसका स्वाद चखा तो उसके बदन में भुग्भुरी-सी दौट गई।

'और मैं मैं भैंनी-या छ आदमिया की बल कर चुका हू इसी करपान में'

कुलवत कौर के दिमाग में केवल दूसरी धोरत थी, 'मैं पूछनी हू, कौन है वह हरामजादी ?'

ईशरसिंह की आँखें धुंधला रही थी। एक हल्की-सी चमक उनमें पैदा हुई और उमने कुलवत कौर में कहा, 'गाली न दे उस भड़की को।'

कुलवत चिल्लाई 'मैं पूछती हू, वह है कौन ?'

ईशरसिंह के गले में आवाज रुक गई, 'बताता हू,' कहकर उसने अपनी गदन पर हाथ फेरा और उसपर अपना जिंदा लड़का देखकर मुस्कराया, 'इंसान माना भी अजीब चीज है।'

कुलवत कौर उसने उत्तर की प्रतीक्षा में थी, 'ईशरसिंह, तू मनलव

की बात कर ।

ईशरसिंह की मुस्कराहट उसकी लहू भरी मूछा में और अधिक फैल गई, मतलब ही की बात कर रहा हूँ गता चिरा हुआ है मा-या मेरा, अब धीरे धीरे ही सारी बात बताऊंगा ।'

और जब वह बात बताने लगा तो उसमें माये पर फिर ठण्डे पसीने के लेप होन लग, 'कुलवत ! भरो जान मैं तुम्हें उही बना सकता, मेरे साथ क्या हुआ इसान कुडी-या भी अजीब चीज है शहर में लूट भूती तो सब लोग की तरह मैंने भी उसमें हिस्सा लिया गहन पाते और रुपये पैस जा भी हाथ लग, वह मैंने तुम्हें दे दिए लेकिन एक बात तुम्हें न बताऊँ ।'

ईशरसिंह के घाव में पीड़ा हुई और वह कराहने लगा । कुलवत कोर ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और बड़ी निदयता से पूछा, 'कौन-सी बात ?'

ईशरसिंह ने मूछा पर टपकते हुए लहू की फूँ मारकर उठाते हुए कहा, 'जिस मकान पर मैंने घावा बोता था उसमें सात उसमें मात आदमी थे छ मैंने बरत कर दिए इसी करपान में जिससे तुने मुझे छोड़ इस मुन एक लडकी की बहुत सुंदर उसकी उठाकर मैं अपने साथ ले आया ।'

कुलवत कोर चुपचाप सुनती रही । ईशरसिंह ने एक बार फिर फूँ मारकर मूछा पर से लहू उड़ाया, 'कुलवत जानी, मैं तुमसे क्या कहूँ, कितनी सुंदर थी, मैं उसे भी मार डालता, पर मैंने कहा, नहीं ईशरसिंह, कुलवत कोर के नूहर रोज मजे लता है, यह सब भी बस देत ।' कुलवत कोर ने केवल इतना कहा, 'हूँ !'

और मैं उसे वधे पर डालकर चन दिया रास्त में क्या कह रहा था मैं ? हा रास्त में नहर की पटरी के पास बीहड़ की झाड़ियाँ तले मैंने उसे तिरा दिया पत्र साबा कि फेंदू लेकिन लयाल आया कि नहीं 'यह कहते-कहते ईशरसिंह की जगान सूख गई ।

कुलवत कोर ने धूँ निगलाने अपना कण्ठ तर किया और पूछा, फिर क्या हुआ ?'

ईशरसिंह के कण्ठ से बड़ी मुश्किल से ये शब्द निकले, 'मैंने पत्ता फँका लेकिन लेकिन उसकी आवाज डूब गई।

कुलवत कौर ने उसे झभोड़ा, 'फिर क्या हुआ ?'

ईशरसिंह ने अपनी बद होती हुई आँखें खोली और कुलवत कौर के शरीर की ओर देखा, जिसकी बोटी-बोटी फड़क रही थी 'वह मरी हुई थी लाश थी बिलकुल ठण्डा गोश्त जानी मुझे अपना हाथ दे '

कुलवत कौर ने अपना हाथ ईशरसिंह के हाथ पर रखा, जो बफ से भी ज्यादा ठण्डा था।

काली सलवार

दिल्ली आन से पहल वह अम्बाला छावनी मे थी, जहा कई गोरे उसके ग्राहक थे। उन गोरे ग्राहक के कारण वह अंग्रेजी के दम-बारह बाक्य भीष गई थी। उन बाक्यो का वह साधारण बील चाल मे इस्ते-मा नही करती थी, लेकिन जब वह दिल्ली मे आई और उसका कारीबार न चला तो एक दिन उमने अपनी पडोमिन तमचा जान से कहा

‘दिस लैफ वरी बड यानी यह जिन्दगी बहुत बुरी है जबकि खाने का ही नही मिलता।’

अम्बाला छावनी मे उसका धधा बहुत अच्छी तरह चलता था। छावनी के गोरे दाराव पीकर उसके पास भी आ जान थे और वह बीस-तीन रुपय पैदा कर लिया करती थी। ये गार उसके देशवासियों के मुकाबले मे बहुत अच्छे थे। इसमे सदेह नही कि वे एमी भाषा बोलाते थे जिसका मतलब सुलताना की समझ मे नही आता था, लेकिन उनकी भाषा से वह अज्ञानता उसके लिए बड़ी हितकर सिद्ध होती थी। अगर वे उमने कुछ रियायत चाहते तो वह मिर हितानर कह दिया करती, ‘साज हमारी समझ मे तुम्हारी बात नही आती।’

और, अगर वे जल्दन मे ज्यादा छेड़ छाड़ करने तो वह उनको अपनी भाषा मे गालिया देना शुरू कर देती थी। आश्चर्य मे उसके मुह की आग दमते तो वह उनसे कहती

‘साज, तुम एकदम उल्लू का पटछा है। हरामजादा है समझा।’ यह कहते हुए वह अपन स्वर मे सुल्ली पदा नही करती थी बल्कि बड़े प्यार से यह सब कहती थी। गोरे हस दत और हसते समय वे सुलताना को बिल्कुन उल्लू के पटछे दिखाई देत।

लेकिन यहां दिल्ली मे वह जब से आइ थी, एक गोरा भी उसके यहां नही आया था। तीन महीने उम हिंदुस्तान के इस गहर मे रहत हो

गए थे, जहा उसने मुना था कि बड़े साठ ग्राहक रहते हैं, जी गर्मिया में शिमले चले जाते हैं। इन तीन महीनों में केवल छ आदमी उसके पास आए थे—केवल छ, अर्थात् महीने में दो—और इन छ ग्राहकों से उसने खुदा झूठ न बुलवाए तो साठे अठारह रुपये बसूल किए थे।

साठे अठारह रुपये तीन महीने में। बीस रुपये मासिक तो उम बोठे का किराया ही था, जिसे मकान मालिक अंग्रेजी भाषा में पर्वेंट कहता था। उस पर्वेंट में ऐसा पाखाना था जिसमें जमीर खींचने से सारी गंदगी पानी के जोर से एकदम नीचे नून में गायब हो जाती थी और बड़ा शोर होना था। 'गुरू गुरू' में तो इस शोर ने उसे बहुत डराया था। पहले दिन जब वह पाखाने में गई तो उसकी कमर में बड़ा दर्द हो रहा था। उसने खटकी हुई जमीर का सहारा ले लिया, जिसके बारे में उसका खयाल था कि उस जमीर औरता के सहारे के लिए ही लगाई गई थी, लेकिन खया ही उस जमीर को पकड़कर उठना चाहता ऊपर खट खट सी हुई और फिर पानी इस शोर के साथ बाहर निकला कि डर के मारे उसने मुंह से चीख निकल गई।

खुदाबरस दूसरे कमरे से अपना फोटोग्राफी का सामान ढीक कर रहा था और एक साफ बोतल में हाइड्रोजेनीन डाल रहा था कि उसने सुलताना की चीख सुनी। दौड़कर बाहर निकला और सुलताना में पूछा

'क्या हुआ? यह चीख तुम्हारी थी?'

सुलताना का दिल धड़क रहा था। उसने कहा, 'यह मुझा पाखाना है या क्या है? बीच में यह गेलगाडियो की तरह जमीर क्या लटका रही है? मेरी कमर में दर्द था, मैंने कहा, चलो इसका सहारा ले लूंगी, पर इस हुई जमीर को छेड़ना था कि वह धमाका हुआ कि मैं तुमने क्या कहा।

इसपर खुदाबरस बहुत हंसा था और उसने सुलताना को उम पाखाने की यावत सब कुछ बता दिया था कि वह सधे फैशन का पाखाना है, जिसमें जमीर खींचने से सारी गंदगी नीचे जमीन में चली जाती है।

खुदाबरस और सुलताना का धापस में मैंने सम्बंध हुआ, यह एक

लम्बी कहानी है। खुदावरण रावलपिण्डी का था। मद्रिफ पास परन के बाद उसन लारी चलाना सीखा और फिर चार साल तक रावलपिण्डी और कश्मीर के दरमियान लारी चलान का काम करता रहा। उसके बाद कश्मीर में उसकी दोस्ती एक औरत में हो गई और वह उस भगा-कर लाहौर ल आया। लाहौर में चूँकि उस कोई काम न मिला, इसलिए उसन उम औरत का पेशे पर बिठा दिया। दो-तीन साल तक तो यह सिलमिला चलता रहा फिर वह औरत किसी और के साथ भाग गई। खुदावरण को पता चला कि वह अम्बाला में है। वह उसकी तलाश में अम्बाला आया। यहाँ उस औरत की बजाय उस सुलताना मिल गई। सुलताना ने उसकी पसंद किया अतएव दोनों में सम्बन्ध हो गया।

खुदावरण के आने से सुलताना का बारोबार एकदम घमक् उठा। औरत चूँकि अधविश्वासी थी, इसलिए उसने समझा कि खुदावरण बड़ा भाग्यवान है जिसके आने से इतनी उन्नति हो गई, अतएव उसकी दृष्टि में खुदावरण का महत्त्व और भी बढ़ गया।

खुदावरण आदमी मेहनती था। सारा दिन हाथ पर हाथ रखकर बैठना उसे पसंद नहीं था, इसलिए उसन एक फोटोग्राफर से दोस्ती पैदा कर ली, जो रेलवे स्टेशन के बाहर कमरे में फोटो खींचा करता था। उससे खुदावरण ने फोटो खींचना सीखा, फिर सुलताना से साठ रुपये लेकर कैमरा भी खरीद लिया। धीरे धीरे एक पर्दा बनवाया, दो कुर्सियाँ खरीदी और फोटो धोने का सारा सामान लेकर उसने अलग से अपना काम शुरू कर दिया।

काम चल निकला और कुछ दिनों के बाद ही उसने अपना अट्टा छावनी में कायम कर लिया। यहाँ वह मोरा के फोटो खींचता। एक महीन के भीतर भीतर छावनी के बहुत से मोरा से उसका परिचय हो गया, अतएव वह सुलताना को भी वही छावनी में ले गया और खुदावरण ही के माध्यम से कई मोरे सुलताना के स्थायी ग्राहक बन गए।

सुलताना ने काना के बुदे खरीद। साढ़े पाच ताल की आठ कगनियाँ भी बनवाईं। दस पन्द्रह अच्छी अच्छी साड़ियाँ भी खरीद ली। घर में

फर्नीचर भी आ गया। मतलब यह कि अम्बाला छावनी में वह काफी खुशान थी कि एकाएक न जान मुदावरस के दिल में क्या समझ कि उसने दिल्ली जाने की ठान ली। सुलताना कैसे इनकार करती जबकि मुदावरस का वह अपने लिए बड़ा शुभ मानती थी। उसने खुशी-खुशी दिल्ली जाना मान लिया, बल्कि उम्मीद यह भी सोचा कि इतने पड़े शहर में, जहालाट साहब रहने हैं, उसका धधा और भी चलेगा। अपनी सहेलियां स वह दिल्ली की प्रशंसा सुन चुकी थी। फिर वहा हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह भी थी जिसके प्रति उसके दिल में बड़ी श्रद्धा थी। अतएव जल्दी-जल्दी घर का भारी सामान बेच साधकर वह मुदावरस के साथ दिल्ली आ गई। यहा पहुँचकर मुदावरस ने बीस रुपये मामिक पर यह पन्ट लिया, जिसमें दोना रहने लगे।

एक ही ठग के नये भक्तों की लम्बी सी पक्का मडक में साथ-साथ चली गई थी—मुनिस्सिल बमेटी न शहर का यह भाग विशेष रूप से बेव्यापारी के लिए सुकरर कर दिया था ताकि वे शहर में जगह जगह अपने अड्डे न बनाए। नीचे दुकानें थी और ऊपर दोमजिना रिहाइशी पन्ट। सारी इमारतें चूँकि एक ही डिजाइन की बनी हुई थी, इसलिए धुल्लू धुल्लू में सुलताना को अपना पल्लट ढूँढ़ने में बहुत कठिनाई हुई थी, लेकिन फिर जब नीचे के लाण्डरीवाने ने अपना भारी-भरकम बोर्ड ऊपर लटका दिया तो उसे एक पक्की निशानी मिल गई—महा मले कपडा की मुलाई की जाती है यह बोर्ड पढ़ते ही वह अपना पल्लट तलाश कर लिया करती थी। इसी प्रकार उसने और भी बहुत सी निशानियां पायाम कर ली थीं। उदाहरणन जहा बड़े-बड़े अक्षरा में 'कोयने की दुका' लिखा हुआ था, वहा उसकी सहेली हीराबाई रहती थी, जो कभी-कभी रेडियों घर में पाने जाती थी। जहा 'धुल्ला (सज्जनो) के पाने का आला इतिजाम है' लिखा था, वहा उसकी सहेली मुल्लार रहती थी। जिवाड के बारखान के ऊपर मनचरी रहती थी, जो उम्मी बारखाने के सठके पास 'मुलाजिम थी। सठ साहब का चूकिसात के समय अपने कारखाने की देखभाल करनी होती थी, इसलिए वे मनचरी के पास रहते थे। दुकान खोला ही ग्राहक थोड़े ही आते हैं—जब

सुलताना एक महीन तक बेकार रही तो उसने यही सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी। जब दो महीने गुजर गए और कोई आदमी उसके कोठे पर न आया तो उसे बड़ी चिन्ता हुई। उसने खुदाबरश से कहा

‘क्या बात है खुदाबरश, पूरे दो महीने ही गए हैं हमें यहाँ आए हुए, किसीने इधर मुह भी नहीं किया। मानती हूँ, आजकल बाजार बहुत मँदा है, पर इतना मँदा भी तो नहीं कि महीने में एक भी गवन देखने में न आए।’

खुदाबरश को भी यह बात बहुत पहले से खटक रही थी लेकिन वह चुप था। सुलताना न जब स्वयं ही बात छोड़ी तो उसने कहा ‘मैं कई दिना से इस बारे में सोच रहा हूँ। एक ही बात समझ में आती है कि जंग की वजह से लोग बाग़ दूनर घाँसे में पड़कर इधर का रास्ता भूल गए हैं या फिर यह हो सकता है कि’

वह इसके आगे कुछ कहने ही वाला था कि सोढिया पर किसीक चढ़ने की आवाज आई। खुदाबरश और सुलताना दोनों के कान खड़े हो गए। थोड़ी देर के बाद दरवाजे पर दस्तक हुई। खुदाबरश ने सपककर दरवाजा खोला, एक आदमी भीतर आया। यह पहला ग्राहक था। इसके बाद पाँच आए अर्थात् तीन महीने में कुल छ, जिनसे सुलताना ने केवल साढ़े अठारह रुपये वसूल किए।

औसत रुपये मासिक तो पलट के किराय में चले जाते थे, पानी का टैंक और बिजली का बिल अलग। इसके अतिरिक्त घर के अन्य खर्च, खाना पीना कपड़े-लत्ते दवा टाट और आमदनी कुछ भी नहीं थी। तीन महीने में साढ़े अठारह रुपये आए तो इस आमदनी तो नहीं कहा जा सकता। सुलताना परेशान हो गई। साढ़े पाँच तोले की आठ कगनियाँ, जो उसने अवाले में बनवाई थी एक एक करके बिक गई। जब आखिरी कगनी की बारी आई तो उसने खुदाबरश से कहा

‘तुम मेरी मुनो और चलो वापस अवाले—यहाँ क्या धरा है? भई होगा, पर हम तो यह गहर रास नहीं आया। तुम्हारा काम भी वहाँ खुब चलता था। चलो वही चलते हैं। जो नुकसान हुआ है उस अपना सिर-सदका समझो। इस कगनी को बेचकर आग्रा, मैं सामान बगैरा बांधकर

रखनी हूँ। आज ही रात की गाड़ी में यहाँ न चले दूँगे।'

सुदावह्य न बगनी सुलताना के हाथ में ले ली और कहा, 'तुम्हीं जानें मन। अबाले नहीं जाएंगे। यही दिल्ली में रहकर बमाएंगे। ये तुम्हारी बुद्धिमा सबकी सब यहाँ बापस आएगी। अल्ताह पर मरोगा रानी, वह बड़ा कारमाज है। यहाँ भी कोई न कोई सबब बना ही देगा।

सुलताना चुप हो रही थी और या आगिरी बगनी भी हाथ में उतर गई। बुच्चे हाथ दफ्तर उगवो बहुत दुःख होना था, पर क्या करती। पेट भी ती बिमो होले भरना था।

जब पांच महीने गुजर गए और घामदनी लख के मुवावले में चौथाई में भी कम रहो तो सुलताना की परेशानी और अधिर बढ़ गई। सुलताना को इसका भी दुःख था। इसमें कोई शक नहीं कि पडाग में उसकी दोस्ताने मिलने वालीया भोजूद थी, जिनमें गाय लह प्रपना समय काट समती थी, लेकिन प्रतिदिन उतने यहाँ जाना और घण्टो बैठे रहना उगवो बहुत बुरा लगता था। अतएव धीरे धीरे उनमें उन महिलाया में मित्रता-जुनना भी बढ़ कर दिया और मारा निम अपने सुनमान मरान में बैठे रहती। कभी छानिना बाटती रहनी, कभी अपने पुरान और फटे हुए कपडा को सीती रहती और कभी बाहर बाखनी में आकर जगले के साथ लगकर खड़ी हो जाती और मामने रैनवे रोड में चुपचाप खड़े या इधर-उधर घट करत हुए इजनों की ओर निहारती रहती।

सबक के दूसरी ओर मालगोदाम था जो इस बीच से उस कोने तक फैला हुआ था। दाहिना हाथ को लोह की छन व नीचे बड़ी बड़ी गाँठें पड़ी रहती थी और हर प्रकार के माल ममबाय के ढेर में लग रहत थे। यामें हाथ को गुला मैदान था जिसमें रैन की अनगिनत पटरिया बिछी हुई थी। धूप में लोहे की ये पटरिया चमकती तो सुलताना अपने हाथों की ओर देखती जि पर नीली नीली नाडिया त्रिकुन उन पटरियों को तरह उभरी रहती थी। इस लम्बे और गुले मैदान में हर समय इजनों और गाडिया चलती रहती—कभी इधर, कभी उधर। बानावरण में इजनों और गाडिया की छर छर, फर फर गुजती रहती थी। सुबह-सबेर जब वह उठकर बाखनी में आती तो इधर उधर खड़े इजनों के

मुह से गाढा गाढा धुआ निकलकर गदले आकाश में भारी भरकम आद-
मिया की तरह उठता नजर आता । आप के बड़े-बड़े बादल भी गोर
मचात हुए पटरिया से उठते और आख भपकने की देर में हवा में धूल-
मिल जाते । फिर कभी कभी जब वह गाड़ी के किसी डब्बे की, जिसे डजन
ने धक्का देकर छोड़ दिया होता था, अकेले पटरियों पर चलना हुआ
देखती तो उसे अपना खयाल आ जाता । वह सोचती कि उसे भी
किसीन जि दगी की पटरी पर धक्का देकर छोड़ दिया है और वह आप
ही आप बढी चली जा रही है—न जाने कहा, किधर ? और फिर एक
दिन ऐसा आएगा जब वह कहीं रुक जाएगी । किसी ऐसे स्थान पर जो
उसको दखा भाला नहीं होगा । अम्बाला छावनी में भी उसका घर स्टेशन
के पास था, लेकिन वहा कभी उसने इन चीजा की इस नजर से नहीं
देखा था । और अब तो कभी कभी वह यह भी सोचने लगती थी कि
यह जो सामन रेन की पटरिया का जाल-सा बिछा है और जगह जगह
से आप और धुआ उठ रहा है यह एक बहुत बड़ा चक्का है जिसमें गाड़ी
हपी अनगिनत वेधयाए बास करती है । कई बार सुलताना की ये डजन
सेठ मालूम होत जो कभी कभी अम्बाला में उसके यहा आया करत थे ।
फिर कभी कभी जब वह किसी डजन की धीरे धीरे गाडियो की पक्कि के
पास से गुजरता देखती ता ऐसा लगता कि कोई आदमा चक्क के किसी
बाजार में से ऊपर कोठी की ओर देखता हुआ चला जा रहा है ।

सुलताना समझती थी कि इस प्रकार के विचार आने का कारण
दिमाग की सराबी है, अतएव जब ऐसे विचार बहुत अधिक आने लगे तो
उसने बालकनी से जाना ही छोड़ दिया । खुदावल्हा से उसने कई बार
कहा

देखो मेरे हाल पर रहम करो । यहा घर में रहा करो, मैं सारा
दिन यहा बीमारा की तरह पडी रहती हू ।’

लेकिन वह हर बार यह कहकर सुलताना की तसल्ली कर देता,
‘जानेमन मैं बाहर कुछ बमाने की फिश्त कर रहा हू । अन्ताह ने चाह
तो कुछ जिना में ही बेडा पार हो जाएगा ।’

पूर पांच महीन ही गए थे, मगर अभी तक न सुलताना का बेटा पार हुआ था न खुदाबख्श का। मुहरम का महीना सिर पर आ रहा था और सुलताना के पास काले कपड़े बनवाने के लिए फूटी कौड़ी भी न थी। मुस्तार ने लेडी हर्मिटन की एक नई काट की कमीज बनवाई थी जिसकी आस्तीनों काली जार्जेट की थी। उसके साथ मैच करने के लिए उसके पास बाली साटन की सलवार थी, जो काजल की तरह चमकती थी। अनवरी न रेसमी जार्जेट की एक बड़ी नफीस साडी मरीदी थी। उसने सुलताना को बनाया था कि वह इस साडी के नीचे सफेद वीस्की का पेट्री-कोट पहनगी क्योंकि यह नया फैशन है। इन साडी के साथ पहनने के लिए अनवरी काली मलमल का जूता लाई थी, जो बड़ा नाजुक था। सुलताना ने जब ये सारी चीजें देखी तो उसे इस एहसास से घटूत ही दुःख हुआ कि मुहरम मनाने के लिए ऐसा लिबास खरीदन की उसमें सामर्थ्य नहीं है।

अनवरी और मुस्तार के पास यह लिबास देखकर जब वह घर आई तो उसका मन बड़ा खिन्न था। कुछ ऐसा लगता था कि उसके भीतर एक फोडा-सा पैदा हो गया है। घर बिल्कुल खाली था। खुदाबख्श नियमानुसार बाहर गया हुआ था। काफी देर तक वह दरी पर गावतकिया सिर के नीचे रहे चुपचाप लेटी रही। ऊँचाई के कारण जब गदना धक्क-सी गई तो बाहर बालबनी में चली गई ताकि चित्तावदक विचारों को मन से निकाल सके।

सामने पटरियो पर गाड़िया क डियर खड़े थे पर इज्जत कोई भा न था। शाम का समय था। मडक पर छिड़काव ही चुका था और ऐसे लगना का आवागमन शुरू हो गया था जो ताक भाक करने के बाद चुपचाप अपने घरों का रास्ता पकड़ते थे। ऐम ही एक आदमी न गदन उठा कर सुलताना की ओर दखा। सुलताना मुम्बरा दी। लेकिन शीघ्र ही उसकी नज़रें उसपर न हट गई क्योंकि अब सामने की पटरिया पर वही स एव इज्जत निकल आया था। सुलताना बड़े ध्यान से इज्जत की ओर देखन लगी और ऐम ही यह विचार उसक मन में आया कि इज्जत ने भी काला लिबास पहन रखा है—यह विचित्र विचार मन से भटकने के लिए उसने

सड़क की ओर देखा तो वही आदमी एक बैलगाड़ी के पाम खड़ा नजर आया जिसने थोड़ी दूर पहले ललचाई हुई नजरों से सुलताना को ओर देखा था। सुलताना ने हाथ से उस इशारा किया। उस आदमी ने इधर उधर देखकर एक हलके से इशारे से पूछा—'किधर मे आऊ ?' सुलताना ने सीढ़िया का रास्ता बता दिया। वह आदमी कुछ दूर तो वही खड़ा रहा और फिर बड़ी फुरती से ऊपर चला आया।

सुलताना ने उस दरी पर बिठाया। जब वह बैठ गया तो बात चलायन के लिए सुलताना ने पूछा

‘आप ऊपर आते हुए डर क्या रहे थे ?’

वह आदमी मुस्कराया, ‘तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?’ भला इसमें डरन को क्या बान है ?’

‘यह मैंने इसलिए पूछा क्योंकि आप देर तक वही खड़े रहे थे।’

यह सुनकर वह फिर मुस्कराया और बोला, ‘तुम्हें गलतफहमी हुई है। मैं तुम्हारे ऊपर वाले पनट की तरफ देख रहा था जहाँ कीई औरत खड़ी एक मद की ठेगा दिखा रही थी। यह देखकर मुझे बड़ा मजा आया। फिर बालकनी में हरा बल्ब जला तो मैं कुछ दूर के लिए रुक गया। हरी रोशनी मुझे पसंद है। आँखा को बहुत अच्छी लगती है।’ यह कहकर उसने सुलताना के कमरे में इधर-उधर देखना शुरू कर दिया। फिर एका एक उठ खड़ा हुआ।

सुलताना ने पूछा ‘आप जा रहे हैं ?’

उस आदमी ने उत्तर दिया, ‘नहीं, मैं तुम्हारे इस मकान को देखना चाहता हूँ। चलो मुझे सारे कमरे दिखाओ।’

सुलताना ने उस तीनों कमरे एक एक करके दिखा दिए। उस आदमी ने बिलकुल खामोशी से उन कमरों का मुआयना किया। जब वे दोनों फिर उसी कमरे में आ गए जहाँ पहले बैठे थे तो उस आदमी ने कहा

‘मैंरा नाम शकर है।’

सुलताना ने पहली बार गौर से शकर की ओर देखा। वह साधारण शरन सूरत का आदमी था, लेकिन उसकी आँखें असाधारण रूप से स्वच्छ और निमल थी और कभी कभी उनमें एक विचित्र प्रकार की

चमक भी पदा हो जातो थो । गठोला और बसरती बदन था । कनपटियो पर उमके बाल सफेद हो रहे थे । भूरे रंग की गम पतलून पहने हुए था । कमीज सफेद थो और उसका कालर गदन पर से ऊपर वो उठा हुआ था । गवर कुछ इस प्रकार दरी पर बैठा हुआ था कि मालूम होता था गवर की बनाय सुलताना ग्राहक है । इस एहसास ने सुलताना को कुछ परगान कर दिया, अनएव उसने शकर से कहा, 'फर्माइए'

गवर बैठा हुआ था । यह सुनकर सेटते हुए बोला, 'मैं क्या फर्माऊ, कुछ तुम ही फर्माओ । बुलाया तुम ही ने है ।'

जब सुलताना कुछ न बोली तो वह उठ बैठा, 'मैं समझा, लो भव मुझसे सुनो । जो कुछ तुमने समझा, गलत है । मैं उन लोगो से नहीं हूँ जो कुछ देकर जात हैं । डाफटरो की तरह मेरी भी फीस है । जब मुझे बुलाया जाए तो फीस दनी हो पड़ती है ।'

सुलताना यह सुनकर चकरा गई, लेकिन फिर भी उसे बेइस्तिथार हमी आ गई । पूछा, 'आप काम क्या करते हैं ?'

शकर ने उत्तर दिया, 'यही जो तुम लोग करते हो ।'

'क्या ?'

'तुम क्या करती हो ?' -

'मैं मैं मैं कुछ नहीं करती ।'

'मैं भी कुछ नहीं करता ।'

सुलताना ने भिनाकर कहा, 'यह तो कोई बात न हुई—आप कुछ न कुछ तो जरूर करते होगे ।'

शकर ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया, 'तुम भी कुछ न कुछ जरूर करती होगी ।'

'भक मारती हूँ ।'

'मैं भी भक मारता हूँ ।'

'तो आओ दोनो भक मारें ।'

'हाजिर हूँ, लेकिन मैं भक मारने के दाम कभी नहीं दिया करता ।'

'होश की दवा करो, यह सगरखाना नहीं है ।'

'और मैं भी बालण्टियर नहीं हूँ ।'

मुलताना यहा रक गई। उमने पूछा, 'यह बालण्टियर कौन होते हैं ?'

शकर न उत्तर दिया, 'उल्लू के पट्टे ।'

'मैं उल्लू की पट्टी नहीं ।'

'मगर वह आदमी खुदावरस जो तुम्हारे साथ रहता है, जरूर उल्लू का पट्टा है ।'

'क्या ?'

'इसलिए कि वह कई दिना स एक ऐसे पहुँचे हुए फकीर के पाम अपनी किस्मत खुलवान जा रहा है, जिनकी अपनी किस्मत जग लगे ताने की तरह बंद है ।'

यह कहकर शकर हसा। इसपर मुलताना ने कहा 'तुम हिंदू हो, इसलिए हमारे बुभुगों का मजाक उड़ात हो ।'

शकर मुस्कराया, 'ऐसी जगहो पर हिंदू बुस्निम सवाल पैदा नहीं हुआ करत। बड़े बड़े पण्डित और मौलवी भी यहा आए ता गरीफ आदमी बन जाए ।'

'जाने क्या ऊटपटांग बातें करत ही चाली रहोगे ?'

एक शत पर ।'

'शत तुम लगाओगे, मुलताना खीजकर उठ खड़ी हुई। 'जामो अपना रास्ता पकड़ो ।'

शकर आराम स उठा। पतलून की जेबो म अपन दोना हाथ डाले और जात हुए बोला, मैं कभी कभी इस बाजार से गुजरा करता हूँ। जब भी तुम्ह मेरी जरूरत हो, बुला लेना, बहुत काम का आदमी हूँ ।'

शकर चला गया और मुलताना बाले लिबास को भूलकर दर तक उसके बारे म सोचती रही। उस आदमी की बातो ने उसके दुख को बहुत हल्का कर दिया था। अगर वह अचानक म आया होता, जहा वह खुशहाल थी तो उसने किसी और ही रूप से इस आदमी को देखा होता और बहुत संभव है कि उसे धक्के देकर बाहर निकाल दिया होता लेकिन यहा चूंकि वह बहुत उदाम रहती थी इसलिए उसे शकर की बातें पसंद आई ।

शाम को जब खुदावरुश आया तो सुलताना ने उससे पूछा, 'तुम आज मारा दिन बिघर गया है?'

खुदावरुश यवान में चूर चर रहा था। कहने लगा, 'पुराने किले के पास से आ रहा हूँ। वहाँ एक बुजुर्ग कुछ दिनों से ठहरे हुए हैं। रोज उन्हीं के पास से आ रहा हूँ, ताकि हमारा दिन फिर जाए।'

कुछ उन्हीं तुममें क्या?'

'नहीं, अभी वह मेहरबान नहीं हुए, पर सुलताना, मैं जो उनकी खिदमत कर रहा हूँ, वह बेकार नहीं जाएगी, भल्लाह की मेहरबानी से जल्द ही वारे पारे हो जाएंगे।'

सुलताना के दिमाग में मुहरम मनाने का ब्याल समाया हुआ था। खुदावरुश से रोनी आवाज में बोली

'सारा-सारा दिन बाहर गायब रहते हो, मैं यहाँ पिजर में कैद रहती हूँ, कहीं आ-जा नहीं मारती। मुहरम सिर पर आ गया है, कुछ तुमने उसकी फिक्र भी की कि मुझे काल कपड़े चाहिए। पर मैं फूटी कीड़ी तक नहीं। कगनिया यी तो एक एक करके रिक गइ। अब तुम ही बताओ क्या होगा? मो फकीरो के पीछे कब तक मारे मारे फिरते रहोगे। मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि यहाँ दिल्ली में खुदा ने भी हम-से मुह मोड़ लिया है। मेरी सुनो तो अपना काम शुरू कर दो। कुछ तो सहारा हो ही जाएगा।'

खुदावरुश दरी पर सेट गया और बटने लगा

पर यह काम शुरू करने के लिए भी नौ घोंड़े बहुत पैस चाहिए, खुदा के लिए अब ऐसी दुख भरी बातें न करो, मुझमें अब बर्दाश्त नहीं हो सकती। मैंने सबकुछ अवाना छोड़ने में सख्त गलती की, पर जो करता है भल्लाह ही करता है और हमारी भलाई के लिए ही करता है। क्या मालूम कुछ देर और दुःख भोगने के बाद हम

सुलताना ने बात बाटने हुए कहा, 'तुम खुदा के लिए कुछ करो। चोरी करो, डाका डालो पर मुझे अब सलवार का कपड़ा जहर ला दो। मेरे पास सफेद बोम्बी की कमीज पड़ी है, मैं उसे रंगवा लूँगी। सफेद नैनून का एक नया दुपट्टा भी मेरे पास मौजूद है—वही जो तुमने मुझे

दीवाली पर लाकर दिया था। उसे भी कमीज के साथ रगवा लूगी। बस, एक सलवार की कसर है सो तुम किसी न किसी तरह पैदा कर दो देखो तुम्हें मेरी जान की कसम किसी न किसी तरह जरूर ला दो।

खुदावरण उठ बैठा।

‘अब तुम रवाहमरवाह बसमें दे रही हो—मैं कहा से लाऊंगा, भरे पास तो अफीम खाने के लिए भी एक पैसा नहीं।’

‘कुछ भी करो मगर मुझे साढ़े चार गज की काली साटन ला दो।’

‘दुआ करो कि आज रात ही अल्लाह दो तीन आदमी भेज दे।’

‘लेकिन तुम कुछ नहीं करोगे, तुम अगर चाही तो जरूर इतने पैसे पैदा कर सकते हो। जग से पहले यह साटन बारह चौदह आने गज में मिल जाती थी। अब सवा रुपये गज के हिसाब से मिलती है। साढ़े चार गजा पर कितने रुपये खर्च हो जाएंगे?’

‘अब तुम कहती हो तो मैं कोई हीला कहूंगा।’ यह कहकर खुदावरण उठा, लो अब इन बातों को भूल जाओ। मैं होटल से खाना ले आऊँ।’

होटल से खाना आया। दोना ने मिलकर जहर मार किया और सो गए। सुबह हुई, खुदावरण पुराने किले वाले पकीर के पास चला गया और सुलताना अकेली रह गयी। कुछ देर लेटी रही, कुछ देर सोती रही और कुछ देर इधर उधर कमरा में टहलती रही। दोपहर का खाना खाने के बाद उसने सफेद बोस्की की कमीज निवाली और नीचे लाण्डी वाले को रगने के लिए दे आयी। कपड़े धोने के साथ साथ वहाँ रगने का काम भी होना था। यह काम करने के बाद उसने वापस आकर फिल्मों की किताबें पढ़ी, जिनमें उसकी देखी हुई फिल्मों की कहानियाँ और गीन छपे हुए थे। किताबें पढ़ते पढ़ते वह सो गयी। जब उठी तो चार बज चुके थे, क्याकि धूप आगन में से मोगी के पास पहुँच चुकी थी। नहा धोकर निबटोती गम चादर ओढ़कर बालकनी में आ खड़ी हुई। लगभग एक घण्टा सुलताना बालकनी में खड़ी रही। अब शाम हो गई थी। बत्तियाँ जलन लगीं और फिर नीचे सड़क पर रोनाक बदन लगी और फिर एका-

एक उसे शकर नजर आ गया। तागा और मोटरो से बचता हुआ जब वह मकान के नीचे पहुँचा तो वन ही की तरह उसने गदन उठाई और सुलताना की ओर देखकर मुस्करा दिया। न जाने क्यों आप ही आप सुलताना का हाथ उठ गया और उसने शकर को ऊपर आने का इशारा कर दिया।

जब शकर आ गया तो सुलताना बहुत परेशान हुई कि उससे क्या बहे? उधर गकर बड़ा प्रसन नजर आ रहा था जैसे अपने ही घर में आ पहुँचा हो। पहले दिन की तरह ही वह बड़ी बेवकल्लुफी से सिर के नीचे गावतकिया रखकर लेट गया। जब सुलताना ने देर तक कोई बात नही की तो वह स्वयं ही बोल पड़ा, 'तुम मुझे सो बार बुला सकती हो और सो बार कह सकती हो कि चले जाओ। मैं ऐसी बातों पर कभी नाराज नहीं हुआ करता।'।

सुलताना असमजस में पड़ गई। बोली, 'नहीं, बैठो, तुम्हें जाने को कौन कहता है।

शकर मुस्कराया, 'तो मेरी शर्तें तुम्हें मजूर हैं?'।

'कैसी शर्तें?' सुलताना ने हसकर कहा, 'क्या निकाह कर रहे हो मुझसे?'

'निकाह और शादी कैसी। न तुम उम्र भर किसीसे निकाह करोगी न मैं। ये रस्म हम लोगो के लिए नहीं। छीड़ो इन बातों को, कोई काम की बात करो।'।

बोली क्या बात करूँ?

'तुम औरत हो, कोई ऐसा वान शुरू करी जिससे दो घड़ी दिल बहल जाए। इस दुनिया में सिर्फ दुकानदारी ही दुकानदारी नहीं, कुछ और भी है।'।

सुलताना अब दिल ही दिल में शकर को स्वीकार कर चुकी थी। बोली, 'साफ साफ कहो, तुम मुझसे क्या चाहते हो?'

'जो दूसरे चाहते हैं।' शकर उठकर बैठ गया।

'तुममें और दूसरा में फिर फर्क ही क्या रहा?'

'तुममें और मुझमें कोई फर्क नहीं। उनमें और मुझमें जमीन और

आसमान का फक है। ऐसी बहुत-सी बातें होती हैं जो पूछनी नहीं चाहिए, खद समझना चाहिए।'

सुलताना ने थोड़ी देर तक शकर की इस बात को समझने की कोशिश की। फिर कहा

'मैं समझ गयी।'

'तो कहो क्या इरादा है?'

तुम जीते मैं हारो—पर मैं कहती हूँ, आज तक किसीने ऐसी बात कुबूल न की होगी।'

'तुम गलत कहती हो, इसी मुहल्ले में तुम्हें ऐसी बेवकूफ औरतें भी मिल जाएंगी जो कभी यकीन नहीं करेंगी कि औरत ऐसी जिल्लत कुबूल कर सकती है जो तुम बिना महसूस किए कुबूल करती हो। लेकिन उनके यकीन न करने के बावजूद तुम हज़ारा की तादाद में मौजूद हो, तुम्हारा नाम सुलताना है ना?'

'सुलताना ही है।'

शकर उठ खड़ा हुआ और हसते हुए बोला, 'मेरा नाम शकर है, यह नाम भी अजीब उटपटाप होते हैं। चलो आओ अंदर चलें।'

शकर और सुलताना जब दरी वाले कमरे में वापस आए तो दोनों हस रहे थे, न जाने किस बात पर। जब शकर जाने लगा तो सुलताना ने कहा, शकर मेरी एक बात मानीगे?'

'पहले बात बताओ।'

सुलताना कुछ झेंप गई, तुम कहोगे कि मैं दाम बसूल करना चाहती हूँ मगर

कहो, कहो, एक क्यों गई?'

सुलताना ने साहस स काम लेते हुए कहा बात यह है कि मुहरम आ रहा है और मेरे पास इतने पैसे नहीं कि मैं काली सलवार बनवा सकूँ, यहाँ के सारे दुखड़े तो तुम मुझसे सुन ही चुके हो। कमीज और दुपट्टा मेरे पास मौजूद था जो मैंने आज रखने के लिए दिया है।'

शकर यह सुनकर बोला, तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें कुछ रुपये दे

दू जिसम तुम काली सलवार बनवा सकी ।’

सुलताना न तुरन्त कहा, नहीं, मेरा मतलब यह है कि अगर हो सके तो मुझे एक काली सलवार ला दी ।’

शकर मुस्करा दिया, मेरी जेब में तो कभी कभार ही कुछ होना है । फिर भी मैं कोशिश करूँगा । मुहर्रम की पहली तारीख को तुम्हें यह सलवार मिल जाएगी । ती वस, अब खुश हो गई ?’ फिर एकाएक सुलताना के बुदों की ओर देखकर बोला, ‘क्या ये बुदे तुम मुझे दे सकती हो ?’

सुलताना ने हसकर कहा, ‘तुम इन्हें लेकर क्या करोगे । चादी के मामूली बुदे हैं । ज्यादा से ज्यादा पांच रुपय के होंगे ।’

‘मैं तुमसे बुदे मांगे हूँ । इनकी कीमत नहीं पूछी । बोली, देती हो ?’
‘ले लो ।’ कहकर उसने बुदे उतार दिए । इसके बाद उसे अफसोस भी हुआ लेकिन शकर जा चुका था ।

सुलताना की बिल्कुल आशा नहीं थी कि शकर अपना वादा पूरा करेगा, लेकिन आठ दिन के बाद मुहर्रम की पहली तारीख को सुबह नौ बजे दरवाजे पर दस्तक हुई । सुलताना ने दरवाजा खोला तो शकर खड़ा था । अलवार में लिपटा हुआ एक पुर्लदा सुलताना को थमाते हुए बोला, ‘साटन की काली सलवार है । देख लेना, शायद कुछ लम्बी हो—अब मैं चलता हूँ ।’

शकर सलवार देकर चला गया और दूमरी कोई बान उसने सुलताना से नहीं की । उसकी पतलून में सलवटें पड़ी हुई थी । बाल धिखरे हुए थे । ऐसा भालूम होता था कि अभी-अभी मोकर उठा है और सोबा इधर ही चला आया है ।

सुलताना ने बागज खोला । साटन की काली सलवार थी—वैसे ही जैसे वह मुग्तार के पास देख आयी थी । सुलताना बहुत खुश हुई । बुदा और सोदे का जो अफसोस उसे हुआ था, इस सलवार ने और शकर के वादा का फाटन करने से दूर कर दिया ।

दोपहर को वह नोचे लाण्डी वाले से अपनी रंगो हुई कमीज और दुपट्टा ले आई । तोनो काले कपड़े जब उसने पहन लिए तो दरवाजे पर

दस्तक हुई। सुलताना न दरवाजा खोला तो मुख्तार भीतर दाखिल हुई।
उसने सुलताना के तीना कपड़ा की ओर देखा और बोली, 'कमीज और
दोपट्टा तो रंगा हुआ मालूम होता है, पर यह सलवार नहीं है — कब
बनवाई ?

सुलताना ने उत्तर दिया, 'आज ही दर्जी लाया है यह कहते हुए
उसकी नजरें मुख्तार के बाना पर पड़ी।

य बुद तुमने कहा स लिए ?'

आज ही मगवाए है।'

इसके बाद दोनों को थोड़ी देर चुप रहना पड़ा।

चरमात के यही लिन थे। खिडकी के बाहर पीपल के पत्ते इसी तरह नहा रहे थे। मागसान के इसी स्त्रिगदार पलंग पर, जो अब खिडकी के पास से थोड़ा इधर सरका दिया गया था, एक घाटन लीण्डिया रणधीर के साथ चिपटी हुई थी।

खिडकी के बाहर पीपल के नहाए हुए पत्ते रात के दूधियाले अंधेरे में भूमरा की तरह थरथरा रहे थे—और शाम के समय ज़रा दिन भर एक अग्रज्जी अखवार की सब खबरें और विगपन पढ़ने के बाद कुछ सुनाने के लिए वह बातवनी में भा खड़ा हुआ था तो उसने घाटन नटनी की, जो माय वाले रस्मिया के कारखाने में काम करती थी और वर्षा में बचने के लिए इसली के पेड़ के नीचे खड़ी थी, साम खलारकर अपनी और आर्कषित कर लिया था और उसके बाद हाथ के इशारे से ऊपर बुला लिया था।

यह कई दिन से अत्यधिक एगान से ऊब चला था। युद्ध के कारण अम्बई की लगभग सभी त्रिचिपन छोकरिया, जामस्त दामा में मिल जाया करती थी, स्त्रिया की अग्रज्जी फीम में भरती हो गई थी। उनमें से कुछ एक न फाट के इलाके में हास स्कूट गोन लिंग थे जहां केवल फौजी गौरा की जान की इजाजत थी। रणधीर बहुत उदाम हो गया था।

उसकी उदामी का एक कारण तो यह था कि त्रिचिपन छोकरिया अप्राप्य हो गई थी और दूसरा यह कि रणधीर फौजी गौरा की तुलना में कहीं अधिक सम्य और शिक्षित मुंदर नौजवान था, लेकिन उसपर फोट के लगभग सभी बलवों के दग्गार्जे बंद कर दिए गए थे क्योंकि उसकी चमड़ी सफेद नहीं थी।

युद्ध से पहले रणधीर नागगाडा और ताज होम्स की कई प्रसिद्ध त्रिचिपन छोकरियों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापन कर चुका था। उसे

अच्छी तरह मालूम था कि इस प्रकारके सवधो के श्रीचित्य स वह त्रिशिख्यन लडकी के मुकाबले मे कही अधिक जानकारी रखता है जिनस य छोरिया फैशन के तौर पर रोमास लडाती है और बाद मे किसी बेवकूफ स शादी कर लती है।

रणधीर ने बस यो ही दिल ही दिल म हीजल से बदला लन की खातिर उस घाटन लडकी को इसारे स ऊपर बुला लिया था। हीजल उसके पलट के नीचे रहती थी और प्रतिदिन सुबह बर्दी पहनकर अपन बटे हुए बालो पर खाकी रंग की टीपी तिरछ कोण म जमाकर बाहर निकलती थी और ऐस वाकपन स चलती थी जसे फुटपाथ पर चलने वाले सभी लोग टाट की तरह उसके कदमो म बिछत चले जाएंगे।

रणधीर सोचता था कि आखिर कयो वह इन त्रिशिख्यन छोरिया की ओर इतना अधिक आकर्षित है। इसम कोई सदेह नहो कि व अपन शरीर की प्रत्येक दिखलाई जा सकन वाली वस्तु का प्रदर्शन करती है। किसी भी प्रकार की किभक अनुभव किए बिना अपने किश-कलापो का वणन कर दती है। अपने खोत हुए पुरान रोमासो का हाल सुना दती है

यह सब ठीक है लेकिन कोई भी स्त्री इन सब विगेषताओ की मालिक हो सकती है।

रणधीर ने जब घाटन लडकी को इसारे से ऊपर बुलाया था तो उसे किसी भी तरह यह बिश्वास नही था कि वह उस अपन साथ मुला लगा, लेकिन घाडी ही देर के बाद जब उसने उसके भीगे कपडे देखकर यह ख्याल किया था कि कही ऐसा न हो कि बेचारी को निमोनिया हो जाए, तो रणधीर ने उससे कहा था 'यह कपडे उतार दो सर्दी लग जाएगी।'

वह रणधीर की इस बात का अभिप्राय समझ गई थी, क्याकि उसकी आखा म शम के लाल डोर तर गए थ लेकिन बाद मे जब रणधीर ने उस अपनी धोती निकालकर दी ती उसन बूछ देर सोचकर अपना लहंगा उतार दिया जिमपर का मूल भोगने के कारण और अधिक उभर आया था लहंगा उतारकर उसन एक ओर रप दिया और जल्नी स धोती अपनी जाघा पर डाल ली। फिर उसन अपनी तंग, भिची भिची चोली उतारन की कोशिश की जिसके दोना किनारा को मिलाकर उसन एक

गाठ दे रखी थी। वह गाठ उसके स्वस्थ वक्षस्थल के नह परतु मलिन गडढ़े में छुप सी गई थी।

दर तक वह अपने घिस हुए नाखूना की सहायता से चोली की गाठ खोलन की कोशिश करती रही, जो भीगन के कारण बहुत अधिक मजबूत हो गई थी। जब थक हारकर बैठ गई तो उसने मराठी भाषा में रणधीर से कुछ कहा, जिसका मतलब यह था— मैं क्या कर, नहीं खुलती।

रणधीर उसके पास बैठ गया और गाठ खोलने लगा। जब नही खुली तो उसने चोली के दोनों सिरों को दोनों हाथों में पकड़कर इस जोर से भटका दिया कि गाठ सरसराकर फिसल गई और इसके साथ ही दो घड़कती हुई छातिपा एकदम प्रकट हो गई। क्षण भर के लिए रणधीर ने सोचा कि उसके अपने हाथों ने उस घाटन लड़की के सीन पर नम-नम गुथी हुई मिटटी की निपुण कुम्हार की तरह दो प्यालिया की शक्ल बना दी है।

उसकी स्वस्थ छातियों में वही गुदगुदाहट, वही घड़बन, वही गोलाई, वही गम गम ठण्डक थी जो कुम्हार के हाथों में निकले हुए ताजा बरतनों में होती है।

मटमले रंग की जवान छातियों में, जो बिलकुल कवारी थी, एक अद्भुत ढंग की चमक पैदा हो रही थी। गेहुए रंग के नीचे धुधले प्रकाश की एक परत थी जिसने वह अद्भुत चमक पैदा कर दी थी, जो चमक हीत हुए भी चमक नहीं रही थी। उसके वक्षस्थल पर यह उभार दी दीपक मालूम होते थे, जो तालाब के गढ़ने पानी पर जल रहे हैं।

बरसात के यही दिन थे। खिडकी के बाहर पीपल के पत्ते इसी तरह कपकपा रहे थे। उस घाटन लड़की के दोनों कपड़े जो पानी में तरबतर हो चुके थे, एक गढ़ने ढेर की शक्ल में पश पर पड़ थे और वह रणधीर के साथ चिपटी हुई थी। उसके नंगे बदन की गर्मी रणधीर के शरीर में ऐसी हलचल-सी पैदा कर रही थी जो सरन जाड़े के दिनों में नाइयों के गढ़ लेकिन गम हमामा में नहाते समय अनुभव हुआ करती है।

रात भर वह रणधीर के साम चिपटी रही—दोना जैसे एक दूसरे में गड़गड़गड़ हो गए थे। उन्होंने बड़ी मुश्किल से एक-दो बातें की होंगी, क्योंकि जो कुछ भी कहना-सुनना था, सासो, छोटी और हाथी से तय हो

रहा था। रणधीर के हाथ सारी रात उमकी छातियाँ पर हवा के भाँका की तरह फिरते रह। छोटी छोटी चूचियाँ और वह मोटे-मोटे गोल दाने, जो चारों ओर एक घाले वृत्त के रूप में फैले हुए थे, उन हवाई भाँकों से जाग उठत और उस घाटन लड़की के पूरे बदन में एक ऐसी सिहरन पैदा हो जाती कि स्वयं रणधीर भी कपकपा उठता।

ऐसी कपकपाहटों से रणधीर का सँवड़ा बार बास्ता पड़ा चुका था। वह इनका स्वाद भी भली प्रकार जानता था। कई लड़कियाँ के नम और सख्त सीना के माथ घपना सीना मिलाकर वह ऐसी कई रातें बिता चुका था। वह ऐसी लड़कियाँ के साथ भी रह चुका था जो बिल्कुल अलहड थीं और उसके माथ लिपटकर घर की सारी बातें सुना दिया करती थी, जो किसी गैर के बानों के लिए नहीं होती। वह ऐसी लड़कियाँ से भी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर चुका था जो सारी महन्त स्वयं करती थी और उसे कोई तबलीफ नहीं देती थी—लेकिन वह घाटन लड़की जो इमली के पेड़ के नीचे भीगी हुई खड़ी थी और जिसे उसने इशारे से ऊपर बुला लिया था, बिल्कुल भिन्न प्रकार की लड़की थी।

सारी रात रणधीर को उसके शरीर से एक अदभुत प्रकार की बू आती रही थी। उस बू को—जो एकमात्र खुशबू भी थी और बदबू भी—बहु रात भर पीता रहा। उसकी बगलों से उसकी छातियों से उसके चाला से, उसके पेट से, प्रत्येक स्थान में यह बू, जो बदबू भी थी और खुशबू भी, रणधीर के अंग धम में बस गई थी। सारी रात वह सोचता रहा था कि यह घाटन लड़की बिल्कुल पास होत पर भी किसी प्रकार इतनी पास न होती अगर उसके नंगे शरीर से यह बू न उड़ती। यह बू उसके दिल दिमाग की हर सलवट में रेंग रही थी, उसके तमाम पुराने और नये ख्याला में रम गई थी।

इस बू ने उस लड़की और रणधीर की मानी एक दूसरे में घोल दिया था। दोनों एक दूसरे में समा गए थे, अत्यधिक गहराइयों में उतर गए थे जहाँ पहुँचकर वह एक विद्युत् मानवीय तपस्ति में परिणत हो गए थे। ऐसी तपस्ति जो क्षणिक होने पर भी स्थायी थी। जो निरन्तर विकास-शील होत हुए भी स्थिर और सुदृढ़ थी। दोनों एक ऐसा स्वप्न बन गए थे

जा आकाश के नीले तूय में उड़त रहने पर भी दिखाई देता रह ।

उस वृ को, जो उम घाटन लडकी के प्रत्येक मोत से बाहर निकलती थी, रणधीर अच्छी तरह समझता था । परन्तु समझते हुए भी वह उसका विशेषण नहीं कर सकता था । जिम तरह कभी मिट्टी पर पानी छिड़कने से मोधी सोधी वृ निकलती है लेकिन नहीं, वह वृ कुछ और ही तरह की थी । उसमें लवण्डर और इत्र का ऐक्य नहीं था, वह बिल्कुल असनी थी स्त्री पुरुष के शारीरिक सम्बन्धों की तरह असली और पवित्र ।

रणधीर को पसीने की वृ से मग्न घृणा थी । नहाने के बाद वह हमेशा बगला बगैरह में पाउडर छिड़कता था या एसी दवा इस्तमाल करता था जिससे पसीने की बदबू जाती रहे । परन्तु आश्चर्य है कि उसने कई बार—हा कई बार उम घाटन लडकी की वाला भरी बगला को चूमा और उसे बिल्कुल धिन नहीं आयी धनिक अजीब तरह की तन्नि अनुभव हुई । रणधीर को ऐसा लगता था कि वह उस वृ को जानता है, पहचानता है, उसका अर्थ भी समझता है—लेकिन किसी और को नहीं समझा सकता ।

बरसात के यही दिन थे यों ही खिड़की के बाहर जब उसने देखा ता पीपल के पत्ते उसी पवार नहा रहे थे । हवा में सरमराहटें और फड़फड़ाहटें घुली हुई थी । अर्धरा या, लेकिन उसमें दबो दबी धुंधनी सी रोशनी समाई हुई थी जैस वर्षा की बूंदों के साथ लगकर सितारा का हल्का-हल्का प्रकाश नीचे उतर आया हो—बरसात के यही दिन थे, जब रणधीर के इस कमरे में मागवान का सिर्फ एक ही पलंग था । लेकिन अब उसका साथ मटा हुआ एक और पलंग भी था और बीने में एक नई ड्रेसिंग टबल भी मौजूद थी । दिन यही बरसात के थे । मोमम भी बिल्कुल वैसा ही था । वर्षा की बूंदों के साथ लगकर सितारा का हल्का हल्का प्रकाश उसी तरह उतर रहा था, लेकिन वातावरण में हिना के इत्र की तेज खुशबू बसी हुई थी ।

दूसरा पलंग खाली था । उम पलंग पर, जिसपर रणधीर आँधे मुटु लेना खिड़की के बाहर पीपल के झूमते हुए पत्तों पर वर्षा की बूंदों का नृत्य

देख रहा था, एक गारी चिट्ठी लडकी अपन नग शरीर को चादर में छुपाने का असफल प्रयास करते करते लगभग सा गयी थी। उसकी लाल रेशमी सलवार दूसरे पलंग पर पड़ी थी। जिसके गहर लाल रंग के नाड का एक फुदना नीचे लटक रहा था। पलंग पर उसके दूसरे उतार हुए कपड़े भी पड़े थे—सुनहरी पूला वाला जम्पर अगिया जाधिया और दुपट्टा सबका रंग लाल था गहरा लाल और उन सबमें हिना के इत्र की तेज खुशबू बसी हुई थी।

लडकी के कारे वाला में मुकंग के कण धूल की तरह जमे हुए थे। चेहरे पर पाउचर, मुर्खी और मुकश के उन कणा न मिल जुनकर एक विचित्र रंग पैदा कर दिया था बजान सा उड़ा उड़ा रंग और उसके गौर वक्ष स्थल पर कच्चे रंग की अगिया ने जगह-जगह लाल लाल धब्बे बना दिए थे।

छानिया दूध की तरह सफेद थी। उनमें हल्का हल्का नीलापन भी था। बगलों के बाल मुड़े हुए थे, इस कारण वहां सुरमई गुबार सा पैदा हो गया था।

रणधीर इस लडकी की ओर देखकर कई बार सोच चुका था—क्या ऐसे नहीं लगना जैसे मैंने अभी अभी कीलें उल्टेडकर इसे लकड़ी से बंद बक्स में स निकाला है—जितावा और चीनी के बतनों की तरह। क्योंकि जिस प्रकार कितावा पर दबाव के चिह्न उभर आते हैं और चीनी के बतनों पर हल्का हल्की खरारों पड़ जाती हैं ठीक उसी तरह इस लडकी के शरीर पर भी कई निशान थे।

जब रणधीर ने उसकी तंग और चुस्त अगिया की डोरिया खोली थी तो उसकी पीठ पर और सामन सीन पर नम नम गोश्त पर झुरिया-सी बनी हुई थी और कमर के चारों ओर बसकर बांधे हुए नाडे का निशान

भारी और नुकील जडाऊ नकलम से उसके सीने पर कई जगह खरारों-सी पड़ गई थी जस नाबतों में बड़े खोर के साथ सुजाया गया हो। बरसात के वही दिन थे। पीपल के नम नम कोमल पत्तों पर वर्षा की नूदें गिरने में बंसी हो आवाज पैदा हो रही थी जैसी रणधीर उस दिन सारी रात सुनता रहा था। मौसम बहुत ही सुहावना था। ठण्डी ठण्डी हवा चल

रही थी। लेकिन उससे हिना के इत्र की तरह खुशबू धुली हुई थी।

रणधीर के हाथ बहुत देर तक उस गोरी चिट्ठी लडकी के कच्चे दूध की तरह सफेद वक्षस्थल पर हवा के झोंकों की तरह फिरते रहें। उसकी उगनियां न उस गोरे-गार बदन में बड़ी चिनगारियां दौड़ती हुई भी अनुभव की थीं। उस कोमल बदन में बड़ी जगहों पर मिमटी हुई कप-कपाहटा का भी उस पता चला था। जब उसने अपना मोना उसके वक्षस्थल के साथ मिलाया तो रणधीर के शरीर के प्रत्येक रोए ने उस लडकी के बदन के छिडे हुए तारों की भी आवाज सुनी थी। लेकिन वह आवाज क्या थी? वह पुकार जो उसने घाटन लडकी के शरीर की बू में सूधी थी—वह पुकार जो दूध के प्यासे बच्चों के रोने में कहीं अधिक मादक होती है। वह पुकार जो स्वप्न वृत्त में निकनकर निःशब्द हो गई थी।

रणधीर सिडकी के बाहर दब रहा था। उसके बिलकुल पास ही पीपल के नहाए हुए पत्ते झूम रहे थे। वह उनकी मस्ती भरी कपकपाहटों के उस पार कहीं बहुत दूर दखन की कोशिश कर रहा था, जहां मटमल बादलों में विचित्र प्रकार की राशनी धुली हुई दिखाई देती थी, ठीक वैसी ही जैसी उस घाटन लडकी के सीन में उमने नजर आई थी। ऐसी राशनी जो भेद की धान की तरह मौन किंतु प्रत्यक्ष थी।

रणधीर के पहलू में एक गोरी चिट्ठी लडकी जिसका शरीर दूध और घी में गुर्घे भाटे की तरह घुलायम था, लेटी थी, उसके नीचे से मदमात बदन से हिना के इत्र की खुशबू आ रही थी जो अब यकी-यकी-सी मालूम होती थी। रणधीर को यह दम ताड़ती और उमाद का सीमा तक पहुंची हुई खुशबू बहुत बुरी मालूम हुई। उसमें कुछ खटास थी—एक अजीब किस्म की खटास, जसी अपचन का डकारों में होनी है—उदास—बेरग—बचपन।

रणधीर ने अपने पहलू में लेटी हुई लडकी को और देखा। जिस तरह फटे हुए दूध के बेरग पानी में सफेद मुर्दा फुटकिया तैरन-गती हैं उसी प्रकार उस लडकी के दूधियाले शरीर पर सरासों और धन्य तर रहे थे और वह हिना के इत्र की ऊटपटांग खुशबू वास्तव में रणधीर के दिल-दिमाग में वह बू बसी हुई थी, जो उस घाटन लडकी के

शरीर से बिना किसी बाह्य प्रयत्न के अनायास ही निकल रही थी। वह बज्जो हिना के इन स कहीं हल्की फुल्की और रस में डूबी हुई थी, जिसमें सूँघे जाने का प्रयत्न शामिल नहीं था। वह अपने आप ही नाक के रास्ते भीतर घुसकर अपनी सही मजिल पर पहुँच जाती थी।

रणधीर ने अन्तिम प्रयास करते हुए उस लड़की के दूधमाले शरीर पर हाथ फेरा लेकिन उसे कोई कपकपाहट महसूस नहीं हुई। उसकी नई नवेली पत्नी जो एक फस्टक्लास मजिस्ट्रेट की लड़की थी जिसने बी०ए० तक शिक्षा प्राप्त की थी और जो अपने कॉलेज के सैकंडो लड़का के दिल की धड़कन थी रणधीर की किसी भी चेतना की नहीं छूँ सकती। वह हिना की खुंगवू में उस बूँद की तलाश करता रहा जो इन्हीं तिनो में जब कि खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते वर्षा में नहा रहे थे उस घाटन लड़की के मँले बदन से आई थी।

वह जव स्कून जा रहा था तो रास्त म उसन एक कनई देवा जिसके सिर पर एक बहुत बडा टोकरा था । उसम दो ताजा जिवह किए हुए बकरे थ । सालें उत्तरो हुई थी और उनक नगे गोस्त म से धुआ उठ रहा था । जगह जगह पर यह गोस्त, जिसकी दसरर मसऊ के ठंड गालो पर गर्मी की लहरें-सी दौड जातो थी फडक रहा था—जस कभी-कभी उसकी आवा फडका करतो थी ।

सवा नी बज हागे मगर भुक् भूरे बादला के कारण ऐसा लगता था कि अभी बहुत सवेरा है । पाला जोरा पर नहो था, लेकिन रास्ता चलत लोगा क मुह स गम गम रामावारा की टूटिया की तरह गाढा सफेद धुआ निकन रहा था । हर चीज बोझिन दिखाई देती थी, जसे बादला के बोझ तले दबो हुई हो । मौसम कुछ ऐसी अनुभवशीलता लिए हुए था जो रबड के जूत पहनकर चलने से पदा होती है । इसपर भी बाजार मे लोगा का आवागमन जारी था और दुकानें खुल रही थी । आवाजें मद्धम थी जस कानाफूसिया हो रही हा । लोग हल्के हल्के बदन उठा रहे थे कि अधिक ऊंचो आवाज न निकले ।

मसऊद बगल म बस्ता दबाए स्कूल जा रहा था । न जान आज वह क्या मुस्त मुस्त सा था लेकिन जब उसन बिना खाल के ताजा जिवह किए हुए बकरो के गोस्त स सफेद सफेद धुआ उठते दखा तो उस विचित्र प्रकार क आनंद का अनुभव हुआ । उस घुए न उसके ठण्डे ठण्डे गाला पर गम गम लकीरो का एक जाल भा बुन दिया । उस गर्मी ने उसे आनंद प्रदान किया और वह सोचने लगा कि सदिया म ठण्ड हाया पर बैठ खाने के बाद यदि यह धुआ मिल जाया करे तो कितना अच्छा हो । वातावरण म उजलापन नहीं था । प्रकाश था मगर धुधला धुधला । कुहर की पतली-सी परत हर वस्तु पर चढी हुई थी, जिससे वातावरण म गदलापन पैदा हो गया था । यह गदलापन आवा की अच्छा लगता था,

क्याकि नजर आन वाली वस्तुओं को नोक पलक कुछ मद्धम पड़ गई थी।

मसऊद जब स्कूल पहुँचा तो उस साधिया से यह मालूम करके बिलकुल प्रसन्नता नहीं हुई कि स्कूल तबत्तर साहब के देहान के कारण बंद कर दिया गया है। सर लडके प्रसन्न थे, जिसका प्रमाण यह था कि वे अपने बस्ने एक स्थान पर रखकर स्कूल के अहाते में ऊटपटांग खेला में व्यस्त थे। कुछ छुट्टी का पता चलत ही घरा की लोट गए। कुछ अभी आ रहे थे। कुछ नोटिस बोर्ड के पास एकत्र थे और बार बार एक ही तिरावट पर रह थे।

मसऊद ने जब सुना कि तबत्तर साहब मर गए हैं तो उस बिलकुल अप्रसन्न नहीं हुआ। उसका दिल भावनाओं में तिलकुल खाली था। हा, उतन यह जल्द सोचा कि पिछले वर्ष जब उसका दादा का देहान इन्हीं दिना हुआ था तो उनका जनाजा से जान में बड़ा असुविधा हुई थी। इस-विषय कि बारिश शुरू हो गई थी। वह भी जनाजे के साथ गया था और ब्रिस्टान में चिपती कीचड़ का कारण ऐसा बिगड़ा था कि मुनी हुई ब्रि-म गिरते गिरते पड़ा था। य सब बातें उस अच्छी तरह याद थी। बड़ा जाड़ा, उमक कीचड़ का तय-तय कण्टे लालिमाय नील हाथ जिन्हें दस्तान से गप-गप कर पर जात थे। नार जो कि बस की नीली मालूम होती थी और फिर यादग पाकर हाथ-आन घान और कपड़े बदलन का मुनीयन— यह सब कुछ उस अच्छी तरह याद था, अतएव जब उसने तबत्तर साहब के देहान का खबर सुनी तो उस पर सब बीजों हुई बातें याद आ गई और उसने सोचा कि जब तबत्तर साहब का जनाजा उठेगा तो बारिश शुरू हो जाएगी और ब्रिस्टान में इन्हीं कीचड़ हो जाएगी कि बड़े भाग बिग-सें और उतन लगी गाड़ें आएगी कि बिगड़िया उठेंगे।

मसऊद का खबर सुनकर अपनी बत्ती का और मुँह गया। बार में पहुँचकर उतन घरा दस्त का नाला गाता। ला-नील कुम्हारों, जिन्हें उस दूसरे दिन पुन गाता था उसमें रंगा और बारी बत्ती उठाकर पर की बार पर गया।

रंग में उमक फिर बत्ती का नाला बिगड़ बिगड़ कर गया। रंग में लटका का सब बगोद तमकवा दिया था। दूसरा तमक पर पड़ा था।

जब मसऊद दुकान के सामन से निकल रहा था तो उसके मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि गोश्त को, जिसमें से घुआ उठ रहा था, छूकर देखे। अतएव उसने आगे बढ़कर उगली से बकरे के उस भाग का छूकर देखा जो अभी तक फाँक रहा था। गोश्त घम था। मसऊद की ठण्डी उगली को यह गर्मी बहुत भली लगी। बसाई दुकान के भीतर छुरिया तज करने में व्यस्त था अतएव मसऊद ने एक बार फिर गोश्त को छूकर देखा और वहाँ से चल पड़ा।

घर पहुँचकर उसने जब अपनी माँ को मक्तर साहब की मृत्यु की खबर भुनाई तो उस मालूम हुआ कि उसके अम्बाजी उड़ीके जनाजे के साथ गए हैं। अब घर में केवल दो व्यक्ति थे। माँ और बड़ी बहन। माँ रसाईघर में बैठती सब्जी पका रही थी और बड़ी बहन बलसूम पान ही एक नागडी लिए दरवारी की सरगम याद कर रही थी।

गली के दूसरे राहके खूबि गवर्नमण्ट स्कूल में पढ़त थे, उसपर इस्लामिया स्कूल के मकान साहब की मृत्यु का कुछ असर नहीं हुआ था, इसलिए मसऊद ने स्वयं को बिलकुल बेकार महसूस किया। स्कूल का कोई काम भी नहीं था। ठंडी बलास में जो कुछ पढ़ाया जाता था, उसकी यह घर में अम्बाजी से पढ़ चुका था। खेलने के लिए भी उसके पान कोई चीज नहीं थी। एक मँला कुचँला ताँगा अलमारी में पड़ा था लेकिन उसमें मसऊद को कोई दिलचस्पी नहीं थी। लूडो और इसी तरह के अन्य खेल जो उसकी बड़ी बहन अपनी सहेलियों के साथ प्रतिदिन खेलती थी, उसकी समझ में बाहर थे। समझ से बाहर यों थे कि मसऊद ने कभी उनको समझने की कोशिश ही नहीं की थी। स्वाभाविक रूप से उस ऐसे खेल से काँइ लगाव नहीं था।

बस्ता अपने स्थान पर गवर्न और कोट उतारने के बाद वह रसाई-घर में अपनी माँ के पास बठ गया और दरवारी की सरगम सुनता रहा, जिसमें कई बार सान ग म आता था। उसकी माँ पालक काट रही थी। पालक काटने के बाद उसने हूर-हूरे पत्ता का गीना-गीना ढेर उठाकर झण्डिया में डाल दिया। थोड़ी देर के बाद जब पालक की आवाज लगी तो उसमें से सफेद नफेद घुआ उड़न लगा।

उम धुए को दसकर मसऊद को बकरे का गोश्त यात्रा गया, अत-
एव उमने अपनी मा से कहा, 'अम्मी जान ! आज मैं कमाई की दुकान
पर दो बकरे दस खाल उतरी हुई थी और उनमें से धुआ निकल रहा था,
बिलकुल वैसा ही जैसा कि मुंह मकर मेर मुंह से निकला करता है।'

'अच्छा ! यह कहकर उसकी मा चल्ह म से लकड़िया के कोयले
झाड़ने लगी।

'हा और मैं गास्त को अपनी उगनी स छूकर देखा तो वह गम
था।

'अच्छा ! यह कहकर उसकी मा न वह बरतन उठाया जिसमें उमने
पालक का साग घोया था और वह रसोईघर से बाहर चली गई।

'और वह गोश्त कई जगह में पड़कता भी था।'

'अच्छा ! मसऊद की बड़ी बहन न दरवारी सराम याद करनी छोड़
दी और उसकी और देखत हुए बोली, कस पड़कता था ?'

यो यो, मसऊद न उगलियो से पड़कन पदा करके अपनी बहन को
दिखाई।

फिर क्या हुआ ?'

यह प्रश्न बलसूम ने अपने सरगम भरे दिमाग से कुछ इस प्रकार
निकाला कि मसऊद एक क्षण के लिए बिलकुल हतबुद्धि सा हो गया,
'फिर क्या होना था—मैं ऐसे ही आपसे बात की थी कि कसाई की
दुकान पर गोश्त पड़क रहा था। मैंने उगली से भी छूकर देखा था—
गम था।

गम था—अच्छा मसऊद, यह बताओ, तुम मेरा एक काम करोगे ?'

'बताइए।

आओ मेरे साथ आओ।'

नहीं आप पहले बताइए, काम क्या है ?'

'तुम आओ तो सही मेरे साथ।'

'जी नहीं, आप पहले काम बताइए।'

देखो मेरी कमर में बड़ा दब हो रहा है—मैं पलंग पर बैठती हूँ,
तुम जरा पाव से दबा दना। अच्छे भाई जो हुए ! अल्ला की कसम, बड़ा

दद हो रहा है।' यह कहकर मसऊद की बहन ने अपनी कमर पर मुक्किया मारनी गुरु कर दी।

'मह आपकी कमर को क्या हो जाता है? जब दसो दद हो रहा है और फिर आप दबवाती भी मुझीस हैं—क्या नहीं अपनी सहलिया से कहती।' मसऊद उठ खड़ा हुआ और तयार हो गया।

'बलिये, लेकिन आपस कहे देता हूँ कि दस मिनट स ज्यादा बिलकुल नहीं दबाऊंगा।

'शाबाह, शाबाश।' उसकी बहन उठ खड़ी हुई और सरगमो की काफी सामने तक में रखकर उस कमरे की ओर बढ़ी जहाँ मसऊद और वह दोनों सते थे।

आगन में पहुँचकर उसने अपनी दुसती हुई कमर सीधी की ओर ऊपर आकाश की ओर देखा। मटियाने बादल भुके हुए थे। 'मसऊद, आज जरूर बारिश होगी।' यह कहकर उसने मसऊद की ओर देखा जो भीतर अपनी चारपाई पर जा लेटा था।

जब कलसूम अपने पलंग पर सोये मुँह लेट गई तो मसऊद ने उठकर घड़ी में समय देखा और कहा 'देखिए बाजी, ग्यारह में दस मिनट है, मैं पूरे ग्यारह बजे आपकी कमर दबाना छोड़ दूँगा।'

बहुत अच्छा, लेकिन तुम अब खून के लिए ज्यादा नखर न बघारो। इधर मेरे पलंग पर आकर जल्दी से कमर दबा दो। बनावत रहो, बड़े जोर से बान ऐँठूंगी। कलसूम ने मसऊद को डाट पिलाई। मसऊद ने अपनी बड़ी बहन की आवाज का पालन किया और दीवार का सहारा लेकर पाव स उसकी कमर दबानी शुरू कर दी। मसऊद के बजन के नीचे कलसूम की चौड़ी चक्ती कमर में हल्का-सा झुकाव पैदा हो गया। जब उसने दबाना 'गुट' किया, ठीक उसी तरह जिस तरह मजदूर मिट्टी गूँघते हैं, ती कलसूम ने मजा लेने के लिए धीरे धीरे 'हाय हाय' करना शुरू कर दिया।

कलसूम के कूल्हा पर गोदत अधिक था। जब मसऊद का पाव उस भाग पर पड़ा तो उसे ऐसा महसूस हुआ मानो वह उस बकरे के मांस को दबा रहा हो, जो उसने बसाई की दुकान में उगली में छुआ था। इस अनुभव ने कुछ क्षणों के लिए उसके मन में 'मस्तिष्क' में कुछ ऐसे विचार

उत्पन्न कर दिए जिनका न कोई सिर था न पर। वह उनका मतलब न समझ सका और समझता भी कैसे जबकि कोई विचार पूरा ही नहीं था।

एक दो बार मसऊद ने यह भी महसूस किया कि उसके पाव के नीचे गोشت के लोथड़ा में हरबत पैदा हो गई है, ठीक वैसी ही हरबत जो उसने बकरे के गम गम गोदत में देखी थी। उसने बड़ी बदिनी से कमर दवाना शुरू की थी, लेकिन अब उसे इन काम में आनंद का अनुभव होने लगा। उसके बोक के नीचे बलसूम धीरे धीरे कराह रही थी। यह भिचा भिचा सा स्वर जो मसऊद के पैरों की हल्कत का साथ दे रहा था, उस अनाम से आनंद में वृद्धि कर रहा था।

घड़ी में ग्यारह बज गए, लेकिन मसऊद अपनी बहुत बलसूम की कमर दवाता रहा। जब कमर अच्छी तरह दवाई जा चुकी तो बलसूम सीधी लेट गई और कहने लगी, 'शाबाश मसऊद, गावा'। अब लगे हाथा टांगें भी दया दो। बिलकुल इसी तरह, शाबाश मेर भाई।'।

मसऊद ने दीवार का सहारा लेकर बलसूम की जाघा पर अपना पूरा बोक डाला तो उसके पैरों के नीचे मछलिया भी तड़प गईं। बलसूम बड़े जोरा से हस पड़ी और दुहरी हो गई। मसऊद गिरते गिरते बचा लेकिन उसके तलवों में मछलियों की वह तड़प जस रथामी रूप में जम-भी गई। उसके मन में एक प्रबल इच्छा ने गिर उठाया कि वह उसी प्रकार दीवार का सहारा लेकर अपनी बहन की जाघें दवाए। अतएव उसने कहा, 'मह आपने ठसना क्या शुरू कर दिया। सीधी लेट जाइए— मैं आपकी टांगें दवा दू।

बलसूम सीधी लेट गई। जाघों की मछलिया इधर उधर हान के कारण जो गुदगुदी पैदा हुई थी, उसका असर अभी तक उसके शरीर में बाकी था ना भई, मेर गुदगुदी होती है। तुम जगलियों की तरह दवात हो।'।

मसऊद की खयाल आया कि गायद उसने गलत ढंग अपनाया था। 'नहीं अब की बार मैं आपपर पूरा बोक नहीं डालूंगा—आप इत्मीनान रखिए। अब ऐसी अच्छी तरह दवाऊंगा कि आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।'।

दीवार का सहारा लेकर मसऊ ने अपने शरीर को तोला और इस प्रकार धीरे-धीरे कलसूम की जाघा पर अपने पैर जमाए कि उसका धाधा बोझ वही गायब हो गया। धीरे धीरे बड़ी सावधानी से उसने पैर चलाने शुरू किए।

कलसूम की जाघो में अबड़ी हुई मछलियां उसने पैरा के नीचे दब दबकर इधर-उधर फिसलने लगीं। मसऊ ने एक बार स्कूल में तन हुए रस्से पर एक बाजीगर को चलते देखा था। उसने सोचा कि बाजीगर के पैरा के नीचे तना हुआ रस्सा इसी प्रकार फिसलता होगा। इससे पहले भी कई बार उसने अपनी बहन कलसूम की टांगें दवाई थी, लेकिन वह आनन्द, जो उसे अब आ रहा था, पहले कभी न आया था। बकरे के गम-गम गोشت का उसे बार बार खाना आता था। एक दो बार उसने सोचा, कलसूम का अगर जिवह किया जाय तो खाने उतर जाने पर क्या उसके गोشت में से भी धुआं निकलेगा? लेकिन ऐसी बेहूदा बातें सोचने पर उसने अपने आपको अपराधी ना अनुभव किया और अपने भस्तिष्क का इस प्रकार साफ कर दिया जैसे वह स्लेट का स्पंज से साफ किया करता था।

‘बस बस, कलसूम थक गई, ‘बस-बस!’

मसऊ को एकदम शरारत भूझी। वह पलंग में नीचे उतरने लगी तो उसने कलसूम के दोनों बगलों में गुदगुदी करना शुरू कर दी। यह हसी के भार से टोट पाट हान लगी। इतनी शक्ति भी उसमें नहीं कि वह मसऊ के हाथों को पर भटक दे, लेकिन जब कोशिश करके उसने मसऊ को लाल जमानी चाही तो मसऊ उछलकर जद से बाहर हो गया और स्लीपर पहनकर कमरे से बाहर हो गया।

जब वह आगन में पहुँचा तो उसने देखा कि हल्की हल्की बूढ़ाबादी हो रही थी, बादल और भी भूक आए थे। पानी की नन्ही नन्ही बूँदें किसी प्रकार की आवाज पदा किए बिना आगन की इन्तों में धीरे धीरे जड़ हो रही थीं। मसऊ का बदन बड़ी प्रिय उष्णता का अनुभव कर रहा था। जब हवा का एक ठण्डा झटका उसके शान्ति से टकराया और दो तीन नन्ही नन्ही बूँदें उसकी नाक पर पड़ीं तो उसका बदन में एक

भुरभुरी सी लहरा उठी । सामन कोठे की दीवार पर एक कबूतर और एक कबूतरी पाम पास पख फुलाए बैठे थे । ऐसा मालूम होता था कि दोनों दमपुरत की हुई हडिया की तरह गम है । गुले दाऊदी और नाजवी के हरे हर पत्ते ऊपर लाल-लाल गमला म रहा रह थे । वातावरण में नींदें घुली हुई थी, ऐसी नींदें जिनमें जागरण अधिक होता है और मनुष्य के इंद्र गिद नम नम सपने इस प्रकार लिपट जाते हैं जैसे ऊनी कपड़ा ।

मसऊद ऐसी बातें सोचन लगा, जिनका अर्थ उसकी समझ में नहीं आता था । वह उन बातों को छूकर देख सकता था लेकिन उनका अर्थ उसकी पकड़ से बाहर था । फिर भी एक अनाम सा आनंद उसे इस मोच विचार में आ रहा था ।

बारिश में कुछ देर खड़े रहने के कारण जब मसऊद के हाथ बिल-कुल ठण्डे हो गए और दवाने से उनपर सफेद सफेद धब्बे पड़ने लगे तो उसने भुट्टिया बस ली और उनको मुह की भाप से गम करना शुरू किया । ऐसा करन से हाथों को कुछ गर्मी तो पहुंची लेकिन वे सजल हो गए । अतएव आग तापने के लिए वह रसोईघर में चला गया । खाना तैयार था । अभी उमर पहला कौर ही उठाया था कि उसका बाप कब्रिस्तान से वापस आ गया । बाप बटे में कोई बात नहीं हुई । मसऊद की माँ तुरंत उठकर दूसरे कमरे में चली गई और वहां देर तक अपने पति से बातें करती रही ।

खाने से निपटकर मसऊद बैठक में चला गया और खिटरी खोलकर फश पर लेट गया । बारिश के कारण सर्दी बढ गई थी और हवा भी चलने लगी थी, लेकिन मसऊद को यह सर्दी अप्रिय नहीं लग रही थी । तालाब के पानी की तरह यह ऊपर से ठण्डा और भीतर से गम थी । मसऊद जब फश पर लेटा तो उसके मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि वह उस सर्दी के भीतर बस जाऊ, जहां उसके शरीर को आनंददायक गर्मी पहुंचने लग । काफी देर तक वह ऐसी नीम गम बातों के बारे में सीचता रहा और इस कारण उसके पुट्टों में हल्की हल्की दुखन पैदा हो गई । एक दो बार उसने अगड़ाई ली तो उसे मजा आया । उसके शरीर के किसी भाग में, यह उसे मालूम नहीं था कि कहा, कोई चीज अटक सी गई थी । यह

चीज क्या थी, इसका भी मसऊद को कुछ पान न था। असबलता उस घटकाव ने उसके पूरे शरीर में बचनी, एक दरी हुई बचनी की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। उसका सारा शरीर खिंचकर सम्प्रा हो जान का इरादा बन गया था।

दर तक गुदगुद बालीज पर करपटें बदलन के बाद वह गठा और रसोईघर से होता हुआ आगन में आ निकला। न कोई रसोईघर में था और न आगन में। इधर-उधर जितने कमर थे सबके सब बंद थे। बारिश अब रुक गई थी। मसऊद ने हाकी और गेंद निवाली और आगन में खेलना शुरू कर लिया। एक बार जब उमन जार में हिट लगाई तो गेंद आगन के दाहिने हाथ वाले कमर के दरवाजे पर लगी। भीतर से मसऊद के बाप की आवाज आई, बोन ?

‘जी मैं हूँ मसऊद।’

भीतर से आवाज आई ‘यहाँ कर रहे हो ?’

‘जी खेल रहा हूँ।’

‘खेना।’

फिर थोड़ी दूर के बाद उमने बाप ने कहा, ‘तुम्हारी मा मरा सिर दबा रही है, ज्यादा शोक न मचाना।’

यह सुनकर मसऊद ने गेंद वहीं पड़ी रहने दी और हाकी हाथ में लिए सामन वाले कमर की ओर चला। उनका एक दरवाजा पूरा भिड़ा हुआ था और दूसरा आधा—मसऊद को एक गलत सूझी। दबे पाँव वह अधभिड़ दरवाजे की ओर बढ़ा और धमाके के साथ दोनों पट खोल दिए। दो चीजें उभरी और बनसूम और उसकी सहली विमला न, जा पास पास लेटी हुई थी भयभीत होकर भट से लिहाफ गीं लिया।

विमला के कानों में बदन खुल हुए थे और कलसूम उसका नग्न वक्षस्थल का घूर रही थी।

मसऊद कुछ न समझ सका। उसके निगाह पर धुआँ भा उठा गया। वहाँ से उठते बदन लौटकर वह जब बैठक की ओर चला तो अचानक उस अपने भीतर एक अथाह शक्ति का अनुभव हुआ, जिसने कुछ दूर के लिए उसकी सोचन-समझने की शक्ति हर ली।

बठक में सिडकी के पास बैठकर जब मसऊद ने हाकी को दोना हाथा स पकडकर घुटने पर रखा तो उसे खमाल आया कि जरा-भा दबाव डालन पर भी हाकी में भुकाव पैदा हो जाएगा और कुछ अधिक जोर लगान पर तो हैण्डल चटाखसे टूट जाएगा । उसन घुटने पर हाकी के हैण्डल में भुकाव तो पैदा कर लिया लेकिन अधिक म अधिक जोर लगान पर भी वह टूट न सका । देर तक वह हाकी के साथ दगल करता रहा । जब थककर हार गया तो भुक्कनाकर उसन हाकी परे फेंक दी ।

मोजेल

त्रिलोचन न पहली बार, चार वर्षों में पहली बार, रात को आकाश दया था और वह भी इसलिए कि उसकी तबीयत बहुत खराब हुई थी और वह केवल खुती हवा में कुछ दूर सोचने के लिए अड़धानी चेंबोज के टरेस पर चला आया था।

आकाश बिल्कुल साफ था और बहुत बड़े साकी तम्बू की तरह पूरी बम्बई पर नना हुआ था। जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी, वस्तियाँ ही वस्तियाँ नजर आती थीं। त्रिलोचन का ऐसा महसूस होता था कि आकाश से बहुत में तार भड़कर बिल्डिंगों में, जो रात के अंधेरे में बड़े-बड़े पड़ लगती थी, अटक गए थे और जुगनुआ की तरह टिमटिमा रहे थे।

त्रिलोचन के लिए यह एक बिल्कुल नया अनुभव, एक नई स्थिति थी—रात को खुले आकाश के नीचे सोना। उसने अनुभव किया कि वह चार वर्ष तक अपने पचट में कद रहा तथा प्रकृति की एक बहुत बड़ी दान से वंचित। लगभग तीन बजे थे। हवा बड़ी हल्की फुल्की थी। त्रिलोचन पंखों की कृत्रिम हवा का आदी था जो उसका पूरे शरीर को बोझिल कर देती थी। सुबह उठकर वह मदा ऐसा अनुभव करता था, मानो उसे रात भर मारा पीटा गया हो। लेकिन अब सुबह की प्राकृति हवा में उसके शरीर का रोम रोम तरोताज़ा हो चूसकर तप्त हो रहा था। जब वह ऊपर आया था तो उसका दिमाग बहुत बचन था। लेकिन आधे घण्टे में ही जो बचती और खराब उस घण्टे में रही थी, किसी हद तक दूर हो गयी थी। अब वह स्पष्ट रूप से सोच सकता था।

दृष्टान्त और उसका सारा परिवार मुहल्ले में था, जो कट्टर मुसलमानों का बन्द था। यहाँ कई घरों में भाग लग चुकी थी। कई जानें जा चुकी थीं। त्रिलोचन उन सबको वहाँ से ले आया होता, लेकिन मुसीबत यह थी कि कपड़ों लग गया था और वह भी न जाने कितने घण्टों के लिए। शायद अड़तालीस घण्टों के लिए। और त्रिलोचन विवश था।

आमपास सब मुसलमान थे, वे भी बड़े भयानक किस्म के मुसलमान । पजाब स धड़ाधड़ खबरें आ रही थी कि वहां सिल मुसलमानी पर बहुत जुल्म ढा रहे हैं । कोई भी हाथ—मुसलमान हाथ—बड़ी आसानी से नरम व नाजुक वृषात वीर की कलाई पकड़कर उसे मौत के मुह की तरफ ले जा सकता था ।

कृपाल की मा अधी थी और बाप अपाहिज । भाई था लेकिन कुछ समय से वह देवलाली में था और उसे वहां नये नये लिए हुए ठेके की देखभाल करनी थी ।

त्रिलोचन को कृपाल के भाई निरजन पर बहुत गुस्सा आता था । उसने, जो रोज अखबार पढ़ता था उपद्रवों की तीव्रता के बारे में एक मप्ताह पहले चेतावनी दे दी थी और स्पष्ट दावा में कह दिया था, निरजन, ये ठेके बेके अभी रहने दो, हम एक बहुत ही नाजुक दौर से गुजर रहे हैं । अगरचे तुम्हारा वहां रहना बहुत जरूरी है लेकिन वहां मत रही और मेरे यहाँ आ जाओ । इसमें कोई शक नहीं कि जगह कम है लेकिन मुसीबत के दिनों में आदमी जैसे तसे गुजारा कर लिया करता है, लेकिन वह न माना । उसका इतना बड़ा लेक्चर सुनकर केवल अपनी घनी मूछा में मुस्करा दिया, 'यार, तुम बक़ार फ़िक्र करते हो । मैंने यहाँ ऐसे कई फ़िमाद देखे हैं । यह अमतसर या लाहौर नहीं बोम्बे है बोम्बे । तुम्हें यहाँ आए सिर्फ़ चार साल हुए हैं और मैं बारह बरस से यहाँ रह रहा हूँ बारह बरस से ।

तुम जानें निरजन बम्बई को क्या समझता था । उसका खयाल था कि यह ऐसा शहर है कि अगर उपद्रव हो भी तो उनका अमर अपने आप खत्म हो जाता है, मानो उसके पास छमतर हो—या वह कहानियों का कोई ऐसा किला हो, जिसपर कोई आपत्ति नहीं आ सकती । लेकिन त्रिलोचन प्रातःकालीन वायु में साफ़ देख रहा था कि मुहल्ला बिल्कुल सुरक्षित नहीं । वह तो सुबह के अखबारों में यह भी पढ़न को तैयार था कि कृपाल वीर और उसके मा-बाप क़त्ल हो चुके हैं ।

उसकी कृपाल वीर के अपाहिज बाप और उसकी मा की काई पर-

बाहू नहीं थी। व मर जाते और कृपाल कौर बच जाती तो त्रिलोचन के लिए अच्छा था। वहा दबलासी म उमका भाइ निरजन भी मारा जाता तो और भी अच्छा था, क्योंकि इस तरह त्रिलोचन के लिए मंदान माफ हो जाता। खासकर निरजन उसके रास्ते में रोड़ा ही नहीं, बहुत बड़ा पत्थर था। और इसीलिए जब वभी कृपाल कौर न उसके वार में यानें हाती तो वह उस निरजनसिंह के बजाय अलखनिरजनसिंह कहा करता था।

मुबह की हवा धीरे-धीरे बह रही थी और त्रिलोचन का पगडी रहित सिर बड़ी प्रिय ठण्डक महमूस बर रहा था, लकिन उमम आका अदगे एक दूसरे से टकरा रह थे। कृपाल कौर नयी-नयी उसकी जिंदगी में आई थी। या तो वह हट्टे नट्ट निरजनसिंह की बहन थी, लेकिन बहुत ही नरम, नाजुस और लचकीली थी। वह दहात में पली थी। वहा की कई गर्मिया-सदिया दस्त चुकी थी, फिर भी उसमें वह सगनी और मरदानापन नहीं था, जो दहात की आम सिल लडकिया में होता है, जिन्हें कड़े में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है।

उसके तैन नका कच्चे कच्चे थे, मानो अभी अंधूरे हैं। आम दहाती गिय लडकिया की अपक्षा उसका रंग गीरा था, मगर पीर लटठ की तरह, और बदन चिकना था, मसराइण्ड कपड़े की तरह। और वह बहुत लजीली थी। त्रिलोचन उसीक गाव का था लेकिन वह अधिक दिन वहा नहीं रहा था। प्राइमरी में निकलकर जब वह गहर के हाई स्कूल में गया तो बस, फिर उही का होकर रह गया। स्कूल से छट्टी पाई तो कालेज की पढाई शुरू हो गयी। उस बीच वह कई बार—अनकी बार अपने गाव गया, लेकिन उसने कृपाल कौर नाम की किसी लडकी का नाम न सुना। शायद इसलिए कि हर बार वह इस अफरा तफरी में गहता था कि गीध से गीध गहर लौट जाए।

कालेज का जमाना बहुत पीछे रह गया था। अडवानी चैम्बेज के टैरम और कालेज की इमारत में गायद दस बष का फासला था, और यह फासला त्रिलोचन के जीवन की विचित्र घटनाआ से भरा हुआ था। चर्मा सिंगापुर हागवाग, फिर चम्बई, जहा वह चार बष से रह रहा था, इन

चार वर्षों में उसने पहली बार रान को आकाश की शक्ल देखी थी, जो बुरी नहीं थी—खाकी रंग के तम्बू में हजारों दीय टिमटिमा रहे थे और हवा ठण्डी और हल्की-फुल्की थी।

कृपाल कौर के विषय में सोचते सोचते वह मोजिल के बारे में साचने लगा। उस यहूदी लड़की के बारे में, जो अडवानी चेंब्वज में रहती थी। उससे त्रिलोचन का गोड़े गोड़े¹ इश्क हो गया था। ऐसा इश्क, जो उसने अपनी पतीम वप की जिन्दगी में कभी नहीं किया था।

जिस दिन उसने अडवानी चेंब्वज में अपने एक ईसाई मित्र की सहायता से दूसरे माले पर फ्लैट लिया, उसी दिन उसकी मुठभेड़ माजेल से हुई, जो पहली नजर में उस खोफनाक हृद तक दीवानी मालूम हुई थी। कटे हुए भूरे बाल उसके सिर पर बिखर हुए थे—वेहद बिखर हुए। होठों पर लिपस्टिक ऐसे जमा थी, जैसे गाढ़ा खून और वह भी जगह जगह घटखी हुई। वह ढीला-ढाला सफेद चोगा पहन चुकी थी, जिसके खुले गिरेबान से उसकी नीली पड़ी बड़ी-बड़ी छातियों का लगभग चौधार्ध भाग नजर आ रहा था। बाह जो कि नगी थी, उनपर महीन-महीन बाला की तह जमी हुई थी, जैसे वह अभी अभी किसी संतून से बाल कटवाकर आई हो और उनकी नहीं नहीं हवाईया उनपर जम गई हा।

होठ अधिक मोटे नहीं थे 'लेकिन गहरे उनाबी रंग की लिपस्टिक कुछ इस तरीके से लगाई गई थी कि वे मोटे और मसे के गोشت के टुकड़े जैसे मालूम होते थे।

त्रिलोचन का फ्लैट उसके फ्लैट के बिल्कुल सामन था। बीच में एक तग मनी थी, बहुत ही तग। जब त्रिलोचन अपने फ्लैट में घुसने के लिए आगे बढ़ा तो माजेल बाहर निकली। राडाऊ पहन थी। त्रिलोचन उसकी आवाज सुनकर रुक गया। माजेल ने अपने बिखरे बालों की चिक्की में से अपनी बड़ी बड़ी आंखों से त्रिलोचन की ओर देखा और हसी—त्रिलोचन बीसला गया। जब से चाबी निकालकर वह जल्दी में दरवाजे की ओर बढ़ा। माजेल की एक खड़ाऊ सीमेण्ट के चिक्की फर्श पर फिसली और वह

1 घुटने घटने

उसके ऊपर गा गिरी ।

जब त्रिलोचन सभला ती मौजेल उसके ऊपर थी, कुछ इस तरह कि उसका लम्बा चाँगा ऊपर चढ़ गया था और उसकी दाँ नगी, बड़ी तगड़ी टाँगें उसके इधर उधर थी और जब त्रिलोचन ने उठने की कोशिश की तो वह बोरालाहट में कुछ इस तरह मौजेल—मारीं माजल में उलझा, जैसे वह साबुन की तरह उसके सार वदन पर फिर गया हा ।

त्रिलोचन ने हाफत हुए बड़े गिण्ट गब्दा में उसमें क्षमा मागी । मौजेल में अपना चाँगा ठीक किया और मुस्करा दी, वह खडाऊ एकदम बण्डम चीज है ।' और वह उतरी हुई मडाऊ में अपना भणूठा और उसके साथ वाली उगली फमाती हुई कारीडोर से बाहर चली गई ।

त्रिलोचन का खयाल था कि मौजेल में दोस्ती पैदा करना गायब मुश्किल हो, लेकिन वह बहुत ही थोड़े समय में उससे घुलमिल गई । हा, एक बात थी कि वह बहुत उदृण्ड और मूहजोर थी और त्रिलोचन की कुछ परवाह नहीं करती थी । वह उसमें खानी थी, उससे पीनी, थी उसके साथ सिनेमा जाती थी । मारा-भाग दिन उसके साथ जुहू पर नहाती थी, लेकिन जब वह बाहो घोर होठों से कुछ मागे बढना चाहता तो वह उस डाट देती । कुछ इस तरह उस घुड़बती कि उसके सारे मन्वे दाडी और मूछा में चक्कर फाटत रह जाते ।

त्रिलोचन की पहले किसीके साथ प्रेम नहीं हुआ था । लाहौर में, बर्मा में, मिगापुर में वह लड़कियाँ कुछ समय के लिए खरीद लिया करता था । उस कभी स्वप्न में भी खयाल न था कि बम्बई पहुँचत ही वह एक बहुत ही अल्ट्राड किस्म की यहूनी लकी के प्रेम में गोड़े-गोड घस जाएगा । वह उससे कुछ विचित्र प्रकार की विमुखता बरतती थी । उसके कहन पर तुरन्त से घजबर सिनेमा जान के लिए तयार हो जाती थी, लेकिन जब वह अपनी मोट पर चढते तो इधर उधर वह निगाह दोड़ाना शुरू कर देती । यदि कोई उसका परिचित निकल आता तो और से हाथ हिलाती और त्रिलोचन में पूछे बिना उसकी बगल में जा बैठती ।

होटल में बठे हैं । त्रिलोचन ने मौजेल के लिए विशेष रूप से उसका खाने भगवाए हैं, लेकिन उस अपना कोई पुराना दोस्त दिखाई पड गया है

और वह अपना निवाला छोड़कर उसने पास जा बठी है और त्रिलोचन को छाती पर मूँग दल रही है ।

त्रिलोचन कभी-कभी भिन्ना जाता था, क्याकि वह उस अकला छोड़ कर अपने उन पुरान दोस्ता और परिचितों के साथ चली जानो थो और कई कई दिन तक उसस मुलाकात नही करती थो । कभी सिर दद का वहाना कभी पेट की खराबी जिसके तार म त्रिलोचन को अच्छी तरह मालूम था कि वह फौलाद की तरह कडा था और कभी खराब नही हो सकता था ।

जब उससे मुलाकात होती तो वह उससे कहती तुम सिल्ल हा, य नाजुक बातें तुम्हारी समझ मे नहो आ सकते ।

यह सुनकर त्रिलोचन जल भुन जाता और पूछता 'कौन सो नाजुक बातें—तुम्हार पुरान यारा की ?

मोजेल दोनो हाथ अपन चौड़े चकले कूट्हा पर लटकाकर अपनी ताडी टाँगें चौडी कर दती और कहती यह तुम मुझ उनके तान क्या देते हो । हाए थ मेरे पार है और मुझे अच्छे लगते है । तुम जलत हो तो जलते रहो ।'

त्रिलोचन एक कुशल वकील की तरह पूछता इस तरह तुम्हारे मरी कम निभेगी ?'

मोजेल जोर का कहकहा लगाती तुम सचमुच सिल्ल हो । इडियट तुमसे किमने कहा है कि भर साथ निभाओ । अगर निभान की बात है तो जाओ अपन दग म, किसी सिखनी स त्याह कर लो । भर साथ तो इमी तरह चलेगा ।

त्रिलोचन नरम पड जाता । वास्तव मे मोजेल उसकी बडो कमजोरी बन गई थी । वह हर हालत मे उसके सामीप्य का इच्छुक था । इसम कोई म देह नही कि मोजेल की वजह से उसकी प्राय वरज्जती होती थी । मामूली मामूलो क्रिश्चियन छोकरा के सामने, जिनको कोई हस्ती नही थी उस लज्जित होना पडता था । नेकिन दिन से मजबूर होकर उसने यह सब कुठ सहने का निश्चय कर लिया था ।

ग्राम तीर पर तीहीन और वंइज्जती की प्रतिश्रिया प्रतिशोध हाता

है, लेकिन त्रिलोचन के मामले में ऐसा नहीं था। उसने अपने दिल और दिमाग की बहुत-सी आखें नीच ली थी और बानों में रुई ठस ली थी। उसकी मोजेल पसंद थी। पसंद ही नहीं, जैसा कि वह अक्सर अपने दोस्तों से कहा करता था, गोड़े-गोटे उसके प्रेम में धस गया था। अब इसके सिवा और कोई चारा नहीं था कि उसके शरीर का जितना भाग शेष रह गया था, वह भी इस प्रेम की दबदल में चना जाए और बिस्मा खत्म हो।

ले वप नव वह इसी तरह बेइज्जती का जीवन बिताता रहा लेकिन सुदृढ़ रहा। धामिर एक दिन, जबकि मोजेल मौज में थी, उसने अपनी भुजाओं में उस समेटकर पूछा 'मोजेल, क्या तुम मुझसे प्रेम नहीं करती हो ?'

मोजेल उसकी भुजाओं से निकल गई और कुर्सी पर बैठकर अपने प्राक का घेरा दसने लगी फिर उसने अपनी माटी-माटी मूढ़ी आखें उठाई और घनी पलकों भपकाकर कहा, 'मैं सिल से प्रेम नहीं कर सकती।'

त्रिलोचन ने ऐसा महमूस किया कि उसकी पगड़ी के नीचे किसीन दहकती चिनगारिया रख दी है। उसके तन बदन में आग लग गई, 'मोजेल, तुम हमेशा मेरा मजाक उड़ाती हो यह मेरा मजाक नहीं, मेरे प्रेम का मजाक है।'

मोजेल उठी और उसने अपने भूरे बट हुए दाता का एक दिनफरेक भटका दिया, तुम शेष करा लो और अपने सिर के बाल खुल छाड़ दो ता मैं गत लगाती हूँ कि कर्ट छाकड़े तुम्हें आल मारेंगे—तुम सुदूर हो।

त्रिलोचन ने केशों में और भी चिनगारिया पड़ गई। उसने आग बत्तक ज़ोर से मोजेल को अपनी धीरे खींचा और उसके उन्नाबी हाथों में अपने मूछों भर हाथ गाड़ दिए।

मोजेल ने एकदम 'फूँफू' की और उससे अपने को छुड़ा लिया। 'मैं नुबह ही अपने दाता पर धरा कर चुकी हूँ—तुम कष्ट न करो।'

त्रिलोचन चिल्लाया, 'मोजेल !'

मोजेल बैनटी बैग से छोटा-सा आईना निकालकर अपने हाथ देखने लगी जिनपर लगी गाड़ी लिफाफेक पत्र खराबों पड़ गई थी। 'खुदा की

बसम तुम अपनी मूछा और दाढ़ी का मही इस्तेमाल नहीं करते। इनके बाल ऐसे अच्छे हैं कि मेरा नबी ब्लू स्टाइल अच्छी तरह साफ कर सकते हैं—बस, थोड़ा-सा पट्टाल लगाने की जरूरत होगी।'

त्रिलोचन क्रोध की उम सीमा तक पहुँच चुका था, जहाँ वह बिल्कुल टण्डा हो गया था। वह आराम से सोफे पर बैठ गया। मोजेल भी आई और उसने त्रिलोचन की दाढ़ी खींचनी शुरू कर दी। उसमें जो पिने लगी थी वे उसने एक-एक करके अपने दाता से दवा ली।

त्रिलोचन सुंदर था। जब उसके दाढ़ी मूछा नहीं उगी थी तो लोग उसे खूबे केगा में दखकर धाँसा सा जात थे कि वह कोई कम उम्र की सुंदर लड़की है। मगर अब बालों के इस ढर न उसके नैन नकश साडिया की तरह झर झिपा लिए थे और इस बात की वर स्वयं भी जानता था। लेकिन वह धार्मिक प्रवृत्ति का एक मुनील युवक था। उसके दिल में धर्म के प्रति सम्मान था। यह नहीं चाहता था कि वह उन चीज़ों का अपने अस्तित्व से अलग कर दे जिनमें उसके धर्म की पहचान होती थी।

जब दाढ़ी पूरी खुल गई और उसके मोन पर लटकने लगी तो उसने मोजेल से पूछा 'वह तुम क्या कर रही हो ?

दाता से पिने दबाए वह मुस्कराई, तुम्हारे बाल बहुत मुलायम हैं। मेरा अनुमान चलता था कि इनसे मेरा नबी ब्लू स्टाइल साफ हो सकेगा। त्रिलोचन। तुम ये मुझ से दो मैं इन्हें गूँथकर अपने लिए एक फस्ट क्लास बटुआ बनवाऊँगी।

अब त्रिलोचन की दाढ़ी में फिर चिनगारिया भड़कने लगी। वह बड़ गम्भीर स्वर में मोजेल से बोला, मैं आज तक कभी तुम्हारे मजहब का मजाक नहीं उड़ाया, तुम क्या उड़ाती हो? दलो, किसीकी धार्मिक भावना से खेलना अच्छा नहीं होता। मैं यह कभी बर्दाश्त न करता सिफ इसलिए करता रहा कि मुझे तुमसे सपाह प्रेम है। क्या तुम्हें इसका पता नहीं ?'

मोजेल ने त्रिलोचन की दाढ़ी में खेलना बंद कर दिया और बोली, मुझे मालूम है।

फिर ? त्रिलोचन ने अपनी दाढ़ी के बाल बड़ी सफाई से तह किए

और मोजेल के दाता स पिने निकाल ली। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरा प्रेम बकवास नहीं—मैं तुमस शादी करना चाहता हूँ।’

‘मुझे मालूम है।’ वाला वो एक हल्का सा भट्ठा देकर वह उठी और दीवार में लटकी हुई तस्वीर की तरफ दखन लगी। मैं भी लगभग यही फैसला कर चुकी हूँ कि तुमस शादी करोगी।’

त्रिलोचन उछल पड़ा, सच ?’

मोजेल के उनाबी होठ बड़ी मोटी मुस्कराहट के साथ खुले और उसके सफेद मजबूत दात एक क्षण के लिए चमके। हाँ।’

त्रिलोचन ने अपनी आधी लिपटी दाढ़ी ही से उसको अपने मोने के साथ भीच लिया। ‘तो तो, कर ?’

मोजेल असंग्रह रह गई। जब तुम अपने ये वाल कटवा दोगे।

त्रिलोचन उस समय जी हो मो हो बन गया। उसने कुछ न माचा और कह दिया, ‘मैं कल ही कटवा दूंगा।’

मोजेल फश पर टप डाल करन लगी। ‘तुम बकवास करत हा त्रिलोचन। तुमस इतनी हिम्मत नहीं है।’

उसने त्रिलोचन के दिमाग से मजहब के रह-सह खयाल को बाहर निकाल फेंका। ‘तुम देख लोगी।’

‘देख लूगी।’ और वह तेजी से धागे बटी। त्रिलोचन की मूछा को चूमा और ‘फू फू करती बाहर निकल गई।

त्रिलोचन ने रात भर क्या सोचा और वह किन किन यातनाओं से गुजरा इसकी चर्चा व्यर्थ है इसलिए दूसरे दिन उसने फाट म अपने कंग कटवा दिए और दाढ़ी भी मुडवा दी। यह सब कुछ होता रहा और वह आखें भीचे रहा। जब सारा मामला साफ हो गया तो उसकी आखें खुली और वह देर तक अपनी शकल शीशे में देखता रहा, जिसपर घम्बई की सुन्तर से मुन्दर लटकी भी कुछ दूर के लिए ध्यान देन पर मजबूर हो जानी।

इस समय भी त्रिलोचन वही एक विचित्र ठण्डक मससूस करने लगा, जो सैलून से बाहर निकलकर उसकी लगी थी। उसने टैरेस पर तेज-तज चलना शुरू कर दिया, जहाँ टक्किया और नला की भरमार थी।

वह चाहता था कि उस कहानी का शेष भाग उसके दिमाग में न आए, लेकिन वह आए बिना न रहा ।

बाल कटवाकर वह पहले दिन घर से बाहर नहीं निकला । उसने अपने नौकर के हाथ दूसरे दिन एक चिट लिखकर मोजेल को भेजी कि उसकी तबीयत खराब है, थोड़ी दूर के लिए आ आए । मोजेल आई । त्रिलोचन को बाला के बगैर देखकर पहले वह क्षण भर ठिठकी, फिर 'माई डार्लिंग त्रिलोचन !' कहकर उसके साथ लिपट गई और उसका सारा चेहरा उन्हाड़ी कर दिया । उसने त्रिलोचन के साफ और मुलायम गालों पर हाथ फेरा उसके छोटे अंग्रेजी किस्म के कटे हुए बालों में अपनी उंगलियों से कधी की और अरबी भाषा में नार लगाने लगी । उसने इतना शोर मचाया कि उसकी नाक से पानी बहने लगा । मोजेल ने जब इसे महसूस किया तो उसने अपनी स्कर्ट का घेरा उठाया और उस पाछना शुरू कर दिया । त्रिलोचन शरमा गया । उसने जब स्कर्ट नीची की तो उसने उपटते हुए कहा, नीचे कुछ पहन तो लिया करो ।' मोजेल पर इसका कुछ असर न हुआ । वासी और जगह जगह से उखड़ी हुई लिपस्टिक लगे होठों से मुस्कराकर उसने केवल इतना ही कहा, मुझे बड़ी घबराहट होती है—ऐम ही चलता है ।'

त्रिलोचन को वह पहला दिन याद आ गया, जब वह और मोजेल दोनों टकरा गए थे और आपस में कुछ अजीब तरह गडबड डह हो गए थे । मुस्कराकर उसने मोजेल को अपने सीने से लगाया । 'शादी बल होगी ?'

जहर । मोजेल ने त्रिलोचन की मुलायम ठोड़ी पर अपने हाथ की पुस्त फेरी ।

तब यह हुआ कि शादी पूरा में हो । क्योंकि सिविल मैरिज थी, इसलिए उनको दस-पंद्रह दिन का नोटिस देना था । अदालती कारवाई थी, इसलिए उचित समझा गया कि पूना बेहतर है, पान है और त्रिलोचन के वहां कई मित्र भी हैं । दूसरे दिन उन्हें प्रोग्राम के अनुसार पूना खाना हो जाना था । मोजेल फोटो के एक स्टोर में सेल्समैन थी, उससे कुछ दूरी पर टक्की स्टैंड था । वस, वही उसको मोजेल न इंतजार करने के लिए

कहा था। निर्दिष्ट समय पर त्रिलोचन वहाँ पहुँच गया। डेढ़ घण्टा इंतजार करता रहा, लेकिन वह न आई। दूसरे रोज उसे मालूम हुआ कि वह अपने एक पुराने मित्र के साथ जिसने नई-नई माटर खरीदी थी, देवलाली चली गई थी और अनिश्चित समय तक वहीं रहेगी।

त्रिलाचन पर क्या गुजरी, यह एक बड़ी लम्बी कहानी है। मार इसका यह है कि उसने जी बड़ा कर लिया और उसको भूल गया। इतने में उसकी मुलाकात कृपालकर से हो गई और वह उससे प्रेम करने लगा, और कुछ ही समय में उसने अनुभव किया कि मोजेल बहुत बाहियान लडकी थी, जिसके दिल के साथ पत्थर लग हुए थे, जो चिड़े के समान एक जगह से दूसरी जगह फुटकर रहता था। उसे इस बात से बड़ा संतोष हुआ कि वह मोजेल से शादी करने की गलती न कर बैठे।

लेकिन इसपर भी कभी कभी मोजेल की याद एक चुटकी की तरह उसके दिल को पकड़ लेती थी और फिर छोड़कर फुटकर लगाती गायब हो जाती थी, वह बेचरम थी बेलिहाज थी। उस किसीकी भावनाओं का खयाल नहीं था, फिर भी वह त्रिलोचन का पसंद थी। इसलिए वह कभी कभी उसके बारे में सोचने पर मजबूर हो जाता था कि वह देवलाली में इतने दिना से क्या कर रही है? उसी आदमी के साथ है जिसने नई-नई कार खरीदी थी या उस छोड़कर किसी दूसरे के पास चली गई है? उसको इन विचार में दुःख होता था कि वह उसके बजाय किसी दूसरे के पाम थी, यद्यपि उसको मोजेल की प्रकृति का पूरा पूरा ज्ञान था।

वह उसपर सँकड़ो नहीं, हजारों रुपये खर्च कर चुका था। लेकिन अपनी इच्छा से, करना मोजेल महंगी नहीं थी। उसका बहुत समझी किस्म की चीजें पसंद आती थी। एक बार त्रिलाचन ने उस मोन के टायर देन का इरादा किया जो उसे बहुत पसंद थे, लेकिन उसी दुकान में मोजेल भूटे भडकीने और बहुत सस्त आँखों पर भर मिट्टी और सोन के टायर छोड़कर त्रिलोचन से निनतें करने लगी कि वह उन्हें खरीद दे।

त्रिलाचन अब तक त समझ मका कि मोजेल किस प्रकार की लडकी है। किस मिट्टी की बनी है। वह घण्टा उसके साथ लेटी रहती थी

उसको चूमन की इजाजत देनी थी। वह सारा का नारा साबुन की तरह उसके शरीर पर फिर जाना था, लेकिन इससे आगे वह उसको एक इंच बढ़न नहीं देती थी। उसको चिढ़ाने के लिए इतना कह देती थी, 'तुम सिस हा, मुझे तुमसे घृणा है।'

त्रिलोचन अच्छी तरह जानता था कि मार्जेल को उससे घृणा नहीं थी। यदि ऐसा होता तो वह उससे कभी न मिलती। महनगिन उसमें तनिक भी नहीं थी। वह कभी दो घण्टे उसके साथ न गुजारती। दो टूक फेंकला कर देती। अण्डरवीयर उसकी नापसंद थे, इसलिए कि उनसे उसको उलझन हाती थी। त्रिलोचन ने कई बार उसको इनकी अनियमितता के बारे में बताया था शर्म हुआ था वास्ता दिया था, लेकिन उसने यह चीज कभी न पहनी।

त्रिलोचन जब उससे शर्म-हुआ की बात करता तो वह चिड़ जाता था। 'मह हुआ क्या क्या बकवास है?—अगर तुम्हें उसका कुछ रायाल है तो आख बंद कर लिया करो। तुम मुझे यह बताओ कौन सा ऐसा लिब्राम है जिससे आदमी नगा नहीं हो सकता, या जिसमें से तुम्हारी नजरें पार नहीं हो सकती, मुझसे ऐसी बकवास मत किया करो, तुम सिस हा—मुझे मालूम है कि कुछ पतलून के नीचे एक सिलीन्डा अण्डरवीयर पहनते हो, जो निकर से मिलता जुलता होता है। यह भी तुम्हारी दाढ़ी और भिर के बालों की तरह तुम्हारे मजहब में शामिल है—गरम आनी चाहिए तुम्हें, इतने बड़े हो गए हो और अब तक यही समझते हो कि तुम्हारा मजहब अण्डरवीयर में छिपा बठा है।

त्रिलोचन को गुरू-गुरू में ऐसी बातें सुनकर क्रोध आया था लेकिन बाद में सोचन-विचारने पर वह कभी कभी लुढ़क जाता और सोचता कि मोजेल की बातें शायद गलत नहीं हैं। अगर जब उसने अपने केशों और दाढ़ी का सफाया करा दिया तो उसे सचमुच ऐसा लगा कि वह बेकार इतने दिन बालों का बोझ उठाए उठाए फिर जिसका कुछ मतलब ही नहीं था।

पानों की टकी के पास पहुँचकर त्रिलोचन रुक गया। मोजेल को एक मोटी गाली देकर उसने उसके बारे में सोचना बंद कर दिया। कृपाल

कीर एक पवित्र लडकी थी, जिसमें उसकी प्रेम हो गया था, और जो खतरे में थी। वह ऐसे मुन्हों में थी, जिसमें बट्टर विस्म के मुसलमान रहते थे और वहाँ दो-तीन बारदातें भी हो चुकी थी—लेकिन मुमोबत यह थी कि उस मुन्हों में अड़नालीस घण्ट का वषर्पू था। मगर वषर्पू की कौन परवाह करता है? उस चाल के मुसलमान ही अगर चाहें तो अन्दर ही अन्दर कृपाल कीर और उसकी माँ तथा उसके बाप का बड़ी आमानों से सफाया कर सकते थे।

त्रिलोचन सोचता-साचता पानी के भीर नल पर बैठ गया। उसके सिर के बाल अब बाफ़ी लम्बे हो गए थे। उसका विश्वास था कि वे एक वष के अन्दर अन्दर पूरे केगा में बदल जायेंगे। उसकी दाढ़ी तेजी में बढ़ रही थी, किन्तु वह उस बढ़ाना नहीं चाहता था। फोट में एक बारकर था, वह इस सफाई से उसे तराशता था कि तराशी हुई दिखाई नहीं देती थी।

उसने अपने नरम और मुनायम बाना में उगनिया फेरी और एक ठण्डी सास ली। उठने का इरादा कर ही रहा था कि उसे खडाऊ की बरस आवाज सुनाई दी। उसने सोचा, कौन हो सकता है? बिल्डिंग में कई यहुदी औरतें थीं जो सबकी सब घर में खडाऊ पहनती थीं। आवाज और करीब आती गई। एकाएक उसने दूसरी टकी के पास मौजेन का हस्ता, जो यहुदिया के विशेष ढग का डीला ढाला घुर्ती पहन बड़े जोर की भगडाई ल रही थी—इस जोर की कि त्रिलोचन को महसूस हुआ कि उसने आसपास की हवा चटख जाएगी।

त्रिलोचन पानी के नल पर से उठा। उसने सोचा यह एकाएक कहाँ से टपक पड़ी—और इस समय टर्म पर क्या करने आई है? मौजेन ने एक और भगडाई ली—अब त्रिलोचन की हडिडया चटखने लगी।

डील डील कुर्ते में उसकी मजबूत छातियाँ पड़की—त्रिलोचन की आत्मा के सामने कई गोल गोल और चपटे चपट नील उभर आए। वह जोर से खासा। मौजेन ने पलटकर उसकी ओर देखा। कुछ विशेष प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह खडाऊ धसीटती उसके पास आई और उसकी नहीं मुन्ही दाढ़ी देखने लगी 'तुम फिर सिख बन गए त्रिलोचन?'

लाठी के बाल त्रिलोचन को चुभन लगे ।

मोजेल ने आगे बढ़कर उसकी ठोड़ी के साथ अपने हाथ की पुस्त रगड़ी और मुस्कराकर कहा, 'अब यह ब्रुश इम योग्य है कि मरी नेवी ब्ल्यू स्कट माफ कर सके । मगर वह तो वही देवलाली में रह गई है ।

त्रिलोचन चुप रहा ।

मोजेल ने उसकी बांह की चुटकी ली । 'बोलत क्या नहीं सरदार साहब ?

त्रिलोचन अपनी पुरानी मूखताओं को दोहराना नहीं चाहता था, फिर भी उसने सुबह के घुघल अधरे में देखा कि मोजेल में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ था, सिर्फ वह कुछ कमजोर नजर आती थी ।

त्रिलोचन ने उससे पूछा 'बीमार रही ही ?

'नहीं । मोजेल ने अपने कट हुए बालों को एक हल्का सा झटका दिया ।

पहले से कमजोर दिवाइं दती हो ।

'मैं डाइटिंग कर रही हूँ ।' मोजेल पानी के मोट नल पर बैठ गई और खड़ाऊ पंग के साथ बजान लगा । 'तुम, मतलब यह कि अब फिर नये मिर में मिल बन रहे ही ?'

त्रिलोचन ने एक प्रकार की ढिठाई से कहा, 'हां ।'

मुबारक हो ।' मोजेल ने एक खड़ाऊ पंग से उतार ली और पानी के नल पर बजान लगी । 'किसी और लडकी से प्रेम करना शुरू कर दिया है ?

त्रिलोचन ने धीमे से कहा, 'हां ।'

'मुबारक हो—इसी बिल्डिंग की है कोई ?'

'नहीं ।'

यह बहुत बुरी बात है ।' मोजेल खड़ाऊ अपनी उगलिया में उडसकर उठी । 'आदमी को हमणा अपने पडोगिया का खयाल रखना चाहिए ।

त्रिलोचन चुप रहा । मोजेल ने उसकी दाढ़ी को अपनी पांचा उगलिया में छेना । क्या उमी लडकी ने तुम्हें ये बाल बनान को राय दी है ?'

'नहीं ।'

त्रिलोचन बड़ी उलझन में था, जैसे क्या करने करते उसकी दाढ़ी के झाल आपस में उलझ गये हो। जब उमन नहीं कहा तो उसके कहने में तासापन था।

मोजेल के हाठा पर लिपस्टिक वाली गोश्त की तरह मानूम होती थी। वह मुस्कराई तो त्रिलोचन को ऐसा लगा कि उसके गाव में भटके की दुकान पर कसाई ने छुरी से गोश्त के दो टुकड़े कर दिए हो।

मुस्करान के बाद वह हसी। 'तुम अब यह दाढ़ी मुड़ा डालो तो किसी-को भी कसम ले लो, मैं तुमसे शादी कर लूमी।'।

त्रिलोचन के जी में आई कि उससे कह दे कि वह एक बड़ी शरीफ, सुनील और लजीली क्वारी लडकी में प्रेम कर रहा है और उससे ही शादी करेगा। मोजेल उसके मुकाबले में निलज्ज है बग़ूरत, बेवफा और कपटी है। लेकिन वह इस तरह का ओछा आदमी नहीं था। उसने मोजेल से केवल इतना ही कहा, मोजेल, मैं अपनी शादी का फमला कर चुका हूँ। मेरे गाव की एक सीधी मादी लडकी है, जो मजहब की पाबंद है। उसीके लिए मैंने झाल बटाने का फसला कर लिया है।

मोजेल सोच विचार की शादी नहीं थी लेकिन उसने कुछ देर सोचा और खडाऊ पर आये दापर में थमकर त्रिलोचन से कहा अगर वह मजहब की पाबंद है तो वह तुम्हें कैसे स्वीकार करेगी? क्या उस मालूम नहीं कि तुम एक बार अपने बाल कटवा चुके हो?

'उमकी अभी मालूम नहीं—दागी मैं तुम्हारे देवलाजी जान के बाद ही बढानी शुरू कर दी थी, केवल प्रायश्चित्त के रूप में। उसके बाद मरी कृपाल कौर से मुलाकात हुई। लकिन मैं पगड़ी इस तरह से बाधता हूँ कि सो में से एक ही आत्मी मुश्किल से जान सकता है कि मेरे कंग कटे हुए हैं। लेकिन अब ये बहुत जल्दी ठीक हो जाएंगे। त्रिलोचन ने अपने मुलायम वाली में उगलिया में कपी करना शुरू की। यह बहुत अच्छा है—लेकिन ये कमरत मच्छर यहां भी भोजूद हैं। देखो, किस जोर से काटा है।'।

त्रिलोचन ने दूसरी ओर देखना शुरू कर दिया। मोजेल ने उस जगह, जहां मच्छर ने काटा था, उगली से थूक लगाया और बुता छोड़कर सीधी

गड़ी हो गई । क्या हा रही है तुम्हारी गान्धी ?

‘ममी कुछ पाया नहीं । क्या बटवर वितावन रिता हो गया ।

कुछ दर तक चूपी रही फिर मात्रन न उमकी रिता का अनुमान लगाकर बड़ी सम्भोरता ग घुसा विताता तुम क्या गाया है ?

विताता का उम समय किमी हिंसा की जगह थी गाया का मात्रन ही क्या है । दगकिण उता उमकी गारा बिम्बा मुता दिया । मात्रन होगी ‘तुम भयन दरे क दटिबट है । आपा, उमता न आपा, एमी क्या मुक्ति है ।’

‘मुक्तिन । मात्रन तुम दस मामन की नजारा का कभी नहीं समझ सकती—रिता भी मामन की नजारा का समझा क लिए तुम बहुत ही छिछना लगी हो । यही गजट है कि मर मोर तुम्हारे सम्बन्ध टूट गए, जिताया मुक्त गारी उम भवमोग रहगा ।

मोजल न जोर न अपनी रताऊ पानी क नन क साथ मारी ‘मफ-सोम बी डम्ड गिरी, दटिबट’ तुम यह गाया कि तुम्हारी उमकी क्या नाम है उमता उम मुक्तिन न बचा जाता का है और तुम बठ गए हा सम्बन्ध का रता रोन तुम्हारे मर सम्बन्ध कभी बन नहीं रहे सचत न तुम एक सिनी किम्म क घादमी हो और बहुत डरपोर । मुझे निडर घादमी चाहिए लेकिन छोटी इन बातों का जलो आपा तुम्हारी उमकी ल आपा ।

उसन विलावन की बाह पकड ली । विलोचन न धवराहट म उससे पूछा, कहा ग ?’

‘वही स, जहा वह है । मैं उस मुहल्ल की एक एक इट की जानती हूँ—कती आपो मेर माम ।

मगर सुनो ता—कफू है ।’

‘मोजल के लिए नहा—कलो आपो ।

क विलोचन की सीचती उस दरवाजे तक ले गइ, जो नीच सीडिया की ओर खुलता था । दरवाजा खोलकर वह उतरने वाली थी कि रक गई और विलोचन की दाढी की ओर देखने लगी ।

विलोचन ने पूछा ‘क्या बात है ?’

मोजेल न कहा 'यह तुम्हारी दाढ़ी लेकिन खैर, ठीक है। इतनी बड़ी नहीं है—नगे सिर चलोगे तो कोई नहीं समझेगा कि तुम सिख ही।'

'नग सिर ?' त्रिलोचन ने कुछ चौंखलाकर कहा 'मैं नग मिर नहीं जाऊंगा।'

मोजेल न बड़ी भोली सूरत बनाकर पूछा, 'क्या ?'

त्रिलोचन न अपने बालों की एक लट ठीक की ओर बोला, 'तुम समझती नहीं ही। मेरा वहा पगड़ी के बिना जाना ठीक नहीं।'

'क्या ठीक नहीं ?'

तुम समझती क्या नहीं ही कि उसने अभी तक मुझे नगे सिर नहीं देखा—वह यही समझती है कि मेर कश है। मैं उसे यह भेद नहीं जानने दना चाहता।'

मोजेल न जोर स अपनी खड़ाऊ दरवाजे की दहलीज पर मारी, 'तुम सचमुच अश्वत्थ दर्जे के ईंडियट हो गधे वही के ! उसकी जिदगी का सवाल है—क्या नाम है तुम्हारी उस कौर का, जिससे तुम प्रेम करते ही ?'

त्रिलोचन न उसे समझान की कोशिश की, 'मोजेल, वह बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति की लटकी है—अगर उसने मुझे नगे सिर देख लिया तो मुझे नफरत करन लगगी।'

मोजेल चिन्तित गइ। ग्रीह तुम्हारा प्रेम भी डेम्ड—मैं पूछती हूँ, क्या सार सिख तुम्हारी तरह के वक्कूफ होत हैं ?—उसकी जान खतरे में है और तुम कहत हो कि पगड़ी जरूर पहनोगे और शायद अपना अण्डर-वीयर भी जा निकर स मिलता जुलता है !'

त्रिलोचन न कहा, 'वह तो मैं हर वकन पहन रहता हूँ।'

बहुत अच्छा करत हो लेकिन अब तुम यह सोचो कि मामला उस मुहल्ले का है जहाँ मिया भाई ही मिया भाई रहत हैं और वह भी बड़े-बड़े दादा। तुम पगड़ी पहनकर गए ता वही करत कर दिए जाओगे।'

त्रिलोचन न सक्षिप्त सा उत्तर दिया, 'मुझे उसकी परवाह नहीं। अगर मैं तुम्हारे साथ वहा जाऊंगा तो पगड़ी पहनकर जाऊंगा। मैं अपन प्रेम को खतरे में डालना नहीं चाहता।'

मोजेल मुकला गई। उसमें इस जोर से उफान आया कि उसकी छातिया आपस में भिड़भिड़ा गईं। 'गधे बही के ! तुम्हारा प्रेम ही कहा रहेगा जब तुम न रहोगे। मुम्हारी वह क्या नाम है उस मडकी का जब वह न रहेगी, उसका परिवार तब न रहेगा। तुम सिख हो खुदा की कसम तुम सिख हो और बड़े इडियट हो !'

त्रिलोचन भिन्ना गया। 'बकवास न करा !'

मोजेल जोर से हसी और उसने अपनी नरम रोपेंदार बांह उसके गले में डाल दी और थोड़ा सा झूलकर वाली, 'डालिंग, चलो जसी तुम्हारी मर्जी। आओ पगड़ी पहन आओ मैं नीचे बाजार में खड़ी हूँ।'

यह कहकर वह नीचे जाने लगी। त्रिलोचन ने उसे रोका 'तुम कपड़े नहीं पहनोगी ?'

मोजेल ने अपने सिर की झटका दिया। 'नहीं चलेगा इसी तरह। यह कहकर वह खट-खट करती नीचे उतर गई। त्रिलोचन निचली मजिल की सीढ़ियों पर भी उसकी खगल-आवाज सुनता रहा। फिर उसने अपने सम्ये बाल उगलिया से पीछ की तरह समेटे और नीचे उतरकर अपने फ्लैट में चला गया। जल्दी जल्दी उसने कपड़े बदले। पगड़ी बांधी-बांधाई रखी थी, उसे अच्छी तरह सिर पर जमाया और फ्लैट के दरवाजे में कुजी घुमाकर नीचे उतर गया।

बाहर फुटपाथ पर मोजेल अपनी लगड़ी टांगे चौड़ी किए मिगरट पी रही थी बिलकुल पुरुषों की तरह। जब त्रिलोचन उसके पास पहुंचा तो उसने शरारत से मुंह भरकर धुआं उसके मुंह पर द मारा। त्रिलोचन ने गुस्से में कहा, 'तुम बहुत जद्दीन हो।'

मोजेल मुस्कराई। 'यह तुमने कोई नई बात नहीं कही इससे पहले मुझ और भो कई लोग जलील नह चुके हैं।' फिर उसने त्रिलोचन की पगड़ी की ओर देखा। 'यह पगड़ी तुमने सचमुच अच्छी तरह बांधी है। ऐसा मालूम होता है तुम्हारे कंधे हैं।'

बाजार बिलकुल सुनसान था केवल हवा चल रही थी और वह भो बहुत धीरे धीरे जैसे वह भी कपड़ों से डरती हो। चतिया जल रही थी, लेकिन उनका प्रकाश बीमार-सा मालूम होता था। शाम तीर पर इस समय

ट्रेनें चलनी शुरू हो जाती थी और लोग का आवागमन भी शुरू हो जाता था। अच्छी खासी चहल पहल हो जाती थी, लेकिन अब ऐसा मालूम होता था कि सड़क पर स न कोई आदमी गुजरा है और न गुजरेगा।

मोजेल आगे आगे थी। फुटपाथ के पत्थरों पर उसकी खड़ाऊ खट-खट कर रही थी। यह आवाज उस निस्तब्ध वातावरण में एक बहुत बड़ा शोर थी। त्रिलोचन दिल हो दिल में मोजेल को बुरा बना वह रहा था कि दो मिनट में और कुछ नहीं ना अपनी बूढ़ा खड़ाऊ उतारकर कोई और चीज पहन सकती थी। उसने चाहा कि मोजेल से कहें, खड़ाऊ उतार दो और नंगे पाव चलो मगर उस विद्वान था कि वह कभी नहीं मांगी, इसलिए चुप रहा।

त्रिलोचन बहुत डरा हुआ था, कोई पता भी खड़कता तो उसका दिन घक स रह जाता, लेकिन मोजेल सिगरेट का धुआ उड़ाती बिलकुल निडरता से चली जा रही थी, मानो बड़ी यक्षिणी से चहलकदमी कर रही हो।

चौक में पहुँचे तो पुलिस मैन की आवाज गरजी, 'ऐ, बिधर जा रहा है ?'

त्रिलोचन डर गया। मोजेल आगे बढ़ी और पुलिस मैन के पास पहुँच गई और अपने बाला को एक हल्का सा झटका देकर कहा 'माह तुम, हमको पहचाना नहीं? तुमने मोजेल' फिर उसने एक गली की तरफ इशारा किया, 'उधर उस बाजू हमारा बहन रहना है, उसकी तबीयत खराब है डाक्टर लेकर जा रहा है।'

सिपाही उस पहचानन की कोशिश कर रहा था कि उसने न जाने कहा में सिगरेट की छिविया निकाली और एक सिगरेट निकालकर उसको दिया। 'लो, पियो।' सिपाही ने सिगरेट ले लिया। मोजेल ने अपने मुँह में सुलगा हुआ सिगरेट निकाला और उससे कहा 'हीयर इज लाइट।'

सिपाही ने सिगरेट का बश लिया, मोजेल ने नाइ आख उसका और वाइ आख त्रिलोचन को मांगी और खट खट करती उस गली की ओर चल दी, जिसमें से गुजरकर वह मुहल्ले में जाना था।

त्रिलोचन चुप था, लेकिन वह महसूस कर रहा था कि मोजेल कपड़ों की अवनता करके एक विचित्र प्रकार की प्रसन्नता का अनुभव कर रही है।

खनरो म खेनना उस पसद था । जब वह जूह पर उसके साथ जानी थी तो उसके लिए एक मुसीबत बन जानी थी । समुद्र की बड़ी प्रड़ी लहरो से टकराती मिटती वह दूर तक निकल जानी थी और उसको हमेशा इस बात का धड़का रहता था कि कहीं वह डूब न जाए । जब वापस आती तो उसका गरीब नीना और घावा म भरा होता था, लेकिन उसे इसकी कोई परवाह नहीं होती थी ।

मोजल आगे आगे थी और त्रिलोचन उसके पीछे-पीछे डर डरके धधध-धधध दबता चल रहा था कि कहीं उसकी बगल में से कोई छुरीमार न निकल आए ।

महमा मोजल रक गई । जब त्रिलोचन पास आया तो उसने उसे समझाने के स्वर में कहा 'दियर त्रिलोचन, इस तरह डरना अच्छा नहीं । तुम डरोग तो जरूर कुछ न कुछ होक रहोगे । सब कहती हूँ, यह मरी आजमाई हुई बात है ।

त्रिलोचन चुप रहा ।

जब वे उस गरीब की पार करके दूसरी गली में पहुँच, जो उस मुहल्ले की आरंभ निकलती थी, जिसमें कृपान बोर रहती थी तो मोशेल चलन-चलते पण्डित एक गड्ढे कुछ दूरी पर बैठे इतमीनान में सब मारमाडी की दुआएँ सुनी जा रही थी । एक क्षण के लिए उसने मामल की समझने की कागिरी की और त्रिलोचन से कहा 'कोई बात नहीं—चलो आया ।'

दोना चलते लगे । एक आत्मी जो गिर पर बहुत बड़ी परात उठाए चला आ रहा था त्रिलोचन में टकरा गया । परात गिर गई । उस आदमी ने ध्याना में त्रिलोचन की आरंभ देखा । ताज मानम हाता था कि क्या गिरा है । उस आत्मी ने जल्दी में अपने नके में हाथ डाला कि मानम आ गई लटकाने की हूँ माना नग में खूब हा । उसने जोर से उस आत्मी का घमसा लिया और नीले स्वर में कहा, 'ए क्या करना है—अपने भाई का मारना है । हम लोग जानते बनाने का मानना है ।' फिर त्रिलोचन की आरंभ सुनी । 'कराम ज़ादा मा परात और गग दा इतमीनान गिर पर ।

उस आत्मी ने नक में ग घमसा हाथ फटा लिया और लकड़वाँ पत्रा में मानम का धार देगा । फिर आगे बढ़कर अपनी कागिरी में उसकी

छातिया में एक टहोका जिया। 'ऐसा कर साली, ऐसा कर।' फिर उसने परात उटाई और यह जा, यह जा।

त्रिलोचन बड़बड़ाया 'हरामजाद न मैं जलील हरेकन थी।' मोजेल ने अपनी छातिया पर हाथ फेरा। 'कोई जलील हरेकन नहीं, सब चलता है। आग्रो।'।

और वह तेज-तेज चलने लगी। त्रिलोचन न भी कदम तेज कर दिए।

वह गली पार करके बंदोना उस मुहल्ले में पहुँच गए, जहाँ कृपाल कीर रहती थी। मोजेल न पूछा किम गली में जाता है ?'

त्रिलोचन न धीरे से कहा, तीसरी गली में, नुक्कड़ वाली बिल्डिंग।'।

मोजेल न उसी ओर रुटना शुरू कर दिया। उस ओर बिलकुल निस्त-व्यन्ता थी। आसपास इतनी घनी आवादी थी लेकिन किसी बच्चे तक के रोने की आवाज सुनाई नहीं देती थी।

जब वे उस गली के पाम पहुँच तो कुछ गड़बड़ दिखाई दी। एक आदमी बड़ी तेजी से इस बिनार वाली बिल्डिंग में घुस गया। इस बिल्डिंग से थोड़ी देर के बाद तीन आदमी निकले। पुटपाथ पर उहाने इधर उधर देखा और बड़ी धुनी में दूसरी बिल्डिंग में चल गए। मोजेल ठिठक गई। उसने त्रिलोचना को इशारा किया कि अघेरे में ही जाए फिर उसने धीमे से कहा त्रिलोचन डियर, यह पगडी उतार दो।'।

त्रिलोचन न जवाब दिया 'मैं यह किसी सुरत में भी नहीं उतार सकता।

मोजेल झुझला गई। 'तुम्हारी मर्जी लेकिन तुम देखते नहीं मामने क्या हो रहा है ?'

मामन जो कुछ हो रहा था, दोना की आवाज के सामने था—साफ गड़गड़ हो रही थी और बड़ी रहस्यमय लग की। वामें हाथ की बिल्डिंग से ज़र दी आदमी अपनी पीठ पर बोरिया उठाए निकले तो मोजेल सारी को मारी बाप गई। उनमें से कुछ गाड़ी गाड़ी तरल चोज टपक रही थी। मोजेल अपने हाठ काटने लगी। गायब वह कुछ सोच रही थी। जब वे दोना आदमी गली के दूसरे सिरे पर पहुँचकर गायब हो गए तो उसने त्रिलोचन से कहा, देखी ऐसा करो—मैं भागकर नुक्कड़ वाली बिल्डिंग में

जाती हूँ, तुम मेरे पीछे आना बड़ी तजी स, जसे तुम मेरा पीछा कर रह हो समझे ? मगर यह सब एकदम जल्दी जल्दी म हो ।’

माजल ने त्रिलोचन के जवाब की प्रतीक्षा न की और नुक्कड़ वाली बिल्डिंग की ओर खडाक खटखटाती हुई तजी भागी। त्रिलोचन भी उसके पीछे दौड़ा। कुछ ही क्षणों में वह बिल्डिंग के अन्दर था। सीढ़ियों के पास त्रिलोचन हाफ रहा था, मगर मोजेल बिल्कुल ठीक ठाक थी। उसने त्रिलोचन स पूछा कौन सा माला ?

त्रिलोचन ने अपना सूँचे होठ पर जीभ फरी। ‘तूमरा।’

‘चलो।’

यह कहकर वह खट-खट सीढ़िया चढ़ने लगी। त्रिलोचन उसके पीछे हो लिया। सीढ़िया पर खून के बड़े बड़े धरे पड़े हुए थे। उनकी दख देखकर उसका खून सूख रहा मा।

दूसरे माल पर पहुँचे तो कारीडोर में कुछ दूर जाकर त्रिलोचन न भीमे से एक दरवाजे को खटखटाया। मोजेल दूर सीढ़िया के पास खड़ी रही।

त्रिलोचन ने एक बार फिर दरवाजा खटखटाया और उसके साथ मुह लगाकर आवाज दी, महर्गासिंह जी, महर्गासिंह जी ।’

अन्दर से बारीक सी आवाज आई, कौन ।’

त्रिलोचन ।’

दरवाजा धीरे स खुला। त्रिलोचन न मोजेल को इगारा किया। वह लपककर आई। दांता अन्दर चल गए। माजेल न अपनी बगल में एक दुबली पतली लड़की का देखा जो बहुत ही भयभीत थी। माजल न उस एक लड़के के लिए ध्यान से देखा। पतल पतले लकड़ थे। नाक बहुत ही प्यारी थी लेकिन जुकाम से ग्रस्त। मोजेल ने उसे अपना चौड़े चकल सीन स लगाया और अपने ढीले ढाले कुर्ते का पतला उठाकर उसकी नाक पाछी।

त्रिलोचन लाल पड़ गया।

माजेल न कृपाल कीर स बड़ स्नह से कहा डरो नहीं, त्रिलोचन तुम्ह लेन आया है।

कृपाल कौर न त्रिलोचन की ओर अपनी सहमी हुई आत्मा से देखा और मोजेन से अलग ही गई।

त्रिलोचन न उससे कहा, 'सरदार साहब से कही कि जल्दी तैयार हो जाए और माताजी से भी—लेकिन जल्दी करो।'

इतन में ऊपर की मजिल से जोर जोर की आवाजें आन लगी, जैसे कोई चीख चिल्ला रहा हो और धीमा मुस्ती हो रही हो।

कृपाल कौर व मुह म हल्की सी चीख निकल गई। 'उसे पकड़ लिया उहान।'

त्रिलोचन ने पूछा, 'किस?'

कृपाल कौर उत्तर देने की बाली थी कि मोजेन ने उसकी बांह से पकड़ा और घसीटकर एक कोने में ले गई। 'पकड़ लिया तो अच्छा हुआ। तुम य वपडे उतार दो।'

कृपाल कौर अभी कुछ सोचन भी न पाई थी कि मोजेन ने पलक भपकन में उनकी कमीज उतारकर एक तरफ रख दी। कृपाल कौर ने अपनी बांह में अपने नग शरीर को छिपा लिया तथा आर भयभीत हो गई। त्रिलोचन न मुह दूसरी ओर फेर लिया। मोजेन न अपना ढीला-ढाला कुर्ता उतारकर उसे पहना दिया, और स्वयं नग धडग हो गई। फिर जल्दी जल्दी उसने कृपाल कौर का नाडा ढीला किया और उसकी मलवार उतारकर त्रिलोचन से बोला, 'जाओ, इसे ले जाओ—लेकिन ठहरो।'

यह कहकर उसने कृपाल कौर के बाल खोल दिए और उससे कहा, 'जाओ—जल्दी निकल जाओ।'

त्रिलोचन न उससे कहा, 'आओ।' लेकिन फिर तुरंत ही रुक गया। पलटकर उसने मोजेन की ओर देखा, जो धुले हुए दीदे की तरह नगी खड़ी थी। उसकी बांह पर महीन महीन बाल सरदी के कारण जागे हुए थे।

तुम जात क्या नहीं?' मोजेन के स्वर में चिड़चिड़ापन था।

त्रिलोचन ने धीमे से कहा, 'इसके मा बाप भी तो हैं।'

'जहनुम में जाए वे—तुम इसे ले जाओ।'

और तुम?'

में आ जाऊगी !'

एकदम ऊपर की मजिल से कई आदमी घडाघड नीचे उतराये और फिर दरवाजे पर आकर उन्होंने उसे बूटना शुरू कर दिया, जैसे वे उसे तोड़ ही डालेंगे।

कृपाल कौर की अभी मा और उसका अपाहिज बाप दूसरे कमरे में पड़े कराह रहे थे।

मोजेल ने कुछ सोचा और बाला को एक हल्का सा झटका देकर त्रिलोचन से कहा, 'सुनो अब सिर्फ एक ही तरकीब मेरी समझ में आती है। मैं दरवाजा खोलती हूँ'

कृपाल कौर के मुखे कण्ठ से चीख निकलत निकलते रह गई, 'दरवाजा !

मोजेल त्रिलोचन की ओर मुह किए कहती रही, 'मैं दरवाजा खोल कर बाहर निकलती हूँ—तुम मेरे पीछे भागना। मैं ऊपर चढ़ जाऊंगा और तुम भी ऊपर चले आना। वे लोग जो दरवाजा ताड़ रहे हैं भव कुछ भूल जाएंगे और हमारे पीछे चले आएंगे।'

त्रिलोचन ने पूछा, 'फिर ?

मोजेल ने कहा, 'यह तुम्हारी—क्या ताम है इसका—मौजा पाकर निकल जाए। इस वक़्त में इसे कोई कुछ नहीं करेगा।'

त्रिलोचन ने जल्दा जल्दी कृपाल की सारी बात समझा ली। मोजेल जोर से चिल्लाई। दरवाजा खोला और धडाम से बाहर लोग पर जा गिरी। सब बोखला गए। उठकर वह ऊपर सीढ़ियों की ओर लपकी। त्रिलोचन उसके पीछे भागा। सब एक ओर हट गए।

मोजेल अवाधुन सीढ़िया चढ़ रही थी—सडाऊ उसके पैरों में थी। वे लोग, जो दरवाजा तोड़ने की कोशिश कर रहे थे, सभलकर उनके पीछे दौड़े। एकाएक मोजेल का पाव फिसल गया और ऊपर के जिन से वह कुछ इम तरह लुढ़की कि हर पथरील जिन से टकराती, लोह के जंगले से उलझती नीचे आ गिरी—पथरीले पक्ष पर।

त्रिलोचन एकदम नीचे उतरा। झुककर उसने देखा तो उसके नाक से खून बह रहा था, मुह से खून बह रहा था कानों से खून निकल रहा

या । वे जो दरवाजा तीडने आए थे, इद गिद जमा हो गए । किसीने भी नहो पूछा कि क्या हुआ है । सब चुप थे और मोजेल के नगे शरीर की देर रह थे, जिसपर जगह जगह घरासों पड़ी थी ।

त्रिलोचन न उसकी बाह हिंसाई और आवाज दी, मोजेल माजेल ।'

मोजेल न अपनी बड़ी बड़ी महुदी आखें खोली, जो वीर बहूटी की तरह लाल हो रही थी और मुस्कराई । त्रिलाचन ने अपनी पगड़ी उतारी और खोलकर उसका नगा शरीर ढक दिया । मोजेल फिर मुस्कराई और आख मारकर मुह से खून के बुलबुले छोटती हुई त्रिलोचन से बोली 'जाओ देखो मेरा अण्डग्वीयर कहा है कि नहीं । मेरा मतलब है कि वह '

त्रिलोचन उसका मतलब समझ गया, लेकिन उसने उठना न चाहा । इसपर मोजेल न क्रोध से कहा, 'तुम सचमुच सिख हो जाओ, देखकर आओ ।'

त्रिलोचन उठकर कुपान कीर के फ्लैट की ओर चला गया । मोजेल ने अपनी धुधली आखा से अपने आसपास खड़े लोगो की ओर देखा और कहा, 'यह मिया भाई है लेकिन बहुत दादा किस्म का मैं इसे सिख कहा करती हू ।'

त्रिलोचन वापस आ गया । उसने आखों ही आखी में मोजेल को बना दिया कि कुपाल कोर जा चुकी है । मोजेल ने सतीप की सास ली—लेकिन ऐसा करने से बहुत-सा खून उसके मुह से बह निकला और 'डम्डिट ' यह कहकर उसने अपनी रीयेंदार कलाई से अपना मुह पाछा और त्रिलोचन की ओर देखकर बोली, 'आल राइट डार्लिंग—बाई बाई ।'

त्रिलोचन ने कुछ कहना चाहा, लेकिन शब्द उसके कण्ठ में ही अटक गए ।

मोजेल न अपने शरीर से त्रिलोचन की पगड़ी हटाई । 'ले जाओ इसको, अपने इस मजहब को ।' और उसकी बाह उसकी मजबूत छातियों पर निर्जीव होकर गिर पड़ी ।

बाबू गोपीनाथ

बाबू गोपीनाथ में मेरी मुलाकात सन चालीस में हुई। उन दिनों मैं बम्बई के एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया करता था। दफ्तर में अब्दुरहीम सैण्डो एक नाट्य कद के आदमी के साथ दाखिल हुआ। मैं उस वक़्त लीडर लिख रहा था। सैण्डो ने अपने ख़ास अंदाज़ में ऊँची आवाज़ में मुझे आदाब किया और अपने साथी से परिचय कराया, 'मण्टो साहब, बाबू गोपीनाथ से मिलिए।'।

मैंने उठकर उनमें हाथ मिलाया। सैण्डो ने अपनी आदत के अनुसार मेरी तारीफ़ों के पुल बांधने शुरू कर दिए। बाबू गोपीनाथ 'तुम हिंदुस्तान के नम्बर वन राइटर्स से हाथ मिला रहे हो। लिखता है तो धड़न-तरना हो जाता है लोगो का। ऐसी ऐसी कण्ठी यूटनी मिलाना है कि तबीयत साफ़ हो जाती है। पिछले दिनों वह क्या चुटकला लिखा था आपन, मण्टो साहब? मिस खुशीद न कार खरीदी अल्लाह बड़ा कारसाज है। क्या बाबू गोपीनाथ? है न ऐण्टी की पण्टी पी?'।

अब्दुरहीम सैण्डो के बातें करने का अंदाज़ बिलकुल निराला था। कण्ठी-यूटनी धड़न तरना और ऐण्टी की पण्टी पी ऐसे शब्द उसकी अपनी उपज थे जिनकी वह अपनी बातचीत में बड़ी बेतकलुफी के साथ इस्तेमाल करता था। मेरा परिचय कराने के बाद वह बाबू गोपीनाथ की ओर मुड़ा, जो बहुत प्रभावित नज़र आ रहा था। 'आप हैं बाबू गोपीनाथ, बड़े खानाख़राब। लाहौर से भूल मारन भारत बम्बई तशरीफ़ लाए हैं। साथ कश्मीर की एक कबूतरी है।

बाबू गोपीनाथ मुस्कराया।

अब्दुरहीम सैण्डो ने इतना परिचय की नावापी समझकर कहा, नम्बर वन का बेवकूफ़ अगर कोई हो सकता है तो वह आप हैं। लोग इन्हें मस्का लगाकर ख़या बटोरते हैं। मैं सिर्फ़ बातें करके उनसे हर रोज़ पोलमन वटर के दो पकेट बसूल करता हूँ। बस, मण्टो साहब, यह समझ लीजिए

कि बड़े ऐंटी फिलोजिस्टीन किस्म के आदमी है। आप आज शामको इनके प्लैट पर जरूर तशरीफ लाइए।'

बाबू गोपीनाथ, जो खुदा मालूम क्या सोच रहा था, चौककर बोला, 'हा हा, जरूर तशरीफ लाइए मण्टो साहब।' फिर सैण्डो स बोला, 'क्या सैण्डा क्या आप कुछ उसका शगल करते हैं?'

अदुरहीम सैण्डा न जार से कहकहा लगाया। 'अजी हर किस्म का शगल करत है। तो मण्टा साहब आज शाम का जरूर आइएगा। मैंने भी पीनी शुरू कर दी है इसलिए कि मुपन मिलती है।'

सैण्डा ने मुझे प्लैट का पता लिखा दिया, जहां मैं अपने वादे के मुताबिक शाम को छ बजे के करीब पहुंच गया। तीन कमरों का साफ-सुथरा प्लैट था, जिसमें विलकुल नया फर्नीचर सजा हुआ था। सैण्डो और बाबू गोपीनाथ के अलावा बैठक में दो मद और दो औरतें मौजूद थीं जिनसे सैण्डो ने मुझे मिलाया।

एक था गपफार साइ, तहमदपहन पजाब का टेठ साईं। गले में मोटे-मोटे दानों की माला। सैण्डो ने उसके बारे में कहा, 'आप बाबू गोपीनाथ के लीगल एडवाइजर हैं, मेरा मतलब समझ जाइए आप। हर आदमी जिसकी नाक बहती हो, जिसके मुंह से राल टपकती हो, पजाब में खदा को पहुंचा हुआ फकीर बन जाता है। ये भी बस पहुंचे हुए हैं या पहुंचने वाले हैं। लाहौर से बाबू गोपीनाथ के साथ आए हैं क्योंकि इन्हें वहां कोई और बब-बूफ मिलन की उम्मीद नहीं थी। यहां आप बाबू साहब से फ्रेंडन ए के सिगरेट और स्काच व्हिस्की के पैग पीकर दुआ करते रहते हैं कि अजाम नक हो।

गपफार साइ यह सुनकर मुस्कराता रहा।

दूसर मद का नाम था गुलाम अली। लम्बा-लडगा जवान, बसरती बदन, मुंह पर चेचक के दाग। उसके बारे में सैण्डो ने कहा, यह मेरा शगिद है। अपने उस्ताद के नक्शे बंदम (पदचिह्न) पर चल रहा है। लाहौर की एक नामी रण्डी की कुमारी लडकी इसपर आशिक हो गई थी। बड़ी-बड़ी बंटी-यूटनिया मिलाई गई इसका फासने के लिए, मगर इसने कहा, 'डू आर डाई। मैं लंगोट का पक्का रहूंगा।' एक तकिये में

पीत हुए बाबू गोपीनाथ से मुसावात हो गई। वम, उस दिन स इनके साथ चिपटा हुआ है। हर रोज केवन ए का डिब्बा और खाना पीना मुकरर हं।'

यह सुनकर गुलाम अली भी मुस्कराता रहा।

गोल चेहर वाली एक सुख सफेद स्वस्थ औरत थी। कमर मे दाखिल होते ही मैं समझ गया था कि यह वही कश्मीर की ब्वतरी है जिसने बारे मे सैण्डो न दफतर म जिक्र किया था। बहुत साफ सुथरा औरत थी। बाल छोटे थे। ऐसा लगता था कटे हुए है मगर असल मे ऐसा नहीं था। आखें शफफ और चमकीली थी। चेहर-मोहरे से प्रकट हाता था कि बड़ी अल्ट और नानजुबेकार है। सैण्डो ने उससे मिलाते हुए कहा, 'जीनत बेगम। बाबू साहब इमे प्यार स जेनो कहत हैं। एक बड़ी खुराट नायिका, कश्मीर से यह सेव तोडकर लाहौर ले आई। बाबू गोपीनाथ को अपनी सी० आई० डी० से पता चला और एक रात ले उडे। मुकदमाजी हुई करीब दो महीन तक पुलिस एग करती रही आखिर बाबू साहब न मुकदमा जीत लिया और इमे यहां ले आए—घडन तरना।'

अब गहरे सावले रंग की औरत बाकी रह गई थी जो खामोश बैठी सिगरेट पी रही थी। आखें सुन्न थी, जिनसे काफी बहवाई टपक रही थी। बाबू गोपीनाथ न उसकी तरफ इशारा किया और सैण्टी स कहा 'इमक बारे मे भी कुछ हो जाए।'

सैण्डो ने उस औरत की रान पर हाथ मारा और कहा, जनाव। यह है तीन पट्टी फिल फिल फूटी, मिसज अ-दु-हीम सैण्डा उफ सरदार बेगम। आप भी लाहौर की पैदावार है। सन छतीस म मुभमे इक हुआ दो बरम मे ही मेरा घडन-तस्ता करके रख दिया। मैं लाहौर छोडकर भागा। बाबू गोपीनाथ ने इमे यहा बुनवा लिया ताकि मेरा दिल लगा रह। इसको भी एक डिब्बा केवन ए का राशन मिलता है। हर रोज नाम को डाई स्पय का मारकिया का इजेक्शन लेती है। रंग बाला है मगर बैम बड़ी टिट फार टैट किस्म की औरत है।'

सरदार ने एक अदा स मिफ इतना कहा, 'बकवास न कर। इस अदा मे पेसेवर औरतो की बनावट थी।

सबम मिनाने के बाद सैण्डो न आदत के अनुसार मेरी तारीफा के पुल बाधन शुरू कर दिए। मैंने कहा, 'छोटो यार, आग्रा कुछ और बातें करें।'

मैण्डो चिल्लाया 'व्वाण, ह्विस्को एण्ड मोटा। बाबू गोपीनाथ, लगाया हवा एक सज्जे की।'

बाबू गोपीनाथ ने जब मैं हाथ डालकर भी सी के नोटों का एक पुलिदा निकाला और एक नोट सैण्डो के हवाले कर दिया। सैण्डो न नोट लेकर उसकी तरफ गौर से देखा और खटखटाकर कहा, 'ओ गाड आ मेर ग्वुल आलमीन! वह दिन क्या आया जब मैं भी या नोट निकालता था। जाओ भई गुलाम अली, दो दोतलें जानीवाकर गिस्टिल गोडग स्ट्रांग ले आओ।'

दोतलें आईं तो सबन पीनी शुरू की। यह शगल दान्नीन घण्टे तक जारी रहा। इस दौरान मरसे ज्यादा बातें हस्वे मामूल अट्टुरहीम सैण्डो ने की। पहला विलाम एक ही साम में खत्म करके वह चिल्लाया, घडन सगता, मण्डो साहय ह्विस्की हो तो एभी। गले से उतरकर पट में इन्कलाव जिंदावाद लिखती चली गई। जियो बाबू गोपीनाथ जियो।'

बाबू गोपीनाथ प्रकारा खामोश रहा। कभी कभी वह सैण्डो की हा में हा मिला देता था। मैंने सोचा इस व्यक्ति की अपनी कोई राय नहीं दूसरा जा भी कह मान लेता है। उसके अघबिश्वास का मयून गपफार साइ मौजूद था। उसे वह वकील मैण्डो, अपना लीगल एडवाइजर बनाकर लाया था। सैण्डो का हमसे सम्बन्ध यह मनलव था कि बाबू गोपीनाथ को उससे श्रद्धा थी। यो भी मुझे बातचीत के दौरान मानूस हुआ कि लाहौर में उसका बक्क फरीरो और दरवेगा की मोहवत में बटता था। एक चीज मैंने खाम तौर पर नोट की कि वह कुछ खोया-खाया मा था, जैसे कुछ सोच रहा हो। अतएव मैंने उससे एक बार कहा 'बाबू गोपीनाथ, क्या सोच रहे हैं आप?'

वह चौंक पड़ा। 'जो, मैं? मैं कुछ नहीं।' यह कहकर वह मुस्क-राया और जीनत की तरफ एक आशिकाना निगाह डाली। इन हसीनो के बार में सोच रहा हूँ। और हम क्या सोच होगी।'

सैण्डो न कहा यह बड़े खानाखराब है मण्टा साहब बड़े खाना-
खराब । लाहौर की कोई ऐसी तबायफ नहीं जिसके साथ बाबू साहब की
कण्टी-पूटनी न रह चुकी हो ।

बाबू गोपीनाथ न यह सुनकर बड़ी भाड़ी विनम्रता के साथ कहा
'अब कमर म बट् दम नहीं रहा मण्टा साहब ।

इसके बाद बाहियात सी बातचीत शुरू हो गई । लाहौर की सब
रण्डिया के घरान गिने गए—कौन डेरेदार थी, कौन नटनी थी कौन
किसकी नोची थी । नथनी उतारे पर बाबू गोपीनाथ न क्या दिया था
बगर बगरा । यह बातचीत सरदार, सण्डो गणफार साइ और गुलाम अली
के बीच होती रही—ठेठ लाहौर के कोठा की भाषा में । मतलब ता मैं
समझता रहा मगर कुछ मुहावरे मेरी समझ में न आए ।

जीनत बिलकुल खामोश बठी रही । अभी कभी किसी बात पर
मुस्करा देती । मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उस इस बातचीत से कोई बिल-
चस्पी नहीं थी । हत्की हिलकी का एक गिलास भी उसने पिया बगैर
किसी दिलचस्पी के । सिगरेट भी पीती थी तो मालूम होता था, उस
तम्बाकू और उसके धुएँ में कोई रुचि नहीं है । लेकिन मजे की बात यह
है कि सत्रसे ज्यादा सिगरेट उसीने पिए । बाबू गोपीनाथ से उस मुहावरे
की, इसका पता मुझे किसी बात से न मिला । इतना जाहिर था बाबू
गोपीनाथ का उसका काफी खयाल था, क्योंकि जीनत के आराम के लिए
हर सामान मौजूद था । लेकिन एक बात मुझे महसूस हुई कि इन दोनों
में कुछ अजीब सा खिचाव था । मरा मतलब है कि वे दोनों एक दूसरे से
कुछ करीब होने के बजाय कुछ हटे हुए से मालूम होते थे ।

आठ बजे के करीब सरदार डाक्टर मजीद के यहां चली गई क्योंकि
उस मारफिया का इजेन्शन लेना था । गणफार साइ तीन पग पीन के बाद
अपनी तस्वीह (माला) उठाकर कालीन पर सा गया । गुलाम अली का
हाटल से खाना लेने का भेज दिया गया । सण्डा न अपनी दिलचस्पी बच-
वास जय कुछ समय के लिए बंद की ता बाबू गोपीनाथ ने, जो अब नंगा म
था जीनत की तरफ बही आशियाना निगाह डालकर कहा, मण्टो साहब,
मेरी जीनत के बार में आपका क्या खयाल है ?

मैंने सोचा, क्या वह ! जीनत की तरफ देखा तो वह भेंप गई। मैंने ऐसे ही कह दिया 'बड़ा नक खयाल है।' बाबू गोपीनाथ खुश हो गया। 'मण्टो साहब, है भी बड़ी नेक। खुदा की कसम न जेवर का शौक है, न किसी और चीज का। मैंने कई बार कहा जान मन, मकान बनवा दू ?' जवाब क्या दिया, मालूम है आपको ?—क्या कहगी मकान लेकर, मेरा और कौन है ? मण्टो साहब मोटर कितन म आ जाएगी ?'

मैंने कहा मुझे मालूम नहीं।

बाबू गोपीनाथ ने आश्चर्य से कहा क्या बात करते हैं मण्टो साहब ! आपका और कागो की बीमन मालूम न हो ! कत चलिए मरे साथ, जेनो के लिए एक मोटर लेंग। मैंने अब देखा है कि बम्बई में मोटर हानी ही चाहिए।'

जीनत के चेहर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

बाबू गोपीनाथ का नशा घाड़ी धेर के बाद बहुत सज ही गया। बहुत ज्यादा जज्बाती होकर उसने मुझ पर कहा, 'मण्टो साहब, आप बड़े लायक आदमी हैं। मैं तो बिल्कुल गधा हूँ। आप मुझे बताइए, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ ? कल बातों-बातों में मण्टो ने आपका जिक्र किया। मैं उसी वकन टैक्सी मगवाई और उससे कहा मुझे ल चलो मण्टो साहब के पास। मुझमें कोई गुस्ताखी हो गई हो तो माफ कर दीजिएगा। बहुत गुनहगार आदमी हूँ। हिस्की मगवाऊ आपके लिए और ?'

मैंने कहा नहीं-नहीं, बहुत पी चुके हैं।' वह और ज्यादा जज्बाती हो गया और पीजिए मण्टो साहब ! यह कहकर जेब से सौ मी के नोटा का पुलि दा निकाला और एक और नोट अलग करन लगा लेकिन मैंने सब नोट उसके हाथ से ले लिए और वापस उसकी जेब में ठूस दिए। 'सौ रुपये का एक नोट आपन गुलाम अली को दिया था, उसका क्या हुआ ?'

मुझे दरअसल कुछ हमदर्दी भी ही गई थी बाबू गोपीनाथ से। कितने आदमी उस गरीब के साथ जोक की तरह चिमटे हुए थे। मेरा खयाल था कि बाबू गोपीनाथ बिल्कुल गधा है लेकिन वह मेरा इशारा समझ गया और मुस्कराकर कहन लगा, 'मण्टो साहब उस नोट में जो कुछ बाकी बचा, वह या तो गुलाम अली की जब में से गिर पड़ेगा, या '

बाबू गोपीनाथ न अभी वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि गुलाम अली ने कमर में दाखिल होकर बड़े दुःख से यह सबर दी कि हाटल म किमी हरामजाद न उसकी जेब में स सार रुपये निकाल लिए । बाबू गोपीनाथ मेरी तरफ देखकर मुम्बराया और फिर सो रुपये का एक नोट नेब में निकाला और गुलाम अली को दवर कहा 'अन्दी खाना ल आया ।'

पाच छ मुलाकाता के बाद मुझे बाबू गोपीनाथ के गहरी व्यक्तित्व का ज्ञान हुआ । पूरी तरह तो सर इसान किसीकी भी नहीं जान सकता, लेकिन मुझे उसके बहुत से हालात मालूम ही गए, जो वहद दिनचर्य थे । पहले तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि भरा यह खयाल कि वह परले दर्जे का चुगद है गलत साबित हुआ । उसको इस बात का पूरा एहसास था कि मण्टी गपकार साइ गुलाम अली और भरदार बगरा जा उसके मुमा-द्वित्र और पार बन हुए थे मतलबी इमान है । वह उनस भिड़किया, गालिया सब सुनता था, लेकिन गुम्ता प्रकट नहीं करता था । उसने मुझन कहा मण्टा माहव मैंन घाज तक किसीनी सत्ताह रद्द नहीं की । जब भी कोई मुझे सलाह देता है मैं कहता हूँ सुबहान अन्लाह । वे मुझे बयनूफ समझते हैं तबिन मैं उहू शकनमद समझता हूँ, इसलिए कि उनम कम स कम इननी अकल तो है जा मुझम ऐसी देवबूकी का गिनारन कर लिया, जिससे उनका उल्लू सीधा हो सकता है । बात दरप्रगत यह है कि मैं गुलाम से पकीरा और बजरा की सोहबत में रहा हूँ । मुझे उनम कुछ मुहम्मद-मो हा गई है । मैं उनके बगर नहीं रह सकता । मैंन गाब रगा है, जो मेरी दीनत मरम हो जाणगी तो किसी तकिय में जा बैठूंगा । रण्नी का बाठा और पीर का मजार घम, यदा जगहें समी है जहा मर निन का मुकूर मिलना है । रण्नी का बाठा तो छूट जाणगा, इसलिए कि जेय गानी हान वाली है, लेकिन हिम्मतान में हजारों पीर है किसी एक के मजार पर चना जाऊंगा ।

मैंन उनम पूछा रण्नी के बाटे और तकिय घापका क्या पम है ?

कुछ दर साबकर उमन जगव निग, इसलिए कि मैं गानी जगव पर पम स नकर छन तक घासा ही घाना हाना है । जा घाण्मी मुद

को घोषा दना चाहता है, उमके लिए इनस अच्छी जगह और क्या हो सकती है ?'

मैन एक और सवाल किया 'आमकी तवायफा का गाना सुनने का शौक है। क्या आम संगीत की समझ रखत है ?'

उमन जबाब दिया, 'बिस्तुल नही और यह अच्छा ही है क्योंकि मैं बनसुरी में बनसुरी तवायफ के यहा जाकर भी अपना सर हिला सकता हूँ। मण्टो साहब, मुझे गान में कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन जब मैं सदास या सौ नय का नाट निकालकर गान वाली की दिग्गज में बहुत मजा आता है। नाट निकाला और उमको दिखाया वह उस लेने के लिए एक अदा में उठी, पाप आई तो नाट जुराव में उडस लिया। उमने झुककर उस बाहर निम्नाना ता हम खुश हो गए। ऐसी बहुत सी फिजूल फिजूल-सी बातें हैं जो हम ऐसे तमाशबीन को पसंद हैं, करना कौन नहीं जानता कि रण्डी के बाड़े पर मा आम अपनी औनाद से पंगा कराते हैं और मकबरा तथा सब्बिया में आदमी अपने खुदा से।

बाबू गोपीनाथ का राजरा या बगावती ती मैं नहीं जानता, लेकिन इतना मालूम हुआ कि यह एक बहुत बड़े क़ौम बनिय का बेटा है। बाप के मरने पर उस दिन लाख रुपये की जायदाद मिली जो उसने अपने इच्छानुसार उडाना शुरू कर दी। बम्पई आते वक़्त वह अपने साथ मचास हजार रुपये लाया था। उस जमान में सब चीज़ें गरीबी थी, लेकिन फिर भी हर राज में सब गरीबी खर्च हो जाते थे।

जैनी के लिए उसने फिएट कार खरीदी। याद नहीं रहा, लेकिन शायद तीन हजार में आई थी। एन टाइवर रखा, लेकिन वह भी लफंगे टाइप का। बाबू गोपीनाथ की कुछ एन ही आदमी पसंद थे। हमारी मुतावाता का सिलसिला बढ़ गया। बाबू गोपीनाथ से मुझ तो सिर्फ दिनचस्पी थी लेकिन उसे मुझमें श्रद्धा सी हो गई थी। यही कारण था कि दूसरा के मुताबिक मैं वह मेरा बहुत ज्यादा आदर करता था।

एक राज शाम के करीब जब मफलट पर गया तो मुझ वहा शफीक का देखकर बड़ी हैरानी हुई। अगर मैं मुहम्मद शफीक तूनी कहूँ तो लोग समझ लेंगे कि मेरा मतलब किस आदमी से है। या तो शफीक काफी

मगहूर आदमी है—कुछ अपनी सबसे अलग गायकी के कारण और कुछ अपनी चुटकुलेबाज तबीयत की वदौलत। लेकिन उसकी जिदगी का एक हिस्सा अधिकतर नोगा का मालूम नहीं है। बहुत कम लोग जानते हैं कि तीन सगी बहनों को एक ब बाद एक तीन-तीन, चार चार साल के बक्के के बाद रखल बनाने से पहले उसका सम्बन्ध उनकी सास भी या। यह भी बहुत कम लोगो की मालूम है कि उसकी अपनी पहली बीबी जो शादी के थोड़े भरसे बाद ही मर गई थी, इसलिए पसन्द थी कि उससे तवायफा के स नाज-नम्वर नहीं थे। लेकिन यह ती खर हर आदमी जा शफीक तूसी से थोड़ी बहुत वाक्फियत रखता है, जानता है कि चालीस बरस की उम्र में यह उस जमाने की उम्र है सैंकड़ों तवायफा न उस रखा। अच्छे से अच्छा कपड़ा पहना, उमदा से उमदा खाना खाया नफीस से नफीस सोटर रखी लेकिन अपने गिरह से कभी किसी तवायफ पर एक दमड़ी लच नहीं की।

औरता के लिए खास तौर पर जो पेशेवर हा, उसकी चुटकुलेबाज तबीयत में जिसमें मीरासिया जस मजाक की भलक थी, बड़ा आकर्षण था। वह कोशिश किए बगैर उह अपनी तरफ खींच लेता था। मैं जब उसे हस हसकर जीनत से बातें करते देखा तो मुझे इस-लिए हैरानी न हुई क्योंकि मैं जानता था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है मैं सिर्फ यह सोचा कि वह अचानक यहा पहुंच कैसे गया। एक सैंण्डो उस जानता था, मगर उनकी बोलचाल तो इससे एक जमाने से बाद थी। लेकिन बाद से मुझे मालूम हुआ कि सैंण्डो ही उस बहा लाया था। उन दोनों में मुलह सफाई हो गई थी।

बाबू गोपीनाथ एक तरफ बठा हुक्का पी रहा था। मैं शायद इससे पहले जित्त नहीं किया कि वह सिगरेट बिलकुल नहीं पीता था। मुहम्मद शफीक तूसी मीरासिया के लतीफे सुना रहा था जिसमें जीनत कुछ कम और सरदार बहुत ज्यादा तिलचस्पी ले रही थी। शफीक ने मुझे दखा और कहा 'ओह विस्मिल्लाह विस्मिल्लाह' क्या आपका गुजर भी इस वादी से होता है ?'

सैंण्डो ने कहा 'तसरीफ लाइए इजराइल (ममदूत) साहब यहां

घड़न-तख्ता ।'

मैं उसका मतलब समझ गया ।

थोड़ी देर गप्पवाजी हाती रही । मैं नोट किया कि जीनत और मुहम्मद शफीक तूसी की निगाह आपस में टकराकर कुछ और भी कह रही हैं । जीनत इस कला में बिल्कुल कोरी थी, लेकिन शफीक की निपुणता जीनत की कमियों को छिपाती रही । सरदार दोना की निगाहवाजी को कुछ इस अंदाज में देख रही थी, जैसे खलीफे अल्लाह के बाहर बैठकर अपने पट्टा के दाव पंच देखते हैं ।

इस दौरान में मैं भी जीनत से काफी बेतकरलुफ हो गया था । वह मुझे भाई कहती थी, जिनपर मुझे एतराज नहीं था । अच्छी मिलन-सार तबीयत की औरत थी—कम बोलन वाली सीधी सादी, साफ सुथरी ।

शफीक से उसकी निगाहवाजी मुझे पसंद नहीं आई । एक ता उसमें भाड़ापन था, इसके अलावा कुछ या कहिए कि इस बात का भी उसमें देखल था कि वह मुझ भाई कहती थी । शफीक और सैण्डो उठकर बाहर गए तो मैं शायद बड़ी निदयता से उससे डाट डपट की जिससे उसकी आवाज में मोटे मोटे घासू आ गए और वह रोती हुई दूसरे कमरे में चली गई । बाबू गोपीनाथ भी, जो एक कोने में बैठा हुआ हुक्का पी रहा था, उठकर तभी से उसके पीछे चला गया । सरदार ने आवाज ही आवाज में उससे कुछ कहा, लेकिन मैं उसका मतलब न समझा । थोड़ी देर बाद बाबू गोपीनाथ कमरे में बाहर निकला और 'आइए गण्टो माहव कहकर मुझे अपने साथ अंदर ले गया ।

जीनत पलंग पर बठी थी । मैं अंदर दाखिल हुआ तो वह दोना हाथों से मुझे ढांपकर लेट गई । मैं और बाबू गोपीनाथ दोना पलंग के पास कुर्सियां पर बैठ गए । बाबू गोपीनाथ ने बड़ी गंभीरता से कहना शुरू किया, 'गण्टो साहब, मुझे इस औरत से बहुत मुन्द्गत है । दा बरस से यह मेरे पास है, मैं हजारत गीस आजम जीलानी की कसम खाकर कहता हूँ कि इसने मुझे कभी शिकायत का मौका नहीं दिया । इसकी दूसरी बहनों, मेरा मतलब है, इस पेशे की दूसरी औरतें दोना हाथों से मुझे लूटकर खाती रही, मगर इसने कभी एक पैसा ज्यादा मुझसे नहीं लिया । मैं

अगर किसी दूसरी औरत के यहां हफता पड़ा रहा तो इस गरीब ने अपना
 कोई जेवर गिरवी रखकर गुजारा किया। मैं जैसाकि आपस एक बार
 कह चुका हूँ बहुत जल्द इस दुनिया से किनारा कर लेना होता है, मरी
 दीलत अब कुछ दिना की महमान है। मैं नहीं चाहता कि इसकी जिंदगी
 खराब हो। मैं लाहौर में इसको बहुत समझाया कि तुम दूसरी तवायफा
 की नरफ दखो। जा कुछ बबरती है सीखा। मैं आज दीलतमद हूँ बल
 मुझ भिखारी हाना है। तुम लागी की जिन्दगी में सिर्फ एक दीनतमद
 काफी नहीं। मेरे बाद तुम किसी और की नहीं फासीगो ता काम नहीं
 चलागा। लेकिन मण्टो साहब इसने मरी एक न चुनी। सारा दिन
 सरीफजादिया की तरह घर में बठी रहती। मैं न गफार साहब में मशवरा
 किया। उसने कहा 'बम्बई ल जाओ। इसे मालूम था कि उसने ऐसा
 क्या कहा। बम्बई में उसकी दो जानन वाली तवायफे एकट्ठे में बनी हुई हैं।
 मैं भी सोचा बम्बई ठीक है। दो महीने हो गए हैं इसे महा लाए हुए।
 सरदार को लाहौर में बुलाया है कि इसको सब गुर सिखाए। गफार साह
 स भी यह बहुत कुछ सीख सकती है। यहां मुझ कोई नहीं जानता। इस-
 को यह खयाल था कि इससे मरी बड़बुनी होगी। मैंने कहा तुम छोड़ी
 इसको। बम्बई बहुत बड़ा शहर है। साया रईस हूँ। मैंने तुम्हें मोटर ले
 दी है। कोई अच्छा आदमी तलाश कर ली। मण्टो साहब में खुदा की
 कसम खाकर कहता हूँ मरी यह दिन्नी ग्वाहिन है कि यह अपने पैरो
 पर खड़ी न। अच्छी तरह हागियार हो जाए। मैं इसका नाम आज ही
 बबू में दम हजार रुपया जमा करन को तयार हूँ मगर मुझ मानूम है
 दस दिन के अन्दर यह बाहर बगी हागी और सरदार एक एक पाई
 अपनी जब में डाल ली। आप भी इस समय भाइए कि चातार बनन की
 वागिन कर। जय में मोटर खरीनी है सरदार इन हर राज नाम को
 अपना बन्दर ल जाती है, लेकिन अभी तक कामयाबी नहीं हुई। सण्डा
 आज बड़ी मुशिला स मुहम्मद गरीब का क्या लाया। आपना क्या
 खयाल है उनके बारे में? मैंने अपना खयाल जाहिर करना लेकिन न
 समझा लेकिन यानू गापीनाथ न खय ही कहा अच्छा माना पीता
 घातमी मालूम होता है। क्या जेना जानी पता है तुम्हें?

जैनो सामोश रही ।

बाबू गोपीनाथ से जब मुझे जीनत का यम्बई लान का वारण और उद्देश्य मालूम हुआ तो भग्न दिमाग चकरा गया । मुझे यकीन न आया कि ऐसा भी हो सकता है, लेकिन बाद में अपनी आँखों से देखे हाल ने मेरी हैरत दूर कर दी । बाबू गोपीनाथ की दिनी समझा थी कि जीनत यम्बई में किसी अच्छे मान्यार आदमी की रखैल बन जाए या उन तारीफ़ मीम जाण, जिनसे वह विभिन्न व्यक्तियों से रपया प्राप्त करते रहने में लफन हो सके ।

जीनत से अगर सिर्फ छुटकाग ही शामिल करना जाना तो यह कोई मुश्किल चीज नहीं थी । बाबू गोपीनाथ एक ही दिन में ऐसा कर सकता था । बूँकि उसकी नीयत नेक थी इसलिए उसने जीनत की जिदगी बनान के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया । उसका एकदम बनान के लिए उसने कई जाली डायरेक्टरों की दावतें की, घर में टेलीफोन लगवा दिया, लेकिन ऊट किसी करवट में बैठा ।

मुहम्मद शफीक तूगी लगभग डेढ़ महीने तक आता रहा । कई रातों भी उसने जीनत के साथ गुजारी, लेकिन वह ऐसा आदमी नहीं था, जो किसी औरत का सहारा बन सके । बाबू गोपीनाथ ने एक रोज़ अपने साम और रज के साथ कहा, 'शफीक साहब तो खालीपुली जटलमन ही निकल । ठम्मा दलिये, लेकिन बेचारी जीनत से चार चादरें छ तक्रिय के गिलाफ और दो सौ रुपये नकद हथियाकर न गए । मुना है, आजकल एक लकी अलमाम से इरादा सड़ा रह है ।

यह सही था । अलमाम नजीर जान पटियाल वाली की सत्रस छाटी और आखिरी लडका थी । इससे पहले तीन बहनें शफीक की रखैल रह चुकी थी । दो सौ रुपये जो उनसे जीनत में लिए थे, मुझे मालूम है अलमाम पर खर्च हुए थे । बहना के साथ लड भांडनर अलमाम ने जहर खा लिया था ।

मुहम्मद शफीक तूगी ने जब आना जाना बंद कर दिया तो जीनत ने कई बार मुझे टेलीफोन किया और कहा कि उसे बहुत बुरे में फँसा हुआ है । मैं उसे तलाश किया, लेकिन किसीको भी उसका पता नहीं था

कि वह वहा रहता है। एक दिन अचानक रडियो स्टेशन पर मुताकात हो गई। सरन परगानी की हालत म था। जब मैंने उस कहा कि तुम्ह जीनत बुलाती है तो उसन तवाव दिया— मुझे यह पैगाम और जरिय स भी मिल चुका है। अफसोस है आजकल मुझ बिलकुल फुमत नही। जीनत बहुत अच्छी ओरत है लेकिन अफमास है कि वह बट्ट शरीफ है। एसी ओरत। स जो बीविया जमी लगे मुझ कोई दितचस्पी नहा। शफीक स जब निरासा हुई ता जीनत न सरनर क साथ फिर अपानो व दर जाना गुरू किया। पन्द्रह टिना म बढी मुश्किल स कई गैलन पट्रोल पूकने क बाट सरदार न दा आत्मी फास उनस जीनत को चार सौ रुपय मिल। बाबू गोपीनाथ न समझा कि हालात अच्छे है क्याकि उस स एक न जा रेशमी कपडा की मिल का मालिक था जीनत स कहा कि मैं तुमस गान्गी करुगा। एक महीना गुजर गया लेकिन वह आदमी फिर जीनत के पाम न आया।

एक रोज मैं जाने किस काम स हानकी रोड पर जा रहा मा कि मुझे फुटपाथ के पास जीनत की मोटर खडी नजर आई। पिछली सीट पर मुहम्मद यासीन बैठा था नगीना होटल का मालिक। मैं उसस पूछा यह मोटर तुमने कहा स ली ?

यासीन मुस्कराया, तुम जानत हा माटर वाली को ?

मैंने कहा 'जानता हू।

तो वस समझ लो कि मेरे पास कसे आई। अच्छी लडकी है यार। यासीन न मुझ आख मारी। मैं मुस्करा दिया। उसक चौथ राज बाबू गोपीनाथ टैक्सी पर मेर दफ्तर स आया। उसस मुझ मालूम हुआ कि जीनत म यासीन की मुताकात कस हुई। एक शाम का अपानो व दर म एक आत्मी लेकर सरदार और जीनत नगीना होटल गई। वह आत्मी तो किसी बात पर झगडकर चला गया लेकिन होटल क मालिक स जीनत की दोस्ती हो गई।

बाबू गोपीनाथ सतुष्ट था क्याकि दस-पन्द्रह रोज की दास्ती क दौरान यासीन ने जीनत का छ बहुत ही उम्मा और कीमती साडिया ले दी थी। बाबू गोपीनाथ अब यह सोच रहा था कि कुछ दिन और गुजर

जाए, जीनत और यामीन की दोस्ती और मजबूत हो जाए तो नाहोर वापस चला जाए मगर ऐसा न हुआ। नयीना होटल में एक थिदिचयन औरत ने एक कमरा किराये पर लिया, उसकी जवान लड़की से यामीन की आख लगे गई। खुनाचे जीनत बेचारी होटल में बंठी रही और यामीन उसकी माटर में मुंह गाम उस लड़की को घुमाना रहना। बाबू गोपीनाथ का हमका पता चला तो बड़ा दुःख हुआ। उसने मुझसे कहा 'मण्टो माहुर'। यकम लोग है। भई, दिल उचाट ही गया है तो ताफ कह दो। लेकिन जीनत भी अजीब है। अच्छी तरह मानूम है कि क्या हो रहा है, मगर मुंह में इनना भी नहीं कहती—मिमा, अगर तुम्हें उस गिम्टान छात्रों में दख लहाना है तो अपनी माटर का बन्दीवस्त करी, मेरी मोटर क्या इस्तमान करत हा? मैं क्या करूँ मण्टो माहुर। बड़ी शरीफ और नेक औरत है। कुछ समझ में नहीं आता। थोड़ी-सी चालाकता बनना भी चाहिए।'।

यामीन से सम्बन्ध समाप्त होने के बाद जीनत ने कोई सदमा महसूस नहीं किया।

बहुत दिना तक कोई और नई बात न हुई।

एक दिन टेलीफोन किया तो पता चल गया कि गोपीनाथ गुनाम अनी और गणकार माह के साथ नाहोर चला गया है, रुपये का बदलावस्त करन क्याकि पचास हजार खर्च हो चुके थे। जाते वकत यह जीनत से कह गया था कि उस नाहोर में ज्यादा दिन सगेंग, क्योंकि उस कुछ मकान बनने पड़ेंग।

सरदार को माफिया के टीका की जरूरत थी, सैण्डो को पैसे की। दोनों ने मिलकर कीशिश की। हर रोज दो-तीन आदमी पासकर ले आत। जीनत से कहा गया कि बाबू गोपीनाथ वापस नहीं आया, इसलिए उस अपनी फिक्र करनी चाहिए। मौ सचा मौ रुपये रोज के हा जात, जिनसे मे आधे जीनत का मिलते, बाकी सैण्डो और सरदार दवा लेते।

मैंने एक दिन जीनत से कहा, 'यह तुम क्या कर रही हो?' उसने बड़े अलहंपन से कहा, 'मुझे कुछ नहीं मालूम आईजान। ये लोग जो कुछ

बहते हैं, मान लेती हूँ।' जी चाहा, पास बैठकर दर तक ममभाऊ बिजा कुछ तुम पर रही हा ठीक नहीं है। सण्डा और सरदार अपना उतलू सीधा करन के लिए तुम्हें बच भी डालेंगे, मगर मैं कुछ न बहा। जीनत उकता दन की हद तक बममभ प्रथमग और बजान औरत थी। उा बमपरत का अपनी जितनी का कुछ बद्र-कीमत मालूम हो नहीं थी। जिसमें बेवनी मगर उनमें बचन वाला का कोई अंगज तो हाता। मुझे बहुत कोपन हाती थी उस दमपर। मिश्रित स गारा स, गान स, घर स, टेतीफोन स, महा तक बि उम माफ स भी जितपर यह अकमर लटी रहती थी उन बाद निलचस्पी नहीं थी।

बाबू गोपीनाथ पूरे एक महीने बाद लौटा। माहिम गया तो बहा पोट स मोई और ही था। सण्डो और मरदार के मशविर स जीनत न बादरा स एक बगले का ऊपरी हिस्सा किराय पर ले लिया था। बाबू गोपीनाथ मेर पास आया तो मैं उस पूरा पता बता दिया। उसन मुझसे जीनत के बारे स पूछा। जा कुछ मुझ मालूम था, मैं कह दिया लेकिन यह न कहा बि सण्डो और सरदार उससे पेशा करा रह है।

बाबू गोपीनाथ इस बार दस हजार रुपय अपन साथ लाया था जो उसन बड़ी मुशिल्ला स हासिल किए थे। गुनाम अली और गफार साई की बहु लाहौर ही छोड आया था। टक्की नीच खडी थी। बाबू गोपीनाथ न अनुरोध किया बि मैं भी उसका साथ चलू।

लगभग एक घण्टे स हम बादरा पहुंच गए। पाती हिल पर टक्की चढ रही थी बि सामन तग सडक पर सण्डो दिखाई दिया। बाबू गोपीनाथ न जार से पुसारा सण्डो।

सण्डो न जब बाबू गोपीनाथ को दगा ता उसके मुह स सिफ इतना निकना घडन लगता।

बाबू गोपीनाथ ने उससे कहा आमा टक्की स उठ आमा और साथ चलो।

लेकिन सण्डो न बहा, 'टक्की एक तरफ खडी कीकिए। मुझे आपसे कुछ प्राइवेट बातें करनी हैं।

टक्की एक तरफ खडी की गई। बाबू गोपीनाथ बाहर निकला ता

सण्डो उमे कुछ दूर ले गया। देर तक उनमे बातें होतीं रहो। जब सत्तम हुई तो बाबू गोपीनाथ अकेला टैंक्सी की तरफ आया। ड्राइवर से उमने कहा, 'वापस ले चलो।'

बाबू गोपीनाथ खुश था। हम दादर के पास पहुंचे तो उसने कहा, 'मण्टो साहब, जेना की दादी होन वाली है।'

मैं हैरत स पूछा, 'किसम?'
बाबू गोपीनाथ ने जवाब दिया, हैदराबाद सिंध का एक दोलतमन्द जमींदार है। खुदा करे, दीनो खुश रह। यह भी अच्छा है जो मैं ठीक वकन पर आ पहुंचा। जो रुपये मेरे पाम हैं, उनमे जेनो या दहेज बन जाएगा। क्या क्या खपान ह आपका?

मेरे दिमाग मे उस वकन कोई खयाल नहो था। मैं सोच रहा था कि यह हैदराबाद सिंध का दोलतमन्द जमींदार कौन है? सण्डी और सरदार को कोई जालसाजो तो नहो? लेकिन बाद मे इसकी तसदीब हो गई कि वह वास्तव मे हैदराबाद का गुगहाल जमोदार था जो हैदराबाद सिंध के एक म्यूजिक टीचर को मारफ्त जोनत स मिला था, यह म्यूजिक टीचर जोनत को गाना मिसान की बेनार कोशिश किया करता था। एक रोज वह अपने मरपरस्त गुनाम हुसैन (यह हैदराबाद सिंध के रईस का नाम था) का साथ लेकर आया। जोनत ने खूब खातिर की और गुनाम हुसैन को परमादाग पर उसने गालिव को गजत

गुवाताची है गमे दिल उसको सुनाए न बने गावर सुनाई। गुलाम हुसैन उसपर मर मिटा। इसका जिक्र म्यूजिक टीचर न जोनत से किया। सरदार और सैण्डो ने मिलकर मामला पक्का कर दिया, और गादी तय हो गई।

बाबू गोपीनाथ खुश था। एक बार सैण्डो के दोस्त की हैमियत से वह जोनत के महा गया। गुलाम हुसैन स उसकी मुलाकात हुई तो उससे मिलकर बाबू गोपीनाथ की खुशी दूनी हो गई। मुकम उसने कहा 'मण्टो साहब, खूबमूरत, जवान और बडा लायक आदमी है वह। मैंन यहा आते हुए दातगज बरग के हुजूर जाकर दुआ मांगी थी, जो कुबूल हुई। भगवान करे, दीनो खुश रह।'

बाबू गोपीनाथ ने बड़े खुलूस और तबज्जह से जीनत की शान्ति का इतजाम किया। दो हजार के जेवर और दो हजार के कपड़े बनवाए और पांच हजार नकद दिए।

मुहम्मद शफीक सूयी, मुहम्मद यासीन प्राप्राइटर नगीना होत, सैण्डा म्यजिक टीचर में और गोपीनाथ गादी में शामिल थे। दुल्हन का तरफ स सज्जो चकील था। निकाह हुआ तो सैण्डो ने धीरे से कहा 'घडन-तस्ता'। गुलाम दुसन सज का नीला सूट पहने हुए था। सबन उसको मुबारकदाद दी, जो उसने खुशी खुशी कुबल की। बाकी खूबसरत आत्मा था। बाबू गोपीनाथ उसके मुकामने में छोटी सी बटेर मानम होता था।

गादी की दावता में खान पीन का जा भी सामान होता है, उसका प्रबंध बाबू गोपीनाथ ने किया था। दावत में जब साग फारिग हुए तो बाबू गोपीनाथ ने सपके हाथ धुलवाए। मैं जब हाथ धान के लिए आया तो उसने मुझमें अच्छा के मे अंदाज में कहा, 'मण्टो साहब, जरा अदर जाइए, और दलिये जना दुल्हन के निवास में बसी लगती है।'

म पदा हटाकर अंदर दाखिल हुआ। जीनत मुख जरबपन का सल-वार कुरता पहन हुई थी दुपट्टा भी उसी रंग का था, निमपर गोट लगी थी। चेहरे पर हल्का हल्का मकथप था हालांकि मुझे होठा पर लिपस्टिक की सुर्खी बहुत पुरी मालूम होनी है, लेकिन जीनत के हाठ सजे हुए थे। उमन शरमाकर मुझे आवाज दिया तो वह बहुत प्यारी लगी। जब मैं दूसर कोन में एक मसहरी देगी जिमपर फूल ही फूल थे तो मुझे अना-याम हसी आ गई। मैं जीनत से कहा, यह क्या मसखरापन है।'

जीनत ने मरी नरप बिनुकुल मामूम कबूतरी का तरह दला, 'आप मजाक करते हैं भाईजान।' उसने कहा और उसकी आवा में आसू डब-डबा आया।

मुझे अभी अपनी गलती का एहसास भी न हुआ था कि बाबू गोपीनाथ अदर दाखिल हुआ। बड़ प्यार के साथ उसने अपने हमाल से जीनत के आसू पाल, और बड़े दुःख के साथ मुझसे कहा 'मण्टो साहब, मैं समझा था कि आप बड़े समझदार और स्थायक आदमी हैं, जेनो का मजाक उठाने से पहले आपने कुछ सोच लिया होता।'

बाबू गोपीनाथ के स्वर में वह श्रद्धा, जो उसमें मेरे प्रति थी, घायल नजर आई , लेकिन इससे पहले कि मैं उससे माफी मागू, उसने जीनत के सिर पर हाथ फेरा और बड़े खुलूस के साथ कहा, 'खुदा तुम्हें खुश रखे।'।

यह कहकर बाबू गोपीनाथ ने भीगी हुई आँखों से मेरी तरफ देखा, उनमें निंदा थी, बहुत ही दुःख भरी निंदा, और वह चला गया ।

टोबा टेकसिंह

बटवारे के दो तीन साल बाद पाकिस्तान और हिंदुस्तान की सरकारों को खयाल आया कि साधारण बंदियों की तरह पागलानों की बदला बदली भी होनी चाहिए, अर्थात् जो मुसलमान पागल हिंदुस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें पाकिस्तान पहुंचा दिया जाए और जो हिंदू और सिख पाकिस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें हिंदुस्तान के हवाले कर दिया जाए।

भालूम नहीं, यह बात उचित थी या अनुचित। जो हो समझना के फल के अनुसार ऊंचे स्तर पर काफ़ेस हूँ और अंत में एक दिन पागलानों की बदला बदली के लिए मुफ़रत हो गया। अच्छी तरह छावीन की गई। वे मुसलमान पागल, जिनके सरक्षक हिंदुस्तान में थे वही रहने दिए गए और जो दोष थे, उनका सीमा की ओर रवाना कर दिया गया। यहाँ पाकिस्तान से, क्याकि करीब करीब सब हिंदू सिख जा चुके थे इस लिए किसीको रखने रखाने का मकान पैदा न हुआ। जितने हिंदू सिख पागल थे सबके सब पुलिस के सरक्षण में सीमा पर पहुंचा दिए गए।

उधर की खबर नहीं, लेकिन इधर ताहौर के पागलखान में इस तबादले की खबर पहुंचा तो बड़ी मजेदार बातें होने लगी। एक मुसलमान पागल से, जो बारह साल तक प्रतिदिन नियमपूर्वक जमींदार पत्ता रहा था, जब उसके एक दोस्त ने पूछा, 'मोलवी साहब, यह पाकिस्तान क्या होता है?' तो उसने बड़े चिंतन के बाद जवाब दिया, 'हिंदुस्तान में एक ऐसी जगह है, जहाँ उस्तर बनत है।'

यह जवाब सुनकर उसका दोस्त चुप हो गया।

इसी तरह एक सिख पागल ने दूसरे सिख पागल से पूछा, 'सरदार जी, हमें हिंदुस्तान क्या भेजा जा रहा है? हमें तो यहाँ की बोली नहीं आती।'।

दूसरा मुस्कराया, 'मुझे तो हिंदुस्तान की बोली आती है, हिंदुस्तानी बड़े सैतानी भाव ड भाव ड फिरते हैं'।

एक दिन नहाते नहाते एक मुसलमान पागल ने 'पाकिस्तान जिन्दा-वाद' का नारा इतने जोर से लगाया कि पक्ष पर फिमलकर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। कुछ पागल ऐसे भी थे जो पागल नहीं थे। इनमें ऐस खूनिया की सग्या अधिक थी, जिनके मंत्रधिया न अफमरो को रिश्वत दे दिलाकर उन्हें पागलखान भिजवा दिया था ताकि वे फामी वे फदे म बच जाए।

वे कुछ कुछ समझने थे कि हिन्दुस्तान का बटवारा क्या हुआ है और यह पाकिस्तान क्या है, लेकिन सभी पटनाओं का उन्हें भी कुछ पता न था। अफमरों ने कुछ पता नहीं चलता था और पहरेदार सिपाही अनपढ़, उजड़ठ थे। उनकी बातचीत से भी वे कोई अर्थ नहीं निकाल सकते थे। उनको केवल इतना पता था कि एक आदमी मुहम्मद अली जिन्ना है जिसकी कायदे आजम कहते हैं—उसने मुसलमानों के लिए एक अलग देश बनाया है, जिसका नाम पाकिस्तान है। यह कहा है और इसको उपयोगिता क्या है, इसके सम्वन्ध में वे कुछ नहीं जानते थे। यही कारण था कि पागलखाने में वे सब पागल, जिनका दिमाग पूरी तरह से खराब नहीं था, इस असमजस में थे कि वे पाकिस्तान में थे या हिन्दुस्तान में। अगर हिन्दुस्तान में हैं तो पाकिस्तान कहा है और अगर वे पाकिस्तान में हैं तो तो यह कैसे हो सकता है कि वे कुछ समय पहले यहीं रहते हुए भी हिन्दुस्तान में थे? एक पागल तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के चक्कर में ऐसा पड़ा कि और ज्यादा पागल हो गया। भाड़ू दंत दंत एक दिन एक पेड़ पर चढ़ गया और एक टहनो पर बैठकर दो घण्टे तक लगातार भाषण देता रहा, जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के नाजुक मामले पर था। सिपाहियों ने उसे नीचे उतरने के लिए कहा तो वह और ऊपर चढ़ गया। डराया धमकाया गया तो उसने कहा, मैं न हिन्दुस्तान में रहना चाहता हूँ न पाकिस्तान में। मैं इस पेड़ पर ही रहूंगा।

बड़ी भुश्किलो के बाद जब उसका दौरा ठण्डा पड़ा तो वह नीचे उतरा और अपने हिन्दू सिल मित्रों से गले मिल मिलकर रोने लगा। इस विचार में उसका दिल भर आता था कि वे उसे छोड़कर हिन्दुस्तान चले जाएंगे।

एक एम० एस सी० पास रेडियो इंजीनियर म, जो मुसलमान था और दूसरे पागलो से विल्कुल अलग चलने बाग की एक खास रविश पर दिन भर चुपचाप टहलता रहता था, यह तन्नीली आई कि उसने अपने तमाम कपड़े उतारकर दरवाजे के हवाले कर दिए और नग धड़ग सा बाग में घूमना शुरू कर दिया ।

चिनयोद के एक मुसलमान पागल ने, जो मुस्लिम लीग का सक्रिय कार्यकर्ता रह चुका था और जो दिन में पंद्रह सोलह बार नहाया करता था, एकाएक यह आदत छोड़ दी । उसका नाम मुहम्मद अली था, इसलिए एक दिन उसने अपने जंगले में घोषणा कर दी कि वह कामदे-आजम मुहम्मद अली जिन्ता है । उसका देखादेखी एक सिख पागल मास्टर तारसिंह बन गया था । संभव था कि उस जंगले में खून खराबा हो जाना लेकिन उन्हें खतरनाक पागल करार देकर अलग अलग स्थानों में बंद कर दिया गया ।

लाहौर का एक नौजवान हिंदू वकील था जो प्रेम में असफल होकर पागल हो गया था—जब उसने सुना कि अमृतसर हिंदुस्तान में चला गया है तो उसे बहुत दुःख हुआ । उसी शहर की एक हिंदू लड़की से उसको प्रेम हो गया था । यद्यपि उसने उस वकील का ठुकरा दिया था, लेकिन पागलपन की हालत में भी वह उसे नहीं भुला सका था । इसलिए वह उन सब हिंदू और मुस्लिम लीडरों को गालियां देता था, जिन्होंने मिल मिलकर हिंदुस्तान में दो टुकड़े कर दिए थे । प्रेमिका हिंदुस्तानी बन गई थी और वह पाकिस्तानी ।

जब अदला-बदली की बात शुरू हुई तो वकील को पागला ने समझाया कि वह दुखी न हो, उसको हिंदुस्तान भेज दिया जाएगा—उस हिंदुस्तान में जहां उसकी प्रेमिका रहती है । लेकिन वह लाहौर छोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए कि उसका खयाल था कि अमृतसर में उनकी प्रकटित नहीं चलेगी । यूरोपियन बाड में दो ऐंग्लो इण्डियन पागल थे । उनको ज्ञान मालूम हुआ कि हिंदुस्तान को आजाद करके अग्रज चले गए हैं तो उनकी बड़ा दुःख हुआ । वे छिप छिपकर घण्टा आपस में इस गंभीर समस्या पर बातचीत करते रहते कि पागलखाने में अब उनकी

हैसियत किस तरह की होगी, यूरोपियन बाढ़ रहगा या उड़ा दिया जाएगा ?
ब्रेक्फास्ट मिला करेगा या नहीं ? क्या उन्हें डबलरोटी के बजाय वनडी
इण्डियन चपाती तो जहर मार नहीं करनी पड़ेगी ?

एक सिख था जिसको पागलखान में दाखिल हुए पन्द्रह माल हो चुके
थे । हर समय उसके मुह में य विचित्र शब्द सुनने में आत थे, 'ओ पड़ दी
गिडगिड दी ऐंक्स दी बेघ्याना दी, मूंग दी दाल भाव दी लालटेन ।' वह
दिन को सोना था न रात को । पहरदारा का कहना था कि पन्द्रह बप के
इस लम्बे समय में वह एक क्षण के लिए भी न सोया था । लेटना भी नहीं
था । हा, कभी कभी दीवार के साथ टक लगा लेता था । हर समय खड़े
रहने में उसके पांव सूज गए थे । पिण्डलिया भी फूल गई थी । लेकिन
उस शारीरिक कष्ट के बावजूद वह लेटकर आराम नहीं करता था । हिंदु-
स्तान, पाकिस्तान और पागलों की बदला बदली के बारे में जब कभी
पागलखाने में बातचीत होती थी तो वह बड़े ध्यान से सुनता था । कोई
उससे पूछता कि उसका क्या खान है तो वह बड़ी गम्भीरता से जवाब
दता 'ओ पड़ दी गिडगिड दी, ऐंक्स दी बेघ्याना दी, मूंग दी दाल भाव
दी पाकिस्तान गवर्नमेण्ट ।

लेकिन बाद में 'भाव दी पाकिस्तान गवर्नमेण्ट' की जगह भाव दी टाबा
टर्कसिह, न ले ली और उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा
टर्कसिह, क्या है, जहां का वह रहने वाला है ? लेकिन किसीको भी मालूम
नहीं था कि वह पाकिस्तान में है या हिंदुस्तान में । जो बतान की कोशिश
करते थे खुद इस चक्कर में फंसे जाते थे कि स्वालकोट पहले हिंदुस्तान
में था या, पर अब सुना है कि पाकिस्तान में है । क्या पता है कि लाहौर
जो अब पाकिस्तान में है कल हिंदुस्तान में चला जाएगा सारा हिंदु-
स्तान ही पाकिस्तान बन जाए । और यह भी कौन छाती पर हाथ रखकर
कह सकता था कि हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों किसी दिन मिर से
ही गायब न हो जाएं ।

इस सिख पागल के केंद्र में रहने पर अब बहुत थोड़े से रह गए
थे । चूंकि वह बहुत कम नहाता था इसलिए दाढ़ी और सिर के बाल धांस
में जम गए थे, जिसके कारण उसकी शरल बड़ी भयानक हो गई थी ।

लेकिन आदमी बड़ा अहानिकारक था। पन्द्रह वर्षों में उसने किसीसे भगडा-फिसाद नहीं किया था। पागलखान के जो पुराने नौकर थे वे उसके बारे में इतना जानते थे कि टोबा टेक्सिंह में उसकी काफी जमीनें थीं। अच्छा खाता पीता जमींदार था कि अचानक ही दिमाग उलट गया। उसके सबंधी लाह की मोटी मोटी जजोरा में उसे बांधकर लाए और पागलखान में दाखिल करा गए।

महीने में एक बार मुलाकात का वे लोग आते थे और उसकी राजी-खुशी मालूम करके चले जाते थे। एक समय तक यह सिलसिला चलता रहा, लेकिन जब पाकिस्तान हिंदुस्तान की गड़बड़ शुरू हो गई तो उनका आना बंद हो गया।

उसका नाम बिशनसिंह था, मगर सब उसे टोबा टेक्सिंह कहते थे। उसे यह बिलकुल मालूम न था कि दिन कौन सा है, महीना कौन सा है या कितने साल बीत चुके हैं। लेकिन हर महीने जब उसके सम्बन्धी उससे मिलने आते थे तो उसे अपने आप पता चल जाता था। अतएव वह दफा-दार से कहना कि उसके मुलाकाती आ रहे हैं। उस दिन वह अच्छी तरह नहाता, बदन पर खूब साबुन घिसता और सिर में तेल लगाकर कंधा करता। अपने कपड़े, जो वह अभी इस्तेमाल नहीं करता था निकलवा कर पहनता और या सज मबरकर मिलने वाली के पास जाता। वे उसमें कुछ पूछते तो वह चुप रहता या कभी कभी ओ पड़ नी गिडगिड दी, ऐक्स दी बेभाना दी, भूग दी दाल आव दी सालटेन।' कह देता।

उसकी एक लड़की थी, जो हर महीने एक अंगुल बढ़ती बढ़ती पन्द्रह वर्ष में जवान हो गई थी। बिशनसिंह उस पहचानता ही न था। जब वह बच्ची थी तब भी अपने बाप का देखकर रोती थी, जब जवान हुई, तब भी आँखों से आसू बहते थे।

पाकिस्तान और हिंदुस्तान का विस्सा शुरू हुआ तो उसने दूसरे पागला में पूछना शुरू किया कि टोबा टेक्सिंह कहा है। जब सतोप-जनक उत्तर न मिला तो उसकी चिंता दिना दिन बढ़ती गई। अब मुलाकाती भी नहीं आते थे। पहले तो उसे अपने आप पता चल जाता था कि मिलने वाले आ रहे हैं पर अब जैसे उसके दिल की आवाज भी बंद हो

गई थी, जो उसे उनके आने की खबर दे दिया करती थी ।

उसकी बड़ी इच्छा थी कि वे लोग आए, जा उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करते थे और उसके लिए फन मिठाइयाँ और कपड़े लाते थे । वह भ्रगर उनमें पूछता कि टोबा टेकसिंह कहाँ तो है वे सचमुच बता देते कि पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में, क्याकि उनका खयाल था कि वे टोबा टेकसिंह में ही आते थे, जहाँ उसकी जमीनें हैं ।

पागनखाने में एक पागल ऐसा भी था, जो अपनेका खुदा कहता था । उसका एक दिन जब विशनसिंह ने पूछा कि टोबा टेकसिंह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में, तो उसने अपनी आदत के मुताबिक एक कहवहा लगाया और कहा, 'वह न पाकिस्तान में है और न हिन्दुस्तान में, इसलिए कि हमने अभी तक हुक्म ही नहीं दिया ।'

विशनसिंह ने उस खुदा से कई बार बड़ी मिनत-खुशामद से कहा कि वह हुक्म दे दे, ताकि भ्रष्ट खत्म हो, भ्रगर वह बहुत व्यस्त था, क्योंकि उस और भी बहुत-से हुक्म देने थे । एक दिन तब आकर वह उसपर बरस पड़ा, आ पड़ दी गिडगिड दी, ऐँस दी बेच्याना दी, मूँग दी दाल आव बाह गुरुजी दा खालसा एण्ड बाह गुरुजी दो फतह—ओ बोल सो निहाल सत सिरि भगल ।'

उसका शब्द वह मतलब था कि तुम मुसलमानों के खुदा हो, सिखा के खुदा होत ता जरूर मेरी सुनते ।

अदला बदली से कुछ दिन पहले टोबा टेकसिंह का एक मुसलमान, जो उसका दोस्त था, मुलाकात के लिए आया । पहले वह कभी नहीं आया था । जब विशनसिंह ने उस देखा तो एक तरफ हट गया और वापस जा लगा, लेकिन सिपाहियों ने उस रोका, 'तुमसे मिलने आया है—तुम्हारा दोस्त फजलदीन है ।

विशनसिंह ने फजलदीन को एक नजर से देखा और कुछ बड़बड़ाने लगा । फजलदीन ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रख दिया । मैं बहुत दिना से सोच रहा था कि तुममें मिलू लेकिन फुरसत ही न मिली । तुम्हारे सब आदमी राजी-खुशी हिन्दुस्तान पहुँच गए हैं । मुझसे जितनी मदद हो सकती थी की, लेकिन तुम्हारी बेटी हफकीर ।'

वह कहते-कहते रुक गया। बिशनसिंह कुछ याद करन लगा। 'बटो रूपकोर।''

फजलदीन ने खूब खबर मचा, 'हा हा वह भी ठीकठाक है उनके साथ ही चली गई थी।''

बिशनसिंह चुप रहा। फजलदीन ने कहना शुरू किया, 'उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम्हारी राजी खुशी पूछता रहू। अब मैंने सुना है कि तुम हिंदुस्तान जा रहे हो—भाई बलवीरसिंह और भाई रधावासिंह से मेरा सलाम कहना, और बहुत अमृतवीर से भी। भाई बलवीरसिंह से कहना—फजलदीन राजी-खुशी है। दो भूरी मर्से जा वे छोड़ गए थे, उनमें से एक ने कट्टा दिया है दूसरी के कट्टी हुई थी, पर वह चौदह दिन की होकर मर गई और भरे साथब जा खिदमत हो, कहना। मैं हर वक्त तैयार हू। और ये तुम्हारे लिए थोड़े से मरुण्डे लाया हू।''

बिशनसिंह ने मरुण्डों की पोटली लेकर पास खड़े सिपाही के हवान कर दी और फजलदीन से पूछा, 'टोबा टेकसिंह कहा है?'

फजलदीन न आश्चर्य से कहा, 'कहा है? वही है, जहा था।''

बिशनसिंह ने फिर पूछा, 'पाकिस्तान में या हिंदुस्तान में?'

'हिंदुस्तान में नहीं-नहीं, पाकिस्तान में।' फजलदीन बौल्ला-सा गया। बिशनसिंह बड़बड़ाता हुआ चला गया और पड़ दो गिडगिड दी ऐक्स दी वेध्याना दी मूंग दी दाल आव दी पाकिस्तान एण्ड हिंदुस्तान आव दी डुर फिट मुह।''

अदला बदली की तैयारिया पूरी तरह हो चुकी थी। इधर से उधर और उधर से इधर आने वाले पागला की सूचिया पहुँच गई थी और अदला-बदली की तारीख निश्चित हो चुकी थी। कडाके का जाड़ा पड़ रहा था जब लाहौर के पागलखाने से हिंदू सिख पागला से भरी लारिया पुलिस के संरक्षक दस्त के साथ खाना हुआ। उनसे सम्बन्धित अफमर भी उनके साथ थे। बाधा की सीमा पर दोनों आर के सुपरिण्टण्डेण्ट एक-दूसरे से मिले और प्रारम्भिक बारबाई खतम हान के बाद अदला-बदली शुरू हो गई जो रात भर चलती रही।

पागला को लारिया से निकालना और उनको दूसरे अफमरों के हवाले

करना बड़ा कठिन काम था। कुछ तो बाहर निकलते ही नहीं थे, जो निक्कलन को तैयार हात, उनको सभालना मुश्किल होता, क्योंकि वे इधर-उधर भाग उठते थे। जो नगे थे, उनको कपड़े पहनाए जाते तो वे फाड़कर अपने तन से अलग कर देते। कोई गालियाँ बक रहा है, काई गा रहा है। आपस में लड़ भगड़ रहे हैं और रो रहे हैं, विलख रहे हैं। बान पड़ी आराज मुनाई नहीं देती थी। पागल स्त्रियों का शारंगुन अलग था, और सर्दी इतने कड़ाके की थी कि दात बज रहे थे।

अधिकतर पागल इस अदला-बदली के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि उनकी समझ में नहीं आता था कि उन्हें अपनी जगह से उखाड़कर कहाँ फेंका जा रहा है। थोड़े से वे, जो कुछ सोच समझ सकते थे, पाकिस्तान जिंदा-बाद और 'पाकिस्तान मुर्दावाद' के नारे लगा रहे थे। दो तीन बार भगड़ा हाते होते बच्चा, क्योंकि कुछ एक मुसलमानों और सिखा का ये नारे सुनकर तँश आ गया था।

जब विशनमिह की बारी आइ और जब उसे दूसरी ओर भेजन के सम्बन्ध में अधिकारी लिखत पढ़त करने लगे तो उसने पूछा, टोवा टेक्सिह कहा है—पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ?

सम्बन्धित अधिकारी सुनकर हँसा और बोला, 'पाकिस्तान में।'

यह सुनकर विशनमिह उछलकर एक तरफ हटा और दौड़कर अपने दोप भाँधियों के पास पहुँच गया। पाकिस्तानी सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया। और दूसरी तरफ से जान लगे लेकिन उसने चलने से इनकार कर दिया 'टावा टेक्सिह यहाँ है और वह जोर-जोर से चिल्लान लगा, 'ओ पड़ दी गिडगिड दी, एँवम दी वेध्याना दी, मूग दी दाल आव टोवा टेक्सिह एण्ड पाकिस्तान !'

उसे बहुत समझाया गया, 'दखो, टोवा टेक्सिह अब हिन्दुस्तान में चला गया है अगर नहीं गया है तो उस तुरन्त ही वहाँ भेज दिया जाएगा, लेकिन वह न माना। जब उसे जबरदस्ती दूसरी ओर ले जान की कोशिशें की गईं तो वह बीच में एक स्थान पर इस प्रकार अपनी सूजी हुई टांगों पर खड़ा हो गया, जैसे अब कोई तावत उसे वहाँ से नहीं हिला सकेगी।

आदमी चूँकि अहानिवाक था, इसलिए उसके साथ जबरदस्ती नहीं

मम्मी

उमका नाम मिसेज स्टेला जैक्सन था, मगर सब उस मम्मी कहते थे। दसियात कद की अघेड़ उम्र की स्त्री थी। उसका पति जैक्सन प्रथम महायुद्ध में मारा गया था। उसकी पेंशन स्टला का लगभग दस वष स मिल रही थी।

वह पूना में बस आई, जब स कहा थी, इसके बारे में मुझे कुछ मालूम नहीं। दरअसल मैं उसके बारे में कुछ जानने की कभी काशिश ही नहीं की। वह इतनी दिलचस्प स्त्री थी कि उससे मिलकर सिवाय उसके व्यक्तित्व के और किसी चीज स दिलचस्पी नहीं रहती थी। उसमें कौन सम्बोधित है, यह जानने की आवश्यकता ही महसूस न होती थी, क्योंकि वह पूना के जर्न-जर्न से परिचित थी। हो सकता है कि यह एक हृदय तप प्रतिशयोक्ति हो, लेकिन मेरे लिए पूना वही पूना है। उसके वही जर्न, उसके तमाम जर्न हैं, जिसे साथ मेरी कुछ यादें जुड़ी हुई हैं—और मम्मी का विविध व्यक्तित्व उनमें स हर एक में विद्यमान है।

उससे मेरी पहली मुलाकात पूना में ही हुई। मैं बहुत ही सुस्त किस्म का आदमी हूँ। वो घुमक्कड़ों की बड़ी बड़ी उममें मेरे दिन में भीजूद हैं और अगर आप मेरी बातें मुनें तो आपको लगगा कि मैं कचनजड़ा या हिमानय की इसी तरह की किसी आय चोटी को सर करने के लिए निकल जान वाला हूँ। ऐसा हा सकता हूँ, लेकिन इससे भी अधिक सम्भावना इस बात की है कि वह चाटी सर करके मैं वही का ही रहूँ।

सुदा जाने किन वरसा से बम्बई में था। आप इसमें अदाजा लगा सकते हैं कि जब मैं पूना गया तो बीबी मेरे साथ थी। एक लटका होकर उमका मरे करीब करीब चार वरस हो गए थे। इस बीच मैं ठहरिए, मैं हिमाव लगा लूँ। आप यह समझ लीजिए कि आठ वरस स बम्बई में था, लेकिन उस बीच में मुझे बहा का विक्टोरिया गाडन और म्यूजियम देखने की भी फुरसत नहीं मिली थी। यह तो केवल सयोग की बात थी कि मैं एक-

मैंने चड्डे को काफी समय के बाद देखा था। वह मेरा बेतकल्लुफ दोस्त था। 'ओए मण्टो के घोड़े।' के जवाब में मैंने भी कुछ इसी किस्म का नारा लगाया होता, लेकिन उस स्त्री को उसके साथ देखकर मेरी बेतकल्लुफी भिरिया भिरिया हो गई।

मैं अपना तागा रकवा लिया। चड्डे ने भी अपने कोचवान को ठहरने के लिए कहा। फिर उसने उस स्त्री से अंग्रेजी में कहा, 'मम्मी, जस्ट ए मिनट।'।

तागे से कदकर वह मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए चिल्लाया, 'तुम। तुम यहाँ कैसे आए?' फिर अपना बटा हुआ हाथ बड़ी बेतकल्लुफी से मेरी पुस्तकल्लुफ बीबी से मिलाते हुए कहा, 'भाभीजान, आपने कमाल कर दिया। इस गुलमुहम्मद की आखिर आप खींचकर यहाँ ले ही आईं।'।

मैंने उससे पूछा, 'तुम जा कहा रह हो?'

चड्डे ने ऊँचे स्वर में कहा, 'एक काम से जा रहा हूँ—तुम ऐसा करो सीधे 'वह एकदम पलटकर मेरे तागे वाले से मुखातिब हुआ, 'देखो, साहब को हमारे घर ले जाओ, बिराया बिराया मत लेना इनसे।' उधर से तुरन्त ही निपटकर उसने निश्चित सा होकर मुझसे कहा, 'तुम जाओ, नीकर वहाँ होगा, बाकी तुम देख लेना।'।

और वह फुदककर अपने तागे में उस बूढ़ी मेम के साथ जा बैठा जिसको उसने मम्मी कहा था। इससे मुझे एक प्रकार का सतोष हुआ था, बल्कि यो कहिए कि जो बोझ एकदम उन दोनों को साथ-साथ देखकर मेरे सीन पर आ पड़ा था, काफी हद तक हल्का हो गया था।

उसका तागा चल पड़ा। मैं अपने तागे वाले से कुछ न कहा। तीन या चार फर्लांग चलकर वह एक डाक बगने की तरह की इमारत के पास रुका और नीचे उतरकर बोला, 'चलिए साहब'।

मैंने पूछा, 'कहाँ?'

उसने जवाब दिया, 'चड्डा साहब का मकान यही है।'।

'ओह।' मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि से अपनी बीबी की ओर देखा। उसके तबरा ने मुझे बताया कि वह चड्डे के मकान में रहने के हक में

दम पूना जाने के लिए तयार हो गया। जिस फिल्म कम्पनी में नौकर था, उसके मालिका से एक मामूली सी बात पर मनमुटाव हो गया और मैं सोचा कि यह कटुता दूर करने के लिए पूना हा आऊ। वह भी इसलिए कि वह पास था और मेरे कुछ मित्र वहां रहत थे।

मुझे प्रभातनगर जाना था, जहां मेरा फिल्मी का एक पुराना साथी रहता था। स्टेशन से बाहर निक्कलन पर मालूम हुआ कि वह जगह काफी दूर है, लेकिन तब तक हम तागा ले चुके थे।

सुस्त रगतार से चलन वाली चीजों से मेरी तबीयत बहुत खराब होती है, लेकिन मैं अपने दिल की रजिग को दूर करने के लिए यहाँ आया था, इसलिए मुझे प्रभातनगर जान की बहुत जल्दी थी। तागा बहुत ही बाहियात किस्म का था, अलीगढ़ के इक्का से भी ज्यादा बाहियात जिनम हर समय मिरने का खतरा बना रहता है। घोड़ा आम चलता है, और सवारिया पीछे। एक दी गद से अटे बाजारो और सड़की को पार करत करत मेरी तबीयत खराब गई। मैं अपनी बीबी से मशविरा किया और पूछा कि ऐसी हालत में क्या करना चाहिए। उसने कहा कि धूप तज है। मैंने जी और हागे देखे हैं, वे भी इसी तरह के हैं। अगर इस छोड़ दिया तो पैदल चलना होगा जी जाहिर है कि इस सवारी से ज्यादा तकलीफदेह है। बात ठीक थी। धूप सचमुच बहुत तज थी। घोड़ा एक पलंग भाग बढा होगा कि पास से वैसे ही बाहियात किस्म का तागा गुजरा। मैंने सरसरी तौर पर उधर देखा तभी एकदम कोई चिल्लाया, ओए मण्टी के घाटे।

मैं चौंक पड़ा। चडढा था, एक घिसी हुई मेम के साथ। दोनों साथ साथ जुड़कर बैठे थे। मेरी पहली प्रतिक्रिया बड़ी दुःखद थी कि चडढे की सौंदर्यप्रियता कहा गई जी ऐसी लगामों के साथ बँठा है। उम्र का ठीक अर्द्धाज तो मैं उस समय नहीं किया था मगर उस स्त्री की भुरिया पाउडर और रुज की तहा में से भी माफ दिखाई देती थी। इतना गान मेकअप था कि दबन से आँखा को कष्ट होता था।

1 बूढ़ा पारा सात लगाम—महावारा।

मैंन चड्डे को काफी समय के बाद देखा था। वह मेरा बेतकल्लुफ दोस्त था। 'ओए मण्टो के घोडे।' के जवाब में मैंने भी कुछ इसी किस्म का नारा लगाया होता, लेकिन उस स्त्री को उसके साथ देखकर मेरी बेतकल्लुफी भिरिया भिरिया ही गई।

मैंन अपना तागा रुकवा लिया। चड्डे ने भी अपने कोचवान को ठहरने के लिए कहा। फिर उसने उस स्त्री से अंग्रेजी में कहा, 'मम्मी, जस्ट ए मिनट।'।

तागे से बूढ़कर वह मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए चिल्लाया, 'तुम। तुम यहाँ कैसे आए?' फिर अपना बड़ा हुआ हाथ बड़ी बेतकल्लुफी से मेरी पुरतकल्लुफ बीबी से मिलाते हुए कहा, 'भाभीजान, आपन कमाल कर दिया। इस गुलमुहम्मद को आखिर आप खीचकर यहाँ ले ही आई।'।

मैंने उससे पूछा, 'तुम जा कहा रहे हो?'

चड्डे ने ऊँचे स्वर में कहा, 'एक काम से जा रहा हूँ—तुम ऐसा करो सीधे 'वह एकदम पलटकर मेरे तागे वाले से मुखातिब हुआ, 'देखो, साहब की हमारे घर ले जाओ, किराया विरामा मत लेना इनसे।' उधर से तुरन्त ही निपटकर उसने निश्चित सा होकर मुझसे कहा, 'तुम जाओ, नौकर बहा होगा, बाकी तुम देख लेना।'।

और वह फुदककर अपने तागे में उस बूढ़ी मेंम के साथ जा बैठा, जिसको उसने मम्मी कहा था। इससे मुझे एक प्रकार का सतोष हुआ था, बल्कि या कहिए कि जो थोड़ा एकदम उन दोनों को साथ साथ देखकर मेरे सीने पर आ पड़ा था, काफी हद तक हल्का हो गया था।

उसका तागा चल पड़ा। मैंने अपने तागे वाले से कुछ न कहा। तीन या चार पलंग चलकर वह एक डाक बगले की तरह की इमारत के पास रुका और नीचे उतरकर बोला, 'चलिए साहब'।

मैंने पूछा, 'कहाँ?'

उसने जवाब दिया, 'चड्डा साहब का मकान यही है।'।

'ओह।' मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि से अपनी बीबी की ओर देखा। उसके तवरो ने मुझे बताया कि वह चड्डे के मकान में रहने के हक में

नहीं थी। गच पूछिए तो वह पूना भ्रान के ही हव म नहीं थी। उसकी यकीन था कि मुभवा वहा पीने पिलाने वाले दास्त मिल जाएगे। मन सताप दूर करन का वहाना पहले से ही मौजूद है, इसलिए दिन रात उडेगी। मैं तांगे स उतर गया। छोटा सा अटवी बेस था, वह मैं उठाया और अपनी बीबी म बहा 'चलो'।

वह गायद मेर तेयरा स भाप गई थी कि हर हालत मे उस मेरा फेमला मानना होगा, इसलिए उसन कोई हील टूज्जत न की और चुपचाप मेरे साथ चल पडी।

बहुत मामूनी विस्म का मकान था। ऐसा मालूम होता था कि मिलिट्री वालो ने टेम्परेरी तौर पर एक छोटा सा बगला बनाया था। कुछ दिन उसे इस्तेमाल किया और फिर छोड़कर चलत बने। चून और बीच का काम बड़ा कच्चा था। जगह जगह से पलस्तर छलडा हुआ था और घर के भीतर का भाग बेसा ही था, जसाकि एक लापरवाह कुआर का हो सकता है जो फिल्मी का हीरो हो और ऐसी कम्पनी म नौकर हो, जहा महीन की तनरवाह हर तीसरे महीन मिलती हो और वह भी कई किस्ता म।

मुझे इस बात का पूरा एहसास था कि वह स्त्री, जो बीबी हो, ऐस गदे वातावरण म निश्चय ही परेशानी और घुटन महसूस करेगी। लेकिन मैं सोचा था कि चडडा आ जाए तो उसके साथ ही प्रभात नगर चलेंगे। वहा जो मेरा फिल्मा का पुराना माथी रहता था, उसकी बीबी और बाल-बच्चा भी थे। वहा के वातावरण म मेरी बीबी जैस तस दो तीन दिन काट सकती थी।

नौकर भी अजीब बेफिया आदमी था। जब हम उस घर मे पहुचे तो सब दरवाजे खुले थे और वह मौजूद नहीं था। जब वह आया तो उसने हमारी मौजूदगी की और कोई ध्यान न दिया, जैस हम बरसा से वही बैठे थे और इसी तरह बैठे रहन का इरादा किए हुए थे।

जब वह कमरे म प्रवेश कर हमे देखे बिना पास से गुजर गया तो मैंने समझा कि कोई मामूली एक्टर है, जो चडडा के साथ रहता है, लेकिन जब मैंने उससे नौकर के बारे म पूछनाछ की तो मालूम हुआ कि

वही हजरत चड्ढा साहब के चहुते नौकर थे ।

मुझे और मेरी बीबी दोनों को प्यास लग रही थी । उससे पानी लाने को कहा तो वह गिलास ढूढ़ने लगा । बड़ी देर के बाद उसने एक टूटा हुआ जग अलमारो के नीचे से निकाला और बडबडाया, 'रात एक दर्जन गिलास साहब ने मगवाए थे, मालूम नहीं किधर गए ।'

मैंने उसके हाथ में पकड़े हुए जग को और इशारा किया, 'क्या आप इसमें तेल लेने जा रहे हैं ?'

'तेल लेने जाना' बम्बई का एक खास मुहावरा है । मेरी बीबी इसका मतलब न समझी, मगर हस पड़ी । नौकर बीखला गया, 'नहीं साहब मैं तलाश कर रहा था कि गिलास कहाँ है ।'

मेरी बीबी ने उसको पानी लाने से मना कर दिया । उसने वह टूटा हुआ जग वापस अलमारी के नीचे इस तरह से रखा कि जैसे वही उसकी जगह थी, अगर उसे वही और रख दिया तो सारी व्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाएगी । इसके बाद वह या कमरे से बाहर निकला, जैसे उसे मालूम था कि हमारे मुँह में कितने दात हैं ।

मैं पलंग पर बैठा था जो शायद चड्ढा का था । इससे कुछ दूर हटकर दो आगमकुर्सीया थी । उनमें से एक पर मेरी बीबी बैठी पहलू बदल रही थी । काफी देर तक हम दोनों खामोश रह । इतने में चड्ढा आ गया । वह अकेला था । उसको इस बात का बिल्कुल एहसास नहीं था कि हम उसके मेहमान हैं और इस लिहाज से उसे हमारी खातिरदारी करनी चाहिए । कमरे में दाखिल होते ही उसने मुझसे कहा 'बेट इज बेट । तो तुम आ गए ओल्ड ब्राय ! चलो, जरा स्टूडियो तक हो आए । तुम साथ होगे तो एडवाम मिलने में आसानी हो जाएगी आज शाम को । मेरी बीबी पर उसकी नजर पड़ी तो वह रुक गया और बिल-सिलाकर हसने लगा । 'भाभीजान, वही आपने इस मौलवी को नहीं बना दिया ?' फिर और जोर से हसा, 'मौलवियों की ऐसी तैसी ! उठो मण्टो, भाभीजान यहाँ बैठतो हैं, हम अभी आ जाएंगे ।'

मेरी बीबी जल-भुनकर पहुँचे कोयला थी तो अब बिल्कुल राख हो गई थी । मैं उठा और चड्ढा के साथ हो लिया । मुझे मालूम था कि थोड़ी

देर तक क्रोधित होकर वह सो जाएगी। अतएव वही हुआ। स्टूडियो पास ही था। अफरा नफरी में मेहताजी के सिर चढ़कर चढ़ा न दो सौ रुपये वसूल कर लिए और पौन घण्टे में जब हम वापस आए तो देखा कि वह बड़े मजे से आरामकुर्सी पर सो रही थी। हमने उस परेशान करना उचित न समझा और दूसरे कमरे में चले गए, जो कबाडखाने से मिलता जुलता था। इसमें जो चीजें थी, वे अजीब तरीके से टूटी हुई थी, जो सब मिलकर एक पूणता का दृश्य प्रस्तुत कर रही थी।

हर चीज पर गद जमी थी और उस जमी हुई गद में भी एक प्रकार का अपनापन था, जैसे उसकी मौजूदगी उस कमरे में जरूरी हो। चढ़ा न तुरत ही अपने नोकर को दूढ़ निकाला और उसे सौ रुपये का नोट देकर कहा 'चीन के शहजादे। दो बोतलें थंड क्लास रम की ले आओ मेरा मतलब है, 'थ्री एक्स रम की और आधा दर्जन गिलास।'।

मुझे बाद में मालूम हुआ कि उसका नोकर सिर्फ चीन का ही नहीं, दुनिया के हर बड़े देश का शहजादा था। चढ़े की जवान पर जिस देश का नाम आ जाता, वह उसीका शहजादा बन जाता था। उस समय का चीन का शहजादा सौ का नोट उगलियो से खडखडाता चला गया।

चढ़ा न टूटे हुए स्ट्रिंगा वाले पलग पर बैठकर अपने होठ श्री एक्स रम के स्वागत में चटखारते हुए कहा, 'वेट इज वेट—प्राप्टर थ्राल, तुम इधर आ ही निकले।' फिर एकदम चिंतित होकर बोला 'यार भाभी का क्या होगा? वह तो घबरा जाएगी।'।

चढ़ा बिना बीबी के था, मगर उसको दूसरा की बीविया का बहुत खयाल रहता था। वह उनका इतना सम्मान करता था, मानो सारी उम्र कुंवारा रहना चाहता था। वह वहां बरता था, 'यह होनता भाव है, जिसन मुझे अब तक इस नेमत से महरूम रखा है। जब शादी का सवाल आता है तो फौरन तैयार हो जाता हू लेकिन बाद में यह साबकर कि मैं बीबी के काबित नहीं हू सारी तैयारी 'नाल्ड स्टोरेज' में ढाल देता हू।

रम बहुत जल्दी आ गई, गिलास भी। चढ़ा ने छ मगवाए थे और चीन का शहजादा तीन लाया था, बाकी तीन रास्त में टूट गए थे। चढ़े

न उनकी कोई परवाह न की और भगवान की घायवाद दिया कि बोतल सलामत रही। एक बोतल जल्दी जल्दी खोलकर उसने बोरे गिलासों में रम डाली और कहा, 'तुम्हारे पूना आने की खुशी में।'

हम दोनों न लम्बे लम्बे घूट भरे और गिलास खाली कर दिए।

दूसरा दौर शुरू करके चड्डा उठा और कमरे में देखकर आया कि मेरी बीबी अभी तक सी रही है। उसकी बहुत तरस आया। कहने लगा, 'मैं शोर करता हूँ, उनकी नींद खुल जाएगी—फिर ऐसा करेंगे ठहरो पहले मैं चाय मगवाता हूँ।' यह कहकर उसने रम का एक छोटा सा घूट लिया और नौकर की आवाज दी, जमीका के सहजादे।'

जमीका का सहजादा तुरंत आ गया। चड्डे ने उससे कहा, 'देखो, मम्मी से कहो, एकदम फ्रस्ट क्लास चाय तैयार करके भेज दे।'

नौकर चला गया। चड्डे ने अपना गिलास खाली पिया और क्षी-फाना पेग डालकर कहा, 'मैं इस वक्त ज्यादा नहीं पीऊंगा। पहले चार पग मुझे बहुत जज्बाती बना देते हैं। मुझे अभी की छोड़ने तुम्हारे साथ प्रभातनगर जाना है।'

घाघे घण्टे के बाद चाय आ गई। बहुत साफ बरतन थे और बड़े सलीके से ट्रे में रखे हुए थे। चड्डे ने टीबोजी उठाकर चाय की खुशबू सूधी और प्रसन्नता प्रकट करता हुआ बोला, 'मम्मी इज ए ज्यूल।' फिर उसने इथोपिया के सहजादे पर बरगना शुरू कर दिया। उसने इतना शोर मचाया कि मेरी बान बिलबिला उठे। इसके बाद उसने ट्रे उठाई और मुझसे कहा, 'आओ।'

मेरी बीबी जाग रही थी। चड्डा ने ट्रे बड़ी सफाई से टूटी हुई तिपाई पर रखी और बड़े अदब से कहा, 'हाजिर है बेगम साहबा।' मेरी बीबी को यह मजाक पसंद न आया, लेकिन चाय का सामान चूँकि साफ-सुथरा था, इसलिए उसने इनकार न किया और दो प्यालियाँ पी ली। इनसे उसकी कुछ ताजगी मिली। इसके बाद हम दोनों की ओर मुड़कर उसने रहस्यपूर्ण स्वर में कहा, 'आप अपनी चाय तो पहले ही पी चुके हैं।'

मैंने जवाब न दिया, मगर चड्डे ने झुककर बड़ी ईमानदारी दशाते हुए कहा, 'जी हाँ, यह गलती हममें हो चुकी है, लेकिन हमें यकीन था

कि आप जल्द माफ कर देंगी।'।

मेरी बीबी मुस्कराई तो वह खिलगिलाकर हसा, 'हम दोना बहुत ऊंची नस्ल के सूअर हैं, जिनपर हर हराम की चीज हलाल है। चलिए अब हम आपका मस्जिद तब छोड़ आए।'।

मेरी बीबी को फिर चडढा का यह मजाक पसन्द न आया। वास्तव में उसको चडढा ही स घणा थी या था कहिए कि उसे मेरे हर दोस्त स घृणा थी, और चडढा उनमें सबसे ज्यादा खलता था, क्योंकि कभी कभी वह बतकल्लुफी की हदें भी फाद जाता था। लेकिन चडढे को इसकी कोई परवाह नहीं थी। मेरा खयाल है कि उसने कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं था। वह ऐसी बेकार की बातों में दिमाग खच करना एक ऐसा 'इन डोर गेम' समझता था, जो लड़ो स कहीं अधिक बेमानी होती है। उसने मेरी बीबी के बिगड़े तेवरों को यही खुश खुश नज़रों से देखा और नीकर को आवाज दी, ओ कबाबिस्तान के गहजाद! एक मदद लागे लाओ—रोल्ज रायस किस्म का।

कबाबिस्तान का गहजाद चला गया और साथ ही चडढा भी। वह शायद दूसरे कमरे में गया था। एकान्त मिला तो मैंने अपनी बीबी को समझाया कि कबाब होने की कोई जरूरत नहीं। आदमी की जिन्दगी में ऐसे क्षण आ ही जाया करते हैं जिनका कभी खयाल तक नहीं आता। उनसे गुजरने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उनको गुजर जान दिया जाए। लेकिन नियमानुसार उसने मेरी इस सीख पर कोई ध्यान नहीं दिया और बगबटाती रही। इतने में कबाबिस्तान का गहजाद रोल्ज रायस किस्म का तागा लेकर आ गया और हम प्रभातनगर के लिए चल पड़े।

बहुत ही अच्छा हुआ कि मेरा फ़िल्मा का पुराना साथी घर में मौजूद नहीं था उसकी बीबी थी। चडढे ने मेरी बीबी उसके सुपुद की ओर कहा, 'खरबूजा खरबूजे की देखकर रग पकड़ता है। बीबी बीबी को देखकर रग पकड़ती है, यह हम अभी आकर देखेंगे। फिर वह मुझसे बोला, चलो मण्टो स्टूडियो में तुम्हारे दोस्त को पकड़ें।'।

चडढा कुछ ऐसी अफरा नफरी मचा दिया करता था कि दूसरा को सोचने समझने का बहुत कम मौका मिलता था। उसने मेरी बाह पकड़ा

और बाहर ल गया और मेरी बीबी साबती ही रह गई। तब मैं सवार होकर अब चढ़े न कुछ सोचने के ढग में कहा, 'यह तो हो गया, अब क्या प्रोग्राम है?' फिर खिलखिलाकर हसा, 'मम्मी ग्रंट मम्मी'।

मैं उससे पूछने ही वाला था कि यह मम्मी किस बिडीमार की ओलाद है कि चड्ड न बाता का ऐसा सिलमिला शुम्भ वग दिया कि मेरा प्रश्न बेमौत मर गया।

तागा वापस उस डाकवगलेनुमा कोठी पर पहुँचा, जिसका नाम सईदा बाटेज था, लेकिन चड़्ढा उसको 'रजीदा काटेज' कहा करता था क्योंकि उसमें रहने वाले सबके सब रजीदा रहते हैं। हालाँकि यह गलत था, जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ।

उस बाटेज में काफी आदमी रहते थे हालाँकि ऊपरी ढग से देखने में यह जगह बिल्कुल गरमाबाद मालूम होती थी। सबके सब उसी फिल्म कम्पनी के नौकर थे, जो महीन की तनखाह हर तीन महीन बाद देती थी और वह भी कई किस्ती में। एक एक करके जब वहाँ के निवासियों में मेरा परिचय हुआ तो पता चला कि सबके सब असिस्टेंट डायरेक्टर थे कोई चीफ असिस्टेंट डायरेक्टर, कोई उसका सहायक और कोई उस सहायक का सहायक। हर दूसरा किसी पहले या महायक था और अपनी निजी फिल्म कम्पनी की नींव डालने के लिए पैसा इकट्ठा कर रहा था। अपने पहनावे और हाव-भाव से हर कोई हीरो मालूम होता था। कण्ट्रोल का जमाना था, लेकिन किसीके पास राशन कार्ड नहीं था। वे चीजें भी, जो थोड़ी सी तकलीफ के बाद आसानी से कम कीमत पर मिल सकती थीं, वे लोग ब्लैक मार्केट में खरीदते थे। पिक्चर जरूर देखते थे, रेस का जमाना होता तो रेस खेलते थे, नहीं तो सट्टा। जीतते कभी कभी ही थे, लेकिन हारते हारते रोज थे।

सईदा काटेज की आबादी बहुत पनी थी। चूँकि जगह कम थी, इस लिए मोटर गैरेज भी रहने के काम में लाया जाता था। उसमें एक फैमिलो रहती थी। गीरी नाम की एक स्त्री थी, जिसका पति शायद एकरूपता तोड़ने के लिए असिस्टेंट डायरेक्टर नहीं था। वह उसी फिल्म कम्पनी में नौकर था, लेकिन मोटर ड्राइवर था। मालूम नहीं वह कब धाता था और

कब जाता था क्याकि मैं उस गरीब आत्मी को वहाँ कभी नहीं दगा। गीरी का हा छोटा-सा लडका नीचा जिगको गर्दन काटज के सना निवासी फुरमन व समय प्यार करत। गीरी, जा काफी सुन्दर थी, अपना अधिकतर समय गरीब व सुझारती थी।

काटज का सम्मानित भाग चड्डा और उगवे दो साधिया के पास था। य दोना नी एक्टर थे लेकिन हीरो नहीं थे। एक सई था, जिसका फिल्मो नाम रजीनकुमार था। चड्डा कहा करता था कि सई काटेज उसी गप्पे के नाम में प्रसिद्ध है, भयभी उसका नाम 'रजीदा काटेज' ही था। वह काफी सुन्दर और कम गा था। चड्डा कभी-कभी उस बहुतसा कहा करता था क्याकि वह हर काम बहुत धीरे धीरे करता था।

दूसरे एक्टर का नाम मातूम नहीं था, लेकिन सब उस गरीबनवाज कहत थे। वह हैदराबाद के एक साते-भीत घराने में सम्बन्ध रखता था और एक्टिंग के शौक में यहाँ चला आया था। तनखाह ढाई सौ रुपये माहवार मुकरर थी, लेकिन उसे नीकर हुए एक वरस हो गया था, और इस बीच उसने बवल एक बार ढाई सौ रुपये लब्धास के रूप में लिए थे—वह भी चड्डा के लिए जिस एक खूबसूरत पटल की अदायगी करनी थी। उट-पटाग किस्म की नापा में फिन्मी कहा किया लिखना उसका गल था, और कभी-कभी वह शायरी भी कर लिया करता था। काटज का हर आदमी उसका श्रेणी था।

गकील और अकील दो भाई थे। दोना किसी असिस्टेंट टायरेक्टर के असिस्टेंट थे और सबकी तरह अपनी पिछे कम्पनी बनाने के लिए पैस जुटाने के चक्कर में थे।

तीन बड़े यानी चड्डा, सई और गरीबनवाज शीरो का बहुत समाल रखत थे, लेकिन तीनों कभी इकट्ठे गरेज में नहीं जाते थे। हालचाल पूछने का उनका कोई समय भी निश्चित न था। तीनों जब काटज के बड़े कमरे में इकट्ठे होते तो उनमें से एक उठकर गरज में चला जाता और कुछ दूर यहाँ बैठकर गीरी से घरेलू मामला पर बातचीत करता रहता। बाकी दो अपने अपने काम में

जो असिस्टेंट किस्म

री

थे।

व भी उसको बाजार से सौदा सट्टा ला दिया, व भी लाण्डी में उसके कपड़े धुलने दे आए और व भी उसके रोते वच्चे को बहला दिया। उनमें से 'रजीदा कोई भी न था, सबके सब प्रसन्न थे। अपनी कठिन परिस्थितियों की चर्चा भी करत ती बड़े उल्लास से। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनकी जिन्दगी बड़ी दिलचस्प थी।

हम काटज के गेट में दाखिल होने जा रहे थे कि गरीबनबाज साहब बाहर आ रहे थे। चड्डे ने उनकी ओर ध्यान से देखा और अपनी जेब में हाथ डालकर नोट निकाले। बिना गिन उसने कुछ गरीबनबाज का दे दिए और कहा 'चार बोल्लें स्काच की चाहिए, कमी आप पूरी कर दीजिएगा, बेसी हो तो मुझे वापस मिल जाए।'

गरीबनबाज के हैदरावादी हाथों पर गहरी सावली मुस्कराहट आ गई। चड्डा खिलखिलाकर हँसा और मेरी ओर देखकर उसने गरीबनबाज से कहा, यह मिस्टर मण्डो है लेकिन इस तफ्तीली मुलाकात की इजाजत इस वक़्त नहीं मिल सकती। यह रम पिए है। शाम को स्काच आ जाए ती लेकिन आप जाइए।

गरीबनबाज चला गया। हम अन्दर दाखिल हुए। चड्डे ने एक जोर की जम्हाई ली और रम की बोतल उठाई, जो आधी से ज्यादा खाली थी। उसने रौशनी में उसकी मात्रा का सरसरी तौर पर अनुमान लगाया और चौकर की आवाज दी, 'कजाकिस्तान के सहजादे।' जब वह न आया तो उसने अपने गिलास में एक बड़ा पंग डालते हुए कहा 'ज्यादा पी गया हूँ कम्बरेत।'।

गितास खत्म करत हुए वह कुछ चिन्तित हो गया, 'यार, भाभी का तुम खगाहमरवाह यहाँ लाए। खुदा कसम, मुझे अपने सीन पर एक बाक़ सा महसूस ही रहा है। फिर स्वयं ही उसने अपने की धँस बधाया, 'लेकिन मेरा खयाल है कि वे बोर नहीं होगी बह।'

मैंने कहा, 'हा, वहाँ रहकर वह मेरे कल का जल्दी इरादा नहीं कर सकती।' यह कहकर मैंने अपने गिलास में रम डाली, जिसका स्वाद घुमे हुए गुड़ जैसा था।

जिस कबाडखाने में हम बैठे थे, उसमें सलाखा वाली दो खिडकिया

वनकतरे न जवाब मे कुछ कहना चाहा, लेकिन चड्डे न मेरी बाह पकड़कर कहना गुरु कर दिया, 'मण्टो—खुदा की कमम, क्या चीज है।' सुना करते थे कि एक चीज प्लेटिनम ब्लोण्ड भी होती है, मगर देखन का मौका कन मिला—बाल है, जैसा चादी के महीन-महीन तार ग्रेट खुदा की कमम मण्टो, बहुत ग्रेट मम्मी जिंदाबाद।' फिर उसने कीधित नजरा से वनकतरे की ओर देखा और कड़ककर कहा, 'वनकुतरे के बच्चे नारा क्या नहीं लगाता मम्मी जिंदाबाद।'

चड्डे और वनकतर दोनों ने मिलकर 'मम्मी जिंदाबाद।' के कई नारे लगाए। इसके बाद वनकतरे न चड्डे के सवाला का फिर जवाब देना चाहा, लेकिन उमन उस चुप करा दिया, 'छोडो यार मैं जज्बाती हो गया हूँ—इस वकत यह सोच रहा हूँ कि आम तौर पर मासूकी के बाल काले होते हैं, जिन्हें काली घटा कहा जाता रहा है मगर यहा कुछ और ही मामला हो गया है। फिर वह मुझसे मम्माधित हुआ, मण्टी, बड़ी गडबड हो गई है, उसके बाल चादी के तारों जैसा है—चादी का रंग भी नहीं कहा जा सकता—मालूम नहीं, प्लेटिनम का रंग बंसा होता है, क्या कि मैंन अभी तक यह धातु देखी नहीं कुछ अजीब-मा ही रंग है—फौलाद और चादी दोनों मिला दिए जाए'

वनकतर न दूसरा पेंग खरम करते हुए कहा, 'और उसम थोड़ी-सी धी एकम रम मिकस कर दी जाए।'

चड्डे न भिनाकर उस एक बहुत ही मोटी गाली दी। 'वकवास न कर।' फिर उमन बड़ी दयनीय नजरो से मेरी ओर देखा। 'यार मैं मधमुच जज्बाती हो गया हूँ हा वह रंग खुदा की कमम, लाजवाब रंग है वह तुमन दया है वह, जो मछनिया के पट पर होता है नहीं-नहीं, हर जगह होता है—पोमप्रेट मछली उसक के क्या होते हैं? नहीं नहीं, मापा के खनह नह खपरे हा, खपरे बस, उनका रंग खपरे यह सब मुझे एक हिदुस्तोडे न बताया था इतनी सूबसूरत चीज और एमा भाडा नाम पजाबी मे हम इह जान कहते हैं। इस सब म विनचिमाहट है वहीं, बिलकुल वही, जो उसके बालों मे है। लटें नहानह सपोलिया मालूम हीनी हैं, जो लोट लगा रही हो।' यह

थी, जिनसे बाहर का खाली खाली सा भाग नजर आता था। इधर स किसी ने चड्डे का नाम लेकर जोर से पुकारा। मैं चौक पड़ा और देखा कि म्यूजिक डायरेक्टर वनकतरे हैं। कुछ समझ में नहीं आता था कि वह किस नस्ल का है। मंगोल है, हब्शी है, आर्य है या क्या बताया है। कभी कभी उसके किसी नखशिख को देखकर आदमी किसी परिणाम पर पहुंचन ही वाला होता था कि उसके बदले में कोई ऐसा चिह्न नजर आ जाता कि तुरंत ही नथे सिरे से विचार करना पड़ जाता। वैसे वह मराठा था, लेकिन शिवाजी की तीखी नाक के बजाय उसके चेहरे पर बड़ आश्चर्यजनक ढंग से मुड़ी हुई चपटी नाक थी जो उसके विचारानुसार उन सुरु के लिए बहुत जरूरी थी, जिनका सीधा सम्बन्ध नाक से होता है। उसने मुझे देखा तो चिल्लाया 'मण्टो—मण्टो सेठ'।

चड्डे ने उससे ज्यादा ऊंची आवाज में कहा, 'सेठ की ऐसी तंसी—चता, अदर आ'।

वह तुरंत अदर आ गया। अपनी जेब से उसने हमसे हुए रम की एक बोतल निकाली और तिपाई पर रख दी। मैं साला उधर मम्मी के पास गया। वह बोला—'तुम्हारा फरेण्ड आए ला मैं बोला—साला यह फरेण्ड कौन होन को सकता। साला मालूम न था साला मण्टो है'।

चड्डे ने वनकतरे के कहने पर एक धोल जमाई 'अब चुप कर साले तू रम ले आया बस ठीक है।' वनकतरे ने अपना सिर सहलाया और मरा खाली गिलास उठाकर अपने लिए पेग बनाया, 'मण्टो यह साला आज मिलत हो कहन लगा—आज पीन को जी चाहता है मैं एक दम बडका सोचा, क्या करूँ'।

चड्डे ने एक और घप्पा उसके सिर पर जमाया, बैठ बस तूने सब मुच ही कुछ सोचा होगा।

'सोचा नहीं ती साला यह इतनी बड़ी बाटली कहा से आया—तर वाप न दिया?' वनकतरे ने एक ही घूट में रम खत्म कर दी। चड्डे ने उसको धान मुनी घनमुनी कर दी और उसने पूछा, तू यह ता बना कि मम्मी क्या बोली?—बोली थी कि मोजिल कब आएगी? अर हा—वह प्लैटीनम स्त्रीण्ड।

वनकतरे ने जवाब म कुछ कहना चाहा लेकिन चडडे ने मेरी बाह पकटकर कहना शुरू कर दिया, 'मण्टो—खुदा की कमम, क्या चीज है। सुना करते थे कि एक चीज प्लेटीनम बरीण्ड भी होती है, मगर देखने का मौका कल मिला—बाल हैं, जैस चादी के महीन महीनतार ग्रेट खुदा की कमम मण्टो, बहुत ग्रेट मम्मी जिंदाबाद।' फिर उसने श्रोधित नजरा से वनकतर की ओर देखा और कडककर कहा, 'वनकुतरे के बच्चे नारा क्यों नहीं लगाता मम्मी जिंदाबाद।'

चडडे और वनकतरे दोनों ने मिलकर 'मम्मी जिंदाबाद।' के कई नार लगाए। इसके बाद वनकतरे ने चडडे के सवाला का फिर जवाब दना चाहा, लेकिन उसने उसे चुप करा दिया, 'छोडो यार मैं जज्वाती हो गया हूँ—इस वक्त यह सोच रहा हूँ कि आम तोर पर भासूका के बाल काले होत हैं, जिन्हें काली घटा कहा जाता रहा है मगर यहा कुछ और ही मामला हो गया है।' फिर वह मुझसे सम्बोधित हुआ, मण्टो, बडी गडबड हो गई है, उसके बाल चादी के तारों जैस हैं—चादी का रंग भी नहीं कहा जा सकता—मालूम नहीं, प्लेटीनम का रंग कैसा होता है, क्यों कि मैंन अभी तक यह घातु देखी नहीं कुछ अजीब-मा ही रंग है—फौलाद और चादी दोनों मिला दिए जाए '

वनकतर ने दूसरा पेग खत्म करते हुए कहा, 'और उसमें चाडी सी थो एक्स रम मिक्स कर दी जाए।'

चडडे ने भिन्नाकर उस एक बहुत ही मोटी गाली दी। 'बकवास न कर।' फिर उसने बडी दयनीय नजरा से मेरी ओर दखा। यार मैं सचमुच जज्वाती हो गया हूँ हा वह रंग खुदा की कमम, लाजवाब रंग है वह तुमन दखा है वह, जी मछलियों के पट पर होता है नहीं-नहा, हर जगह होता है—पोमफ्रेट मछली उसके वे क्या होत हैं? नहीं-नहीं सापा के वनह नहे खपर हा, खपरे अस, उनका रंग खपरे यह शब्द मुझे एक हिंदुस्तोडे ने बताया था इतनी खूबसूरत चीज और ऐसा भाडा नाम पंजाबी में हम इहे चाने कहते हैं। इस घाद में चिनचिनाहट है वही, बिलकुल वही, जी उसके बालों में है। लटें नहीं-नहा सपोलिया मालूम होनी हैं, जो लोट लगा रही हो।' वह

एकदम उठा। 'सपातिमी की ऐसी तसी' मैं जग्यानी हो गया हूँ।'

वनकतर न बट भोनेपा स पूछा, यह क्या होता है ?'

'मण्टीमटल चड्ड न जवाब दिया, 'लेकिन तू क्या समझा वालाजी बाजीराव और नाना फटनधीम की मोलाद ।'

वनकतर न अपना लिए एक और पग बनाया और मुझमें सरोधित होकर कहा 'यह माला चड्डा समझा है कि मैं इगलिंग नहीं समझता हूँ। मेट्रीक्यूलेट हूँ साता मरा बाप मुझमें बहुत मोहब्बत करता था उसने ।'

चड्डे न चिढ़कर कहा, 'उसने तुझे ताजसन बना दिया और तारी नाक मरोड़ दी ताकि निगाहे सुर छातानी स तेरी नाक स निकल सकें। बचपन में ही उसने तुझे घुरपद गाना सिखा दिया था और दूध पीने के लिए तू मिया की टोही में रोया करता था और पेगाव बनत बकत अझामा में, और तूने पहली बात पटदीप में की थी और तरा बाप जगत उस्ताद था बज्जू बापर के भी बान बाटता था और तू आज उमरे काल बाटता है इसलिए तरा नाम मनबुतर है।' इतना कहकर वह मरी और मुंडा, मण्टो यह माला जब भी पीता है, अपने बाप की तारीफ शुरू कर देता है। वह इससे मोहब्बत करता था तो मुझपर उसने क्या एहसान किया और उसने इस मेट्रीक्यूलेट बना दिया तो इसका यह मतलब नहीं कि मैं अपनी बी० ए० की डिग्री फाड़कर फेंक दूँ।'

वनकतर न इस बाछार पर आपत्ति प्रकट करनी चाही, मगर चड्डे न उस वही दबा दिया, 'चुप रह मैं यह चुका हूँ कि मैं सेण्टीमण्टल हो गया हूँ हा, वे रंग पोमफ्रेट मछली के नहीं नहीं साप के तट नहे खपने उस इहीका रंग मम्मी न खुदा जान अपनी बीन पर कौन सा राग बजाकर उस नागिन को बाहर निकाला है।'

वनकतरे सोचने लगा। पेटो मगाओ, मैं बजाता हूँ।

चड्डा खिलखिलाकर हमने लगा, बठ वे मेट्रीक्यूलेट के चाकुलेट ।' उसने रम की बोतल में स बची हुई रम की अपन गिलास में उडेल लिया और मुझसे कह, 'मण्टो, अगर वह प्लेटीनम क्लोण्ड न पटी तो चड्डा हिमालय पहाड़ की किसी चोटी पर धूनी रमाकर बठ जाएगा । और

उमने गिनास सालो बर दिया ।

बनबतर न अपनी लाई हुई बोटल सोलनी गुरु की ।' मण्डा, मुलगी¹
एकदम चागली है ।

मैन कहा 'देख लेंगे ।'

'आज ही आज रात मैं एक पार्टी द रहा हूँ । यह बहुत ही अच्छा हुआ
कि तुम आ गए और थी एक सौ आठ मेहताजी न तुम्हारी बगल स एड
वास द दिया नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाती आज रात आज की
रात ' चढे न बडे भाडे मुरा म गाना गुरु बर दिया, 'आज की रात
साजे दद न छेड ।'

बचारा बनबतर उसकी दग ज्यादाती पर एक बार फिर आपत्ति
करन ही वाला था कि तभी गरीबनबाज और रजोतकुमार आ गए ।
दोना के पाम स्वाच की दो दो बीनस थी । वे उहनि मेज पर रग दी ।

रजोतकुमार स मेर अच्छे-भाते सम्बन्ध थे, लेकिन बेनबलतुफी नहीं
थी, इसलिए हम दोनों न थोड़ी सी 'आप बच आएं ?' 'आज ही आया
ऐसी रम्मी बातें की और गिलाग टकराकर बीन लग गए ।

चढदा बाकई बहुत जज्बानी हो गया था । हर बात म उस प्लेटीनम
क्लीण्ड का जिन्न ले आता था । रजोतकुमार दूसरी बोटल का चौपाई
हिम्सा चढा गया था । गरीबनबाज ने स्वाच के तीन पग पिए थे । नशे
के मामले मे उन सबकी हालत अब तब एक जैसी थी । मैं चूकि ज्यादा
पीन था आदी हूँ, इसलिए म ज्यादा था त्यो घँटा था । उनकी बातचीत स
मैंने आदाजा लगाया कि वे चारा उस नई लडकी पर बहुत घुरी तरह मर
मिट थे, जो मम्मी ने कहीं स पदा की थी । इस अमूल्य मोती का नाम
फिलिस था । पून म कोई ह्मर डेमिंग सलून था, जहा वह नौकरी करती
थी । उसके साथ ग्राम तीर पर एक हिजडा का लडका रग करता था ।
लडकी की उम्र चौन्ह-पाँचह वर्ष के करीब थी । गरीबनबाज ती यहा नक
उमपर गम था कि वह हैदराबाद म अपन हिम्म की जायदाद बेचकर भी
उसके दाव पर नगान के लिए तैयार था । चढटे के पास तुम्प का बेवल

एक पत्ता था, अपनी सुंदरता। बनकर का विचार था कि उसकी पेटी सुन वह परी जरूर गोशे में उतर आएगी, और रजीनकुमार जोर जबर दस्तो की हो कारगर समझता था। लेकिन सब अंत में यही सोचते थे कि लेविए, मम्मी किसपर कृपा करती है। इसने मालूम हाता था कि उन प्लेटोनम ग्रीण्ड फिलिस को वह स्त्री, जिसे मैं चड्डे के साथ ताग में देखा था, किमोके भी हवाले कर सकती थी।

फिलिम की बातें करने करते चड्डे ने अचानक अपनी घड़ी देखी और मुझसे कहा, 'जहनुम में जाए यह छोकरी, चलो यार भाभी वहां बवाब हो रही होगी—लेकिन मुसीबत यह है कि मैं वहां भी वहीं सेण्टी-मेण्टल न हो जाऊँ खैर, तुम मुझे सभाल लेना।' अपने गिलाम की कुछ आखिरी वूँछें अपने कण्ठ में टपकाकर उसने नौकर को आवाज दी, 'ममिया के मुल्क मिस्र के शहजाद।'।

ममियो के मुल्क मिस्र का शहजाद इस तरह आखें मलता वहां आया, जैसे उसे सदियों के बाद खादकर बाहर निकाला गया हो। चड्डे ने उसके मुह पर रम के छोटे माने और कहा 'दो अदन तागे लाओ जा मिस्र के रथ मालूम हा।

तागे आ गए। हम सब उनपर लदकर प्रभातनगर के लिए चल पड़े। मेरा पुराना फिल्मा का साथी हरीश घर पर मौजूद था। इतनी दूर स्थित स्थान पर रहने के बावजूद उसने मेरी बीबी की खातिरदारी में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। चड्डे ने आख के इशारे से उसे सारा मामला समझा दिया था। अतएव वह बहुत हितकर साबित हुआ। मेरी बीबी ने अपना व्यक्त नहीं किया। उसका समय वहां कुछ अच्छा ही बीता था। हरीश ने जो स्त्रियों की प्रकृति का अच्छा ज्ञानकार था बड़ी सजेदार बातें की और अंत में मेरी बीबी से प्रार्थना की कि वह उसकी शूटिंग देखने चले जो उन दिन होने वाली थी। मेरी बीबी ने पूछा, 'कोई गाना फिल्मा रह है आप ?

हरीश ने जवाब दिया 'जी नहीं, वह बल का प्रोग्राम है—मेरा खयाल है, आप कन चलिएगा।

हरीश की बीबी शूटिंग देख देखकर और दिखा दिसाकर तब आई

हुई थी। उसने तुरन्त मेरी बीबी म कहा, 'हा फल ठीक रहगा।' फिर सबकी छार देखकर बोली, 'आज इह मफर की धवान भी है।'

हम सत्रने स'तोप की साम ली। हरीश न फिर कुछ दर तक मजेदार बातें की, श्रत म मुझम कहा, 'चलो यार, तुम चली मेर साथ,' फिर मरे तीन भायिया की ओर दखा, 'इनको छोडी सेठ साहब तुम्हारी कहानी सुनना चाहते हैं।'

मैन बीबी की ओर दखा और हरीश से कहा, 'इमने इजाजत ले ली।'

मेरी भोली भाती बीबी जाल मे फग चुकी थी। उसने हरीश स कहा, 'मैन बम्बई म चलत वकन इतम कहा भी था कि अपना डाकूमेण्ट केम साथ ले चलिग लेकिन इ होन कहा, कीई जम्हरत नही। अब ये कहानी क्या सुनाएग ?'

हरीश न कहा, 'जवानी सुना दगा।' फिर उसन मरी छार या दखा, जेम कह रहा हा कि जल्नी हा कहा।

मैन धीमे से कहा 'हा, ऐसा हो सकता है।'

चड्डे न उय ढामे मे अतिम टच दिया, 'तो भई हम चलते हैं। और थ तीना सलाम-नमस्त करके चले गए। थोडी दर के बाद मैं और हरीश निकल। प्रभातनगर के बाहर नाम सड्डे ये। चड्डे न हम दखा और जोर का नारा लगाया, 'राजा हरीशच द्र की जय।'

शाम को हमारी महफिज जमी मम्मी के घर।

यह भी एक काटेज थी—क्षवल मूरत और वनावट मे मईद काटज जमी, मगर बहुत साफ सुधरी जिमने मम्मी के सलीक का पता चलता था। फर्नीचर मामूली था लेकिन जा चीज जहा थी सजी हुई थी। मैंन सोचा था कि मम्मी का घर कोई वेद्यालय होगा, लेकिन उस घर की किसी चीज म भी नजरा को ऐसा न देह नही होता था। वह वैसा ही शरीफाना था, जसा कि एक मध्यम वर्ग के ईमाई का होता है। लेकिन मम्मी का उम्र के मुकाबले म वह कुछ जवान-जवान-सा दिखाई देना था। उमपर वह भवअप नही था जो मैंन मम्मी की भुरिया वाले चेहर पर दखा था। जब मम्मी डाइग हम मे आई तो मैंन सोचा कि इद गिद की

जितनी चीजें हैं, वे आज की नहीं बहुत चपों की है कबल मम्मी आम निकलकर ठूँही हो गई है और वे बसी की बसी पड़ी रही हैं—उनकी जो उम्र थी, वह वही की वही रही है लेकिन जब मैं उसके गहर और सोख मेकअप की ओर दखा तो मेरे दिल में जाने क्या, यह इच्छा पदा हुई कि वह भी अपने डेढ़ गिद के चातावरण की तरह पूरी तरह जवान बन जाए ।

चड्डे ने उससे मेरा परिचय कराया जो बहुत सक्षिप्त था और फिर समझ में ही उसने मुझमें मम्मी के बारे में यह कहा, 'यह मम्मी है नी ग्रेट मम्मी ।'

मम्मी अपनी प्रशंसा सुनकर मुस्करा दी और मरी तरफ दलकर उसने चड्डे से अंग्रेजी में कहा, तुमने जो चाय मगवाई थी वह बहुत जल्दी में बनी थी वह नायद इहे पमद न आइ हो । फिर उसने मेरी ओर मुड़कर कहा मिस्टर मण्टो मैं बहुत शर्मिदा हूँ । असल में सारा दुसूर तुम्हारे दोस्त चड्डे का है, जो मेरा बेहद बिगडा हुआ लडका है ।'

मैंने उचित शब्दों में चाय की प्रशंसा की और उसको धन्यवाद दिया । मम्मी ने मुझे बेकार की तारीफ करने के लिए कहा और फिर चड्डे से बोली, रात का खाना तैयार है यह मैंने इसलिए किया कि तुम एन वक्त के वक्त मेरे सिर पर सवार हो जाओगे ।'

चड्डे ने मम्मी को गल से लगा लिया, यूँ आर ए ज्यूल मम्मी । यह खाना अब हम खाएंगे ।'

मम्मी ने चौंकर पूछा, 'क्या ? नहीं हरमिज नहीं ।' चड्डे ने उसे बताया मिस्टर मण्टो को हम प्रभातनगर छोड़ आए हैं ।

मम्मी चिल्लाई 'खुदा तुम्हें मारत कर यह तुमने क्या किया ।' चड्डा खिलखिलाकर हुआ, 'आज पार्टी जो होने वाली थी ।

वह तो मैंने मिस्टर मण्टो को दम्पति ही अपने दिल में कमिल कर दी थी । मम्मी ने अपना मिग्रेट सुनगाया ।

चड्डे का दिल डूब गया । खुदा अब तुम्हें मारत कर और यह सब प्लान हमने इस पार्टी के लिए बनाया था । वह कुर्सी पर रज्जीन सा होकर बैठ गया और कमर के बगल बगल में सम्मोघन कर कहन लगा 'लो,

सार नयन मलियामेट हो गए स्टेडीनम ब्लोण्ड ग्रीधे साप के न ह-
नह गपरा जैसे रंग वाली । एकदम उठकर उसने मम्मी को बाहो से
पकड़ लिया, कमिन की थी—आन दिल मे बसिल की थी ना लो,
उम पर माद (मही का चिह्न) बना देता हू ।' और उसने मम्मी के दिल
की जगह पर उगली से बहुत बड़ा माद बना दिया और ऊंची आवाज में
पुकारा 'हुर्र !'

मम्मी सम्बोधित लोका को सूचना भेज चुकी थी कि पार्टी बसिल
हो चुकी है । लेकिन मैं महसूस किया कि वह चड्डे का दिल तोड़ना
नहीं चाहती थी । इसलिए उमन बड़े लाडल उसका गाल थपथपाए और
कहा 'तुम किफ न करो, मैं अभी इंतजाम करती हू ।'

यह इंतजाम करने बाहर चली गई । चड्डे ने खुशी का एव और
नारा लगाया और वनकतर से कहा, 'जनरल वनकतर, जामो, हुडक्वा-
टर से सारी तोपें ले आओ ।'

वनकतर ने सैल्यूट किया और आना पालन के लिए चला गया ।
मईद काटज बिन्दुल पाम थी । दस मिनट के अन्दर अन्दर वह दोतलें
नेकर वापस आ गया । उसके साथ चड्डे का नौकर था । चड्डे ने उसको
देगा तो उनका स्वागत किया, 'आओ, आओ, मेरे फोहकाफ के शहजाद
वह वह माद के खपरा जस रंग के वालो वालो छोकरी आ रही है
तुम भी किस्मत आजमाई कर लेना ।'

रजीतकुमार और गरीबनवाज को चड्डे का इस प्रकार का निमंत्रण
अच्छा न लगा । दोनों ने मुझे कहा कि यह चड्डे की बहुत बेहूदगी है ।
इस बेहूदगी की उहान बहुत महसूस किया था । चड्डा नियमानुसार
अपनी हाकता रहा और वे चुपचाप एक कोने में बड़े धीरे धीरे रम पीकर
एक दूसरे से अपने सुख दुख की बातें करत रहे ।

मैं मम्मी के सम्बन्ध से सोचता रहा । झाड़गूम में गरीबनवाज,
रजीतकुमार और चड्डा बड़े थे । ऐसा लगता था कि ये छोटे छोटे बच्चे
बैठे हैं और इनकी मा बाहर खिलौने लेन गई है । य सब इंतजार में हैं ।
चड्डा सतुष्ट है कि सबसे अच्छा खिलौना उस मिलेगा, इसलिए कि वह
अपनी मा का चहेता है । बाकी दो का दुख बूझिए जैसा था, इसलिए

वे एक दूसरे के हितपी बन गए थे। शायद इस वातावरण में दुध मानूम होती थी और वह प्लटीनम ब्लोण्ड उसकी कल्पना दिमाग में एक छोटी सी गुड़िया के रूप में आती थी। हर वातावरण का अपना एक विशेष संगीत होता है। उस समय जो संगीत मेरे दिल के काना तक पहुंच रहा था, उसमें कोई सुर उत्तेजक नहीं था। हर चीज मा और उसकी वच्चा के परस्पर सम्बन्धों की तरह स्पष्ट थी।

मैंने जब उसकी ताल में चड्डे के साथ देखा था तो मुझे धक्का मालगा था। मुझे अफसोस हुआ कि मेरे दिल में उन दोनों के सम्बन्ध में बुरे विचार पैदा हुए, लेकिन यह चीज मुझे बार-बार सता रही थी कि वह इतना गहरा मेकअप क्यों करती है जो उसकी भुरिया की तालीन है। उस समता का अपमान है, जो उसके त्वि में घडढा गरीबनबाज और बनक्तर के लिए भाजूद है और खुदा जान और किस त्रिमक लिए

बातों बातों में मैंने चड्डे से पूछा, यार, यह तो बताओ कि तुम्हारी मम्मी इतना शाल मेकअप क्यों करती है ?

'इसलिए कि दुनिया हर शौख चीज को पसन्द करती है—तुम्हारे और मेरे जैसे उल्लू इस दुनिया में बहुत कम बसत है, जो मड्डिम सुर और मड्डिम रंग पसन्द करते हैं। जो जवानी को बचपन के रूप में नहीं देखना चाहते और और जो बुढ़ापे पर जवानी की टीपटाप पसन्द नहीं करते

हम जो मुद की कलाकार कहते हैं उसूके पटठे हैं मैं तुम्हें एक दिल-चस्प घटना सुनाता हूँ बैसाखी का मेला था तुम्हारे भ्रमतसरम राम बाग के उस बाजार में, जहा टकश्या (बश्याए) रहती थी—जाट गुजर रहे थे एक त दुम्स्त जवान न त्वालिम दूध और मक्खन पर पले जवान ने, जिसकी नई जूती उसकी लाठी पर बाजीगरी कर रही थी ऊपर एक कोटे की आर देखा, जहा एक टकइ की तल में भीगी हुई जुत्फ उसके माथे पर बडे बदसूरत ढग में जमी हुई थी। उसने अपने साथी की पमलिया में टहोका दकर कहा 'ओए लहनामिया देख, ओए ऊपर बख, असी ते पिण्ड विच मभाई'। अर्थात् शब्द चढढा न न जान क्या गोल कर दिया। हालांकि वह किसी प्रकार की क्षिप्तता का कायल नहीं था।

फिर वह मिलसिलाकर हमने लगा और मेरे गिलाम में रम डालकर बोला, 'उस जाट के लिए वह तुझसे ही उम बका कोटवाफ की परी थी और उसके गांव की सुंदर और स्वस्थ मुठियारें बेडोल भर्से हम सब चुगद हैं दमियाने दर्जे के इसलिए कि इस दुनिया में कोई चीज अव्वल दर्जे की नहीं तीमर दर्जे की है या दमियान दर्जे की लेकिन फिलिस खामुलखास दर्जे की चीज है वह माफ के सपरी ।'

वनकतरे ने अपना गिलास उठाकर चड्डे के सिर पर उडेल दिया । 'सपरे सपरे तुम्हारा भेजा फिर गया है ।'

चड्डे ने माथे पर में रम की टपकती बूंदें चाटनी शुरू कर दी और वनकतरे से कहा, 'ले अब सुना तरा बाप साला तुमसे कितनी मोहब्बत करता था मेरा दिमाग अब काफी ठण्डा हो गया है ।'

वनकतरे बहुत गम्भीर होकर मुझसे बोला, 'बाई गाड वह मुझसे बहुत मोहब्बत करता था मैं पिपटीन ईअर का था कि उमन भरी शादी बना दी ।'

चड्डा जोर से हसा, 'तुम्हें काटून बना दिया उस साले ने भगवान उस म्बग में भी बेसरियल की पटी द कि कहा भी उस बजा बजाकर वह तुम्हारी शादी के लिए कोई खूबसूरत हूर ढूँढ़ता रहे । और तुम्हारी खूबसूरत बीबी की ऐसी तंसी इस बबत फिलिस की बात करो उससे ज्यादा और कोई खूबसूरत नहीं हो सकता ।' चड्डे ने गरीबनवाज और रजीतकुमार की ओर देखा, जो कोने में बैठे फिलिस के सौंदर्य पर अपनी राय एक दूसरे पर प्रकट करने वाले थे । 'गन पाउडर प्लाट के बानियो सुन ली, तुम्हारी कोई साजिश कामयाब नहीं हो सकती—मैलान चड्डे के हाथ में रहेगा क्या बेलज के शाहजाद ?'

बेलज का शाहजादा रम की खाली होती हुई बोतल की तरफ हमरत भरी नजरों से देख रहा था । चड्डे ने बहकहा लगाया और उसकी आमा गिलास भरकर दे दिया । 'गरीबनवाज और रजीतकुमार एक दूसरे से फिलिस के बारे में घुल मिलकर बातें तो कर रहे थे, लेकिन अपने दिमाग में उसकी प्राप्त करने के लिए प्रोग्राम अलग अलग बना रहे थे । यह उनकी बातचीत के ढंग में प्रकट होता था ।'

डाइगलूम में अब बिजनी के बल्ब जल रहे थे, क्याकि शाम गहरी हो चली थी। चड्डा मुझे इम्बई की फ़िल्म डण्डस्ट्री के ताजे समाचार सुना रहा था कि बाहर बरामद मम्मी की तेज आवाज सुनाई दी। चड्डे ने नारा लगाया और बाहर चला गया। गरीबनवाज ने रजीकुतमार की ओर अथपूण नजरों से देखा। फिर रोना दरवाजे की ओर देखने लगे।

मम्मी चहकती हुई अंदर दाखिल हुई। उसके साथ चार पांच ऐंसा-इण्डियन लडकियां थीं। विभिन्न प्रकार के 'नख' शिख और कद काठ की—पोलो, डोली, किटी एलिमा और थैलिमा और वह हिजडा सा लडका

उसे सिंसी कहकर पुकारता था। फिलिस सबसे पीछे आई और वह भी एक बाह प्लेटिनम ब्लौण्ड की पतली कमर गरीबनवाज और रजीतकुमार की प्रतिक्रिया नोट के पीछे लगी थी। मैंने गह दिखावटी विजयी हुरकत पम-द न आई थी।

लडकियों के भीतर आते ही शोर मच गया। एकदम इतनी अग्रेजी बरसी कि बाकतारे मंटी वयूल्शन परीक्षा में कई बार फेल हुआ। लेकिन उसने कोई परवाह न की और बराबर बोलता रहा। जब किसीने उसका नोटिस न लिया तो वह एलिमा की बड़ी बहन यैनिमा के साथ एक साफे पर अलग बैठ गया और पूछन लगा कि 'उमने हिंदुस्तानी डांस के और कितने नये तोड़ सीखे हैं—वह इधर 'धा नी ता कत ता यई थई' की बन, टू, थ्री बना बनाकर उतरी तोड़े बना रहा था उधर चड्डा बाकी लडकियों के नगे नगे मजाक सुना रहा था, जो उस किया के झुरमुट में अग्रणी थान थे। मम्मी सोड़े की बोललें और खाने-हजारा की मरया में जब रही थी। रजीत कुमार सिगरेट के कश लगाकर पीने का सामान मगवा रही थी। गरीबनवाज और दख रहा था और गरीबनवाज मम्मी से टकटकी बाधे फिलिस के रूपये कम हा तो वह उमसे ले ले।

स्वाच खुली और पहला दौर शुरू हुआ। फिलिस को जब शामिल होने के लिए कहा गया तो उसने अपने प्लेटिनमी बालों का एक हल्का-सा झटका देकर मना कर दिया कि वह ह्विस्की नहीं पिया करती।

सबसे मिनत-खुशा मना की, लेकिन वह न मानी। चड्डे ने इसपर दुब प्रकट किया तो मम्मी ने एक हलका-सा पैंग तैयार करके गिलास

को फिलिम के होठा से खगाते हुए बड़े दुतार से कहा, 'बहादुर लडकी बनो और पी जाओ।'।

फिलिम इनकार न कर सकी। चडढा खुश हो गया और उसने इसी खुशी में बीम पच्चीस और नगे मजाक सुना दिए। सब मजे लेते रह। मैं सोचा, आदमी न नग्नता से तग आकर वस्त्र पहनने गुरु किए होंगे। यही कारण है कि अब वह वस्त्रों से डकताकर कभी कभी नग्नता की आर दौड़ने लगता है। शिष्टता की प्रतिश्रिया निम्सदेह अशिष्टता है। इस पनायन का एक दिलचस्प पहलू भी है। आदमी को इससे एक निरंतर एकरसता के दृष्ट से कुछ क्षणों के लिए मुक्ति मिल जाती है।

मैं नग्नता की ओर देखा, जो उन जवान लडकियों में घुलमिलकर चडढे के नगे नग मजाक सुनकर हँस रही थी और कहकह लगा रही थी। उसके चेहरे पर बड़ी बाहिपात मेकअप था। उसके नीचे उसकी भुरिया साफ नजर आ रही थी। मगर वह भी उल्लसित थी। मैंने सोचा, आखिर लोग क्या पलायन को बुरा समझते हैं। वह पलायन, जो सेरी आखा के सामने था। उसका बाह्य रूप यद्यपि सुन्दर न था, लेकिन भीतर बहुत सुंदर था। उसपर कोई बनाव शृंगार न था। कोई गाजा, कोई उबटना नहीं था। पाली थी, वह एक कोन में रजितकुमार के साथ खड़ी अपने नये फ्राक के बारे में बातचीत कर रही थी और उसे बता रही थी कि सिर्फ अपनी होशियारी से उसने बड़े सस्ते दामों पर उम्दा चीज तैयार करा ली है। दो टुकड़े थे, जो विलकुल वैकार मालूम पड़ते थे, मगर अब वे एक सुंदर पोशाक में बदल गए थे। और रजितकुमार बड़ी गम्भीरता के साथ उसकी दो नये ड्रेस बनवा देने का वायदा कर रहा था, हालांकि उसे फिन्म कम्पनी से इतने रुपये इकट्ठे मिलने की कोई आशा न थी। डाली थी, वह गरीबनबाज से कुछ कज मामने की कोशिश कर रही थी और उसको विश्वास दिला रही थी कि दपतर से तनएमाह मिलने पर वह यह कज जरूर अदा कर देगी। गरीबनबाज को पूरी तरह मालूम था कि वह यह रुपया नियमानुसार कभी वापस नहीं देगी, लेकिन वह उसके वायदे पर एतबार किए जा रहा था। यत्निमा बनकतरे से ताण्डव नाच के बड़े मुश्किल तोड़े सीखने की कोशिश कर रही थी। वाकतरे को मालूम था

कि सारी उम्र उसके पैर कभी उसके भाव अदा नहीं कर सकेंगे, लेकिन वह उसको बताए जा रहा था। यतिमा भी अच्छी तरह जानती थी कि वह बेकार अपना और बनवतरे का समय बरबाद कर रही है। मगर वह बड़ी लगन और तमयता से पाठ याद कर रही थी। एलिमा और बिंदी दोनों पिए जा रही थी और घापस में किसी ऐसे आदमी की बातचीत कर रही थी, जिसने पिछली रेस में खुदा जाने कब का बदला लेने के लिए गलत टिप दी थी। और चड्ढा फिलिस के खपरे ऐसे रंग के बालों को पिघले हुए सोने के रंग की स्काच में मिला मिलाकर पी रहा था। फिलिस का हिजड़ा-सा दोस्त बार-बार जेब से कधी निकालता था और अपने बाल सवारता था। मम्मी कभी इससे बात करती थी, कभी उससे, कभी सोडा खुलवाती, कभी टूटे हुए गितास के टुकड़े उठवाती। उसकी नजर सबपर थी, उस बिल्ली की तरह जा देखने में तो अपनी आँखें बंद किए सुन्ना रही होती है, लेकिन उसको मालूम होता है कि उसके पांचो बच्चे कहा कहा है और क्या-क्या शरारत कर रहे हैं।

इम दिलचस्प चित्र में कौन मा रंग, कौन सी रेखा गलत थी? मम्मी का वह नडकीला और शाल मेकअप भी ऐसा मालूम होता था कि उस चित्र का एक आवश्यक अंग है।

भालिव कहता है

कंदे ह्यात ओ बंदे-गम¹ अस्त में दोनों एक हैं,

मौत से पहले आदमी गम से निजात² पाए क्यों?

कंदे ह्यात और बंदे-गम जब वास्तव में एक ही हैं तो यह क्या जरूरी है कि आदमी मौत से पहले थोड़ी देर के लिए निजात हासिल करने की कोशिश न करे? इस निजात के लिए कौन ममराज का इन्तजार करे? क्यों आदमी थोड़े-से क्षणों के लिए आत्मप्रवचना के दिलचस्प खेल में भाग न ले? ¹

मम्मी हर किसीकी प्रशंसा करना जानती थी। उनके सीन में ऐसा दिल था, जिसमें उन सबके लिए भ्रमता था। मैंने सोचा, शायद इसलिए

उसने अपने चेहरे पर रग मल लिया है कि लोगो को उसकी वास्तविकता का ज्ञान न हो उसने शायद इतनी शारीरिक शक्ति नहीं थी कि वह हर किसीकी मा बन सकती और इसीलिए उसने अपनी ममता और स्नेह के लिए कुछ व्यक्ति चुन लिए थे और शेष सारी दुनिया को छोड़ दिया था।

मम्मी को मालूम नहीं था कि चड्ढा एक तगड़ा पेग फिलिस को पिला चुका था। चोरी छिप नहीं, सबके सामने, मगर मम्मी उस समय बावर्चीखान में पोटैटो चिप्स तल रही थी अब फिलिस नशे में थी, और जिस तरह उसके पालिंग किए हुए फौलाद के रंग के बाल धीरे धीरे लहराते थे, उसी तरह वह स्वयं भी लहरा रही थी।

रात के बारह बज चुके थे। वनकतर यलिमा को तोड़े सिखा सिखाकर थक जान के बाद अब बता रहा था कि उसका बाप माला उससे बहुत मोहब्बत करता था। बचपन ही में उसने उसकी शादी बना दी थी। उसकी बाइफ बहुत व्यूटीफुल है और गरीबनवाज डोली को कज देकर भूल भी चुका था। रजौतकुमार पोली की अपने साथ वही बाहर ले गया था। एलिमा और किटी दोनों दुनिया-भर की बातें करके अब थक गई थी और आराम करना चाहती थी—तिपाई के इर्द गिद फिलिस, उसका हिजडा-सा दोस्त और मम्मी बैठे थे। चड्ढा अब जग्वाती नहीं था। फिलिस उसकी बगल में बंठी थी, जिसने पहली बार शराब का सुख चखा था—उसको प्राप्त करने का सवन्प उसकी आखा में साफ मौजूद था। मम्मी इससे गाफिल नहीं थी।

थोड़ी देर बाद फिलिस का हिजडा-सा दोस्त उठकर सोफे पर जा लेटा और अपने बाला में कपी करते-करते सो गया। गरीबनवाज और डोली उठकर वही चले गए। एलिमा और किटी ने आपस में किसी मारपेट के बारे में बातें करत हुए मम्मी से विदा ली और चली गई वनकतरे ने आखिरी बार अपनी बीबी की खूबसूरती की प्रशंसा की और फिलिस की ओर ललचाई नजरो से देखा, फिर यलिमा की ओर जो उसके पास बंठी थी, और फिर वह उसकी बाह पकड़कर चाद दिखाने के लिए बाहर मैदान में ले गया।

एकदम जाने क्या हुआ कि चड्ढे और मम्मी में गरमागरम बातें शुरू

हो गई। चड्डे की जगान लटखड़ा रही थी। वह एक कुपुन की तरह मम्मी से बदजगानी बरन लगा। फिलिम न एक हृद तक बीच बचाव करने की कोशिश की, लेकिन चट्टा हवा के घोड़े पर सवार था। वह फिलिम को अपने साथ सईदा बाटेज में ले जाना चाहता था और मम्मी इसके खिलाफ थी। यह उसको बहुत देर तक समझानी रही कि वह इस इरादे में बाज आए लेकिन वह इसके लिए तयार न होता था और बार-बार मम्मी से कहा रहा था, 'तुम पागल हो गई हो बूढ़ी बलाला फिलिम मेरी है पूछ लो इससे।'

मम्मी ने बहुत देर तक उसकी गालिया सुनी, अंत में बड़े समझाने वाल ढंग से उससे कहा, 'चड्डा, माई सन तुम क्यों नहीं ममझते शी इज यंग शी इज बेरी थग।'।

उसकी आवाज में कपकपाहट थी, एक प्रायना थी एक ताटना थी, एक बड़ी भयानक तसवीर थी, लेकिन चड्डा बिल्कुल न समझा। उस समय उसमें सम्मुख केवल फिलिम और उसकी प्राप्ति थी। मैं फिलिम की ओर दखा और पहली बार इस बात ने महसूस किया कि वह सचमुच बहुत छोटी उम्र की थी, मुश्किल से पंद्रह वर्ष की। उसका सफेद चेहरा, चांदी रंग के बादली में घिरा हुआ उपा की पहला बूद की तरह कपकपा रहा था।

चड्डा ने उस बात से पकड़कर अपनी ओर खींचा और फिलिम के हीरो के ढंग से अपनी छानी से लगाकर भीच लिया। मम्मी एकदम लान हाकर चिल्लाई, 'चड्डा छोड़ दी फौर गाड सेक छोड़ दो इस।'।

जब चड्डे ने अपने चौड़े सीने से फिलिम को अलग न किया तो मम्मी ने उसके मुंह पर एक जोरदार चाटा मारा और चिल्लाई, गट आउट गेट आउट।'।

चड्डा भीचका रह गया। फिलिम को अलग करने उसने धक्का दिया और मम्मी की ओर भाग बरसाने वाली नजरों से देखता हुआ बाहर चला गया। मैं भी उठकर बिदा ली और चड्डे के पीछे पीछे चल दिया।

सईदा बाटेज पहुंचकर मैं देखा कि वह पतलून कमीज और बूटा समेत पलंग पर आँधे मुह पड़ा था। मैं उससे कोई बात न की और दूसरे

कमरे में जाकर बड़ी मज पर सो गया।

सुबह देर से उठा। घड़ी में दस बज रहा था। चढ़ा मुबह ही मुबह उठकर बाहर चला गया था। वहाँ, यह किसीकी मालूम नहीं था, लेकिन जब मैं गुमनामने से बाहर निकल रहा था तो मैंने उसकी आवाज सुनी जो गैरेज से बाहर आ रही थी। मैं रुक गया। वह किसीसे कह रहा था, 'वह लाजबाब आरन है सुदा की कमर, बड़ी लाजबाब आरन है दुआ बगे कि उसकी उम्र को पहुँचकर तुम भी वैसी ही ग्रेट हो जाओ।'।

उसके म्बर में एक विचित्र प्रकार की कटुता थी। पता नहीं उसका रक्त उसकी अपनी ओर था या उस व्यक्ति की ओर जिससे वह सम्बोधित था। मैंने अधिक देर तक वहाँ रुके रहना ठीक न समझा और अंदर चला गया। आधे घण्टे तक मैंने उसका इंतजार किया। जब वह न आया तो मैं प्रभातनगर चला गया।

मेरी बीबी का मिजाज ठीक था—हरीश घर में नहीं था। हरीश की बीबी ने उसके बारे में पूछा तो मैंने कह दिया, 'वह अभी स्टूडियो में ही रहा है।'

पूना में काफी तकरीब हो गई थी, इसलिए मैंने हरीश की बीबी से जान की इजाजत माँगी। शिष्टाचार के नाते उसने हमें रुकना कहा, लेकिन मैं सईदा काटेज में ही फँसला करके चला था कि रात की घटना मेरी मानसिक जुगाली के लिए बहुत काफी है।

हम चल दिए। रास्ते में मम्मी से बातें हुईं। जी कुछ दुआ था मैं बीबी को सब कुछ बता दिया। उनका कहना था कि फिनिश उसकी कोई रिश्तेदार होगी या वह उस किसी अच्छी असामी की पेंग करना चाहती होगी तभी उमा चड्डे से लड़ाई की मैं चुप रहा। न समयन किया, न विरोध।

कई दिन गुजरने पर चड्डे का पत्र आया, जिसमें उस रात की घटना का सरसरी मांजिर था और उसने अपने बारे में यह कहा था, मैं उस दिन जानवर बन गया था—बानन हो मुभपर।'

तीन महीने बाद मुझे एक जरूरी काम में पूना जाना पड़ा। सीधा सईदा काटेज पहुँचा। चढ़ा मीजूद नहीं था। गरीबनवाज से उस समय

मुलाकात हुई, जब वह गरेज से निकलकर शीरी के नन्हू बच्चे की प्यार कर रहा था। वह बड़े तपाक से मिला। थोड़ी दूर बाद रजीतकुमार आ गया, कछुए की चाल चलता और झुपचाप बैठ गया। मैं अगर उससे कुछ पूछता था तो वह बड़े मक्षोप में उत्तर दे देता था। उससे बातों-बातों में मालूम हुआ कि चड्डा उस रात के बाद मम्मी के पास नहीं गया और न कभी वह महा आई है। फिलिस को उसने दूसरे दिन ही अपने मा बाप के पास भिजवा दिया था। वह उस हिजडा जैम लडक के साथ घर से भागकर आई हुई थी। रजीतकुमार का विश्वास था कि अगर वह कुछ दिन और पूना में रहती तो वह जरूर उस ले उड़ता। गरीबनवाज का ऐसा कोई दावा नहीं था। केवल इतना प्रसन्न था कि वह चली गई।

चड्डे के बारे में यह पता चला कि दो-तीन दिन में उसकी तबीयत ठीक नहीं है, बुझार रहता है लेकिन वह किसी डाक्टर में राय नहीं लेता—सारा दिन इधर उधर घूमता रहता है। गरीबनवाज ने जब मुझे ये बातें बताना शुरू की तो रजीतकुमार उठकर चला गया। मैंने मसामा वाली कोठरी में स देखा उमका रंग गैरेज की ओर था।

मैं गरीबनवाज में गैरेज वाली शीरी के सम्बन्ध से कुछ पूछनाछ करने के बाद में सोच ही रहा था कि बनकतरे बड़ा प्याराया हुआ बच्चा में दाखिल हुआ। उससे मालूम हुआ कि चड्डे को तज कुमार था। वह उस ताग में बड़ा सा रहा था कि वह रास्त में बेगो हो गया मैं और गरीबनवाज बाहर दीडे। ताग वाला महोग चड्डे को ममाल हुए था। हम सबने मिलकर उस उठाया और कमरे में पट्टाकर बिस्तर पर लिटा दिया। मैं उसने माथ पर हाथ रखकर देखा, सचमुच बहुत तज बुझार था। एक मी छ डिग्री से कम न होगा।

मैंने गरीबनवाज से कहा, 'पीर डाक्टर को बुलाना चाहिए।' उमन बाकनर में मगविरा किया और अभी घाना है बहुर बाहर पता गया। जब बापग आया तो उमन साथ मम्मी थी, जी हाँ रही थी। धन्नेर पुसत ही उमन चड्डे की ओर देता और सगमग धीगरर पूछा, 'क्या हुआ मर बटे की ?'

बनकतरे ने जब उस मसामा कि चड्डा कई दिन में बीमार था तो

मम्मी ने बड़े दुख और क्रोध से कहा, 'तुम कैसे लोग हो—मुझे खबर क्यों न की?' फिर उसने गरीबनवाज, मुझे और बनवतरे को विभिन्न हिदायतें दी—एक को चड्डे के पाव सहलाने की, दूसरे को बरफ लाने की और तीसरे को पखा करने की। चड्डे की हालत देखकर उसकी अपनी हालत बिगड़ गई थी, लेकिन उसने धैर्य से काम लिया और डाक्टर बुलाने चली गई।

मालूम नहीं, रजीतकुमार को गैरेज में कैसे पता चला। वह मम्मी के जान के तुरंत बाद घबराया हुआ आया। उसके पूछने पर बनवतरे ने चड्डे के बेहोश होने की घटना का वर्णन कर दिया और यह भी बता दिया कि मम्मी डाक्टर के पास गई है। यह सुनकर रजीतकुमार की बेचैनी किसी हद तक दूर हो गई।

मैंने देखा कि वहीनों बहुत सतुष्ट थे, मानो चड्डे के स्वास्थ्य की सारी जिम्मेदारी मम्मी ने अपने ऊपर ले ली हो।

उसकी हिदायत के अनुसार चड्डे के पाव सहलाए जा रहे थे सिर पर बरफ की पट्टियां रखी जा रही थी। मम्मी जब डाक्टर लेकर आईं तो वह कुछ-कुछ हीन में आ चुका था। डाक्टर ने मुआयने में काफी देर लगाई। उसके चेहरे से मालूम होता था कि चड्डे की जिंदगी खतर में है। मुआयने के बाद डाक्टर ने मम्मी को इशारा किया और वे कमरे में बाहर चले गए—मैंने सलाखा वाली खिड़की में से देखा, गरज के टाट का परदा हिल रहा था।

थोड़ी देर बाद मम्मी आईं। गरीबनवाज, बनवतरे और रजीतकुमार से उसने एक एक करके कहा कि घबराने की कोई बात नहीं। चड्डा अब आगे खोलकर सुन रहा था। मम्मी को उसने आश्चर्य की दृष्टि से नहीं देखा था, लेकिन वह उलझन सी जरूर महसूस कर रहा था। कुछ क्षणों के बाद जब वह समझ गया कि मम्मी क्यों और कैसे आई है, तो उसने मम्मी का हाथ अपने हाथ में ले लिया और दबाकर कहा, 'मम्मी, यू आर ग्रेट।'।

मम्मी उसके पास पलंग पर बैठ गई। वह ममता की साक्षात् मूर्ति थी। उसने चड्डे के तपते हुए माथे पर हाथ फेरकर मुस्कराते हुए केवल

इतना कहा, 'मेरे बेटे मेरे गरीब बेटे !

चड्डे की आंखों में आसू आ गए, लेकिन तुरंत ही उसने उन्हें सोखने की कोशिश की और कहा, 'नहीं, तुम्हारा बेटा अग्नय दजों का स्काउट है जाओ, अपने मन पति का पिस्तौल लाओ और उनकी छाती पर दाग दो।'

मम्मी ने चड्डे के गाल पर बीर से तमाचा मारा, 'बकार की बातें न करो। फिर वह खुस्त चालाक नस की तरह उठी और हम सबको और मुड़कर कहा 'लडकों, चड्डा बीमार है और इसको हास्पिटल ले जाना है—समझे ?'

सब समझ गए। गरीबनबाज ने सुग्ग टैंकसी का बगोबस्त कर लिया। चड्डे की उठाकर उसमें डाला गया। वह बहुत बड़ता रहा कि ऐसी कौन सी आफत आ गई है जो मुझे अस्पताल में भुपुद किया जा रहा है, लेकिन मम्मी यही कहती रही कि बात कुछ भी नहीं, अस्पताल में जरा आराम रहता है। चड्डा बहुत जिद्दी था, लेकिन इस समय वह मम्मी की किसी बात से इंकार नहीं कर सकता था।

चड्डा अस्पताल में दाखिल हो गया। मम्मी ने अकेले में मुझे बताया कि मजबूत खतर्नाक है—यानी प्लेग। यह सुनकर मेरे होठ लड गए। स्वयं मम्मी बहुत परेशान थी लेकिन उसकी आंखों की यह बला टल जाओगी और चड्डा बहुत जल्द स्वस्थ हो जाएगा।

इलाज होता रहा। प्राइवेट अस्पताल था। डाक्टरों ने चड्डे का इलाज बहुत ध्यान से किया लेकिन कई दिनों बीदगिया पड़ा हो गई। उसकी त्वचा जगह-जगह से फटने लगी और पुकार बगना गया। अंत में डाक्टरों ने यह राय दी कि उन बम्बई ले जाया जाए, लेकिन मम्मी ने मानी। उसने चड्डे को उम्मी हालत में उठाया और अपने घर ले गई।

मैं ज्यादा दिन पूना में नहीं रुक सकता था। वापस बम्बई आया तो मैंने टेलीफोन के जरिये कई बार उनकी हालत मालूम किया। मेरा खयाल था कि वह किसी प्रकार भी जीवित न बच सकेगा, लेकिन मुझे मालूम हुआ कि धीरे धीरे उनकी हालत मजबूत रही है। एक मुकदम के सिलसिले में मुझे लाहौर जाना पड़ा। वहां से पंद्रह दिन के बाद लौटा तो मेरी

बीबी न चढ़ते का एक पत्र दिया, जिसमें वेबल यह लिखा था—‘महामाया मम्मी ने अपना पपूत को मोन के गुरु से बचा लिया है।’

उन घोड़े में गल्ला में बहुत कुछ था। नायनामा का एक पूरा समुद्र था। मैं अपनी बीबी से इसका जित्त बड़ी भावुकता से बिया ता उगा प्रभावित होकर बेबल इतना बग, ‘एमी श्रीरते प्रकार तिमनगुजार होती है।’

मैं चढ़ते की दो-तीन पत्र लिखे, जिसका जवाब न आया। बाद में मानूम हुआ कि मम्मी ने उगा। उनकायु बदलन में निग अपनी एक सहनी के पास लानावाला निजवा दिया था। ‘रुद्धा मुक्तिन में यहा एक गप्ताह रहा श्रीर उबनाकर चला आया। जिन तिन वह पूरा पट्टा, मयोग में मैं बही था। जग के जबरदस्त हमले में कारण यह बहुत कमजोर हो गया था, लेकिन उगा गुनगगाठा करने वाला इन्भाव आज भी यहा ही था। अपनी बीमारी का जित्त उमन इस प्रकार बिया, जैम आदमी माइकिल की मापूली घटना का करता है। यह जबकि यह बग गया था, अपनी गतरनाक बीमारी के बारे में विस्तार में बान करना बग जेवार समझना था।

सईदा काटज में चढ़ते की अनुपस्थिति के दिना में छोट छोटे परिवर्तन हुए थे। प्ररील श्रीर गयील कहा श्रीर उठ गए थे क्योंकि उन्हें अपनी निजी फिल्म कंपनी कायम करने के लिए सईदा काटज का काना बरण अनुकुल नहीं लगता था। उनकी जगह एक बंगाली म्यूजिक डायरेक्टर आ गया था। उसका नाम मेन था। उसके साथ लाहौर से भागा हुआ एक लड़का राममिह रहता था। सईदा काटेज में रहने वाल सबके साथ लोग उसमें काम लेते थे। तबीयत का बहुत गरीब श्रीर सबका सबक था। ‘रुद्धे के पास वह उम समय आया था जब वह मम्मी के बहन पर लोनावाना जा रहा था। उमन गरीबनवाज श्रीर रजीतगुमार से यह दिया था कि उम सईदा काटज में रग लिया जाए। रुन के कमरे में चूकि जगत् वाली थी, इसलिए उमन बही अपना डेरा जमा लिया था।

रजीतगुमार की कंपनी की नई फिल्म में बतौर हीरो चुन लिया गया था और उसके साथ बाना बिया गया था कि अगर फिल्म सफल हुई तो

उमका दूसरी किन्म डायरेक्ट करने का मौका दिया जाएगा। चड्ढा अपनी नौ बरम की पेण्डिंग सनराहा में से डेढ़ हजार रुपया एक साथ प्राप्त करने में सफल हो गया था, इसलिए उमन रजनीकुमार में कहा था, 'मेरी जान, अगर कुछ वसूल करना चाहते हो तो मेरी तरह प्लग में मुबतला हो जाओ। हीरा और डायरेक्टर बनने से तो मेरा ख्याल है, यह वही भ्रष्टा है।'।

गरीबनबाज कुछ ही दिन पहले हैदराबाद होकर आया था, इसलिए सईदा काटज किंचित सम्पन्न थी। मैं दखा, गरेज के बाहर अलगनी पर ऐसी कमीजें और सलवारें सटक रही थी, जिनका कपड़ा अच्छा और कीमती था। शीरी के बच्चे के पास नया खिलौना था।

मुझ पूना में पंद्रह दिन रहना पड़ा। मेरा पुराना फिल्मा का साथी अब नई फिल्म की हीरोइन की मुहब्बत में मुबतला होने की कोशिश कर रहा था, लेकिन डरता था क्योंकि यह हीरोइन पंजाबी थी और उसका पति बड़ी बड़ी मूछा वाला हट्टा कट्टा मुश्किल था। चड्ढे ने सत्ताह दी थी, कुछ परवाह न करो, उस सत्ते की जिस पंजाबी एक्ट्रेस का पति बड़ी बड़ी मूछा वाला पहलवान हो, वह इश्क के मदान में जरूर चारों त्थान चित गिरा करता है। बस, इतना करो कि सो स्पय की गाली के हिसाब से मुझ दम वीम हेवी बेट किस्म की गालियां सीख लो। मैं तुम्हारी खास मुश्किलों में बहुत काम आया करूँगी।'।

हरीश एक बोटल की गाली के हिसाब से छ गालियां पंजाब के सास लहजे में याद कर चुका था लेकिन अभी तक उस अपने इश्क के रास्ते में कोई ऐसी खास मुश्किल पैदा नहीं आई थी जो वह उनके प्रभाव की परख सकता।

मम्मी के घर नियमानुसार महफिलें जमती थी। पोली डाली, निट्टी, एलिमा, थैलिमा आदि सब आती थी। बनबतरे पूववत थैलिमा की क्यकली और ताण्डव नाच की ता थई और था नी ना कत बन टू थी बना बनाकर बताता था और वह उसे नीखन की पूरी कोशिश करती थी। गरीबनबाज उसी तरह बज दे रहा था, और रजनीकुमार, जिसका अब कम्पनी की नई फिल्म में हीरो का चांस मिल रहा था, उनमें से किसी

भी एक की बाहर खुली हवा में ले जाता था—चड़ढे के नगे नगे मजाक सुनकर उसी तरह बहकह लगते थे—एक सिर्फ वह नहीं थी वह, जिसके बालों के रंग के लिए मही उपमा ढूँढने में चड़ढे ने काफी समय लगाया था। लेकिन इन महफिलों में चड़ढे ने काफी समय लगाया था। लेकिन इन महफिलों में चड़ढे की निगाह उसे दूँटती नहीं थी। फिर भी कभी कभी जब चड़ढे की नजरें मम्मी की नजरा से टकराकर झुक जाती थी तो मैं अनुभव करता था कि उसको अपनी उस रात की दीवानगी का अफसोस है। ऐसा अफसोस, जिसकी याद से उसकी तबलीफ होती है। अतएव चौथे पेंग के बाद किसी समय इस तरह का एक वाक्य उसकी जवान में निकल जाता, 'चड़ढा, यू आर ए डेम्ड यूट'।

यह सुनकर मम्मी होठों ही हाठों में मुस्करा देती, जैसे वह उम मुस्कराहट की मिठास में लपेट-लपटकर बह रही हो—'डाण्ट टाक' राट'।

वनवतरे से पहले ही की तरह उसकी चाल चलती थी। मरी में आकर जब भी वह अपने बाप की प्रशंसा में या अपनी बीबी की खूबसूरती के सम्यग्ध में कुछ कहन लगना ती वह उसकी यात बहुत बड़े गण्डास से काट डालता। वह बेचारा चुप हो जाता और अपना मट्रीक्पूलेशन का सर्टिफिकेट तह करके जेब में डाल लेता।

मम्मी यही मम्मी थी। पोली की मम्मी, डोली की मम्मी, चड़ढे की मम्मी, रजौतकुमार की मम्मी। सांढे की बीनलो, खान पीन की चीजा और महफिल जमान के दूसरे साजो-सामान के प्रबन्ध में वह बसी हो स्नेहपूर्ण दिलचस्पी से हिस्सा लेती थी। उसके चेहरे का मेकअप वैसा ही बाहियात होता था। उसके कपडे उसी तरह भडकीले थे। सुर्खी की तहा से उसकी झुरिया उसी तरह भावती थी, लेकिन अब मुझ में पवित्र दिखाई देती थी। इतनी पवित्र कि पेंग के कीडे उन तक नहीं पहुँच सकते थे। डरकर, सिमटकर वे भाग गए थे चड़ढे के शरीर से भी निकल भागे थे, क्योंकि उसपर उन झुरियों की छत्रच्छाया थी—उन पवित्र झुरियों की, जो हर समय बहुत ही बाहियात रंगों में लियडी रहती थी।

वनवतरे की खूबसूरत बीबी का जब गमपात हुआ था ती मम्मी की ही तत्कालीन सहायता से उसकी जान बची थी। यैलिमा जब हिंदुस्तानी

नाच मीमने के शौन म एक मारजाडी कत्यक व हत्ये चढ़ गई और उसके सौद म एक दिन जब उस मालूम हुआ कि उसने एक सतरनार राग खरीद लिया है तो मम्मी ने उसकी बहुत डाटा था और उससे कोई सम्झन न रखन का दृढ़ संकल्प कर लिया था लेकिन फिर उसकी आवा म आसू देकर उसका दिल पमीज गया था । उसने उसी दिन गाम की अपने बेटो को सारो बात सुना दी थी और उनमें प्रायता की थी कि वह थनिमा का इनाज कराए । किटी का एक पजल (पहनी) हल करन व मिलतिल में पाच मो रुपय का इनाम मिला था तो मम्मी ने उस मजबूर किया था कि कम से कम आधे रुपये गरीजनवाज को दे द, क्योंकि उस गरीब का हाथ तंग है । उसने किटी ने कहा था, 'तुम दस समय इस द दा—बाद म लेती रहता । और मुझे उसने मेरे पन्द्रह दिन के वास में कई बार मेरी मिसज के बारे में पूछा था और बिना ब्यक्त की थी कि पहले बच्चों की मृत्यु का इनका क्या हुआ है, हमारा बच्चा क्या नहीं हुआ । रजीन-कुमार के साथ वह अधिक घुल मिलकर बात नहीं करती थी । ऐसा मानूम हीता था कि उसकी दिमावटी तबीयत उसकी अच्छी नहीं लगती थी । मेरे सामने भी एक-दो बार इसकी चर्चा कर चुकी थी । म्यूजिक टाय रेक्टर सन में वह पण करती थी । चडडा उसकी अपने साथ लाता था तो वह उससे कहती थी, ऐसे जलीन आदमी का यहां मत लाया करा । चडडा उससे पूछता तो वह बड़ी गम्भीरता से उत्तर देती, 'मुझे यह आदमी ऊपरा ऊपरा सा मालूम होता है—जबता नहीं मरी तजरा में । यह मुन कर चडडा हस देता था ।

मम्मी की महफिना की स्तहपूण गर्मी लिए मैं वापस बम्बई चला गया । इन महफिना में गाराव की मस्ती थी सबसे था लेकिन थोड़ा उल भाव नहीं था । हर चीज गभवती स्त्री के पट की तरह स्पष्ट थी । उसी तरह उभरी हुई, दखन में उसी तरह की बुद्ध और असमजस में टालने वाली लेकिन वास्तव में बड़ी सही गिष्ट और अपनी जगह पर कायम ।

दूसरे दिन सुबह के अलमारी में पण कि सईदा काटेन में बगाली म्यूजिक टायरेक्टर सन भारा गया है । उसकी हत्या करनाना कोई रामसिंह है, जिसकी आयु चौदह पन्द्रह वय के लगभग बताई जाती है ।

सेन तुरन्त पूना टेलीफोन किया, लेकिन फोन पर कोई न मिल सका।

एक हफ्ते के बाद चड्ढा का खन आया, जिसमें उस हत्याकाण्ड का पूरा विवरण था। रात को सब साफ हुए थे कि अचानक चड्ढे के पलंग पर कोई गिरा। वह हड़बड़ाकर उठा। बिजली जलाइ तो देखा, सेन है, पून म लवपथ। चड्ढा अभी अच्छी तरह अपने हाथ-पैरों सम्मालन भी न पाया था कि दरवाजे में रामसिंह दिगाई दिया। उसके हाथ में छुरी थी। तुरन्त ही गरीबवाज और रजितकुमार भी घा गए। सारी सईदा काटज जग गई। रजितकुमार और गरीबवाज ने रामसिंह को पकड़ लिया और छुरी उसके हाथ में छीन ली। चड्ढा न मन को अपने पलंग पर लिटाया और उसमें घावा के बारे में कुछ पूछन ही वाला था कि उसने आतिरी हिचकी ली और टण्डा हो गया।

रामसिंह गरीबवाज और रजितकुमार की जकड़ में था मगर वे दोनों काप रह थे। सेन मर गया तो रामसिंह ने चड्ढा से पूछा, 'भापा-जी मर गया ?'

चड्ढा ने हाँ में उत्तर दिया, ती रामसिंह ने रजितकुमार और गरीबवाज में गंहा, मुझे छोड़ दीजिए, मैं भागूंगा नहीं।'

चड्ढा की समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे। उसने तुरन्त नीतर भेजकर मम्मी को बुलवाया। मम्मी आई तो सब निश्चिन्त हो गए कि मामला सुलभ जाएगा। उसने रामसिंह को छुड़वा दिया और थोड़ी देर के बाद अपने साथ पान ले गई और उमका बयान दर्ज करा दिया। उनके बाद चड्ढा और उसके साथी कई दिन तक बड़े परेगान रहे। पुलिस की पूछताछ बयान, फिर अदालत में मुकदम की परबी। मम्मी इस बीच बहुत दोड़धूप करती रही थी। चड्ढा का विश्वास था कि रामसिंह बरी हो जाएगा और ऐसा ही हुआ। अदालत ने उसे माफ करी कर दिया। अदालत में उसका वही बयान था जो उसने थाने में दिया था। मम्मी ने उससे कहा था, 'बेटा, पबराभा नहीं, जो कुछ हुआ है, मच-सच बना दो।' और उसने मारी बातें ज्या की त्या बयान कर दी थी कि सेन ने उस प्लेबक मिंगर बना देने का लालच दिया था। स्वयं उसे भी सगीत से बहुत लगाव था और सन बड़ा अच्छा गान वाला था। वह इस चक्कर

मे आकर उसकी हैबानी इच्छाए पूरी करता रहा लेकिन उसका इससे बहुत घृणा थी। उसका दिव बार-बार उसे लानत मनामत करता था। अत मे वह इनसा तग आ गया था कि उमने सेन मे कह भी दिया था कि उमने फिर उस मजबूर किया ता वह उस जान से भार डालगा। अत एव घटना की रात को यही हुआ।

अदालत मे उसने यही बयान दिया। मम्मी मौजूद थी। आला ही आला मे वह रामसिंह को निलाया द रही थी कि घबराओ नहीं, जो सच है, कह दो, सच की हमेशा जीत होती है। इसमे कोई शक नहीं कि तुम्हार हाथो न खून किया है लेकिन एक बड़ी मनहूस चीज का, एक हैवान का, एक अमानुष का।

रामसिंह न बड़ी सादगी और बड़े मोतेपन से सारी घटनाओं का बणन किया। मजिस्ट्रेट इतना प्रभावित हुआ कि उसने रामसिंह का बरी कर दिया।

चड्डे ने कहा, 'इस झूठे जमान मे यह मच की एक अनोखी विजय है, और इसका श्रेय मेरी बूढ़ी मम्मी को है।'

चड्डा ने मुझे उस जलसे मे बुलाया था जो रामसिंह की रिहाई की खुशी में मईदा काटेज वाता न किया था लेकिन मैं व्यस्तता के कारण उममे शामिल न हो सका।

शाकील और अकील दोनों सर्दश काटेज मे वापस आ गए थ। बाहर का वातावरण भी उनकी निजी फिल्म कम्पनी की नीव डालने के लिए रास नहीं आया था।

अब वे फिर अपनी पुरानी फिल्म कम्पनी मे किसी अतिस्टेंट के अमिस्टेंट हो गए थ। उन दोनों के पास उस पूजो मे से कुछ सैकडे बाकी बचे हुए थे, जो उन्होंने निजी फिल्म कम्पनी की नीव डालने के लिए जुटाई थी। चड्डे के मनाविरे पर उन्होंने यह सब रुपया जलसे को सफल बनाने के लिए दे दिया। चड्डा ने हमसे कहा था, 'अब मैं चार पेंग पीकर दुआ करूंगा कि वह तुम्हारी निजी फिल्म कम्पनी फोरम खड़ी कर दे।'

चड्डा का कहना था कि इस जलसे से बनकतर न शराब पीकर अपनी आदत के खिलाफ अपने बाप की प्रशंसा न की और न ही अपनी

खूबसूरत बीबी का जिक्र किया। गरीबनवाज ने किटी की तत्कालीन आवश्यकता को पूरा करने के लिए दो सौ रुपये कज दिए और रजीतकुमार से उसने कहा, 'तुम इन बेचारी नडकियो को यी ही भासे न दिया करो हो सकता है कि तुम्हारी नीयत साफ ही, लेकिन लेन के मामले में इनकी नीयत इतनी साफ नहीं होती—कुछ न कुछ द दिया करो।'।

मम्मी ने उस जलमें में रामसिंह को बहुत प्यार किया और सबको मशविरा दिया कि उसे घर वापस जाने के लिए कहा जाए। अतएव वही फंसला हुआ और दूसरे दिन गरीबनवाज ने उसके टिकट का प्रबंध कर दिया। शीरी ने सफर के लिए उसको खाना पकाकर दिया। स्टेशन पर सब उसे छोड़ने गए। ट्रेन चली तो वे दर तक हाथ हिलाते रहे।

ये छोटी छोटी बातें मुझे जलसे के दस दिन बाद मालूम हुई, जब मुझे एक जरूरी काम से पूना जाना पड़ा। सईदा काटेज में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। ऐसा मालूम होता था कि वह ऐसा पड़ाव है, जिसका रंग-रूप हजारों काफिलों के ठहरने से भी नहीं बदलता। वह कुछ ऐसी जगह थी, जो अपनी रिक्तता की स्वयं ही भर लेती थी। मैं जिस दिन जहा पहुंचा शीरनी बट रही थी। शीरी के एक और लडका हुआ था। वनकतरे के हाथ में ग्लैंसो का डिब्बा था। उन दिनों यह बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता था। अपने बच्चे के लिए उसने कहीं से दी प्राप्त किए थे। उनमें से एक वह शीरी के नवजात शिशु के लिए ले आया था। चड्ढा ने घाखिरी दो लडकू उसके मुह में ठूसे और कहा, 'तू ग्लैंसो का डिब्बा ले आया चडा कमाल किया है तूने अपने साले बाप और अपनी साली बीबी की, देखना हरगिज कोई बात न करना।'।

वनकतरे ने बड़े भोलेपन के साथ कहा, 'साले, मैं अब कोई पियेला हूँ? वह तो दाहू बोला भरती है वैसे बाई गाड, मेरी बीबी बड़ी हैण्डसम है।'।

चड्ढे ने इतनी जोर का कहकहा लगाया कि वनकतरे को और कुछ कहने का अवसर न मिला। उसके बाद चड्ढा, गरीबनवाज और रजीत कुमार मेरी ओर मुड़े और उस कहानी की बातें शुरू हो गई जो मैं अपने पुराने फिल्मों के साथी के जरिये से वहां के एक प्रोड्यूसर के लिए लिख

रहा था। फिर कुछ देर शोरी के नवजात लडके का नाम रखा जाता रहा। सैंकड़ा नाम रखे गए, लेकिन चड्डे की कोई पसंद न आया। अंत में मैंने कहा कि जं मस्थान अथात् सईन काटेज के नाम पर लडके का नाम मसऊद होना चाहिए। चड्डे की पसंद नहीं थी, लेकिन अस्थायी रूप से उसने स्वीकार कर लिया।

इस बीच में मैंने अनुभव किया कि चड्डा, गरीबनवाज और रजीत कुमार तीनों को तबीयत कुछ बुझी बुझी सी थी। मैंने सोचा शायद इसका कारण पतभट्ट का मौसम हो, जब आदमी अकारण ही थकावट सी महसूस करने लगता है। शोरी का गया अच्छा भी इस स्थिति का कारण हो सकता था, लेकिन यह कोई ठोस कारण मालूम नहीं होता था। सन के काल की ट्रेजरी? मालूम नहीं, क्या कारण था लेकिन मैंने पूरी तरह महसूस किया कि वे सब उदास थे ऊपर से हसत बोलते थे, लेकिन भीतर ही भीतर घुट रहे थे।

मैं प्रभातनगर में अपने पुराने किन्मा के साथी के घर में कहानी लिखता रहा। यह वास्तव में पूरे सात दिन तक जारी रही। मुझे बार बार एगल आता था कि इस बीच में चड्डे ने कोई बाधा क्यों नहीं डाली। बनबत्तर भी बही गायन था। रजीतकुमार से मेरे कोई खास सम्बन्ध नहीं थे जो वह मरे पास इतनी दूर आता। गरीबनवाज के बारे में मैंने सोचा था कि शायद हैरावाद चला गया हो। और मेरा पुराना किन्मा का साथी अपनी नई किन्मा की हीराइन से, उसके घर में उसने बड़ी बड़ी मूछा वाले पति की मौजूदगी में, इस लडके का दंड निश्चय कर रहा था।

मैं अपनी कहानी के एक बड़े दृष्टिकोण हिस्से की पटकथा तैयार कर रहा था कि चड्डा आ टपका और कमरे में घुसत ही उसने मुझसे पूछा, 'इस बखवास का तुमने कुछ बसूल किया है?'

उसका इशारा मेरी कहानी की ओर था, जिसके पारिधमिक की दूसरी किस्त मैंने दो दिन पहले बसूल की थी। 'हां दो हजार परसा लिया है।'।

'कहा है?' यह बहुत हुए चड्डा मेरे कोट की ओर बढ़ा।

‘मेरी जेब में।’

चड्डे न मेरी जेब में हाथ डाला। सौ मी के चार नोट निकले और मुझमें कहा, ‘आज शाम को मम्मी के यहाँ पहुँच जाना—एक पार्टी है।’

मैं उस पार्टी के बारे में उससे कुछ पूछने ही वाला था कि वह चला गया। वह शिथिलता और उदासीनता, जो मैंने कुछ दिन पहले उसमें महसूस की थी, वैसे की वैसे थी। वह कुछ बचन भी था। मैंने उसके बारे में सोचना चाहा, लेकिन दिमाग तैयार न हुआ। वह कहानी के दिलचस्प हिस्से की पटकथा में दुरी तरह फसा हुआ था।

अपने पुराने फिल्मों के साथी की बीबी से अपनी बीबी की बातें करके शाम को साढ़े पाँच बजे के करीब मैं वहाँ से चलकर सात बजे सईदा काटेज पहुँचा। गैरेज के बाहर अलगनी पर गीले गीले पोतड़े लटक रहे थे और नल के पास अकील और शकील शीरी के बड़े लडके के साथ खेल रहे थे। गैरेज के टाट का परदा हटा हुआ था और शीरी उनसे शायद बातें कर रही थी। मुझे देखकर वे चुप हो गए। मैंने चड्डे के बारे में पूछा तो अकील ने कहा कि वह मम्मी के घर मिल जाएगा।

मैं वहाँ पहुँचा तो देखा, एक शोर मचा हुआ था। सब नाच रहे थे। गरीबनबाज पोलो के साथ, रजितकुमार किटी और एलिमा के साथ और बनकतरे थैलिमा के साथ। वह उसको बचावली की मुद्राएँ बता रहा था। चड्डा मम्मी को गोद में उठाए धर धर कूद रहा था। सब नशे में थे। एक तूफान मचा हुआ था। मैं अंदर पहुँचा तो भवसे पहले चड्डे ने नारा लगाया। इसके बाद देशी-विदेशी आवाजों का एक गोला-सा फटा, जिसकी गूँज देर तक बानों में सरसराती रही। मम्मी बड़े तपाक से मिली—ऐसे तपाक से जो बेतबल्लुफी की हद तक बढ़ा हुआ था। मेरा हाथ उसने अपने हाथ में लेकर कहा, ‘बिस् मी डीयर!’ लेकिन उसने स्वयं ही मेरा एक गाल चूम लिया और घसीटकर नाचने वालों के झुमट में ले गई। चड्डा ने एकदम पुकारा, ‘बंद करो—अब शराब का दौर चलेगा।’ फिर उसने नौकर को आवाज दी, ‘स्काटलैण्ड के सहजादे।’ ह्विस्की की नई बोतल लाओ! स्काटलैण्ड का सहजादा नई बोतल ले आया। नशे में धुत् था, खोलने लगा ती हाथ से गिरी और चकनाचूर हो गई। मम्मी

ने उमका डारना चाहा तो चड्डे ने रोव दिया, 'एक तो बोतल टूटी है मम्मी, जाने दो, यहा दिल टूटे हुए हैं।'

महफिन एकदम सूनी हो गई, लेकिन तुरन्त ही चड्डे ने उस उदासीनता को अपने कहवहो में छिन्न भिन्न कर दिया। 'ई बोतल आई। हर गिलास में बड़ा तगड़ा पेग छाला गया। इसके बाद चड्डे ने उखड़ा उखड़ा-सा भाषण करना शुरू किया, 'लेडीज एण्ड जेण्टलमैन आप सब जहनुम में जाए मण्टो हमारे बीच मौजूद है, जो अपने आपको बहुत बड़ा कहानीकार समझता है। मानव स्वभाव की, वह क्या कहते हैं, गहरी से गहरी गहरादया में उतर जाता है मगर मैं कहता हूँ कि चकवास है कुएँ में उतरने वाले कुएँ में उतरने वाले ' उसने इधर उधर देखा 'अफसोस है कि यहा कोई हिन्दुस्तुड नहीं, एक हैदराबादी है जो का को गा कहता है और जिससे दस बरस पीछे मुलाकात हुई तो कहेगा कि परसो आपमें मिला था—तानत ही उसके निजाम हैदराबाद पर, जिसके पास कई लाख टन सोना है, बगैडा जवाहरात हैं लेकिन एक मम्मी नहीं हा वह कुएँ में उतरने वाले मैंने क्या कहा था कि सब चकवास है? पंजाबी में जिहे टोवें कहते हैं वे गोता भगाने वाले, वे इसके मुकाबले में मानव-स्वभाव को कई दर्जे अच्छा समझते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ '

सबने जिन्दाबाद का नारा लगाया। चड्डा चिल्लाया, यह सब साजिश है—इस मण्टो की साजिश है नहीं तो मैंने हर हिटलर की तरह मुर्दाबाद के नारे का इशारा किया था तुम सब मुर्दाबाद लेकिन पहले मैं मैं ' वह जज्वाली हो गया। 'मैं जिसने उस रात उन साप के खपों ऐमे रंग वाले बाला की एक लडकी के लिए अपनी मम्मी को नाराज कर दिया था। मैं खुद को—न जाने कहा का डान जुआन समझता था लेकिन नहीं, उसको पाना कोई मुश्किल काम नहीं था। मुझे अपनी जवानी की कसम, एक ही चुम्बन में उस प्लैटीनम ब्लौण्ड के ब्वारेपन का सारा रस मैं अपने इन मोटे मोटे होठों से चूस सकता था लेकिन यह एक अनुचित काम था वह कम उम्र थी। इतनी कम उम्र, इतनी कमजोर, इतनी करेक्टरलेस इतनी ' उसने मेरी ओर एक

प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। 'बताओ मार उसे उर्दू फारसी या अरबी में क्या कहेंगे करेक्टरलेस लेडीज एण्ड जेंटलमन वह इतनी छोटी, इतनी कमजोर और इतनी मासूम थी कि उस रात पाप में शामिल होकर या तो वह सारी उम्र पछताती रहती या उसे बिलकुल भूल जाती उन थोड़े क्षणों के आनंद की याद के सहाने जीवन का सलीका उसको बिलकुल न आता मुझे इसका दुख होता—अच्छा हुआ कि मम्मी न उसी समय मेरा हुक्का पानी बंद कर दिया मैं अब अपनी बक्वास बंद करता हूँ। मने असल में एक बहुत लम्बा चौड़ा लेक्चर करने का इरादा किया था लेकिन मुझमें कुछ बोला नहीं जाता मैं एक पेग और पीता हूँ।' उसने एक पेग और पिया। लेक्चर के बीच में सब चुप थे। उसके बाद भी चुप रहे। मम्मी न मालूम क्या सोच रही थी। गाजे और सुर्खों की तहा के नीचे झुरिया भी ऐसी दिखाई देती थी कि वे भी किमी गहरी चिंता में डूबी हुई हैं। बोलने के बाद चड्ढा जस खाली सा ही गया। इधर उधर घूम रहा था, जैसे कोई चीज खान के लिए ऐसा कौना ढूँढ रहा हो जा उसके मस्तिष्क में अच्छी तरह सुरक्षित रह। मैं उन एक बार पूछा, क्या बात है चड्ढा?

उसने कहकहा लगाकर जवाब दिया 'कुछ नहीं बात यह है कि आज हिस्की मरे दिमाग के चूतड़ा पर जमाकर लात नहीं मार रही। उसका कहकहा खोखला था।

बनबतरे ने थलिमा को उठाकर मुझे अपने पास बिठा लिया और इधर-उधर की बातें करने के बाद अपने बाप को प्रशंसा शुरू कर दी कि वह बड़ा गुनी आदमी था। ऐसा हारमोनियम बजाना था कि लोग अवाक रह जाते थे। फिर उसने अपनी बीबी की खूबसूरती का जिक्र किया और बताया कि बचपन में ही उसके बाप ने यह लड़की चुनकर उससे व्याह्र दी थी। बंगाली म्यूजिक डायरेक्टर सेन की बात खली तो उसने कहा, मिस्टर मण्टो, वह एकदम हलकट आदमी था कहता था, मैं खान साहब अन्दुल करीम का चेला हूँ भूठ, बिलकुल भूठ वह तो बंगाल के किसी भदूव का चेला था।' पंडी ने दी बजाए। चड्ढे ने किटी को धक्का देकर एक धार गिराया

और बटकर वनकतरे के बहू जैम सिर पर घण्टा मारकर कहा, 'बकवास बंद कर दो उठ और कुछ गा लेकिन खबरदार, अगर तूने कोई पक्का राग गाया।'।

वनकतरे ने तुरन्त गाना गुरु कर दिया। आवाज अच्छी नहीं थी। मुकिया की बारीकिया उसके गाने से निकलती थी, लेकिन जो कुछ गाता था, पूरी सम्यता से गाता था। मालकोश में उसने दो तीन फिल्मी गाने सुनाए, जिनसे वातावरण बहुत उदास हो गया। मम्मी और चड्डा एक-दूसरे की ओर दसते थे और नजरें किसी और तरफ हटा लेते थे। गरीबनवाज इतना प्रभावित हुआ कि उसकी आंखों में आंसू आ गए। चड्डे ने जोर का कहकहा लगाया और कहा, 'हैदराबाद वाला की आख का मसाना बहुत कमजोर होता है—मीके धेमीके टपकने लगता है।'।

गरीबनवाज ने अपने आंसू पोंछे और एलिमा के साथ नाचना शुरू कर दिया। वनकतरे ने ग्रामोफोन के तबे पर रिकार्ड रखकर सुई लगा दी। धिमी हुई ट्यून बजने लगी। चड्डे ने मम्मी को फिर गोद में उठा लिया और बूढ़े बूढ़े शोर मचाने लगा। उसका गला बैठ गया था, उन मीरा-सिया की तरह, जो शादी ब्याह के मौके पर ऊँचे सुरों में गा गाकर अपनी आवाज का मांस मार लेते हैं।

उस उछल-कूद और चीख दहाड़ में चार बज गए। मम्मी एनदम चुप हो गई। फिर उसने चड्डे की ओर मुड़कर कहा 'बस अब खत्म।'।

चड्डे ने धीतल से मुह लगाया और उस खाली करके एक ओर फेंक दिया और मुँहसे कहा, 'चलो मण्टो, चलें।'।

मैंने उठकर मम्मी से इजाजत लेनी चाही कि चड्डे ने मुझे अपनी ओर खींच लिया, 'आज कोई बिदाई नहीं लेगा।'।

हम दोनों बाहर निकल रहे थे कि मैंने वनकतरे के रोने की आवाज सुनी। मैंने चड्डे से कहा, 'ठहरो, देखें क्या बात है।'। मगर वह मुझे धकेलकर आगे ले गया। उस साले की आंखों का मसाना भी कमजोर है।'।

मम्मी के घर में सईदा काटेज बिल्कुल निकट थी। रास्ते में चड्डे ने कोई बात नहीं की। सोने से पहले मैंने उससे इस विचित्र पार्टी के बारे में

जानना चाहा तो उसने कहा, 'मुझे नींद आ रही है।' और वह बिस्तर पर लेट गया।

सुबह उठकर मैं गुसलखाने में गया। बाहर निकला तो देखा कि गरीबनवाज गरेज के टाट के साथ लगा खड़ा है और रो रहा है। मुझे देख कर वह आसू पोछता रहा से हट गया। मैंने पास जाकर उसमें रौने का कारण पूछा तो उसने कहा, 'मम्मी चली गई।'।

'कहा ?'

मालूम नहीं।' यह कहकर गरीबनवाज सड़क की ओर चला गया।

चंडा बिस्तर पर लेटा था। ऐसा मालूम होता था कि वह एक क्षण के लिए भी नहीं सोया था। मैंने उसमें मम्मी के बारे में पूछा तो उसने मुस्कराकर कहा, 'चली गई, सुबह की गाड़ी से उसे पूना छोड़ना था।'।

मैंने पूछा, लेकिन क्यों ?

चंडे के स्वर में कटुता आ गई 'हुकूमत की उसकी अदाएं पसंद नहीं थी—उसका रंग ठग पसंद नहीं था। उसके घर की महफिलें उसकी नजरों में आपत्तिजनक थी। इसलिए कि पुलिस उसके स्नह और ममता को भ्रष्टाचार के रूप में लेना चाहती थी। वे उसे मा कहकर उससे एक दलाल का काम लेना चाहते थे। एक समय से उसके एक बेटे की छानबीन हो रही थी। आखिर सरकार पुलिस की छानबीन से सहमत हो गई और उसको 'तडी पार' कर दिया। इस सहर से निकाल दिया वह अगर वेश्या थी, या दलाला थी—उसकी मौजूदगी अगर समाज के लिए हानिकारक थी तो उसका खात्मा कर देना चाहिए था। पून की गदगी में यह क्यों कहा गया कि तुम यहाँ से चली जाओ और जहाँ चाहो डेर हो सकती हो ? चंडे ने बड़े जोर से कहकहा लगाया और थोड़ी देर चुप रहा। फिर उसने बड़े भावुक स्वर में कहा 'मुझे दुख है मण्टी कि उम गदगी के साथ ऐसी पवित्रता चली गई है जिसने उस रात मेरी एक बड़ी गलत और गद्दी तरंग को मेरे दिलोदिमाग में निकाल दिया था—लेकिन मुझे अपमान नहीं होना चाहिए—वह पूना में चली गई—मुझे जैसे जवाना में ऐसी गलत और गद्दी तरंगें कहा भी पदा होगी, जहाँ वह अपना घर बनाएगी मैं अपनी मम्मी उनके सुपुत्र करता हूँ जिंदाबाद मम्मी

जिन्दाबाद चलो, गरीबनवाज को दूढ़ें। रो रोकर उसने अपना दुःख
हाल कर लिया होगा हैदराबादिया की आखा का मसाना बहुत कमजोर
होता है—मीके-बेमीके टपकन लगता है।’

मैंन देखा, चड्ढा की आखा में आसू इस तरह तैर रहे थे, जिस तरह
वधितो की लारें।

नगी आवाजें

भोलू और गामा दो भाई थे। वेहद मेहनती। भोलू बलईगर था। सुबह धौकनी सिर पर रखकर निकलता और दिन भर शहर की गलियों में, 'बतन कलई करा ली' की आवाजें लगाता रहता था। शाम को घर लौटता तो उसकी तहमद की टेंट में तीन चार रुपये की रेजगारी जहर होनी।

गामा खाचा लगाता था। उसकी भी दिन-भर छावडी सिर पर उठाए घूमना पड़ता था। तीन चार रुपये वह भी कमा लेता था, पर उसे शराब की लत थी। शाम को खाना खान से पहले देने के भटियारखाने में रोनक ही जाती। सबको मालूम था कि वह पीता है और इसीके सहारे जीता है।

भोलू ने गामा को, जो उससे दी साल बड़ा था, बहुत समझाया कि देखो, यह शराब की लत बहुत बुरी है, शादीशुदा ही, बेकार पैसा बर्बाद करते ही यही जो तुम रोज एक पाव शराब पर खच करते ही, बचाकर रखी ती भाभी ठाठ से रहा करे, नगी चुन्नी घन्ची लगती है तुम्हें अपनी घरवाली? गामा इस कान सुनता उस कान उठा देता। भोलू जब थक हार गया, ती उसने कहना-सुनना ही छोड़ दिया।

दोना शरणार्थी थे। एक बड़ी बिल्डिंग के साथ नौकरा के बवाटर थे। इनपर, जहां औरो ने कब्जा जमा रखा था, वहां इन दीनो भाईयो ने भी एक बवाटर को, जो दूसरी मजिल पर था, अपने रहने के लिए बन्जे में कर रखा था।

सर्दिया शराम से कट गई। गर्मिया आई तो गामा को बहुत तकलीफ हुई। भोलू ती ऊपर कोठे पर खाट बिछाकर सी जाता, पर गामा क्या करता? बीबी थी और ऊपर पर्दे का बोर्ड बंदोबस्त ही न था। एक गामा ही थी यह तकलीफ न थी, उन बवाटरी में जो भी शादीशुदा था, इसी मुसीबत में पमा था।

कल्लन को एक बात सूझी । उसने कोठे पर कोन म, अपनी और अपनी बीवी की चारपाई के इंद गिद, टाट तान दिया । इस तरह पर्दे का इन्तजाम हो गया । कल्लन की देखा देखी दूसरा ने भी इस तरीके से काम लिया । भोलू ने भाई की मदद की और कुछ ही दिनों में बास बगरा लगाकर, टाट और कम्बल जोड़कर, पर्दे का इंतजाम कर दिया । या हवा तो रुक जाती थी, पर नीचे क्वाटर के नरक से हर हालत में यह जगह अच्छी थी ।

ऊपर कोठे पर सोन से भोलू की तबीयत में एक अजीब बदलाव आ गया । वह शादी-ब्याह का बिलकुल कायल नहीं था । उसने मन में ठान रखा था कि यह जजाल कभी नहीं पालेगा । जब कभी मामा उसके ब्याह की बात छेड़ता तो वह कहा करता, ना भाई, मैं यह जजाल नहीं पालना चाहता । अपने शरीर पर जाके नहीं लगवाना चाहता । लेकिन जब गर्मिया आई और उसने ऊपर खूट बिछाकर सोना शुरू किया तो दस पंद्रह दिन ही में उसके विचार बदल गए । एक शाम की दोपहर के भटियारखान में उसने अपने भाई से कहा, 'मेरी शादी कर दो, नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा ।

मामा ने जब यह सुना तो उसने कहा, यह क्या मजाक सूझा है तुम्हें ?'

भोलू बहुत गम्भीर हो गया । बोला, 'तुम्हें नहीं मालूम १५ रातें हो गई हैं मुझे जागते हुए ।'

क्यों, क्या हुआ ?' मामा ने पूछा ।

'कुछ नहीं यार दायें-बायें जिधर नजर डालो, कुछ न कुछ हो रहा होता है अजीब-अजीब आवाजें आती हैं । नींद क्या आएगी खाक ।

मामा जोर से अपनी घनी मूछा में हसा ।

भोलू शरमा गया । फिर बोला, 'वह जो कल्लन है, उसने तो हद ही कर दी है साला रात भर बकवास करता रहता है साली उमकी बीवी को जबान तालू से नहीं गती बच्चे पड़े रो रहे हैं पर यह '

मामा हमेशा की तरह नगे में था । भोलू चला गया तो उसने दोन के भटियारखाने में अपने सब यार-दास्ता को चटप चटपकर बताया कि उसके भाई को आजन्त नाद नहीं आती । इगकी वजह जब उमन अपने

स्नातक आदाज में वयान की तो मुनने वाली के पेट में हमते हसते बल पड गए । जब के लाग भोलू में मिले तो उन्होंने उमका खूब मजाक उड़ाया । कोई उससे पूछता 'हा भाई, कल्लन अपनी जोरु से क्या बातें बगता है ?' कोई कहता, 'यार, मुफ्त में मजे लेते हो सारी रात फिल्म देखते रहते हो सो फीसदी बोलती गाती ।' कुछ ने उससे गन्दे गन्दे मजाक किए । भोलू बेतरह चिड़ गया ।

दूसरे दिन उसने मामा को उस वकन पकड़ा, जब वह नशे में नहीं था श्री बोला, 'तुमने तो यार मेरा मजाक बना दिया है । देखो, जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, झूठ नहीं है । मैं भी इंसान हूँ । खुदा की कसम, मुझे नींद नहीं आती । आज भी बीस दिन हो गए हैं मुझ जागते हुए तुम मेरा शादी का बंदोबस्त कर दो, नहीं तो, कसम खुदा की, कसम पज-स्तन पाक की, मेरा खाना खराब हो जाएगा । भाभी के पास मेरा पाच सो रुपया जमा है जल्दी कर दो बंदोबस्त ।'

मामा ने मूछ मरोड़कर पहले कुछ सोचा, फिर कहा, 'अच्छा, हो जाएगा बंदोबस्त । तुम्हारी भाभी से आज ही बात करता हूँ कि वह अपनी मिलने-जुलने वालियों में पूछताछ करे ।'

डेढ़ महीन के आदर आदर बात पक्की हो गई । समद बलईगर की लटकी आग्रहा मामा की बीबी को बहुत पसंद आई । खूबसूरत थी घर का कामकाज जानती थी । वैसे समद भी भला आदमी था । मुहल्ले वाले उसकी इज्जत करते थे । भोलू मेहनती था, तंदुरुस्त था । जून के महीने में ही शादी की तारीख पक्की हो गई । समद ने बहुत बड़ा कि वह इनकी शर्मिशा में लडकी नहीं व्याहगा, पर मामा ने जब बहुत जोर दिया, तब वह मान गया ।

शादी से चार दिन पहले भोज ने अपनी दुलहन के लिए ऊपर कोठे पर टाट के पर्दे का बंदोबस्त किया । घास बड़ी मजबूती से चारपाइयों के पाया में बांधे । टाट खूब कमर लगाया । चारपाइयों पर नये खेस बिछाए । तइ सुगाही मुण्डेर पर रखी । शीशे का गिलास बाजार से खरीद लाया । सब काम उसने बड़ शौक में किए ।

रात को जब वह टाट के पर्दे में घिरकर सोया तो उमकी अजीब-सा

लगा। वह खुली हवा में सोने का आदी था, पर अब उसको बिलकुल उलटी आदत डालनी थी। यही वजह थी कि शादी से चार दिन पहले ही उसने यों सोना गुरु कर दिया था। पहली रात जब वह लेटा और उसने अपनी बीबी के बारे में साचा तो वह पत्नी से सतरवतर हो गया। उसके कानों में वे आवाजें गूँजन लगी, जो उसे सोन नहीं देती थी और उसके दिमाग में तरह तरह के परेशान समाप्त होजाते थे।

क्या हम भी ऐसी ही आवाजें पैदा करेंगे? क्या आसपास के लोग हमारी आवाजें भी सुनेंगे? क्या वे मेरी तरह, गलत जाग जागकर काटेंगे? किसीने अगर भावकर देख लिया तो क्या होगा?

भोलू पहले से भी ज्यादा परेशान हो गया। हर वक़्त उसको यही बात सताती रहती कि टाट का पर्दा भी कोई पर्दा है। फिर चारों तरफ लोग खिखर पड़े हैं। रात के स नाटों में हल्की-भी बानाफूसी भी दूसरे कानों तक पहुँच जाती है। लोग कस यह नहीं जिन्दगी जीने हैं? एक कोठा है, इस चारपाई पर बीबी लेटी है, उस चारपाई पर सोहर पड़ा है। सैकड़ों आँखें कानों आसपास खुले हैं। नज़र न आने पर भी आदमी सबकुछ देख लेता। हल्की सी आहट पूरी तसवीर बनकर सामने आ जाती है यह टाट का पर्दा क्या है? सूरज निकलता है तो उसकी रोशनी सारी बीबी पर से पर्दा हटा देती है। वह सामने बल्लन अपनी बीबी की छातियाँ दबा रहा है। वह कोने में उसका भाई गामा लेटा है। तहमस खुलकर एक आर जा पड़ा है। ऊपर ईदू हलवाई की कुमारी बेटी आदा का पेट छिदरे टाट से भाव भावकर देख रहा है।

शादी का दिन आया तो भोलू का जी चाहा, वह वहीं भाग जाए। पर कहा जाता? अब तो वह जकड़ा जा चुका था। गायब हो जाता तो समझ जहर खुदकुशी कर लेता। उसकी लडकी पर जान क्या बीतती। जो तूफान मचता, वह अलग।

‘अच्छा! जो होता है होने दो—मेरे और साथी भी तो हैं। धीरे-धीरे आदत हो जाएगी मुझे भी—भोलू ने अपने आपको डाढ़म लिया और नई-नवनी दुलहन की डोली पर से आया।

क्वाटरों में बहान-पहान पैदा हो गई। लोगों ने भोलू और गामा को

खूब बधाइया दी । भोलू के जो खास दोस्त थे, उन्होंने उसको छेड़ा और पहली रात के लिए कई सफल गुर बताए । भोलू चुपचाप सुनता रहा । उसकी भाभी न ऊपर कोठे पर टाट के पर्दे के नीचे विस्तर का बंदोबस्त कर दिया । गामा ने मोतिए के चार बड़े बड़े हार तकिये के पास रख दिए । एक दोस्त उसके लिए जलेबिया वाला दूध ले आया ।

दर तक वह नीचे क्वाटर में अपनी दुलहन के पास बैठा रहा । वह बेचारी शम के मारे, सिर झुकाए, घूँघट काढ़े, सिमटी हुई थी । सरत गर्मी थी । भोलू का नया कुर्ता उसके जिस्म के साथ पसीने से चिपका हुआ था । वह पछा भल रहा था, पर हवा जैसे बिलकुल गायब हो गई थी । भोलू ने पहले सोचा था कि वह ऊपर कोठे पर नहीं जाएगा, नीचे क्वाटर में ही रात काटगा, पर जब गर्मी असह्य हो गई, तब वह उठा और उसने दुलहन से चलन के लिए कहा ।

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी । सारे क्वाटर खामोशी में लिपटे हुए थे । भोलू को इस बात का सतोष था कि सब लोग सो रहें हैं । कोई उसकी नहीं देखेगा । चुपचाप, दबे पाव, वह अपने टाट के पर्दे के पीछे, अपनी दुलहन समेत घुस जाएगा और सुबह मुह्र धरे ही नीचे उतर आएगा ।

जब वह कोठे पर पहुँचा तो बिलकुल सन्नाटा था । दुलहन ने शरमाये हुए कदम उठाए तो पायल के रुपहले घुघरू बजने लगे । एकदम भोलू ने महसूस किया कि चारों तरफ जो भीड़ बिखरी हुई थी, वह जैसे चौककर जाग पड़ी है । चारपाइयाँ पर लोग करवटें बदलने लगे । सासने-खलारने की आवाजें इधर उधर उभरने लगी । भोलू ने घबराकर अपनी बीबी का हाथ पकड़ा और तजी से टाट की ओट में चला गया । दबी दबी एक हसी की आवाज उसके कानों के साथ टकराई । उसकी घबराहट बढ़ गई । बीबी से बात की, तो पास ही खुसुन फुमुर गुरू हो गई । दूर कोने में, जहाँ कल्लन की जगह थी, चारपाई की चर चू चर चू हान लगी । वह धीमी पड़ी तो गामा की लोहे की चारपाई बोलन लगी ।

इदू हलवाई की कुमारी लडकी शादा ने दो-तीन बार उठकर पानी पिया । घड़े के साथ उसका गिनास टकराता तो एक छनाका सा पैदा

होता। परे बसाई के लडक की चारपाई स बार बार माचिस जलान का आवाज आती थी।

भोलू अपनी दुबहन से कोई बान न कर सका। उसे डर था कि आस पास के सुले हुए बान पौरन उसकी बान निगल जाएंगे और सारी चार पाइया 'चर चू चर-च करन' बगेंगी। दम साधे वह चुपचाप बैठा रहा। कभी कभी सहमी हुई निगाह में अपनी जोरू की तरफ देख लेता, जी गठरी सी बनी दूसरी चारपाई पर पड़ी थी। कुछ देर वह जागती रही, फिर सी गई।

भोलू न चाहता कि वह भी सो जाए, पर उस नींद न आई। थोड़ी थोड़ी दर के बाद उसके बानों में आवाजें आती थीं आवाजें, जो पौरन तसवीरें बनकर उसकी आंखों के सामने स गुजर जाती थीं।

उसके मन में बड़ी समझ थी, बड़ा जोंग था। जब उसने गान्धी का इरादा किया था तो वे सारे भजे जिनसे वह अपरिचित था, उनके दिल दिमाग में चक्कर लगाते रहते थे। उस एक गर्मी महसूस हानी थी—बड़ी सुख गर्मी। मगर अब जैसे 'पत्ती रात' स उसे कोई दिलचस्पी ही न थी। उसने गान में कई बार यह दिलचस्पी पदा करने की कोशिश की, लेकिन आवाजें—व तसवीरें सीधे बानी आवाजें—मन कुछ अस्त-व्यस्त कर देती। वह अपने आपका नगा महसूस करता, बिलकुल नगा जिसका चारा और से लोग आखें फाड़-फाड़कर देख रहे हों और हंस रहे हों।

सुबह चार बजे के करीब वह उठा। बाहर निकलकर उसने ठण्डे पानी का एक गिलास पिया। कुछ साचा, वह किभक आ उसके मन में बैठ गई थी, उसकी किसी हद तक दूर किया। अब ठण्डी हवा चल रही थी जो काफी तेज थी। भोलू की निगाहें कोन की तरफ घूमी। बल्बन का धिमा हुआ टाट हिल रहा था। वह अपनी बीबी के पास बिलकुल नग घडंग लटा था। भोलू को बड़ी घिन लगी। माथ ही गुम्मा भी आया कि हवा ऐसे कोठों पर क्या चलती है? चलती है तो टाटा को क्यों छेड़ती है? जो मैं आया कि कोठे पर जितना टाट है, सब नीचे डालने और नगा होकर नाचने लगे।

भोलू नीचे उतर आया। जब बाम पर निकला तो कई दाम्ते मिले।

सबन उससे मुन्नागरात का हाल पूछा। फूजे दर्जी न उसको पर ही से
आवाज दो 'क्या उस्ताद भोलू, कैसे रह ?' कही हमारे नाम पर बटटा तो
नहा लगा दिया ?'

छागे टीनसाज न उसस बड भेद भर स्वर म कहा 'देसो अगर कुछ
गडबड है तो बता दो' एक बडा अच्छा नुस्खा मेरे पास है।

वाल न उसक कंध पर जोर का हाथ मारा और पूछा, 'कही पहल-
वान, कमा रहा दगल ?'

भोलू चुप रहा।

सुरह उसकी बीबी मायके चली गई। पाच छ दिन के बाद लौटी तो
भोलू को फिर उसी मुसीबत का सामना करना पडा। कोठे पर सान वाले
जम उसकी बीबी के आने का इतजार कर रहे थे। कुछ रातें सामोश
रही थी, लेकिन जब वे ऊपर सोए तो फिर वही पुसुर पुसुर, वही 'चर-
चू चर चू', वही खासना-खसारना, वही घडे के साथ गिलास के टकराने
क छनाके, करबडा पर करबटें, दबी दबी हसी। भोलू सारी रात अपनी
चारपाई पर सेटा आसमान की ओर देखता रहा। कभी कभी एक ठण्डी
ब्राह भरकर अपनी दुलहन को दख लेता और मन म बुझता 'मुझ क्या
हो गया है ?'। मुझे क्या हो गया है ?' यह मुझे क्या हो गया है ?'

सात राता तक यही होता रहा। आखिर तग आकर भोलू न अपनी
दुलहन की मायके भेज दिया। बीस पच्चीस दिन बीत गए तो गामा न
भोलू स कहा, 'तुम अजीब आत्मी हो। नई नई शादी, और बीबी को
मायक भेज दिया। इतन दिन हो गए उसे गए हुए, तुम अकेल सोत
कैसे हो ?'

भोलू न सिफ इतना कहा 'ठीक है।'।
गामा न पूछा, 'ठीक क्या है ? जी बात है, बताओ। क्या तुम्ह
पसंद नहीं आई आपशा ?'

'यह बात नहीं है।'।

'यह बात नहीं है तो और क्या बात है ?'

भोलू बात गोल कर गया। पर थोडे ही दिनी बाद उसके भाई ने
फिर बात छोडी। भोलू उठकर क्वाटर के बाहर चला गया। बाहर एक

चारपाई पड़ी थी, उसपर बैठ गया। भीतर से उसकी भाभी की आवाज सुनाई दी। वह गामा से कह रही थी, 'तुम जी कहते ही ना कि भोलू को आग्रहा पसंद नहीं आई यह यमन है।'

गामा की आवाज आई, 'तो और क्या बात है? भोलू को उससे कोई दिलचस्पी ही नहीं।'।

'दिलचस्पी क्या ही?'

'क्या?'

गामा की बीबी ने इसका जवाब दिया, 'भोलू न सुन सका, लेकिन इसके बावजूद उसका ऐसा लगा, मानो उसकी सारी हस्ता किसी भीमकी म डालकर कूट दी हो।'

गामा एकदम जार से बोला, 'नहीं, नहीं! यह तुमसे किसने कहा? गामा की बीबी बोली 'आग्रहा न अपनी किसी सहली से कहा बात उड़ते-उड़ते मुझ तक पहुंच गई।'

बड़ बुद्ध भरे स्वर में गामा ने कहा, 'यह तो बहुत बुरा हुआ।'

भोलू के दिल में छुरी-सी उतर गई। उसका दिमागी संतुलन बिगड़ गया। वह उठा और कोठे पर चढ़कर जिनने टाट लगे थे, उन्हें उसने उखाड़ना शुरू कर दिया। 'खट-खट फट फट' सुनकर लोग ऊपर जमा हो गए। उन्होंने उसका रोकने की कोशिश की तो वह लड़ने लगा। बात बढ़ गई। कल्लन ने बाएं उठाकर उसके सिर पर द मारा। भानू चक्कराकर गिरा और वहाश हो गया। जब उसे हाश आया, तो उसका दिमाग चले चुका था।

अब वह मिलकुल नग घड़न बाजारा में घूमता फिरता है। वही टाट देखता है तो उसको उतारकर टुकड़े टुकड़े कर देता है।

दिन भर की थकी माद्री वह अभी अपने बिस्तर पर लेटी थी और लेटते ही सो गई थी। म्युनिसिपल कमेटी का सफाई-दारोगा, जिसे वह 'सेठ' के नाम से पुकारा करती थी, अभी अभी उसकी हड्डियाँ पसलियाँ भूँडकर, गराव के नौ में चूर, वापस घर को चला गया था। वह रात को यहीं ठहर जाता, पर उसे अपनी घमपत्नी का बहुत खयाल था, जो उससे बेहद 'प्रेम' करती थी।

वे रुपये, जो उसने अपने शारीरिक परिश्रम के बदले में, उस दारोगा से बमूल किए थे, उसकी चुस्त और थूक भरी चोली के नीचे से ऊपर की उभरे हुए थे। कभी कभी सास के उतार चढ़ाव से चादी के थ सिक्के गन-खनाने लगते और उनकी खनखनाहट उसके दिल की बेसुरी घड़कना में घुल मिल जाती। ऐसा मालूम होना था कि उन सिक्कों की चादी पिघलकर उसके दिल के खून में टपक रही है।

उसका सीना अंदर से नप रहा था। यह गर्मी, कुछ तो उस बाण्डी की बजह से थी, जिसका अदा दारोगा अपने साथ लाया था और कुछ उस 'व्हीडे का नतीजा' थी, जिसकी, सोडा खत्म होने पर, दोनों न पानी मिलाकर पिया था।

वह सामान के लम्बे चौड़े पलंग पर भीड़े में लेटी हुई थी। उसकी बाहें, जो कभी तब नगी थी, पलंग की उस बाप की तरह फैली हुई थी, जो ओस में भीग जाने के कारण पतले कागज से अलग हो जाए। दाँवें बाजू की बगल में झुंझा भरा मांस उभरा हुआ था, जो बार-बार मुड़ने की बजह से नीली काली रगत का हो गया था। लगता था, जैसे मुँची हुई मुर्गी की राल का एक टुकड़ा वहाँ पर रख दिया गया है।

कमरा बहुत छोटा था, जिनमें अनगिनत चीजें बतरतीकी के साथ बिखरी हुई थी। तीन चार सूखी सड़ी चप्पलें पलंग के नीचे पड़ी थी, जिनके ऊपर मुँह रखकर, एक बाज भारा कुत्ता सो रहा था और नींद में

किसी अनजान चीज को मुह चिन्ना रहा था। उस कुत्ते के बाल खुजली के कारण जगह जगह से उड़े हुए थे। दूर से अगर कोई कुत्ते को देखता तो ममभ्रवा कि पर पोछन वाला पुराना टाट दोहरा कर जमीन पर रखा हुआ है।

उस तरफ छोटी सी दीवारगीर पर, सिंगार का समान रखा था— गाला पर लगान की सुर्तों, लाल रंग की लिपस्टिक, पाउडर, कधी और लोहे की पिन, जिन्हें शायद वह अपने जूड़े में लगाया करती थी। पास ही एक लम्बी सूटी के साथ तोते का पिंजरा लटक रहा था, जिसमें तोता गदन को अपनी पीठ के बालों में छिपाए सो रहा था। पिंजरा बच्चे अमरुद के टुकड़ों और गले हुए मत्तरे के छिलकी से भरा हुआ था। उन बद-बूदार टुकड़ों पर छोटे-छोटे बाले रंग के मच्छर या पतंग उड़ रहे थे।

पलंग के पास ही एक बेंत की कुर्सी पड़ी थी, जिसकी पीठ लगातार सिर टेकन की वजह से बेहद मैली ही रही थी। कुर्सी के दाहिने हाथ को एक सुन्दर तिपाई थी जिसपर 'हिज मास्टर्स वायस' का पोर्ट्रेल ग्रामोफोन पड़ा था। उस ग्रामोफोन पर मड़े हुए बाले कपड़े की बहुत बुरी हालत थी। सुइया तिपाई के अलावा कमरे के हर कोने में बिखरी पड़ी थी। उस ग्रामोफोन के ठीक ऊपर दीवार पर चार फ्रेम लटक रहे थे, जिनमें अलग अलग व्यक्तियों की तस्वीरें जड़ी थी।

इन तस्वीरों में जरा इधर हटकर, यानी दरवाजे में दाखिल होते ही, बाईं तरफ की दीवार के कोने में, चौखटे में जड़ा, गणेशजी का, बड़े ही भडकीले रंग का चित्र था, जो ताजा और सूखे फल से लदा हुआ था। लगता था, यह चित्र कपड़े के किसी थान से उतारकर फ्रेम कराया गया था। उस चित्र के माथे, छोटे-से ताक पर, जोकि बहुत चिकना हो रहा था, तेल की एक प्याली धरी थी, जो दीय को जलाने के लिए वहां रखी गई थी। पास ही दीया पड़ा था, जिसकी लौ हवा बंद होने की वजह से, माथे के तिलक की तरह सीधी खड़ी थी। उस दीवारगीर पर धूप बत्ती की छोटी बड़ी मरोड़िया भी पड़ी थी।

जब वह बोहनी करती थी तो दूर से गणेशजी की उस मूर्ति से रुपये छुट्टाकर और फिर अपने माथे के साथ लगाकर, उन्हें अपनी चोली में रख

लिया करती थी। उमकी छातिया चूबि काफी उभरी हुई थी, इसलिए वह जितने रुपये भी अपनी चोली में रखती, सुरक्षित पड़े रहते। अलबत्ता कभी कभी जब माधो पूने से छुट्टी लेकर आता तो उसे अपन कुछ रुपये पलग के पाए के नीचे उस छोट-से गड्ढे में छिपान पड़त थे, जो उसने खास तौर पर इसी काम के लिए खोद रखा था। माधो से रुपये बचाए रखने का यह तरीका सुगंधी को रामलाल दलाल ने बताया था।

उसने जब यह सुना था कि माधो पूने से आकर सुगंधी पर धावे बोलता है तो कहा था, उस साले को तू न कब से पार बनाया है? यह बड़ी अनोखी आशिकी माझूकी है। साला एक पसा अरानी जेब से निवालता नहीं और तरे साथ मजे उड़ाता है। मजे अलग रह, तुमसे कुछ ल भी मरता है। सुगंधी, मुझे कुछ दाल में काला नजर आता है। उस साले में कोई बात जरूर है, जो वह तुम्हें पा गया है। सात साल से यह धधा कर रहा हूँ। मैं तुम छीवरिया की सारी कमजोरिया जानता हूँ।'

यह कहकर रामलाल दलाल ने, जो बम्बई शहर के विभिन्न भागों में घूम रुपये स लेकर सौ रुपये लेने वाली एक सौ बीस छोवरियों का धंधा करता था, सुगंधी को बताया, 'साली, अपना धन यो बरबाद न कर। तरे तन पर स य कपड़े भी उतारकर ले जाएगा वह तेरी' मा का पार। इस पलग के पाये के नीचे छोटा सा गड्ढा खोदकर, उमम सारे पैसे दबा दिया कर और जब वह यहा आया कर तो उसने कहा कर—तेरी जान की बसम माधो, आज सुबह स एक घेल का मुह नहीं दया। बाहर वाले से कहकर एक 'कोप चाय और अफनातून बिस्कुट तो मगा। भूख में मेरे पेट पे चूहे दौड़ रहे हैं।—समझी? समय बहुत खराब आ गया है मेरी जान। इस साली काप्रेस न धराब बंद करके बाजार बिलकुल मंदा कर दिया है पर तुम्हें तो कही न कही से पीन की मिल जाती है। भगवान बसम, जब तेरे यहा कभी रात की खाली की हुई बीतल देखता हूँ और दारू की बास सूघता हूँ तो जी चाहता है, तेरी जून में चला जाऊँ।'

सुगंधी को अपन जिस्म में सबसे ज्यादा अपना सीना पसंद था। एक बार जमुना ने उससे कहा था, 'नीचे से इन घम के गोला को बांधकर रखा

कर । अगिया पटना करेगी तो इनकी सरताई ठीक रहेगी ।'

सुगंधी यह सुनकर हस दी थी, 'जमुना, तू सबको अपने सरोखा समझती है । दम रुपये में लाग तरी बोटिया तोड़कर चले जात है तो तू समझती है कि सबके साथ ऐसा ही होता होगा कोई मुआ लगाए तो ऐसी बैसी जगह हाथ अरे हा, कल की बात तुझे सुनाऊ । रामलाल रात के दो बजे एक पजाबी को लाया । रात का तीस रुपया तय हुआ । जय सोने लगे तो मैंने बत्ती बुझा दी । अरे वह तो डरन लगा । सुनती हो जमुना । तेरी कसम, अधेरा होत ही उसका सारा ठाठ हवा हो गया । वह डर गया । मैंने कहा, चलो, चलो । देर क्यों करने ही ? तीन वजन वाले हैं अभी दिन चढ़ आएगा । बोला, रोशनी करो । रोशनी करो । मैंने कहा, यह रोशनी क्या हुआ ? बोला लाइट लाइट । उसकी भिची हुई आवाज सुनकर मुझमें हसी न रही । मैंने कहा, भई मैं तो लाइट न करूंगी । और यह कहकर मैंने उसकी मांस भरी रान में चुटकी ली । वह तडपकर उठ बैठा और लाइट आन कर दी । मैंने भट से चादर आढ ली और कहा, तुझे गम नहीं आती मझुए । वह पलंग पर आया तो मैं उठी और लपककर लाइट बुझा दी । वह फिर धवराने लगा तेरी कसम, बड़े मजे में रात बटी । कभी अधेरा कभी उजाला, कभी उजाला, कभी अधेरा । टाम की खटखटाहट हुई तो पतलून बतलून पहनकर वह उठ भागा । साले न तीस रुपय सट्टे में जीते होंग, जो यूँ मुफ्त दे गया जमुना, तू बिल्कुल अल्हड है । बड़े बड़े गुर याद हैं मुझे इन लोगों की ठीक करन के लिए ।'

सुगंधी को सचमुच बहुत-से गुर याद थे, जो उसने अपनी एक दो सहलियों को बताए भी थे । ग्राम तौर पर वह यह गुर सबको बताया करती थी 'अगर आदमी भला हो ज्यादा बातें न करन वाला हो, तो उससे खूब शरारतें करो, अनगिनत बातें करो, उसे छेड़ो, सताओ, उसके गुदगुदी करो, उससे खेलो अगर दाढ़ी रखता हो तो उसमें उगलियों से कधी करत-करते दो चार बाल भी नोच लो, पट बड़ा हो तो थप थपाओ उसको इतनी मोहलत ही न दो कि अपनी मर्जी के मुताबिक

कुछ करने पाए वह सुश मुश चला जाएगा और तुम भी बची रहोगी
ऐसे मद जो गुप्तचर रहन हैं, बड़े खतरनाक होते हैं वहन, हड्डी पसली
तोड़ देते हैं, अगर उनका दाव चल जाए ।'

सुग की उतनी चालाक नहीं थी, जिनकी वह छुद को जाहिर करती
थी । उसके माहक बहुत कम थे । वह एक उहुत ही भावुक लड़की थी ।
यही वजह है कि वे सार गुर, जो उस याद थे, उसके दिमाग से फिसलकर
उसके पेट में आ जाते थे जिनपर एक बच्चा हो जाने के कारण कई
लकीरें पड़ गई थी । इन लकीरों का पहली बार देखकर उस ऐसा लगा
था कि उसके खाने मारे कुत्ते ने अपने पजे में निशान बना दिए हैं ।
जब कोई कुतिया बड़ी उपेक्षा से उसके पालतू कुत्ते के पाम में गुजर जाती
थी तो वह शर्मिंदगी दूर करने के लिए जमीन पर अपने पजे से इसी
तरह के निशान बनाया करता था ।

सुग की दिमाग में ज्यादा रहती थी, लेकिन जैसा ही कोई नम-नाजुक
बात, कोई कोमल बोल उससे कहना, वह भट पिघलकर अपने गरीर के
दूसरे हिस्सा में फन जाती । हालांकि उसका दिमाग मद धारत के गारी-
रिक सम्बंध का एकदम बरार की चीज समझता था, पर उसके गरीर के
बाकी अंग सबके मर इनके बुरी तरह कायल थे । वे धक्कन चाहत थे—
ऐसी धक्कन, जो उन्हें भबभोरकर, उन्हें भारकर, सीत पर भजवूर तर
दे । ऐसी नींद जो धक्कर चूर-चूर होत व याद भ्राण कितनी भजेतार
होती है वह बेहोशी, जो भार लाकर, जोड़ जोड़ डीले हो जान पर
छा जाती है । कितना धानद देतो है । कभी ऐसा लगता है कि तुम हो,
कभी ऐसा लगता है कि तुम नहीं हो और उस होत और न होत व बीच
व भी कभी ऐसा महसूस होता है कि तुम हवा में बहुत ऊंची जगह लटके
हुए हो । ऊपर हवा, नीचे हवा, दायें हवा, बायें हवा—बम, हवा ही हवा ।
और फिर उस हवा में दम घुटना भी एक सास मजा देता है ।

बचपन में, जब वह भात मिचीली खेला करती थी और अपनी मा
या बड़ा सादूक खोलकर उसमें छिप जाया करती थी तो नाकाकी हवा में
दम घुटने के साथ साथ पकड़े जाने के डर में वह तेज धटकन, जो उसके
दिल में पैदा हो जाया करती थी, कितना मजा दिया करती थी ।

सुग धी चाहती थी कि अपनी सारी जिंदगी ऐस ही किसी सन्तूक में छिपकर गुजार दे जिसके बाहर दूकने वाले फिगत रहें। कभी कभी उसको दूक निकाले, ताकि वह भी उनको ढढन की कोशिश करे। यह जिंदगी, जो वह पाच वरम से बिता रही थी आख मिचौली ही तो थी। कभी वह किसीका ढढ लेती थी और कभी कोई उसे ढढ लेता था। वस, या ही उसका जीवन बीत रहा था। वह खुश थी, इसलिए कि उसको खुश रहना पड़ता था। हर रोज रात को कोई न कोई भद उमके चौंटे सागौनी पलग पर होता था और सुग धी, जिनकी मदों को ठीक कराने के अनगिनत गुन याद थे इस रात का बार बार निदचय करने पर भी कि वह उन मदों की कोई ऐसी वैसी बात नहीं मानगी और उनके साथ बड़े रुखेपन से पेश आएगी हमेशा अपनी भावनाओं की धारा में वह जाया करती थी और सिर्फ एक प्यासी औरत रह जाया करती थी।

हर रोज रात को उसका पुराना या नया मुलाकाती उसे कहा करता था, 'सुग धी' मैं तुझमें प्यार करता हूँ।' और सुग धी, यह जानत हुए भी कि वह झूठ बोलता है मीम हो जाती थी और ऐसा महसूस करती थी, जैसे सचमुच उससे प्यार किया जा रहा है। प्यार, कितना मुंदर गद्द है। वह चाहती थी, उसकी पिघलाकर अपने सारे अंगों पर मल ले उसकी मालिश कर ताकि यह सार का सारा उसके तिसम में रच जाए या फिर वह खुद उसके अंदर चली जाए। सिमट सिमटकर उसके अंदर दाखिल हो जाए और ऊपर से ढकना बंद कर दे। कभी-कभी जब प्यार करने और प्यार किए जाने की इच्छा उसके अंदर सिद्ध हो उठती तो कई बार उसके मन में आता कि अपने पास पड़े हुए आदमी को गोद में लेकर थपथपाना शुरू कर दे और नोरिया दकर उम अपनी गोद में ही मुला दे।

प्यार कर सकन की गवित उसके अंदर इतनी ज्यादा थी कि हर उम मद स, जो उसके पास आता या वह प्यार कर सकती थी और फिर उसको निभा सकती थी। अब तक चार मदों ने (जिनकी तस्वीरें उसके सामने दीवार पर लटक रही थी) वह प्यार निभा ही तो रही थी। हर समय यह एहसास उसके दिल में बना रहता था कि वह बहुत अच्छी है।

जहरस्त हो और मुझे तरी । पूरा म हवलदार हू । महीन में एक बार आया
 करंगा तीन चार दिन के लिए यह घ-घा छोड़ मैं तुझे खच द दिया
 करंगा क्या भाडा है इस खोनी का ?'

माधो न और भी बहुत कुछ कहा था, जिसका असर मुग-वी पर
 इतना ज्यादा हुआ था कि वह कुछ क्षणा के लिए अपने आपको हवल-
 दारनी समझन लगी थी । बातें करने के बाद माधो न उसके कमर की
 बिलखी हुई चीजें करीने स रखी थी और नगी तस्वीरें, जो मुग-वी न
 अपने सिरहाने लगा रखी थी, बिना पूछे फाड़ दी थी और कहा था,
 'मुग-वी, भई मैं ऐसी तस्वीरें यहां नहीं रखन दूंगा और पानी का यह
 घड़ा दल तो, कितना मला है और ये ये चिथड़े ये चिदिया उफ,
 कितनी बुरी वास आती है । उठा के बाहर फेंक इनको और तूने अपने
 बाला का क्या सत्यानास कर रखा है और और ।'

तीन घंटे की बातचीत के बाद मुग-वी और माधो दोनों आपस में
 घुलमिल गए थे और मुग-वी को तो ऐसा महसूस हुआ था, जैसा वह प्रमा-
 से हवलदार को जानती है । उस वक़्त तक किसीने भी कमरे में बदबूदार
 चिथड़ा, मैंने घड़े और नगी तस्वीरों की मौजूदगी का खयाल नहीं किया
 था और न कभी किसीने उसको यह महसूस करने का मौका दिया था कि
 उसका एक घर है, जिसमें घरलूपन आ साता है । लोग आते थे और
 विस्तर तक की गंदगी को महसूस किए बिना चले जाते थे । काह मुग-वी
 से यह न कस्ता था, देख नो आज तरी नाक कितनी लाल हो रही है ।
 कही जुकाम न हो जाए तुझे ठहर मैं तरे लिए दवा लाना हू । माधो
 कितना अचूक था । उसकी हर बात बावन सोला और पाव रती की थी ।
 क्या खरी गरी सुनाई थी उसने मुग-वी को । उसे महसूस होन लगा कि
 उस माधो की जहरस्त है और इसलिए उन दोनों का सम्बन्ध हो
 गया ।

महीने में एक बार माधो पूने से आता था और वापस जान हुए
 हमेशा मुग-वी से कहा करता था दख मुग-वी । अगर तून फिर स अपना
 घ-घा शुरू किया ती बस तेरी मेरी टूट जाएगी । अगर तून एक बार
 भी किसी मद को अपने यहां ठहराया तो चुटिया से पकड़कर बाहर

निकाल दगा देन, हम महीने का गव मैं तुम्हें पूना पहुँचाते हो मनीषाईर
कर दूंगा हा, क्या नाया है हम खोती का ?'

त माघो त कभी पून न गव भेजा या और त मुगधी ने अपना
घमा बंद किया था। दोना अच्छी तरह जानत थे, क्या हो रहा है। न
मुगधी न माघो म यह कहा था, 'तू यह टर टर क्या करता है। एक फूटी
कीड़ी भी दो है कभी तू न ?' और न माघो न कभी मुगधी से पूछा था 'यह
मान तरपान कहा म आता है, जबकि मैं तुम्हें कुछ देना ही नहीं।' दोना
भूँटे थे, दोना गव गिनट की हुई जिदगी जिता रहे थे। लेकिन मुगधी
खुश थी। जिसकी समय सेना पहान की न मिले, वह गिल्ट किण हुए
गहना पर हो सताप कर लिया करता है।

उम समय मुगधी धकी मादो मो रही थी। बिजनी का हृष्टा, जिसे
यह आफ करना भून गई थी, उसके सिर के ऊपर खटख रहा था। उमकी
तज रोगनी उसकी मुँहो हुई आला के साथ टकरा रही थी, पर वह गहरी
नींद सो रही थी।

दरवाजे पर दस्तक हुई। रात के दो बजे यह नींद आया था ?
सपनों में डूबे हुए मुगधी के कानी में दस्तक को आवाज भनभनाहट बन-
घर पहुँची। दरवाजा जब जोर से खटखटाया गया तो वह चौंकर उठ
बैठो। दो मिनी जुना गरावो और दातो की रीलों में फस हुए मछलो के
रेगी न उमके मुँह के अंदर ऐसा जुमाव पैदा कर दिया था, जो
बेहद कमला और नैमदार था। घोनी के पल्लू में उसने यह बदबूदार
जुमाव साफ किया और आखें मचने लगी। पलंग पर वह झकेली थी।
झुंकर उमन पलंग के नीचे देखा तो उसका बुत्ता, मूली हुई चप्पनी पर
मुँह रख, सो रहा था और नींद में किसी अनजान चीज को मुँह चिढ़ा रहा
था। तीता पीठ के बालों में सिर दिए मो रहा था।

दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। मुगधी विस्तर में उठो। उमका सिर
दद के मारे फटा जा रहा था। घड़े से पानी का एक डोंगा निवालनर
उसने कुल्ली की और दूसरा डोंगा गटागट पीकर उसने दरवाजे का पट
थोड़ा-सा खोला और कहा, 'रामलाल !'

रामलाल, बाहर दस्तक देते देत थक गया था, भन्नाकर बोला 'तुम्हें साफ सूघ गया था या क्या हुआ गया था ? एक घण्टे से बाहर खड़ा दरवाजा खटखटा रहा हूँ। कहाँ मर गई थी ?' फिर आवाज दबाकर उसने हौल से पूछा, 'अगर कोई है तो नहीं ?'

जब सुगंधी ने कहा 'नहीं' तो रामलाल की आवाज फिर ऊँची हो गई, 'तू दरवाजा क्यों नहीं खोलती ? भईं हट हो गई। क्या नींद पाइ है ! ऐसे एक एक छोकरी को उठाने में दो दो घण्टे सिर खपाना पड़े तो मैं अपना घंघा कर चुका। अब तू मेरा मुँह क्या देखती है। भटपट यह धोती उतारकर वह फूलों वाली साड़ी पहन पाउटर वाउडर लगा और चल मेरे साथ बाहर मोटर में एक सेठ बैठे तेरा इंतजार कर रहे हैं। चल चल, एकदम जल्दी कर !'

सुगंधी आरामकुर्सी पर बैठ गई और रामलाल आईन के सामने अपने बालों में कंधों करने लगा।

सुगंधी ने तिपाई की तरफ हाथ बढ़ाया और बाम की सीसी उठाकर उसका ढकना खोलते हुए कहा, 'रामलाल, आज मेरा जी अच्छा नहीं।

रामलाल ने कधी दोवारगीर पर रख दी और मुड़कर कहा, 'तो पहले ही कह दिया होता।

सुगंधी ने भाँये और कनपटियों पर बाम मलते हुए रामलाल का भ्रम दूर कर दिया, 'वह बात नहीं रामलाल ऐसे ही मेरा जी अच्छा नहीं बहुत पी गई।'।

रामलाल के मुँह में पानी भर आया, 'थोड़ी बची हो तो ला, जरा हम भी मुँह का मजा ठीक कर लें।'।

सुगंधी ने बाम की शीशी तिपाई पर रख दी और कहा, 'बचाइ होनी तो यह मुँगा सिर में दब ही क्यों होता !' तब रामलाल, वह जो बाहर मोटर में बठा है उस अदर ही ल आ।'।

रामलाल ने जवाब दिया 'नहीं भईं वे अदर नहीं आ सकते। जेण्टलमन आदमी हैं। वे तो मोटर की गली के बाहर खड़ी करत हुए भी घबरात थे तू बपड़े-बपड़े पहन ले और जरा गली के नुक्कड़ तक चल सब ठीक हो जाएगा।'।

माडे सान रूपय का सौदा था। सुगंधी उस हालत में, जबकि उसके सिर में बेहिमाव दद हो रहा था, अभी स्वीकार न करती लज्जित उस रूपय की सख्त जहरत थी। उसके गाय वाली खोली में एक मद्रासी धोखत रहती थी, जिसका पति मोटर के नीचे धाकर मर गया था। उस धोखत को अपनी जवान लड़की के साथ अपने घर जाना था, लेकिन उसके पास चूनि किराया ही नहीं था, इसलिए वह असहाय अवस्था में पड़ी थी। सुगंधी ने बल ही उसके दांस दिया था और उसमें बहा था, बहन, तू चिंता न कर। मेरा आदमी पून से आनेवाला है। मैं उसमें कुछ रूपय लेकर तूरे जान का बन्धोबस्त कर दूंगी।'

मांधी पूना से आनेवाला था पर रूपयों का प्रबंध तो सुगंधी को ही करना था। इसलिए वह उठी और जल्दी-जल्दी कपड़े बदलने लगी। पांच मिनट में उसने धोती उतारकर, पूना वाली साड़ी पहनी और गाला पर साल पाउडर लगाकर तैयार हो गई। घड़े में ठण्डे पानी का एक और डाला उसने पिया और रामलाल के साथ ही ली।

गली जी कि छोटे गहरा के बाजारा में भी कुछ बड़ी थी बिलकुल खामोश थी। गैम के बल्बों जी खम्भा पर जड़े थे पहल की वनिम्बत बहुत धुंधली रौशनी दे रहे थे। लडाई के कारण उनके धोना की मदद कर दिया गया था। उस मांधी रौशनी में गली के आखिरी सिरे पर एक मोटर नजर आ रही थी।

कमजोर रौशनी में उस बातें रंग की मोटर का साया नजर आया और रात के पिछले पहर का भेद भरा सनाटा सुगंधी की ऐसा लगा कि उसके सिर का दद सारे माहौल पर छा गया है। एक बसलापन उसे हवा के आदर भी महसूस होता था, जैसे बाण्टी और ब्यूडे की बाम से वह भी घुंभीन ही रही हो।

आगे बढ़कर रामलाल ने मोटर के आदर बैठे हुए आदमियों से कुछ कहा। इतने में जब सुगंधी मोटर के पास पहुँच गई तो रामलाल एक तरफ हटकर घोना लीजिए, वह आ गई बड़ी अच्छी छोकरी है। थोड़े

हो दिन हुए हैं इस घंघा गुट किर ।' फिर सुगंधी की ओर मुड़कर कहा, 'सुगंधी, डधर आ, मेठजी बुलाते हैं ।

सुगंधी मानी का एक दिनारा अपनी उगली पर लपटती हुई आग बढी और मोटर के पास खड़ी हो गई । मठ माटव ने टाच स उसके चेहरे व पास रोगनी की । एक धण व लिए उस रोगनी ने सुगंधी की कुमार-भरी आलो म चकाचौंध पैदा की । बदन दवाने की आवाज पैदा हुई और रोगनी बुझ गई । साथ ही मठ के मुह म एक 'ऊह' निपली । फिर एक-दम मोटर का इंजन फटफड़ाया और बार यह जा, वह जा

सुगंधी कुछ मोच भी न पाई कि मोटर चल दी । उसकी आला म अभी तक टाच की तेज रोगनी घुसी हुई थी । वह मेठ का चेहरा भी तो ठीक तरह न देख सकी थी । यह आतिर हुआ क्या था ? इस 'ऊह' का क्या मतलब था, जो अभी तक उसके वानी मे भाभना रही थी ? क्या ? क्या ?

रामलाल दलाल की आवाज गुआई दी, 'पसंद नहीं किया तुम्हे । अच्छा भई मैं चलता हू । नो घण्टे मुफ्त म ही अगवाव किए ।'

यह सुनकर सुगंधी की टागा म, उसकी बाहा मे, उसके हाथा म एक जबरदस्त हरकत का इरादा पैदा हुआ । कहा थी वह मोटर कहा था वठ मठ तो 'ऊह' का मतलब यह था कि उसन मुझे पसंद नहीं किया उसकी

गाली उसके पट के अंदर से उठी और जवान की नोक पर आकर रक गई । वह आतिर गाली किमे दती । मोटर तो जा चुकी थी । उमकी दुम की लाल बत्ती उसके मामने, बाजार के अधियारे मे डूब रही थी । और सुगंधी की ऐसा महसूस हो रहा था कि यह लाल लाल अगारा उह' है, जो उमके सीन म बर्मे की तरह उतरा चला जा रहा है । उमक जी मे आया कि जोर से पुकारे, 'ओ सेठ ओ सेठ जरा मोटर रोकना अपनी बस, एक मिनट के लिए ।' पर वह सेठ, थू है उसकी जात पर, बहुत दूर निकल चुका था ।

वह मुनसान बाजार मे खड़ी थी । फूला वाली साडी, जिसे वह खास-खास मौकी पर पहना करती थी, रात के पिछले पहर की हल्की फुल्की

हवा में लहरा रही थी। यह साड़ी और उसकी रेशमी सरमराहट सुगंधी को कितनी बुरी मालूम हो रही थी। वह चाहती थी कि उस साड़ी के चिपड़े उड़ा दें, क्योंकि साड़ी हवा में लहरा लगाकर 'ऊह ऊह' कर रही थी।

साला पर उसने पाउटर लगाया था कि हाठा पर सुर्खी। जब उसे खयाल आया कि यह सिगार उसने अपने आपको पसंद कराने के लिए किया था तो शर्म के मारे उसे पसीना आ गया। यह शर्मिंदगी दूर करने के लिए उसने क्या कुछ न सोचा, 'मैंन उम मुए हो दिवान के लिए थोड़े ही अपना आपको सजाया था। यह तो मेरी आदत है—मेरी क्या, सबकी यही आदत है पर पर यह रात के दो बजे और रामनाल दलाल और यह बाजार और यह मोटर और टाच की चमक।' यह सोचते ही रोशनी के धम्ये उसकी नजर की हद तक पिजा म इधर उधर तैरन लग और मोटर के इंजन की फड़फड़ाहट उसे हवा के हर भोने में सुनाई देने लगी।

उसके माथे पर बाक का जेप, जो सिगार करते समय बिलकुल हलका हो गया था, पसीना आने की वजह से उसके लोम २ घ्रा म दाखिल होन लगा और सुगंधी को अपना माथा किसी और का माथा मालूम हुआ। जब हवा का एक भोका उसने पसीन से भीग माथे के पाम से गुजरा तो उस ऐसा लगा कि ठण्डा-ठण्डा टीन का टुकड़ा काटकर उसके माथे के साथ चिपका दिया गया है। फिर म दद बंम का बसा मौजूद था पर विचार की भीड़भाड़ और उनके शोर ने उस दद को अपने नीचे दबा रखा था। सुगंधी न कई बार उस दर्द को अपने खयालों के नीचे स निवालकर ऊपर लाना चाहा, पर नाकाम रही। वह चाहती थी कि किसी न किसी तरह उसका अंग अंग दुखन लग। उन्हें सिर म दद हो—एसा दद कि वह सिर्फ दद ही का खयाल करें, बाकी सब कुछ भूल जाए। यह मोचते सोचते उसके दिल में कुछ हुआ—क्या यह दद था?—पल भर के लिए उसका दिल सिकुड़ा और फिर फैल गया—यह क्या था? सानत है। यह तो वही ऊह थी, जो उसके दिल के अंदर कभी सिकुड़ती थी और कभी फैलती थी।

घर की तरफ सुगंधी के कदम उठे ही थे कि रुक गए और वह ठहर कर सोचने लगी, रामलाल दलाल का खयाल है कि उस मरी शक्ल पसंद नहीं आई—शक्ल का तो उमन जिन्न नहीं किया। उसने तो यह कहा था—सुगंधी, पसंद नहीं किया तुम्हें। उसे उस सिर्फ मेरी गन्त ही पसंद नहीं आती। वह, जो अमावस की रात को आया था, कितनी बुरी सूरत थी उसकी। क्या मैं नाक-भौ नहीं चढ़ाई थी? जब वह मेरे साथ सोने लगा था तो मुझे धिन नहीं आइ थी? क्या मुझे उबकाइ आते आते नहीं रुक गई थी? ठीक है पर सुगंधी, तूने उसे दुत्कारा नहीं था, तूने उसे ठुकराया नहीं था, उस मोटर वाले सेठ ने तो तूरे मुह पर थका है ऊह इस 'ऊह का और मतलब ही क्या है? यही कि इस छछू दर के सिर में चमेली का तल ऊह यह मुह और मसूर की दाल और रामलाल, तू यह छिपवली यहा में पकड़कर ले आया है इसी लोण्डिया की इतनी तारीफ कर रहा था तू दस रुपये और यह औरत। लच्छर क्या बुरी है

सुगंधी सोच रही थी और उसके पैर के अंगूठे स लेकर सिर की चोटी तक गम लहरें दौड़ रही थी। उसको कभी अपने आपपर गुस्मा आता था और कभी रामलाल दलाल पर, जिसने रात के दो बजे उसे बमाराम किया। लेकिन फोरन ही दोनों का बेवसूर पाकर वह सठ का खयाल करती थी। उस खयाल के आते ही उसकी आँखें उसके बान उसकी बाह उसकी टाँगें उसका सत्र कुछ मुड़ता था कि उस सठ को कभी देख पाए। उसने अंदर यह इच्छा बड़ी गिढ़न से पदा हो रही कि जो कुछ हो चुका है, एक बार फिर ही सिर्फ एक बार वह होव होने मोटर की तरफ बढ़े, मोटर के अंदर स एक हाथ टाच निचाले और उसमें गेहरे पर रोगनी फेंकें 'ऊह' की आवाज आए और सुगंधी अघाघुघ अपने दोना पजा से उसका मुह नोचना शुरू कर दे। जगली बिल्ली की तरह भगटे और अपनी जगलिया ब सार नाखून जी उसने नय पगन के मुताबिक घना रखे थे, उस मठ ब गाला म गडा दे बाना म पकड़कर उस बाहर घसीट ल और घडाघड पीटना शुरू कर दे, और जय यर जाए जब यर जाए तो रोना शुरू कर दे।

रोने का खयाल सुगंधी को सिर्फ इसीलिए आया कि उसकी आखा मे गुस्स और बेवसी की शिद्दत ने वारण तीन चार बडे बड आसू बन रह थे । एकाएक सुगंधी ने अपनी आखा से मवाल किया, तुम रोती क्यों हो ? तुम्हें क्या हुआ है कि टपकने लगी ही ?' आखा स किया गया सवाल कुछ क्षणी तक उन आसुओ मे तैरता रहा, जी अब पलका पर काप रह थ । सुगंधी उन आसुओ म देर तक उस सूय की घूरती रही, जिधर सेठ की माटर गई थी ।

फट फड फड यह आवाज कहा से आई ? सुगंधी ने चौककर इधर उधर देखा, लेकिन किसीको न पाया अरे ! यह ती उमका दिल फडफडाया था—वह समझी थी, मोटर का इंजन बोला है ! उसका दिल यह क्या ही गया था उसके दिल को ! आज ही यह रोग लग गया था उसे अच्छा भला चलता चलता, एक जगह रकबर धड धड क्या करता था बिलकुल उस पिसे हुए रिकाड की तरह, जी सुइ के नीचे एक जगह आकर रुक जाता था और 'रात कटी गिन गिन तारे कहता कहता 'तारे-तारे की रट लगा देता था ।

आसमान तारो से भटा हुआ था । सुगंधी ने उनकी ओर देखा और कहा, 'कितने सुंदर है ।' वह चाहती थी कि अपना ध्यान किसी और तरफ पलट दे, पर जब उमने 'सुंदर' कहा तो भट से यह खयाल उसके दिमाग मे बूदा, 'ये तारे सुंदर हैं, पर तू कितनी भोण्डी है क्या भूल गई कि अभी अभी तेरी सूरत को फटकारा गया है ?'

सुगंधी कुरूप ती नहीं थी । यह खयाल आते ही वे सारी परछाइया एक एक करके उसकी आखा के सामन आन लगी, जी इन पाच बरसा के दौरान वह आइन म देख चुकी थी । इसमे कोई सदेह नहीं कि उसका रग रूप अब वह नहीं रहा था, जो आज से पाच साल पहले था, जबकि वह सारी चिन्ताओ से मुक्त, अपने मा बाप के साथ रहा करती थी । लेकिन वह कुरूप तो नहीं हो गई थी । उमकी शकल सूरत उन आम औरतो की सी थी, जिनकी ओर मद गुजरते गुजरत घूरकर देख लिया करत है । उसमे वे सारी खूबिया भोजूद थी, जो सुगंधी के खयाल म हर मद उस औरत मे जरूरी समझता है, जिसके साथ उसे एक दो रातें बितानी होती

हैं। वह जान थी, उसके अंग मुन्न थे। वभी-वभी, नहाते समय तब उसकी निगाह अपनी राना पर पड़ती था तो वह खुद उनकी गानाई और गदराहट को पसंद किया करती थी। वह हृगमुप थी। इन पांच बरमा के दौरान शायद ही कोई आदमी उसमें नागुन होकर गया हो बड़ी मिलनसार थी, बड़ी महत्त्व थी। पिछन दिनों, निगमस म, जब वह गोन पीठा म रहा करती था एक नौजवान लन्का उसके पास आया था। सुबह उठकर, जब उसने कमर म जाकर, गटी से अपना बोट उतारा तो बटुआ गायब पाया। सुगंधी का नौकर यह बटुआ से उला था। बेचारा बहुत परेशान हुआ। छुट्टिया बिताव के लिए हैटरावाल् स वम्बई आया था। अब उसके पास वापस जान के त्रिण भी बिरापा न था। सुगंधी न तरस खाकर उसे उसके दस रुपये वापस द दिण थे।

‘मुभम क्या बुराई है?’ सुगंधी त यह सवाल हर उस चीज से किया, जो उसकी आखा के सामन थी। गंस के अघ लैम्प लोह के खम्भे, फुट पाय के चौकीर पत्थर और सडक की उखड़ी हुई बजरी—इन सब चीजा की तरफ उसने थारी-थारी म दखा, फिर आनाश की और निगाह उठाई, जो उसके ऊपर झुका हुआ था, पर सुगंधी को कोई जवाब न मिला।

जवाब उसके अंदर मौजूद था। वह जानती थी कि वह बुरी नहीं, अच्छी है पर वह चाहती थी कि कोई उसका समथन करे कोई कोई

उम बगत कीई उसके वंधी पर हाथ रखकर सिफ इतना कह दे, सुगंधी! कौन कहता है तू बुरी है? जो तुझे बुरा कहे, यह आप बुरा है। नहीं, यह कहने को कोई खाम जरूरत नहीं थी। किसीका इतना भर कह देना काफी था सुगंधी, तू बहुत अच्छी है।’

वह सोचन लगी कि वह क्यों चाहती है, कोई उसकी तारीफ करे? इससे पहले उसे इतनी गिहट से इस बात की जरूरत महसूस न हुई थी। आज क्या वह बेजान चीजों को भी ऐसी नजरी से देखती है, जम उनपर अपने अच्छे होने का एहसास तारी करना चाहती हो। उसके जिस्म का जरा जरा क्या ‘मा बन रहा था? वह मा बनकर घरती की हर चीज को अपनी गोद म लेने के लिए क्या तैयार हो रही थी? उसका जो क्या चाहता था कि वह सामन वाले कम के खम्भे के माथ चिमट जाए और

उमके ठण्डे लोहे पर अपना गान रखल—अन्ने गम-गम गात—और उसकी सारी सर्दी धूम ने ?

थोड़ी देर के लिए उस ऐसा लगा कि गैम के अन्ने लैम्प लोहे के खम्भे, फुटपाथ के चौकोर पत्थर और हर वह चीज, जो रात के सन्नाटे में उसके आसपास थी, हमदर्दी की नजरा से उस देख रही है और उमके ऊपर नुका हुआ आवाज भी, जो मटियाल रंग की ऐसी भाटी चादर भालूम होना था, जिसमें अनगिनत छेद हो रहे हैं, उसकी गानें समझता था और मुग की को भी ऐसा लगता था कि वह तारा का टिमटिमाना समझती है—परन्तु उमके अन्दर यह क्या गड़बड़ थी ? वह क्या अपने अन्दर उम मौसम की फिजा महसूस कर रही थी, जो वाग्लि स पहले देखने में आया करती है ?—उसका जी चाहता था कि उसके जिम्मे का एक-एक तौल रूख खुल जाए और जो कुछ उमके अन्दर उबल रहा है, उनके गस्ते बाहर निकल जाए । पर यह कैसे हो ?

मुगधी गली के नुक्कड़ पर खत डालने वाले गाल बम्बे के पास खड़ी थी । हवा के तंज भोके में बम्बे की लोहे की जीभ का उसके खुले हुए मुँह में लटकी रहती थी पगबड़ाई तो मुगधी की निगाह एकदम उम और उठो, जिधर मोटर गई थी, पर उस कुछ दिखाई न दिया । उसके अन्दर कितनी जबरदस्त इच्छा थी कि वह सड़ मीटर पर एक बार फिर आए और और

न आए बला से मैं अपनी जान क्या बेकार हलकान करूँ । घर चलते हैं और आराम में सम्बी तानकर सोते हैं । इन भगडा में रस्ता ही क्या है ? मुफ्त की मिररर्दों ही तो है चल मुगधी, घर चल ठण्डे पानी का एक डोंगा पी और थोड़ा सा वाम मलबर सो जा फस्ट बराम मोद आएगी और सब ठीक हो जाएगा सड़ और उस मोटर की ऐसी की तसी ।

यह सोचते हुए मुगधी का बोन हलका हो गया, जैसा वह किसी ठण्डे साप्ताह में नहा धोकर बाहर निकली हो । जिस तरह पूजा करन के बाद उसका शरीर हलका हो जाता था, उसी तरह अब भी हलका हो गया था ।

घर की तरफ चलन लगी तो विचारा का बोझ न होन के कारण उसके कदम कई बार लड़खड़ाए ।

अपन मकान के पास पहुँची तो एक टीस के साथ फिर सारी घटना उसके मन में उठी और दद की तरह उसके रोए-रोए पर छा गई । कदम फिर बोझिल ही गए और वह इस बात को शिद्दत के साथ महसूस करने लगी कि घर से बुलाकर, बाहर बाजार में मुह पर रीशनी का चाटा मारकर, एक आदमी ने अभी-अभी उसकी हतक की है । यह खयाल आया तो उमन अपनी पसलियों पर किसीके सख्त अगूठे महसूस किए, जैसे कोई उसे भेड़ बकरी की तरह दबा दबाकर देख रहा ही कि गोश्त भी है या बाल ही है । 'उस सेठ न, परमात्मा करे ' सुगंधी ने चाहा कि उसे शाप दे, पर सोचा, शाप देने से क्या बनगा । भजा तो तब था कि वह सामने होता और वह उसका बजूद के हर ज़र्रे पर अपनी धक्कारें लिख देती उसके मुह पर कुछ ऐसी बात कहती कि वह जिदगी भर बेचन रहता ।

कपड़े फाड़कर उसके सामने नहीं हा जाती और कहती, 'यही लेने आया था न तू ? ल, दाम दिए बिना ले जा इमे पर जो कुछ मैं हूँ, जी कुछ मेरे अदर छिपा है वह तू क्या तेरा बाप भी नहीं खरीद सकता '

बदला देने के नये नये तरीके सुगंधी के दिमाग में आ रहे थे । अगर उस सेठ से एक बार, सिर्फ एक बार उसकी मुठभेड़ ही जाए तो वह यह करे—यू उमस बदला ले—नहीं, यू नहीं, यू—लेकिन जब सुगंधी सोचती कि सठ से उसका दाजारा मिलना असम्भव है तो वह उसे एक छोटी सी गाली देने पर ही खुद को रात्री कर लेती—बस, सिर्फ एक छोटी सी गाली, जो उसकी नाक पर चिपकू मक्खी की तरह बठ जाए और हमेशा वही जमी रह ।

इसी उधेड़बुन में वह दूसरी मजिल पर अपनी खोली के पास पहुँच गई । चोली में से चाबी निकालकर ताला खोलन के लिए हाथ बढ़ाया तो चाबी हवा ही में घूमकर रह गई । कुण्डे में ताला नहीं था । सुगंधी ने किवाड़ अदर की ओर दबाए तो हत्की-सी चरचराहट पैदा हुई । अदर से किसीन कुण्डी खाली और दरवाजे न जम्माई ली । सुगंधी अदर

दाखिन ही गई ।

माधो मूछा में हसा और दरवाजा बंद करके मुगंधी से कहना लगा, 'आज तून मरा कहना मान ही लिया—सुबह की सैर त दुगस्ती के लिए बड़ी अच्छी होती है । हर रोज इसी तरह सुबह उठकर घूमन जाया करेगी तो तेरी नारी सुन्ती दूर ही जाएगी और तेरी कमर का वह दद भी गायब हो जाएगा, जिसकी शिकायत तू आए दिन किया करती है । विक्टोरिया गार्डन तक तो हा आई होगी तू ? क्यों ?'

मुगंधी ने कोई जवाब नहीं दिया और न माधो ने जवाब चाहा । दर-असल जब माधो बात किया करता था तो उसका मतलब यह नहीं होता था कि मुगंधी उसमें जरूर हिस्सा ले और मुगंधी जब कोई बात किया करती थी तो यह जरूरी नहीं होता था कि माधो उसमें भाग ले—चूँकि कोई बात करनी होती थी, इसलिए वे कुछ कह दिया करते थे ।

माधो बेंत की कुर्मी पर बैठ गया, जिसकी पीठ पर उसके तेल चुपड़े मिर न मल का बहुत बड़ा धावा बना रखा था, और टांग पर टांग रख-कर अपनी मूछा पर उगलिया करने लगा ।

मुगंधी पलंग पर बैठ गई और माधो से कहन लगी, 'मैं आज तेरी बाट ही देन रही थी ।'

माधो बड़ा सितपिटाया, 'मरी बाट । पर तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं आज आन वाला हूँ ?'

मुगंधी के भिचें हुए हाठ खुले, उनपर एक पीली-सी मुस्कराहट नमू-दार हुई, 'मैं रात तुम्हें सपना म देखा था—उठी तो कोई भो न था । सो मन ने कहा चलो, कहीं बाहर घूम आए और '

माधो मुग होकर बीला, 'और म आ गया भई, बड़े लोगा की बातें बड़ी पक्की होनी हैं । किसीन ठीक कहा है दिल को दिल से राह है तूने यह सपना कब देखा था ?'

मुगंधी ने उत्तर दिया, 'चार बजे के करीब ।'

माधो कुर्सी पर बैठकर मुगंधी के पाम बैठ गया, 'और मैंने तुम्हें ठीक दो बजे सपने म देखा जैसे तू फूला वाली साड़ी अरे, बिलकुल यही साड़ी पहन मेरे पास खड़ी है । तेरे हाथों में क्या था तेरे हाथों

मे ? हा, तेरे हाथा मे रुपयो से भरी हुई थैली थी । तून् वह थैली मेरी भोली मे रख दी और कहा, माधो, तू चिन्ता क्यों करता है ? ले यह थैली अरे, तेरे-मेरे रुपये क्या दो हैं ? सुगन्धी तरी जान की कम, फौरन उठा और टिकट बनाकर इधर का रस किया क्या बताऊ, बड़ी परेशानी है । बैठे बैठे एक केस हो गया है । अब बीस-तीस रुपये हा तो इस्पेक्टर की मुट्ठी गम बरके छुटकारा मिले थक तो नहीं गई तू ? लेट जा, मैं तेरे पाव दबा दू । घूमन की घादत न हो तो थकन हो ही जाया करती है । इधर मेरी तरफ पैर बरके लेट जा ।'

सुगन्धी लेट गई । दोनों बाहा का तबिया बनाकर, वह उनपर सिर रखकर लेट गई और उस सहजे में, जो उसका अपना नहीं था, माधो सकहन लगी, 'माधो, यह किस मुए ने तुझपर कैसे किया है ? जेल वेल का डर हो तो मुझमे कह दे । बीस तीस क्या, सौ पचास भी ऐसे मौका पर पुलिस के हाथ मे थमा दिए जाए तो फायदा अपना ही है—जान बची लाखा पाए । बस-बस, अब जाने दे, थकन कुछ ज्यादा नहीं है—मुट्ठी चापी छोड़ और मुझे सारी बात सुना । केम का नाम सुनते ही मेरा दिल धक धक करने लगा है वापस कब जाएगा तू ?'

माधो को सुगन्धी के मुह मे शराब की वास आई । उसने यह मौका अच्छा समझा और झट से कहा, 'दोपहर की गाडी से वापस जाना पड़ेगा । अगर शाम तक सब इस्पेक्टर को सौ पचास न थमाए तो ज्यादा देने की ज़रूरत नहीं, मैं समझता हूँ, पचास मे काम चल जाएगा ।'

'पचास !' यह कहकर सुगन्धी बड़े आराम से उठी और उन चार तस्वीरो के पास धीरे धीरे गई, जो दीवार पर लटक रही थी । बायी तरफ से तीसरे फ्रेम मे माधो की तस्वीर थी । बड़े-बड़े फूली वाले पर्दे के आगे, कुर्सी पर वह दोनों राना पर अपने हाथ रखे बैठे था । एक हाथ मे गुलाब का फूल था । पास ही तिपाई पर दो मोटी मोटी बिताबें धरी थी । तस्वीर खिचवाते समय, तस्वीर खिचवान का खयाल माधो पर इतना छा गया था कि उसकी हर चीज तस्वीर से बाहर निकल निकलकर—जैसे पुकार रही थी—'हमारा फोटो उतरेगा ' 'हमारा फोटो उतरेगा ।

कैमरे की तरफ माधो आखें फाड़ फाड़कर देख रहा था और ऐसा

मालूम होता था कि फोटो उतरवाते समय उसे बड़ी तकनीक ही रही है।

सुगंधी खिलखिलाकर हस पड़ी— उसकी हसी कुछ ऐसी तीखी और नुकीली थी कि माधो को मुझ्या सी चुभी। पलंग पर स उठकर वह सुगंधी के पास आ गया, जिसकी तस्वीर देखकर तू इतने जोर में हसो है।'

सुगंधी न बाण हाथ की पहली तस्वीर की तरफ इशारा किया, जो म्युनिसिपैलिटी के सफाई-दारोगा की थी, 'इसकी मुनशीपालटी के इस दारोगा की जरा देख तो इमका थोबड़ा, कहता था, एक रानी मुझपर आगिव हो गई थी ऊह 'यह मुह और मसूर की दाल ' यह कहकर सुगंधी न फ्रेम को इस जोर से खींचा कि दीवार में से कील भी पलस्तर सहित उखड़ आई।

माधो का अचरज अभी दूर न हुआ था कि सुगंधी ने फ्रेम को बिड़की से बाहर फेंक दिया। दो मजिस्ता से वह फ्रेम नीचे जमीन पर गिरा और काच टूटन की भनकार मुनाई दो। सुगंधी ने उस भनकार के साथ कहा, 'रानी भगिन बचरा उठाने आएंगी तो मेरे इस राजा को भी माध ले जाएंगी।'

एक बार फिर उसी नुकीली और तीखी हसी की फुहार सुगंधी के होंठों से गिरनी शुरू हुई, जैसे वह उनपर चाकू या छुरो की धार तेज कर रही हो।

माधो बड़ी मुश्किल से मुस्कराया। फिर हसा, 'ही-ही ही ।'

सुगंधी ने दूसरा फ्रेम भी तोच लिया और बिड़की से बाहर फेंक दिया, 'इस साले का यहा क्या मतलब है ? भोण्डी दाकल का कोई आदमी यहा नही रहगा कथो माधा ?'

माधो फिर बड़ी मुश्किल से मुस्कराया और फिर हसा, 'ही ही-ही ।'

एक हाथ से सुगंधी न पगड़ी वाले की तस्वीर उतारी और दूसरा उस फ्रेम की तरफ बग़ाया, जिसमें माधो का फोटो जड़ा था। माधो अपनी जगह पर सिमट गया, जैसे हाथ उसीकी तरफ बढ़ रहा हो। पल भर में फ्रेम कील सहित सुगंधी के हाथ में था।

जोर का ठहाका लगाकर उसने 'ऊह' की और दोनों फेम एकमात्र खिडकी में से बाहर पेंक दिए। दो मजिला से जब फेम जमीन पर गिरे और काच टूटन की आवाज आई तो माधो को ऐसा मालूम हुआ कि उसके अंदर कोई चीज टूट गई है। बड़ी मुश्किल से उसने हसकर इतना कहा, अच्छा किया। मुझे भी यह फीटी पसंद नहीं था।'

धीरे धीरे सुगंधी माधो के पास आई और कहने लगी तुझे यह फोटा पसंद नहीं था पर मैं पूछती हूँ, तुझमें है ऐसी कौन सी चीज, जो किसीको पसंद आ सकती है—यह तरी पकौड़े सी नाक, यह तरावाना भरा माथा, ये तरे मूजे हुए नधुने ये तरे मुड़े हुए कान, यह तर मुह की बास यह तर वदन का मेल। तुझे अपना फोटो पसंद नहीं था। ऊह! पसंद क्या होता, तेरे ऐव जी छिपा रहे थे उसने आजकल जमाना ही ऐसा है जो ऐव छिपाए बहो बुरा

माधो पीछे हटता गया। आखिर जब वह दीवार के साथ लग गया तो उसने अपनी आवाज में जोर पैदा करके कहा 'दल सुगंधी, मुझे ऐसा दिखाइ देता है कि तूने फिर स अपना धंधा गुरु कर दिया है अब तुझसे आखिरी बार कहता हूँ

सुगंधी ने इससे आगे माधो की नकल उतारत हुए कहना शुरू किया 'अगर तून फिर से अपना धंधा गुरु किया तो बस तरी मेरी टूट जाएगी। अगर तून फिर किसीको अपने यहा ठहराया तो चूटिया से पकड़कर तुझे बाहर निकाल दूंगा इस महीन का खच मैं पूना पहुचत ही मनीषाडर कर दूंगा हा क्या भाटा है इस खोली का?'

माधो चक्करा गया।

सुगंधी ने कहना शुरू किया, 'मैं बताती हूँ, पंद्रह रुपया भाड़ा है इस खोली का और दस रुपया भाड़ा है भरा और जैसा तुझे मालूम है, अठाई रुपय दलाल के। बाकी रह साढे मात, रह न साढे मात? उन साढे सात रुपयिया में मैंने ऐसी चीज देने का वचन दिया था जो मैं द ही नहीं सकती थी और तू ऐसी चीज लेन आया था, जो तू ले ही नहीं सकता था तेरा मेरा नाता ही क्या था? कुछ भी नहीं। बस, य दस रुपय तरे और मेरे बीच में बज रहे थे, सो हम दोनों ने मिलकर ऐसी बात

की कि तुम्हें मेरी जरूरत हुई और मुझे तेरी पहले तरे और मेरे बीच
मदद रूप्य बजत थे, आज पचास बज रहे हैं। तू भी उनका बजना सुन
रहा है और मैं भी उनका बजना सुन रही हूँ यह तूने अपने वाला का
क्या सत्यानाश कर रखा है ?'

यह कहकर सुगंधी ने माधो की टोपी उगली से एक तरफ उड़ा दी।
यह हरकत माधो की बहुत बुरी लगी। उसने बड़े कड़े स्वर में कहा,
'सुगंधी !'

सुगंधी ने माधो की जेब में रुमान निकालकर सूझा और जमीन पर
फेंक दिया, ये चिथड़े, ये चिथियाँ उफ ! कितनी बुरी बाम आती हैं,
उठाके बाहर फेंक डालो !'

माधो बिरलाया, 'सुगंधी !'

सुगंधी ने तब तक मचाया, 'सुगंधी के बच्चे, तू आया किमलिए है
यहाँ ? तेरी माँ रहती है इस जगह, जो तुम्हें पचास रूप्य देगी ? या तू
कई एमा बड़ा गबन जवान है जो मैं तुम्हें पर आशिक हो गई हूँ ? कुत्ते,
कमीन ! मुझपर रोब गाठता है ! मैं तेरी तबल हूँ क्या ? भिखमग,
तू अपने आपका समझ क्या बठा है ? मैं पूछती हूँ तू है कौन ?
चोर या गठकतरा ? इस समय तू मेरे मकान में क्या करने आया है ?

बुलाऊ पुलिस को ? पुनः मैं तुम्हें पर क्या ही या न हाँ यहाँ तो तुम्हें
पर एक केस लड़ा कर दूँ

माधो सहम गया। दब्र सहजे मैं सिर्फ इतना कह सका सुगंधी, तुम्हें
क्या हो गया है ?

तेरी माँ का सिर तू होता कौन है मुझमें ऐसे सवाल करने वाला ?
भाग रहा मैं, नहीं तो 'सुगंधी की ऊँची आवाज सुनकर उसका खान-
मारा कुत्ता, जो मूखी हुई चप्पला पर मुह रखे सो रहा था, हड़बड़ा
कर उठा और माधो की तरफ मुह उठाकर भूकने लगा। कुत्ते के भूकने के
साथ ही सुगंधी जोर जोर से हसन लगी।

माधो डर गया। गिरी हुई टोपी उठान के लिए वह झुका तो सुगंधी की
गरज सुनाई दी, 'खबरदार पड़ी रहने द बही तू जा, तेरे पूना पट्टेते
ही मैं इसका मनोआहर कर दूँगी।' यह कहकर वह जोर से हसी और

हसती-हसती बेंत की कुर्सी पर बैठ गई। उसके खाने मारे कुत्ते ने भूक भक-कर माधी को कमरे से बाहर निकाल दिया। उस सीढ़िया उतार जब कुत्ता अपनी रुण्डमुण्ड दुम हिलाता सुगंधी के पास आया और उसके बंदमाक पाम बैठकर कान फड़फड़ान लगा तो सुगंधी चौंकी। उसने अपने चारों ओर एक भयानक सनाटा देखा—ऐसा सनाटा, जो उसने पहल कभी न देखा था। उसे ऐसा लगा कि हर चीज खाली है जसे मुसाफिरा सलदी हुई रेलगाडी सब स्टेशन पर मुसाफिर उतारकर अब तोह के शेड में बिलकुल अकेली खडी है। यह खालीपन, जो अचानक सुगंधी के अंदर पैदा हो गया था, उस बहुत तकलीफ दे रहा था। उसने काफी देर तक उस गूँथ को भरन का प्रयास किया लेकिन व्यर्थ। वह एक ही समय में अनभिन्न विचार अपने दिमाग में ठूसती थी, पर एकदम छलनी का सा हिस्सा था। इधर दिमाग को भरती थी, उधर वह खाली हो जाता था।

बड़ी देर तक वह बेंत की कुर्सी पर बैठी रही। सोच विचार के बाद जब उसको अपना मन बहलान का कोई तरीका न सूझा तो उसने अपने खाने मारे कुत्ते को गोद में उठाया और सागवान के चौड़े पत्तों पर उस बगल में लिटाकर सो गई।

ममद भाई

फारस रोड से आप उस आर भीतर गली में चले जाइए जो सफेद गली कहलाती है तो उसके अन्तिम सिरे पर आपको कुछ होटल मिलेंगे। यो तो बम्बई में कदम पर होटल और रेस्टोरा होते हैं लेकिन ये रेस्टोरा इसलिए बहुत निलचस्प और अनूठे हैं क्योंकि ये उस इलाके में हैं जहाँ भान भात की वेश्याएँ बसती हैं।

एक युग बीत चुका है। बस, आप यही समझिए कि बीस वर्ष के लग-भग जब इन रेस्टोराओं में मैं चाय पीया करता था और खाना खाया करता था। सफेद गली से आगे निकलकर 'प्ले हाउस' आता है। उधर दिन भर शोर शराबा रहता है। सिनेमा के शी दिन-भर चलते रहते थे। चम्पिया होती थी। सिनेमा घर शायद चार थे। उनके बाहर बड़े विचित्र ढंग में सिनेमा के कमचारी घंटियाँ बजा बजाकर लोगों को निमन्त्रण देते थे—'आओ, आओ,—दो आन में—फस्ट क्लास खेल दो आन में।'।

फभी-फभी ये घंटियाँ बजाने वाले जबदस्ती लोगों को भीतर दबेल देते थे—बाहर कुर्सियों पर चम्पी बरान वाले बैठे होते थे जिनकी खोपड़ियों की मरम्मत बड़े वज्ञानिक ढंग से की जाती थी। मालिश अच्छी चीज है लेकिन भेरी समझ में नहीं आता कि बम्बई के रहने वाले इसपर इतने मोहित क्यों हैं। दिन को और रात को हर समय उन्हें तेल मालिश की आवश्यकता अनुभव होती है। आप यदि चाहें तो रात के तीन बजे बड़ी आसानी से तेल मालिशियाँ बुलवा सकते हैं। या भी सारी रात, चाहे आप बम्बई के किसी कोन में हों, आप अवश्य ही यह आवाज सुनते रहेंगे—पी—पी—पी।'

मह' पी' चम्पी का संक्षिप्त रूप है।

फारस रोड या तो एक सड़क का नाम है लेकिन वास्तव में यह उस कानूकी का नाम है जहाँ वेश्याएँ रहती हैं। यह बहुत बड़ा इलाका है। इसमें कई गलियाँ हैं, जिनके विभिन्न नाम हैं, लेकिन सुविधास्वरूप

इसकी हर गली को फारस रोड या सफेद गली कहा जाता है। इमम नगल लगी हुई सैकड़ा दुकानें हैं, जिनमें छोटी बड़ी आयु और अच्छे बुर रंग की स्त्रिया अपना शरीर बेचती हैं। विभिन्न दामो पर आठ आने से आठ रुपय तक, आठ रुपये से आठ सौ रुपये तक—हर दाम की स्त्री आपका इस इलाके में मिल सकती है।

यहूदी, पंजाबी, मराठी, काश्मीरी, गुजराती, बंगाली, एंग्लो इंडियन, फ्रांसीसी, चीनी, जापानी अथात् हर प्रकार की स्त्री आपको यहां से प्राप्त हो सकती है—य स्त्रिया कमी होती है—भ्रमा कीजिए, इस समय मैं आप मुझमें कुछ न पूछिए—बस स्त्रिया होती है—और उनको ग्राहक मिल ही जाते हैं।

इस इलाके में बहुत से चीनी भी आवाज है। मालूम नहीं य क्या कारोबार करते हैं लेकिन रहते इसी इलाके में हैं। कुछ एक तो रस्दारा चलाते हैं जिनके बाहर बोर्डों पर ऊपर नीचे कीड़े मकौड़ा की शक्ल में कुछ लिखा होता है—मालूम नहीं क्या।

इस इलाके में हर विजनेस और हर जाति के लोग आवाज है। एक गली है जिसका नाम अरब लेन है। वहां के लोग उसे अरब गली कहते हैं। उन दिनों, जिन दिनों की मैं बात कर रहा हू इस गली में लगभग बीस पश्चीम अरब रहते थे जो स्वयं को मोतियों के व्यापारी कहते थे बाकी आवादी पंजाबिया और रामपुरियों की थी।

इस गली में मुझे एक कमरा मिल गया था जिसमें कभी सूरज का प्रकाश न आ पाता था। हर समय बिजली का बल्ब जलता रहना था। इसका किराया साढ़े नौ रुपये मासिक था।

आप यदि कभी बम्बई में नहीं रहें तो शायद आप मुश्किल ही में विश्वास करेंगे कि वहां किसीको किसी दूसरे से सरोकार नहीं होता। यदि आप अपनी खोली में मर रहे हैं तो आपको कोई नहीं पूछेगा। आपके पड़ोस में हत्या हो जाय क्या भजाल जो आपको उसकी खबर हो जाय—लेकिन वहां अरब गली में केवल एक व्यक्ति ऐसा था जिसे अडास पड़ोस के हर व्यक्ति से दिलचस्पी थी—और उसका नाम ममद भाई था।

ममद भाई रामपुर का रहने वाला था। कमाल का फकेत गतके

और बनोट की बत्ता में निपुण—मैं जब घर च गली में आया तो अक्मर होटल में उमका नाम सुनने में आया लेकिन बहुत दिनों तक उससे मुलाकात न हो सकी ।

मैं सुबह-सवेरे अपनी खोली से निकल जाता था और बहुत रात गए लौटता था—लेकिन ममद भाई से मिलने की बड़ी उत्सुकता थी, क्योंकि उनके सम्बन्ध में घर च गली में बहुत सी कहानियाँ प्रचलित थीं—कि बीस पच्चीस आदमी यदि लाठियों से लैस होकर उसपर टूट पड़ें, तो भी वे उसका बाल तक बाधा नहीं कर सकते । एक मिनट के अन्दर अन्दर वह उन सबको चित कर देता है और यह कि उम जैसा दुरोमार सार सम्बन्ध में नहीं मिल सकता । या खुरी मारता है कि जिसके लगती है उसे पता भी नहीं चलता—सो कदम तक बिना कुछ अनुभव लिए चलता रहता है और अन्त में एकदम डेर हो जाता है । लोग कहते हैं कि यह उसके हाथ की सफाई है ।

उसके हाथ की यह सफाई देखने की मुझे उत्सुकता नहीं थी लेकिन यो उनके बारे में अनेक बातें सुन-सुनकर मेरे मन में यह इच्छा अवश्य उत्पन्न हो चुकी थी कि मैं उसे दूँ । उससे यानें न पकड़ लेकिन निश्चय से देख लू कि क्या है—इस पूरे इलाके पर उमका व्यक्तित्व छाया हुआ था । वह बहुत बड़ा दादा अर्थात् बढमास था लेकिन इसके बावजूद लोग कहते थे कि उसने किसीकी बहू बेटो की ओर कभी आँख उठाकर नहीं देखा । 'लगोट का बहुत पक्का है'—'गरीबा के दुख दद का साझीदार है ।' केवल घर च गली ही नहीं, आस पास जितनी गलियाँ थी उनमें जितनी दीन, दरिद्र स्त्रियाँ थी, सब ममद भाई को जानती थी क्योंकि वह प्रायः उनकी आर्थिक सहायता करता रहता था । लेकिन वह स्वयं कभी उनके पास नहीं जाता था, अपने किसी कम आयु के शिष्य को भेज देता था और उनका कुशल पूछ लेता था ।

मुझे मालूम नहीं कि उसकी आय के क्या साधन थे, अच्छा खाता था, अच्छा पहता था । उसके पास एक छोटा-सा तागा था जिसमें बड़ा स्वस्थ टट्टू जुता होता था । वह स्वयं ही उसे चलाना था । साथ दो तीन शिष्य होते थे । भिड़ी बाजार का एक चक्कर लगाकर या किसी दरगाह में

होकर वह उस तागे पर वापस अरब गली आ जाता था और किसी ईरानी के होटल में बैठकर अपने गिप्या के साथ गतके और वनोट की बातों में निमग्न हो जाता था।

मरी खोली के साथ ही एक और खोली थी जिमम मारवाड का एक मुसलमान नतक रहता था। उसने मुझे ममद भाई की सैकड़ा कहानियाँ सुनाई—उसने मुझे बताया कि ममद भाई लाख रुपये का आदमी है। एक बार उसे जैजा ही गया था। ममद भाई को पता चला तो उसने फारस रोड के सबके सब डॉक्टर उसकी खाली में इकट्ठे कर दिये और उनसे कहा, 'दखो, अगर आशिक हुसैन को कुछ हो गया तो मैं तुम सब का मफाया कर दूंगा।' आशिक हुसैन ने बड़े आदरपूर्ण स्वर में मुझसे कहा—'मटो साहब! ममद भाई फरिश्ता है—फरिश्ता। जब उसने डाक्टरों को धमकी दी तो वे सब वापस लगे। ऐसा लगकर इलाज किया कि मैं दो हो दिनों में ठीक-ठाक हो गया।

ममद भाई के सम्बन्ध में अरब गली के गन्द और बेहूदा रेस्टोरान्ना में मैं और भी बहुत कुछ सुन चुका था। एक व्यक्ति ने जो शायद उसका गिप्य था और स्वयं को बहुत बड़ा फकीर समझता था, मुझसे कहा था कि ममद भाई अपने नफे में एक ऐसा आबदार खजूर हमेशा उडसकर रखता है जो उस्तरे की तरह शेर भी कर सकता है—और यह खजूर म्यान में नहीं होता—खुला रहता है—बिल्कुल नंगा और वह भी उसके पेट के साथ। उसकी नोक इतनी लीखी है कि यदि बातें करते हुए झुकते हुए उससे जरा सी गलती हो जाय तो ममद भाई का एकदम काम तमाम हो जाय।

प्रत्यक्ष है कि उसको देखने और उसमें मिलने की उत्सुकता दिन प्रतिदिन मेरे मन में बढ़ती गई। मालूम नहीं, मैं अपनी कल्पना में उसके चेहरा मोहर का क्या रेखाचित्र बनाया था। जो हो, इतने समय के बाद मुझे बस इतना स्मरण है कि मैं एक देवकाय व्यक्ति को अपनी मानसिक आत्मा के सामने देखता था जिसका नाम ममद भाई था—उस प्रकार का व्यक्ति जो हरक्युलिस साइकिल पर विद्यापन स्वरूप दिया जाता है।

मैं सुबह सवेरे अपने काम पर निकल जाता था और रात के दस बजे

वे लगभग खान आदि से निरटकर बापन आकर सुरत सो जाता था। इस बीच म मदद भाई म मुलाकात हो सकती थी। मैंने कई बार सोचा कि काम पर न जाऊ और सारा दिन घर गली में गुजार कर मदद भाई को देखने की कोशिश करूँ, लेकिन अफसोस कि म ऐसा न कर सका, इसलिए कि मेरी नोकरी बड़ी बहाना ढग की थी।

मदद भाई से मुलाकात कराने की सोच ही रहा था कि अचानक इफ्तुएजा ने मुझ पर घार आक्रमण किया—ऐसा आक्रमण कि मैं बीखला गया। मुझे भय था कि यह बिग-बग कहीं निमोनिया में परिवर्तित न हो जाय क्योंकि घर गली के एक डाक्टर ने ऐसा ही कहा था। मैं बिल्कुल अकेला था। मेरे साथ जा एक व्यक्ति रहता था, उस पूना में एक नोकरी मिल गई थी, इसलिए वह भी पाम न था। घुस्कार म फुका जा रहा था, प्याम इतनी लगती थी कि जो पानी सोली में रखा था मेरे लिए काफी नहीं था, और मित्र सम्बन्धी कोई पास नहीं था जो मेरी देख रेख करता। मैं बहुत 'सहन जान' हूँ, देख रेख की मुझे प्राय आवश्यकता नहीं हुआ करती, लेकिन न जाने वह कौन सा चुम्मार था, इफ्तुएजा था, मलैरिया था या कुछ और था, लेकिन उसने मेरी रीढ़ की हड्डी तोड़ दी। मैं बिल-विलान लगा। मेरे मन म पहली बार इच्छा उत्पन्न हुई कि मेरे पास कोई हो जो मुझे ढारस दे। ढारस न दे तो कम में कम क्षण भर के लिए अपनी शक्ति दिखाकर चला जाय, ताकि मुझे इसीसे ढारस ही जाय कि कोई मुझे पूछने वाला भी है।

दो दिन तक मैं विस्तर पर पड़ा कराहता रहा, लेकिन कोई न आया—आता भी कौन? मेरी जान पहचान के आदमी ही कितने थे—दो, तीन या चार—और वे इतनी दूर रहते थे कि उन्हें मेरी मृत्यु का भी पता न चल सकता था। और फिर वहाँ चम्बई म कौन किसको पूछता है—कोई भर या जिए उनकी बला से।

मेरी बहुत बुरी हालत थी। आशिव हमें नतक की पत्नी बीमार थी, इसलिए वह अपने घर आ चुका था। यह मुझे होटल के छोकरे न बताया था। अब मैं किसका बुलाता?

बड़ी निडाल स्थिति में था और सोच रहा था कि स्वयं नीचे उतरूँ

और किसी डाक्टर के पास जाऊ कि किसो न दरवाजा खटखटाया। मैं सोचा कि होटल का छोकरा, जिस बम्बई की भाषा में 'बाहिर बाता' कहत है होगा। बड़े मरियल स्वर में कहा, 'आ जाओ।'।

दरवाजा खुला और एक छरहर उम्र का व्यक्ति न, जिसकी मूछें मुझे सबसे पहले दिखाई दीं भीतर प्रवेश किया।

उसकी मूछें ही सब कुछ थीं। मेरा मतलब यह है कि यदि उसकी मूछें न होती तो बहुत सम्भव है कि वह कुछ भी न होता। ऐसा मालूम होता था कि उसकी मूछा न ही उसके पूरे अस्तित्व की जीवन प्रदान कर रखा है।

वह भीतर आया और अपनी विलियम बैमर ऐसी मूछा का एक उगली से ठीक करत हुए मरी साट न पाग गाया। उनके पीछे तीन चार व्यक्ति थे। विचित्र मुग्धावृत्तियां थी उनकी—मैं बहुत हैरान था कि य किन है और मेरे पास क्या आए ह ?

विलियम बैमर ऐसी मूछा और छरहरे बदन वाल व्यक्ति न मुझमें बड़े कोमल स्वर में कहा 'मिंटो साहब आपन हृद कर दी, साला मुझे इत्तना क्या न दो ?

मटो का बिन्टी बन जाना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी। उसके अतिरिक्त मैं इस मूछ में भी नहीं था कि मैं उसका सुधार करता। मैं अपने क्षीण स्वर में उसकी मूछा से केवल इतना कहा—'आप कीन हैं ?'

उसने सक्षिप्त सा उत्तर दिया—'ममद भाई।'।

मैं उठकर बैठ गया। ममद भाई तो तो आप ममद भाई हैं—ममहर दादा।

मैं यह तो कह लिया लेकिन तुरन्त मुझे अपने बडेपन का अनुभव हुआ और मैं ख गया। ममद भाई न छोटी उगली से अपनी मूछा के सरत वाल जरा ऊपर किए और मुस्कराया—'हा बिन्टी भाई—मैं ममद हू—यहा का ममहर दादा—मुझे बाहिर बाते से मालूम हुआ कि तुम बीमार हो—साला यह भी कोई बात है कि तुमने मुझे खबर न की।' ममद भाई का मस्तक फिर जाता है जब कोई ऐसी बात होती है।

मैं उत्तर में कुछ करने वाला था कि उसने अपना साथिया मे से एक स सम्बोधित होकर कहा, 'अरे क्या नाम है तारा जा भागकर जा, और क्या नाम है उस डाक्टर का ममद भग ना, उससे कह कि ममद भाई तुम्हें बुलाता है एकदम जल्दी आ एकदम सब काम छोड़ दे और जल्दी आ और देख, सालों से कहना सब दवाए लेता आए ।'

ममद भाई ने जिसकी यह आदेश दिया था, वह एकदम चला गया । मैं सोच रहा था—मैं उसकी देख रहा था—वे समस्त कहानिया मेरे मस्तिष्क में उतर फिर रही थी जो मैं उसके सम्बन्ध में लोग से सुन चुका था, लेकिन गड्ढमड्ड रूप में क्योंकि बार बार उसकी ओर देखने का कारण उसकी मूर्छें सब पर छा जाती थी—बड़ी भयानक लेकिन बड़ी सुंदर मूर्छें थी । लेकिन ऐसा लगता था कि उस बेहरे को, जिसके तबत तबत बड़े कामता हैं बबल भयानक बनाने के लिए यह मूर्छें रखी गई हैं । मैं सोचा कि वास्तव में यह व्यक्ति उतना भयानक नहीं है जितना कि उसने स्वयं को बना रखा है ।

दासी में कोई दुर्सी नहीं थी । मैं ममद भाई से कहा कि वह मेरी चारपाई पर बैठ जाए लेकिन उसने इकार कर दिया और बड़े रुखे से स्वर में कहा, 'ठीक है—हम रुके रहेंगे ।'

फिर उसने टहलते हुए—हालांकि उस खोली में इस ऐश्वर्य की कोई गुंजाइश नहीं थी—कच्चे का दामन उठाकर पायजामे के नफे से एक खजर निकाला—मैं समझा चांदी का है । इस प्रकार खमक रहा था कि मैं आपस क्या कहूँ । यह खजर निकालकर पहले उसने अपनी कलाई पर फेरा जो बाल उसकी पकड़ में आ गए, सब साफ हो गए । इसपर वह स लुप्त ना हो अपने नाखून तराशने लगा ।

उसके आगमन ही से मेरा बुखार कई डिग्री कम हो गया था । अब मैं कुछ होश में आकर कहा—'ममद भाई ! यह छुरी तुम इस तरह नफे में डालती बिल्कुल अपने पेट के साथ रखत हो—इतनी तेज है, क्या तुम्हें डर नहीं लगता ?'

ममद ने खजर से अपने नाखून की एक फाफ बड़ी सफाई से उड़ाने हुए उत्तर दिया 'किन्टो भाई ! यह छुरी दूसरा के लिए है । यह अच्छी

तरह जानती है। साली अपनी चीज है, मुझे कैसे नुकसान पहुँचाएगी।'

छुरी सजा सम्बन्ध उसने स्थापित किया था, वह कुछ ऐसा ही था जम कोई माया वाप कह कि यह मेरा बेटा है या बटी है, इसका मुझपर कैसे हाथ उठ सकता है ?

डाक्टर आ गया—उसका नाम पिटो था और मैं विम्टा। उसने ममद भाई को अपने निश्चयनद्वारा सलाम किया और पूछा कि मामला क्या है।

जो मामला था वह ममद भाई ने बता दिया—सक्षिप्त, लेकिन कड़े शब्दों में, जिनमें आता थी कि देखा, अगर तुमने विम्टो भाई का इलाज अच्छी तरह न किया तो तुम्हारी खर नहीं।

डाक्टर पिटो ने आनाकारी बच्चों की तरह अपना काम किया। भरी नब्ब देखी। स्टेथेस्कोप लगाकर मेरी छाती और पीठ का निरीक्षण किया। ढंछ प्रेशर देखा। मुझमें मेरी बीमारी का विवरण पूछा। उसने बाद उसने मुझसे नहीं, ममद भाई से कहा 'कोई फिक्र की बात नहीं—मले रिया है—मैं इन्जेक्शन लगा देता हूँ।'

ममद भाई मुझमें कुछ दूर खड़ा था। उसने डाक्टर की बात सुनी और खजर से अपनी कलाई के पास उठाते हुए कहा 'मैं कुछ नहीं जानता—इन्जेक्शन देना है तो द दो, लेकिन अगर इस कुछ हा गया तो'

डाक्टर पिटो काप उठा, 'नहीं ममद भाई सब ठीक हो जाएगा।'

ममद भाई न खजर अपने नेफे में उबस लिया। तो ठीक है।

तो मैं इन्जेक्शन लगाता हूँ,' डाक्टर ने अपना बैग खोला और मिरिज निकाली।

ठहरो ठहरो।'

ममद भाई घबरा गया था। डाक्टर ने तुरत मिरिज बग में वापस रख ली और भिमयाते हुए ममद भाई से बोला, क्या ?'

'बस—मैं किसीके सुई लगत नहीं देख सकता,' यह कहकर वह खोली से बाहर चला गया। उसके साथ ही उसके साथी भी चले गए।

डाक्टर पिटो ने मुझे कुनीन का इन्जेक्शन लगाया, बड़ी सावधानी से अथवा मलरिया का यह इन्जेक्शन बड़ा अप्रत्याशित होता है। जब

वह अपना काम कर चुका तो मैंन जगसे उसकी फीम पूछी । उसने कहा—
'दस रुपये ।' मैं तबिए के नीचे से अपना बटुआ निकाल रहा था कि ममद
भाई भीतर आ गया । उस समय मैं दस रुपये का नोट डाक्टर पिंटो को
द रहा था ।

ममद भाई ने श्रुद्ध नजग से मुझे और डाक्टर को देता और गरज-
कर कहा, 'यह क्या हो रहा है ?'

मैंने कहा, 'फीम द रहा हू ।'

ममद भाई पिंटो से सम्बाधित हुआ, 'साले ! यह फीम कौसी ल रह
हो ?'

डाक्टर पिंटो बोखला गया, 'मैं कब ले रहा हू—ये दे रह थे ।'

'भाला, हमसे फीस लेते हो—वापस करो यह नोट,' ममद भाई के
स्वर में उसके खजर जैसी तेजी थी ।

डाक्टर पिंटो ने मुझे नोट वापस कर दिया और बग बंद करके
ममद भाई से क्षमा मागते हुए चला गया ।

ममद भाई ने एव उगली से अपनी भाटा जैसी मूछा को ताव दिया
और मुस्कराया, बिम्टो भाई, यह भी कोई बात है कि इस इलाके का
डाक्टर तुमसे फीस ले तुम्हारी बसम अपनी मूछें मुड़वा देता, अगर इस
साले ने फीस ली होती—यहा सब तुम्हारे गुलाम हैं ।'

चिचित विलम्ब के बाद मैंने उससे पूछा, 'ममद भाई ! तुम मुझे कैसे
जानते हो ?'

ममद भाई की मूछें धरधराईं, 'ममद भाई जिसे नहीं जाता—हम
यहा के बादशाह हैं प्यार—अपनी रियाया का खयाल रखते हैं । हमारी
सी० आई० डी० है । वह हमें बताती रहती है, कौन आया है, कौन गया
है, कौन अच्छी हालत में है कौन बुरी हालत में है तुम्हारे बारे में हम
सब कुछ जानते हैं ।'

मैंने मा ही मजाक के तौर पर कहा, 'क्या जानते हैं आप ?'

'भाला, हम क्या नहीं जानते—तुम धमूतसर का रहने वाला है—
बादमीरी है, यहा असबाब में काम करता है । तुमने विस्मिल्ला होटल के
दस रुपये दने हैं, इसलिए तुम जघर से नहीं गुजरते । भिण्डी बाजार में

एक पान वाला तुम्हारी जान को रोता है। उससे तुम बीस रुपये दस आने के मिगरट लेकर फूँक चुके हो।'

मैं लज्जावन्त पानी पानी हो गया।

ममद भाई ने अपनी बटीली मूछों पर एक उगली फेरी और मुस्कराकर कहा, 'विम्टो भाई, कुछ फिक्र न करी। तुम्हारे सब बज चुका दिए गए हैं, अब तुम ग्यारह सिर से मामला शुरू कर सकते हो। मैं इन सालों से कह दिया है कि खपरदार, अगर विम्टो भाई को तुमने तग किया और ममद भाई तुमसे कहता है कि इशाअल्ला कोई तुम्हें तग नहीं करेगा।'

मेरी ममकम तहा आता था कि उससे क्या कहूँ। बीमार था, कुनीन का टीका लग चुका था जिसके कारण बाना में शाय शाय हो रही थी। इसके अतिरिक्त मैं उसके उपकारों तले इतना दब चुका था कि यदि कोई मुझे उस बोझ के नीचे से निवालन का प्रयत्न करता तो उस बड़ी महनत करनी पड़ती। मैं केवल इतना कह सका, ममद भाई, खुदा तुम्हें जिंदा रखे। तुम सुन रहो।।'

ममद भाई ने अपनी मूछों के बाल जरा ऊपर किए और कुछ कह बिना चला गया।

डाक्टर पिंटो प्रतिदिन सुबह शाम आता रहा। मैं उससे कई बार फीस का जिक्र किया लेकिन उसने बाना को हाथ लगाकर कहा, 'नहीं, मिस्टर विम्टो, ममद भाई का मामला है, मैं एक घेला भी नहीं ले सकता।'

मैं सोचा, यह ममद भाई कोई बहुत बड़ा आदमी है—अर्थात् भया नक आदमी, जिसे डाक्टर पिंटो, जो बड़ा भोला व्यक्ति है, डरता है और मुझसे फीस लेने का साहस नहीं करता हालांकि वह अपनी जेब से इज्जतना का रुपया खर्च कर रहा है।

बीमारी के दिनों में ममद भाई हर रोज मर रहा आता रहा—कभी सुबह कभी शाम, अपने छ सात सिप्या के साथ और मुझे हर सभ्य ढंग से डारस देता था कि मामूली मलेरिया है। तुम डाक्टर पिंटो के इलाज से इशाअल्ला बहुत जल्द ठीक ठाक हो जाओगे।'

पन्द्रह रोज के बाद मैं ठीक ठाक हो गया। इस बीच में मैं ममद भाई

का प्रत्येक नयन-नवश अच्छी तरह देख चुका था।

जैसा कि मैं इससे पहले कह चुका हूँ, वह छरहरे बदन का व्यक्ति था। आयु यही पच्चीस-तीस के बीच होगी, पतली पतली बाहें, टांगें भी ऐसी ही थीं। हाथ बला के फुर्तिले थे। उनसे जब वह छोटा सा तेज-धार चाकू किसी शत्रु पर फेंकता था तो वह सीधा उसके दिल में खुबता था—यह मुझे अरब गली के लोगो ने बताया था।

उसके सम्बन्ध में अनगिनत बातें प्रसिद्ध थीं। उसने किसीको कत्ल किया था यह तो मैं नहीं कह सकता, हाँ, छुरीमार वह कमाल का था, बनोट और गतके में प्रवीण। सब कहते थे कि वह सैकड़ों हत्याएँ कर चुका है लेकिन मैं यह अब भी मानने को तैयार नहीं।

लेकिन जब मैं उसके खजर के बारे में सोचता हूँ तो मेरे तन बदन में झुरझुरी सी दौड़ जाती है। यह भयानक हथियार वह क्यों हर समय अपनी सलवार के नफे में उडसे रहता है?

मैं जब अच्छा हो गया तो एक दिन अरब गली के एक थड क्लास चीनी रस्टोरा में मेरी उससे मुलाकात हुई—वह अपना बड़ा खजर निकालकर अपने नाखून काट रहा था—मैं उससे पूछा—‘ममद भाई! आजकल बंदूक पिस्तौल का जमाना है—तुम यह खजर क्या गिना फिरत हो?’

ममद भाई ने अपनी फटीली मूछा पर एक जगती फेरी और कहा—
विम्टो भाई बंदूक पिस्तौल में कोई मजा नहीं—उह कोई बच्चा भी चला सकता है। धोड़ा दबाया और ठस इसमें क्या मजा है? यह चीज यह खजर यह छुरी यह चाकू मजा आता है ना, खुदा की कसम—यह वह है तुम क्या कहा करत हो? हाँ आट इसमें आट है मेरी जान! जिस चाकू या छुरी चलाने का आट न आता हो, वह एकदम कड़म है—पिस्तौल क्या है, सिलौना है जो नुकसान पहुँचा सकता है, पर इसमें क्या लुफ आता है—कुछ भी नहीं—तुम यह खजर देखो—इसकी तेज धार देखो!’ यह कहते हुए उसने अगूठे पर थूक लगाया और अगूठा उसकी धार पर फेरा, इससे धमाका नहीं होता—बस, यो पेट के अंदर दाखिल कर दो—इस सफाई से कि किसी माले को मालूम भी न हो

बहुत पिस्तौल सब बक्काग है।

ममद भाई से अब मेरी हर रोज किसी-न किसी समय मुलाकात होती थी। मैं उसका आभारी था लेकिन जब मैं इसका जिक्र करता था तो वह नाराज ही जाता था—कहता था कि 'मैं तो तुमपर कोई एहसान नहीं किया यह तो मेरा फज था।'।

जब मैं कुछ खोज पड़ताल की तो मुझे मालूम हुआ कि वह फारम रोड के इलाके का एक प्रकार का शामक था—एसा शामक जो प्रत्येक व्यक्ति की देख रत करता था। कोई बीमार ही किसीका कोई घट हो, ममद भाई उसके पास पहुँच जाता था और यह उसकी मा० आई० डी० का काम था जो उस हर बात सूचित रखती थी।

वह 'दादा' अर्थात् एक सतरनाम गुडा—सबिन मेरी समझ में अब भी नहीं आता कि वह किस रूप से गुडा था। मैं तो कभी उसमें कोई गुडापन नहीं देखा था एक उमकी मूछें जल्द ऐसी थी जो उस भयावह बनाए रखती थी। लेकिन उस उनसे प्यार था। वह उनका कुछ इस प्रकार पालन करता था जैसे कोई अपने बच्चे की कर।

उमकी मूछा का एक एक बात सदा था—मुझे किसी न बताया था कि ममद भाई हर रोज अपनी मूछा को बालाई तिलाता है। जब गाना खाता है तो गोरवा भरी उगलिया ग अपनी मूछें जल्द मरोड़ता है क्या कि, चुजुगों के बघनानुसार, यो वालो म गबिन आती है।

मैं इससे पहले शायद कई बार यह सुना हू कि उमकी मूछें बड़ी भयानक थी—वास्तव में उन मूछी का नाम ही ममद भाई था—या उस गजर का जो उसकी तंग घेरे की सतवार के नेपे में हर समय मोड़ रहता था—मुझे इन दोनों चीजों से डर लगता था, न जान क्या।

ममद भाई यो तो उस इलाके का बहुत बड़ा दाग था लेकिन वह सबका दुर्भावना था। मानूँ नहीं कि उमकी भाव के क्या साधन थे लेकिन जिस बिग्रीकी महायत्ता की भाव्यवना होती थी वह अवश्य उमकी महायत्ता करता था। इस इलाके की समस्त बच्चाएँ उन घराय गुरु भागी थीं। चूँकि वह एक माता हुआ मुठा था इसलिए भाव्यव था कि उमका सम्बन्ध वहाँ की बिग्री बच्चा से होता, सबिन मुझे पता पता

किया कि उसे अपने जीवन का सबसे बड़ा धक्का पहुंचा है। उसकी मूर्छे जो भयावह रूप से ऊपर का उठी हुई थी, अब कुछ झुक सी गई थी।

चीनी के होटल में उससे मेरी मुलाकात हुई। उसके कपड़े, जो हमेशा उजले होते थे, मैले थे। मैं उस बत्तल के सम्बन्ध में कोई बात नहीं लेक़िन उसने स्वयं ही कहा, 'विम्टो साहब ! मुझे इस बात का अफ़सोस है कि साला देर से मरा—छुरी मारने में मुझसे चूक हो गई हाथ टड़ा पड़ा—लेकिन वह भी उस साले का बसूर था—एकदम मुड़ गया—इस वजह से सारा मामला बडम हो गया—लेकिन मर गया—जरा तकलीफ़ के साथ, जिसका मुझे अफ़सोस है।'।

आप स्वयं सोच सकते हैं कि यह सुनकर मेरी प्रतिक्रिया क्या हुई होगी। अर्थात् उसे यदि अफ़सोस था तो केवल इस बात का कि मरने वाले को जरा तकलीफ़ हुई थी।

मुकदमा चलना था—और ममद भाई उससे बहुत घबराता था। उसने अपने जीवन में कभी बहचरी की शक्ल तक नहीं देखी थी। मैं जानता हूँ उससे इससे पहले भी बत्तल किए थे या नहीं, लेकिन जहां तक मुझे पता है वह मजिस्ट्रेट, वकील और गवाह के बार में कुछ नहीं जानता था, इस लिए कि इन लोगों में उनका कभी सरोकार नहीं पड़ा था।

वह बहुत चिंतित था—पुलिस ने जब कैस पेश करना चाहा और तारीख़ नियत ही गई तो ममद भाई बहुत परगान हो गया। अगलत में मजिस्ट्रेट के सामन कैसे हाज़िर हुआ जाता है, इस बारे में उसे कुछ मालूम नहीं था। बार बार अपनी बटोली मूर्छों पर उगलिया फेरता था और मुझसे कहता था—'विम्टो साहब ! मैं मर जाऊंगा, पर बहचरी में नहीं जाऊंगा—साली मालूम नहीं कौसी जगह है ?'

अब गली में उसके कई मित्र थे। उन्होंने उस ढाढ़स घेराया कि मामला सही नहीं है। कोई गवाह मौजूद नहीं, एक केवल उसकी मूर्छे हैं जो मजिस्ट्रेट के दिल में उसका विरुद्ध कोई विरोधी भाव उत्पन्न कर सकती हैं।

जैसा कि मैं दमम पहलें वह चुका हूँ, उसकी केवल मूर्छे ही थी जो उसको भयावह बनाती थी—यदि यह नहीं होती तो वह किसी पहलू से भी

‘दादा’ दिखाई न देता ।

उसने बहुत सोचा । उसकी जमानत थाने में ही हो गई थी, अब उसे कचहरी में पेश होना था । मजिस्ट्रेट से वह बहुत घबराता था । ईरानी के होटल में जब मेरी उसकी मुलाकात हुई तो मैंने महसूस किया कि वह बहुत परेशान है । उसे अपनी मूर्खों की बड़ी चिन्ता थी, वह सोचता था कि यदि मूर्खों के साथ वह कचहरी में पेश हुआ तो बहुत सम्भव है, उसको सजा हो जाए ।

आप समझते हैं कि यह कहानी है, लेकिन यह वास्तविकता है कि वह बहुत परेशान था । उसके समस्त शिष्य हैरान थे—इसलिए कि वह कभी हैरान परेशान नहीं हुआ था । उसे अपनी मूर्खों की चिन्ता थी क्यों कि उसके कुछ अभिन मित्रों ने उससे कहा था—‘ममद भाई ! कचहरी में जाना है तो इन मूर्खों के साथ कभी न जाना—मजिस्ट्रेट तुमको अदर कर देगा ।’

और वह सोचता था हर समय सोचता था कि उसकी मूर्खों ने उस आदमी को करन किया है या उसने—लेकिन वह किसी परिणाम पर नहीं पहुँच पाता था । उसने अपना खजूर, मालूम नहीं जो पहली बार लहू में डूबा था या इससे पहले कई बार डूब चुका था, अपने नेक में निकाला और होटल के बाहर गली में फेंक दिया ।

मैंने आश्चर्य से उससे पूछा मदद भाई ! यह क्या ?’

‘कुछ नहीं विन्टी भाई—बहुत घोटाला हो गया है—कचहरी में जाना है—यार दोस्त कहते हैं कि तुम्हारी मूर्खें देखकर वह जरूर तुमको सजा देगा—अब बोलो क्या करू ?’

मैं क्या बोल सकता था ? मैंने उसकी मूर्खों की ओर देखा जो सचमुच भगवान् थी । मैंने उससे केवल इतना कहा, ‘मदद भाई बात तो ठीक है—तुम्हारी मूर्खें मजिस्ट्रेट के फैसले पर जरूर असर डालेंगी—सच पूछो तो जो कुछ होगा, तुम्हारे खिलाफ नहीं, तुम्हारी मूर्खों के खिलाफ होगा ।

‘तो मैं मुडवा दू ?’ मदद भाई ने अपनी चहेती मूर्खों पर बड़े प्यार से उगली फेंकी ।

मैंने उससे पूछा, 'तुम्हारा क्या खयाल है ?'

मेरा खयाल जो कुछ भी है, वह मत पूछो—लेकिन यहाँ हर किसी का यही खयाल है कि मैं इन्हें मुड़वा दूँ—वह साला मजिस्ट्रेट मेहरबान हो जाएगा। तो मुड़वा दूँ बिम्टो भाई ?'

किंचित विलम्ब के बाद मैंने उससे कहा—'हाँ, अगर तुम मुतासिब समझते हो तो मुड़वा दो—कचहरों का मामला है और तुम्हारे मूँछें सचमुच बड़ी भयानक हैं।'

दूसरे दिन ममद भाई ने अपनी मूँछें—अपनी प्राणा सँपारी मूँछें मुड़वा डाली क्योंकि उसकी इज्जत खतरे में थी, लेकिन केवल दूसरा के मशविरे पर।

मिस्टर एफ० एच० टेट की कचहरी में उसका मुकद्दमा पेश हुआ। ममद भाई मूँछों के बिना पेश हुआ। मैं भी वहाँ मौजूद था। उसके खिलाफ कोई गवाह मौजूद नहीं था। लेकिन मजिस्ट्रेट साहब ने उसकी गुंडा सिद्ध कर 'तड़ी पाड' अर्थात् प्रात छोड़ देने का दण्ड दे दिया। उसे केवल एक दिन मिला था जिसमें उसे अपना सब कुछ समेट बटोरकर बम्बई छोड़ देना था।

कचहरी से निकलकर उसने मुझसे कोई बात न की। उसकी छोटी-बड़ी उगलिया बार बार ऊपर के होठ की ओर बढ़ती थी लेकिन वहाँ एक बाल तक न था।

शाम की जब उसे बम्बई छोड़कर वहाँ ओर जाना था मेरी उसकी मुलाकात ईरानी के होटल में हुई। उसके दम-धीस गिण्य पास की कुर्तियों पर बैठे चाय पी रहे थे। जब मैं उससे मिला तो उसने मुझसे कोई बात न की। मूँछों के बिना वह बहुत भद्र पुष्प दिखाई दे रहा था लेकिन मैंने महसूस किया कि वह बहुत दुःखी है।

उसके पास कुर्सी पर बैठकर मैंने उससे कहा, 'क्या बात है ममद भाई ?'

उसने उत्तर में एक बहुत बड़ी माली भगवान जान किसकी दी और कहा, 'साला अब ममद भाई ही नहीं रहा।'

मुझे मालूम था कि उसे प्रात छोड़ने का दण्ड दिया जा चुका है। मैंने

वहा, 'कोई बात नहीं ममद भाई—यहा नहीं तो किसी और जगह सही।'।

उसने समस्त जगहा को अनगिनत गालिया दी—'साला—अप्पन को यह गम नहीं—यहा रह या किसी और जगह रह—यह साला मूछें क्या मुडवाई।' फिर उसन उन लोगा को जिहने उसको मूछें मुडवाने का मगविरा दिया था, एरु करोड गालिया दी और वहा, 'साला अगर मुझे 'तडी पाड ही होना था तो मूछा क साथ यधो न हुआ।'।

मुझे हसी आ गई—वह नाल भभूवा हो गया—'साला तुम क्या आदमी है बिम्टो—हम सब कहना है मुदा की वसम—फासा लगा देते पर यह बबकूफी तो हमन मुद की आज तक किसीसे नहीं डरा था माला अपनी मूछा से डर गया।' यह कहकर उसन अपने मुह पर दोहत्तड मारा और चिल्लाकर बोला, 'ममद भाई, जानत है तुझ पर—साला—अपनी मूछा म डर गया—अब जा अपनी मा के

और उसकी आत्मा मे आसू आ गए जा उसकी मूछा मे खाली चेहरे पर कुछ विचित्र दिसाई देते थे।

